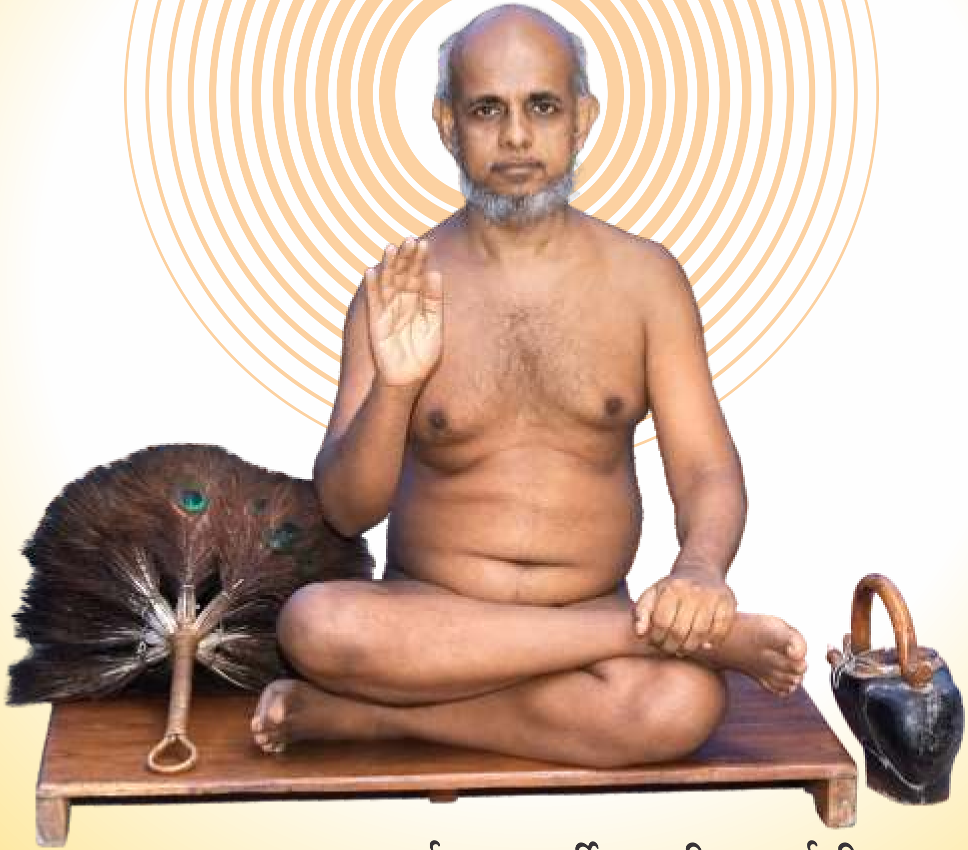

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद विधान संग्रह -०२

कृतिकार : परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्ति स्थान :

विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,

जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

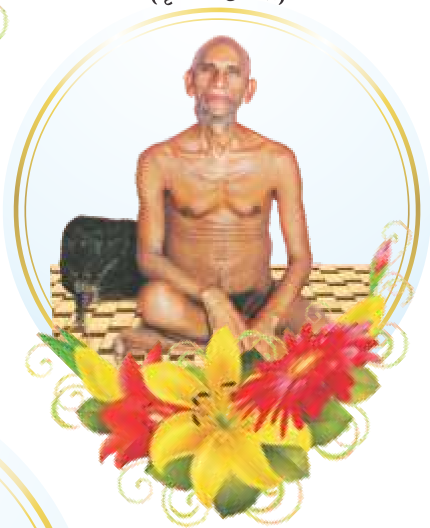

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद

विधान संग्रह

भाग – 2

श्री विमलनाथ से श्री महावीर स्वामी तक

रचयिता :
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति – विशद विधान संग्रह (भाग–2)

कृतिकार – प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

संस्करण – प्रथम–2014 • प्रतियाँ : 1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज

सहयोग – क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागर जी महाराज

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी 9829076085, ब्र. आस्था दीदी, ब्र. सपना दीदी

संयोजन – ब्र. सोनू दीदी, ब्र. किरण दीदी, ब्र. आरती दीदी, ब्र. उमा दीदी

सम्पर्क सूत्र – 9829127533, 9953877155

प्राप्ति स्थल –
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो. : 9414812008

2. श्री राजेश कुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर
मो. : 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी, रेवाड़ी
(हरियाणा) 9812502062, 09416888879

4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली
नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली
मो. 09818115971, 09136248971

मूल्य – 100/- रू. मात्र

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली फोन नं. : 09811374961, 09818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com

"श्रेष्ठ पूजन, भक्ति आराधना, ध्यान साधना से ही कटेगी कर्मों की विशाल श्रृँखला"

जब चिन्त्यों तब सहस्र फल, लक्खा फल गणमेय।
कोड़ा-कोड़ी अनंत फल, जब जिनवर दिट्ठेय॥

अर्थात्: जब हमारे मन में भगवान् के दर्शन करने का विचार आता है, तब हजार गुणा फल मिलता है। जब दर्शन के लिए भक्तिभाव से द्रव्य–सामग्री लेकर चल देते हैं तब लाख गुण फल मिलता है और जब साक्षात् जिनबिम्ब के दर्शन पूर्ण श्रद्धा भक्तिभाव, क्रिया विधि से करते हैं तब अनन्त कोड़ा–कोड़ी फल मिलता है। अरिहन्त प्रभु को नमस्कार करना तत्कालीन बन्ध की अपेक्षा असंख्यात गुणी निर्जरा का कारण होता हैं। शिवकोटि आचार्य महाराज ने पूजा का फल बताते हुए लिखा है कि मात्र जिन भक्ति ही दुर्गति का नाश करने में समर्थ है। इससे विपुल पुण्य की प्राप्ति होती है और मोक्षपद प्राप्त होने के पूर्व तक इससे इन्द्रपद, चक्रवर्तीपद, अहमेन्द्रपद और तीर्थंकर पद के सुखों की प्राप्ति होती है।

जिस तरह अग्नि बहुत समय से इकट्ठे किये हुए समस्त काष्ठ समूह को क्षणमात्र में जला देती है उसी तरह जिन भगवान की पूजन करने से विधान करने से जीवों के जन्म–जन्म के संचित पापकर्म क्षणमात्र में नाश को प्राप्त हो जाते हैं।

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित विशद विधान संग्रह के प्रथम भाग में श्री आदिनाथ से वासुपूज्य तक व प्रस्तुत ग्रन्थ "विशद विधान संग्रह (भाग–2)" में श्री विमलनाथ से महावीर तक 24 विधानों का संकलन किया गया है।

पंचकल्याणक की तिथियों, पर्व के दिनों में या विशेष अवसरों में इस पुस्तक से यथोयोग्य पूजन विधान कर जीवन को सौभाग्यशाली बनाएं। पुन: आचार्य गुरु श्री विशदसागर जी के श्री चरणों में नवकोटि से नमोस्तु एवं भावना भाते हैं कि आगे भी आपकी लेखनी और भी विशाल रूप लेते हुए जिनवाणी की सेवा में लगी रहें।

मुनि विशालसागर
(संघस्थ आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज)

अनुक्रमणिका

1.	मूलनायक सहित समुच्चय पूजा	14
2.	श्री विमलनाथ विधान	26
3.	श्री अनंतनाथ विधान	62
4.	श्री धर्मनाथ विधान	100
5.	श्री शान्तिनाथ विधान	136
6.	श्री कुन्थुनाथ विधान	175
7.	श्री अरहनाथ विधान	208
8.	श्री मल्लिनाथ विधान	240
9.	श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान	274
10.	श्री नमिनाथ विधान	321
11.	श्री नेमिनाथ विधान	352
12.	श्री पार्श्वनाथ विधान	395
13.	श्री महावीर स्वामी विधान	439

नोट : प्रत्येक तीर्थंकर के कल्याणक के अवसर पर उन तीर्थंकर का विधान अवश्य करना चाहिए।

शांतिधारा

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकलमषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगोपसर्गविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव- विनाशनाय, सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम (.....) **सर्वज्ञानावरण कर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदर्शनावरण कर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववेदनीयकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमोहनीयकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वायुःकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वनामकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगोत्रकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वान्तरायकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वक्रोधं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमानं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमायां** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वलोभं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमोहं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वरागं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वद्वेषं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगजभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसिंहभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वाग्निभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसर्पभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वयुद्धभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसागरनदीजलभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वजलोदरभगंदरकुष्ठकामलादिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वनिगडादिबंधनभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववायुयानदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववाष्पयानदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वचतुश्चक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववाष्पधानीविस्फोटकभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वविषाक्तवाष्पक्षरणभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभूकम्पदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभूतपिशाचव्यंतरडाकिनीशाकिन्यादिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वधनहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि

भिन्द्धि **सर्वव्यापारहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वराजभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वचौरभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुष्टभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशत्रुभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशोकभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसाम्प्रदायिकविद्वेषं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववैरं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भिक्षं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमनोव्याधि** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वआर्तरौद्रध्यानं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भाग्यं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वायशः** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वपापं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्व अविद्यां** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वप्रत्यवायं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वकुमतिं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वक्रूरग्रहभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुःखं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वापमृत्युं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि।

ॐ त्रिभुवनशिखरशेखर-शिखामणित्रिभुवनगुरुत्रिभुवनजनता अभयदानदायकसार्वभौमधर्मसाम्राज्यनायकमहति-महावीरसन्मतिवीरातिवीर वधमाननामालंकृत श्रीमहावीरजिनशासनप्रभावात् सर्वे जिनभक्ताः सुखिनो भवंतु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणभागे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे भारतदेशे........ प्रदेशे........ नामनगरे वीरसंवत्........ तमे........ मासे........ पक्षे........ तिथौ........ वासरे नित्य पूजावसरे (....... . विधानावसरे) विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्ये राष्ट्रे पुरे ग्रामे नगरे सर्वमुनिआर्यिका-श्रावकश्राविकाणां चतुर्विधसंघस्थ मम च शांतिं करोतु मंगलं तनोतु इति स्वाहा।

हे षोडश तीर्थंकर! पंचमचक्रवर्तिन्! कामदेवरूप! श्री शांतिजिनेश्वर! **सुभिक्षं** कुरू कुरू **मनः समाधिं** कुरू कुरू **धर्मशुक्लध्यानं** कुरू कुरू **सुयशः** कुरू कुरू **सौभाग्यं** कुरू कुरू **अभिमतं** कुरू कुरू **पुण्यं** कुरू कुरू **विद्यां** कुरू कुरू **आरोग्यं** कुरू कुरू **श्रेयः** कुरू कुरू **सौहार्दं** कुरू कुरू **सर्वारिष्ट ग्रहादीन्** अनुकूलय अनुकूलय **कदलीघातमरणं** घातय घातय आयुर्द्राघय द्राघय। **सौख्यं** साधय साधय, ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रव-शांतिं कुरू कुरू ह्रीं नमः।

परमपवित्रसुगंधितजलेन जिनप्रतिमायाः मस्तकस्योपरि शांतिधारां करोमीति स्वाहा। चतुर्विधसंघस्थ मम च सर्वशांतिं कुरू कुरू तुष्टिं कुरू कुरू पुष्टिं कुरू कुरू वषट् स्वाहा।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां। शांति निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां। शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।

अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतू, प्रभु शांती धारा देते हैं।।

अर्घ्य उदक चंदन तंदुल पुष्पकै, चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिन गृहे कल्याण नाथ महंयजे।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज : आनन्द अपार है....)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबिम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है।।टेक।।
दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी।।1।।जिनवर...
मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभू जी, द्वार आपके आए हैं।।2।।जिनवर...
शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी।।3।।जिनवर.
हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं।।4।।जिनवर.
नैय्या पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिरनाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।
जिनवर का....!

विनय पाठ

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ॥
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्॥
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान॥
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज॥
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश॥
निर्मल भावों से प्रभू, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश॥
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार॥
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश॥
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार॥
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभू! करते स्वयं समान॥
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव।
जब तक मम जीवन रहे, ध्याऊँ तुम्हें सदैव॥
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल॥
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ती धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते 'विशद' प्रणाम॥

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरे अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान॥1॥
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध॥2॥
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवज्झाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय॥3॥
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म॥4॥
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव॥5॥
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धी सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार॥6॥
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान॥7॥

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां.....।।पुष्पांजलि क्षिपामि।।

यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। (जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वादः

पूजा पीठिका (हिन्दी भाषा)

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोएसव्वसाहूणं॥
अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन॥
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्॥

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध॥
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभू जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल॥
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम॥
अरहंतों की शरण को पाएँ, सिद्ध शरण में हम जाएँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाएँ॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे॥
अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्याभ्यन्तर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें॥
अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी॥
पञ्च नमस्कारक यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी॥
परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया॥
मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी॥
विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान (हिन्दी)

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक है॥
मूल संघ में सम्यक् दृष्टी, पुरुषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान॥1॥

जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरु के, लिए 'विशद' होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान॥
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हों भगवान॥2॥

विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान॥
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान॥3॥

परम भाव शुद्धी पाने का, अभिलाषी होकर के नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धी भी रखकर के साथ॥

जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादी का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादी की, करते हम पूजन अर्चन॥4॥

हे अर्हन्त! पुराण पुरुष हे!, हे पुरुषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादी द्रव्यों का शुभ, पाया हमने आलम्बन॥
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नी में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करें हवन॥5॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश॥
श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश॥
श्री सुविधि मंगल करें, शीतलनाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश॥
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश॥
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश॥
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द ताटंक)

महत् अचल अद्भुत अविनाशी, केवलज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मनः पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान॥
दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी॥1॥

यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् करना चाहिये।

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पदानुसारिणी, चउ विधि बुद्धी ऋद्धीवान॥

शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी॥2॥

श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन॥
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी॥3॥

प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी॥
शक्ति...॥4॥

जंघा अग्नि शिखा श्रेणी फल, जल तन्तू हों पुष्प महान्।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान॥
शक्ति...॥5॥

अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।
शक्ति...॥6॥

जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान॥
शक्ति...॥7॥

दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धीधारी, करते मन को भाव विभोर॥
शक्ति...॥8॥

आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धी, आशीर्विष दृष्टी विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धी, विडौषधी मल्लौषधि जान॥
शक्ति...॥9॥

क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्॥
शक्ति...॥10॥

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) परि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण॥
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं॥

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा **प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।**
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥ शान्तये शांतिधारा...

दोहा **पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।**
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से, पावे निज स्थान॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार॥2॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।**
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं॥
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा॥1॥
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल॥
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण॥2॥
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश॥
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।

एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष॥3॥
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है॥
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी॥4॥
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन॥
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश॥5॥
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है॥
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं॥6॥
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है॥
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा॥7॥
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान॥
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान॥8॥
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप॥
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान॥9॥

दोहा नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने आये हम, चरण झुकाते माथ॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

अर्घ्यावली

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ्य

जलफल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्र निहू-तैं थुति पूरी न करी है।
द्यानत सेवक जान के हो जगतें लेहु निकार,
सीमन्धर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो भव तारण तरण जहाज॥

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरादिविद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनबिम्बों का अर्घ्य

सात करोड़ बहत्तर लाख, सु-भवन जिन पाताल में।
मध्यलोक में चार सौ अट्ठावन, जजों अघमल टाल के॥
अब लख चौरासी सहस सत्यावन, अधिक तेईस रु कहे।
बिन संख ज्योतिष व्यन्तरालय, सब जजों मन वच ठहे॥

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य

अकृत्रिम जिन चैत्यालय शुभ, तीन लोक में रहे महान्।
भावन व्यन्तर ज्योतिष वासी, स्वर्ग में जो भी रहे विमान॥
जल गंधाक्षत पुष्प चरु शुभ, दीप धूप फल हो शुभकार।
'विशद' कर्म की शांति हेतु हम, अर्घ्य चढ़ाते यह मनहार॥

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमाकृत्रिम-चैत्यालय सम्बंधिजिन बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध भगवान का अर्घ्य

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणैः, सङ्गं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं, रम्यं चरुं दीपकम्।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं, श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं, सेनोत्तरं वाञ्छितम्॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय॥

श्री आदिनाथजी के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय।
हे! करुणानिधि भव दु:ख मेटो, यातै: मैं पूजों प्रभु पाय।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ्य

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों।।
श्री चन्द्रनाथ दुति चन्द्र, चरनन चंद्र लगै।
मन-वच-तन जजत अमंद, आतम जोति जगै।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

जल फलदरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई।।
वासुपूज्य वसुपूज-तनुज पद, वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिंग धारी, आनंदकारी दृग प्यारी।
तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातै थारी शरनारी।।
श्री शान्ति जिनेशं, नुतचक्रेशं वृषचक्रेशं, चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं हे! गुणधेशं, दयामृतेशं मक्रेशं।।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथजी का अर्घ्य

पथ की प्रत्येक विषमता को मैं, समता से स्वीकार करूँ।
जीवन विकास के प्रिय पथ की, बाधाओं का परिहार करूँ।।
मैं अष्ट कर्म आवरणों का, प्रभुवर आतंक हटाने को।
वसुद्रव्य संजोकर लाया हूँ, चरणों में नाथ चढ़ाने को।।
ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान का अर्घ्य

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों।
गुण गाँऊ भवदधितार, पूजत पाप हरों।।

श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो।।
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी भगवान का अर्घ्य

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों।
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद कंद सही।
पद जजत हरत भव फंद, पावत मोक्ष मही।।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पंच बालयति का अर्घ्य

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नशावत हैं।।
श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर यती।
नमूँ मन-वच-तन धरि प्रेम, पाँचों बालयति।।
ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली स्वामी का अर्घ्य

हूँ शुद्ध निराकुल सिद्धों सम, भव लोक हमारा वासा ना।
रिपु रागरू द्वेष लगे पीछे, यातें शिवपद को पाया ना।।
निज के गुण निज में पाने को, प्रभु अर्घ संजोकर लाया हूँ।
हे! बाहुबली तुम चरणों में, सुख सन्मति पाने आया हूँ।।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ्य

जल फल आठों दरब चढ़ाय, द्यानत विरत करों मन लाय।
परम गुरु हो!, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परम गुरु हो!, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ्य

आठ दरब मय अरघ बनाय, द्यानत पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करो प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥
ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी अशीति जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरद्वीप का अर्घ्य

यह अरघ कियो निज हेतु, तुमको अरपतु हों।
द्यानत कीज्यो शिव खेत, भूमि समरपतु हों॥
नंदीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुंज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनंद भाव धरों॥
नंदीश्वर द्वीप महान्, चारों दिशि सोहें।
बावन जिन मंदिर जान, सुर नर मन मोहें॥
ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिण द्विपंचाशज्-जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ्य

आठों दब संवार, द्यानत अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दस लच्छन पूजों सदा॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माङ्गाय अनर्घपदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ्य

आठ दरब निरधार, उत्तम सो उत्तम लिये।
जनम रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ॥
ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र अर्घ्य

जल गंध अच्छत फूल चरु फल धूप दीपायन धरौं।
'द्यानत' करो निरभय जगत तैं जोर कर विनती करौं॥
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा पावापुर कैलाश कौं।
पूजों सदा चौबीस जिन निर्वाण भूमि निवास कौं॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ्य

जल चंदन अक्षत फूल चरु, दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावै॥

तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई॥
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै: अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तऋषी का अर्घ्य

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ कीजे पावना॥
मन्वादि चारण-ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूँ॥
ॐ ह्रीं श्री मन्वादिसप्तर्षिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं॥
ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागर जी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महाअर्घ्य

पूज रहे अरहंत देव को, और पूजते सिद्ध महान्।
आचार्योपाध्याय पूज्य लोक में, पूज्य रहे साधू गुणवान॥
कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, चैत्य पूजते मंगलकार।
सहस्रनाम कल्याणक आगम, दश विध धर्म रहा शुभकार॥
सोलहकारण भव्य भावना, अतिशय तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
बीस विदेह के तीर्थंकर जिन, 'विशद' पूज्य चौबिस भगवान॥
ऊर्जन्यन्त चम्पा पावापुर, श्री सम्मेद शिखर कैलाश।
पञ्चमेरु नन्दीश्वर पूजें, रत्नत्रय में करने वास॥
मोक्षशास्त्र को पूज रहे हम, बीस विदेहों के जिनराज।
महा अर्घ्य यह नाथ! आपके, चरण चढ़ाने लाए आज॥
दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
सर्व पूज्य पद पूजते, चरण झुकाकर माथ॥

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन-विशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बिभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे..... देश.... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे.... मासानामुत्तमे.... मासे शुभ पक्षे.... तिथौ.... वासरे....मुनि आर्यिकानां श्रावक-श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(शम्भू छंद)

चन्द्र समान सुमुख है जिनका, शील सुगुण संयम धारी।
लज्जित करते नयन कमल दल, सहस्राष्ट लक्षण धारी॥
द्वादश मदन चक्री हो पंचम, सोलहवें तीर्थंकर आप।
इन्द्र नरेन्द्रादिक से पूजित, जग का हरो सकल संताप॥
सुरतरु छत्र चँवर भामण्डल, पुष्प वृष्टि हो मंगलकार।
दिव्य ध्वनि सिंहासन दुन्दुभि, प्रातिहार्य ये अष्ट प्रकार॥
शांतीदायक हे शांति जिन! श्री अरहंत सिद्ध भगवान।
संघ चतुर्विध पढ़ें सुनें जो, सबको कर दो शांति प्रदान॥
इन्द्रादि कुण्डल किरीटधर, चरण कमल में पूजें आन।
श्रेष्ठ वंश के धारी हे जिन!, हमको शांती करो प्रदान॥

संपूजक प्रतिपालक यतिवर, राजा प्रजा राष्ट्र शुभदेश।
'विशद' शांति दो सबको हे जिन!, यही हमारा है उद्देश्य॥
होय सुखी नरनाथ धर्मधर, व्याधी न हो रहे सुकाल।
जिन वृष धारे देश सौख्यकर, चौर्य मरी न हो दुष्काल॥

(चाल छन्द)

जिनघाती कर्म नशाए, कैवल्य ज्ञान प्रगटाए।
हे वृषभादिक जिन स्वामी, तुम शांती दो जगनामी॥
है शास्त्र पठन शुभकारी, सत्संगति हो मनहारी।
सब दोष ढ़ाँकते जाएँ, गुण सदाचार के गाएँ॥
हम वचन सुहित के बोलें, निज आत्म सरस रस घोलें।
जब तक हम मोक्ष न जाएँ, तब तक चरणों में आएँ॥
तव पद मम हिय वश जावें, मम हिय तव चरण समावें।
हम लीन चरण हो जाएँ, जब तक मुक्ती न पाएँ॥

दोहा **वर्ण अर्थ पद मात्रा में, हुई हो कोई भूल।**
क्षमा करो हे नाथ सब, भव दुख हों निर्मूल॥
चरण शरण पाएँ 'विशद', हे जग बन्धु जिनेश।
मरण समाधी कर्म क्षय, पाएँ बोधि विशेष॥

विसर्जन पाठ

जाने या अन्जान में, लगा हो कोई दोष।
हे जिन! चरण प्रसाद से, होय पूर्ण निर्दोष॥
आह्वानन पूजन विधी, और विसर्जन देव।
नहीं जानते अज्ञ हम, कीजे क्षमा सदैव॥
क्रिया मंत्र द्रवहीन हम, आये लेकर आस।
क्षमादान देकर हमें, रखना अपने पास॥
सुर-नर-विद्याधर कोई, पूजा किए विशेष।
कृपावन्त होके सभी, जाएँ अपने देश॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्

आशिका लेने का पद

दोहा **लेकर जिनकी आशिका, अपने माथ लगाय।**
दुख दरिद्र का नाश हो, पाप कर्म कट जाय॥

(कायोत्सर्ग करें)

विशद
श्री विमलनाथ विधान
माण्डला

मध्य में : ॐ
प्रथम वलय में: 5
द्वितीय वलय में: 10
तृतीय वलय में: 20
चतुर्थ वलय में: 40
पंचम वलय में : 46
कुल 121 अर्घ्य

रचयिता :
आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

श्री विमलनाथ स्तवन
(शम्भू छन्द)

धीर वीर सम्यक् गुणधारी, विमलनाथ मेरे भगवान।
अष्ट कर्म मल के परिहारी, अविनाशी बहुगुण की खान॥
विमल गुणों के शुभ करण्ड हैं, निर्मलतम जिन श्री के धाम।
जग का मंगल करने वाले, जिनवर तव पद 'विशद' प्रणाम॥1॥
प्रभु दुर्मोह नशाने वाले, प्रहत मदन जिनवर अविकार।
जन्माटवी के पार गये हैं, विशद धर्म के बन आधार
हो निरातिशय चारित धारी, बने आप लोकाधीनाथ
अतः चरण का वन्दन करने, आते हैं देवों के नाथ॥2॥
गणधर आदिक श्रेष्ठ ऋद्धिधर, जिनपद शीश झुकाते हैं।
तीन लोकवर्ति जीवों से, जो नित पूजे जाते हैं।
जिनकी पूजा का फल पाकर, प्राणी भव सुख पाते हैं।
अपने सारे कर्म नाशकर, मोक्ष निधि प्रगटाते हैं॥3॥
पंच कल्याणक पाने वाले, श्रीयुत होते हैं भगवान।
विघ्न विनाशक हैं त्रिलोक में, अतिशयकारी महिमावान॥
भवि जीवों के भाग्य विधाता, अर्चनीय हैं जिन अविकार।
निराबाध निर्ग्रन्थ मुनीश्वर, शुद्ध ध्यान के हैं आधार॥4॥
शाप अनुग्रह शक्ति आदि की, रूचि से हैं जो रहित मुनीश।
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रगटाते हैं, ज्ञान शिरोमणि श्रेष्ठ ऋशीश॥
गुणगण के हैं कोष निरन्तर, उनके पद मेरा वन्दन।
अष्ट द्रव्य के थाल सजाकर, करते हैं हम भी अर्चन॥5॥

दोहा विमलनाथ के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
विमल स्तवन कर रहे, पाने शिव दरबार॥
॥इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत॥

श्री विमलनाथ पूजन...

(स्थापना)

दर्शन करके विमलनाथ के, मन आनन्द समाता है।
सागर में सूर्योदय होते, ज्यों नीरज खिल जाता है।।
विमल गुणों को पाने वाले, पावन है शुभ जिनका नाम।
विशद हृदय में आह्वानन कर, करते बारम्बार प्रणाम।।

दोहा **हृदय कमल में आनकर, तिष्ठो हे भगवान्!**
सुगुण आपके प्राप्त हों, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छन्द)

हे जिन तुम जल से निर्मल हो, प्रभु अमल श्रेष्ठ हो अविकारी।
प्रभु सम्यक्ज्ञान जलोदधि हो, तुम मिथ्या मल के परिहारी।।
हे ज्ञान दयानिधि चरण आपके, पावन नीर समर्पित है।
श्री विमल नाथ जिन चरण शरण में, जीवन मेरा अर्पित है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

शुभ चन्द्र वदन चन्दन सम अनुपम, चन्द्र किरण से सुखकारी।
हे पाप निकन्दन! भवहर वन्दन, तुम हो सचमुच भवतारी।।
यह मलयागिर चन्दन चरणाम्बुज, में हे नाथ! समर्पित है।
श्री विमल नाथ जिन चरण शरण में, जीवन मेरा अर्पित है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

प्रभु अक्षय पुर के वासी हे, जिन! हम तेरे विश्वासी हैं।
शिव पद शुभ शाश्वत रहा अटल, उसके हम भी प्रत्याशी हैं।।

हम अक्षय पद के अभिलाषी प्रभु, अक्षत चरण समर्पित हैं।
श्री विमल नाथ जिन चरण शरण में, जीवन मेरा अर्पित है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि. स्वाहा।

सुरभित शुभ ज्ञान सुमन में हे, प्रभु! राग द्वेष दुर्गन्ध नहीं।
चेतन चिन्मय है अविनाशी, तन से कुछ भी सम्बन्ध नहीं।।
मम अन्तर्वास सुवासित हो, यह सुरभित पुष्प समर्पित हैं।
श्री विमल नाथ जिन चरण शरण में, जीवन मेरा अर्पित है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

आनन्दामृत के सागर में, नीरस जड़ता का काम नहीं।
जब तक ना क्षुधा रोग मिटता, तब तक लेगें विश्राम नहीं।।
चित् तृप्ति प्रदायी यह व्यंजन, चरणों में नाथ समर्पित हैं।
श्री विमल नाथ जिन चरण शरण में, जीवन मेरा अर्पित है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

विज्ञान भवन के हे अधिपति!, तुम लोकालोक प्रकाशक हो।
केवल्य रवी के ज्योति पुंज प्रभु, मोह महातम नाशक हो।।
निज अन्तर मम आलौकित हो, यह दीपक चरण समर्पित है।
श्री विमल नाथ जिन चरण शरण में, जीवन मेरा अर्पित है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

दुख की ज्वाला जलती भारी, उड़ रहा धूम नभ गलियों में।
अज्ञान तमावृत चेतन यह, फँस रहा मोह रंग रलियों में।।
मम लगे अनादी कर्म जलें, अग्नी में धूप समर्पित है।
श्री विमल नाथ जिन चरण शरण में, जीवन मेरा अर्पित है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

चैतन्य सदन के आंगन में शुभ-अशुभ वृत्ति का रेला है।
संसार पार पर्यायों के, निश्चित सिद्धों का मेला है।।

तेरी पूजा में हे स्वामी! पावन फल श्रेष्ठ समर्पित है।
श्री विमल नाथ जिन चरण शरण में, जीवन मेरा अर्पित है॥8॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. स्वाहा।

निर्मल जल गंध धवल अक्षत, यह पुष्प चरु शुभ दीप जले।
है धूप दशांगी फल अनुपम, वसु द्रव्यों के यह अर्घ्य मिले॥
अक्षय अखण्ड अविनाशी पद, पाने यह अर्घ्य समर्पित है।
श्री विमल नाथ जिन चरण शरण में, जीवन मेरा अर्पित है॥9॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा **दोष अठारह से रहित, तीर्थंकर अरहन्त।**
शांती धारा दे रहे, हो शांती भगवन्त॥

(शान्तये शान्तिधारा)

वीतराग सर्वज्ञ जिन, वैदेही हे नाथ!
पुष्पाजंलि करते चरण, झुका रहे हम माथ॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंच कल्याणक के अर्घ्य

दोहा **ज्येष्ठ बदी दशमी प्रभु, सुश्यामा उर आन।**
नगर कम्पिला अवतरे, विमलनाथ भगवान॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल की चौथ को, विमलनाथ भगवान।
नगर कम्पिला जन्म से, हो गया सर्व महान्॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ॥
ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ चौथ विमलेश जिन, दीक्षा धारी आप।
ध्यान किए जिन आत्म का, नाश किए सब पाप॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ॥
ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चामर छन्द)

माघ माह शुक्ल पक्ष, तिथि षष्ठी मंगलम्।
श्री जिनेन्द्र विमलनाथ, ज्ञान रूप मंगलम्॥
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्॥
ॐ ह्रीं माघ शुक्ल षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

विमलनाथ सम्मेदाचल से, मोक्ष गये मुनियों के साथ।
कृष्ण पक्ष आठें आषाढ़ की, बने आप शिवपुर के नाथ॥
अष्ट गुणों की सिद्धि पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ती पथ दर्शाओ, बनो प्रभू मम् पथगामी॥5॥
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विमल गुणों के कोष हैं, विमल नाथ भगवान।**
गुणमाला गाते यहाँ, करते हैं गुणगान॥

(काव्य छन्द)

विमल नाथ जी विमल गुणों के धारी रे।
तीर्थंकर पदवी के जो अधिकारी रे॥
महिमा जिनकी इस जग से है न्यारी रे।
सर्व जगत में जिनवर मंगलकारी रे॥
दर्शन ज्ञान अनन्त वीर्य के धारी रे।

सुख अनन्त के होते जिन अधिकारी रे॥
तीर्थंकर जिन होते हैं अविकारी रे।
महिमा जिनकी होती विस्मयकारी रे॥
समवशरण होता है महिमाशाली रे।
भवि जीवों को देता है खुशहाली रे॥
अष्ट भूमियाँ जिसमें सुन्दरआली रे।
गंधकुटी है तीन पीठिका वाली रे॥
तीन गति के जीव सभा में भाई रे।
पूजा का सौभाग्य जगाते भाई रे॥
मुनि आर्यिका देव देवियाँ भाई रे।
नर पशु के सब इन्द्र मिले सुखदायी रे॥
देव कई अतिशय दिखलाते भाई रे।
करते है गुणगान हृदय हर्षाई रे॥
प्रातिहार्य वसु प्रगटित होते भाई रे।
तरु अशोक है शोक निवारी भाई रे॥
भामण्डल सिंहासन अनुपम भाई रे।
देव दुन्दुभि बजती है सुखदायी रे॥
चौंसठ चँवर ढौरते सुरपति भाई रे।
गंधोदक की वृष्टी हो सुखदायी रे॥
छत्र त्रय की शोभा कही न जाई रे।
दिव्य देशना खिरती जग सुखदायी रे॥
कमलाशन पर अधर विराजे भाई रे।
जग में अनुपम है प्रभू की प्रभुताई रे॥
सर्व कर्म का नाश किए जिनराई रे।
सिद्ध शिला पर वास किए तब भाई रे॥
जिनकी महिमा जिनवाणी में गाई रे।
सौख्य अनन्तानन्त प्रभु उपजाई रे॥
हमने भी यह शुभम् भावना भाई रे।
मुक्ति वधु को हम भी पाएँ भाई रे॥
मोक्ष मार्ग की विधि, श्रेष्ठ अपनाई रे।
आज परम यह श्रेष्ठ घड़ी शुभ आई रे॥

दोहा- **विमल नाथ के चरण में, पूरी होगी आस।**
मोक्ष महल को पाएँगे, है पूरा विश्वास॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **तव चरणों में आए हम, विमल गुणों के नाथ।**
विमल नाथ तव चरण में, विशद झुकाते माथ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

(प्रथम वलयः)

दोहा **पंच महाव्रत धारकर, पाया केवलज्ञान।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, करने निज कल्याण॥

(प्रथमवलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

दर्शन करके विमलनाथ के, मन आनन्द समाता है।
सागर में सूर्योदय होते, ज्यों नीरज खिल जाता है॥
विमल गुणों को पाने वाले, पावन है शुभ जिनका नाम।
विशद हृदय में आह्वानन् कर, करते बारम्बार प्रणाम॥

दोहा **हृदय कमल में आनकर, तिष्ठो हे भगवान्!**
सुगुण आपके प्राप्त हों, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पंच महाव्रतधारी जिन

(शम्भू छन्द)

परम अहिंसा व्रत के धारी, तीन लोक में रहे महान।
देव इन्द्र भी चरणों आकर, करते हैं जिनका गुणगान॥
श्रेष्ठ महाव्रतधारी जग में, अविकारी होते जिन संत।
कर्म घातिया नाशी होते, पूज्य लोक में जिन अर्हंत॥1॥

ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रतधारी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सत्य महाव्रत धारण करके, करते हैं जग का कल्याण।
निजानन्द रस में रत रहकर, शिवमारग पर करें प्रयाण॥
श्रेष्ठ महाव्रतधारी जग में, अविकारी होते जिन संत।
कर्म घातिया नाशी होते, पूज्य लोक में जिन अर्हंत॥2॥

ॐ ह्रीं सत्य महाव्रतधारी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

व्रत अचौर्य के धारी होकर, जन-जन का करते उपकार।
भेद ज्ञान के धारी करते, निज आतम का भी उद्धार॥
श्रेष्ठ महाव्रतधारी जग में, अविकारी होते जिन संत।
कर्म घातिया नाशी होते, पूज्य लोक में जिन अर्हंत॥3॥

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रतधारी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके, होते परम ब्रह्म में लीन।
आतम ध्यान लगाने वाले, स्वयं आप होते स्वाधीन॥
श्रेष्ठ महाव्रतधारी जग में, अविकारी होते जिन संत।
कर्म घातिया नाशी होते, पूज्य लोक में जिन अर्हंत॥4॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रतधारी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

परिग्रह त्याग अपरिग्रहधारी, करते हैं निज गुण में वास।
निज शास्वत सुख पाने वाले, करते अपने कर्म विनाश॥
श्रेष्ठ महाव्रतधारी जग में, अविकारी होते जिन संत।
कर्म घातिया नाशी होते, पूज्य लोक में जिन अर्हंत॥5॥

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रतधारी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच महाव्रत धारण करके, करते हैं कर्मों को क्षीण।
सिद्ध शिलापर जाकर पाते, सुखानन्त जो है स्वाधीन॥
श्रेष्ठ महाव्रतधारी जग में, अविकारी होते जिन संत।
कर्म घातिया नाशी होते, पूज्य लोक में जिन अर्हंत॥6॥

ॐ ह्रीं पंच महाव्रतधारी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(द्वितीय वलयः)

दोहा **पंच महाव्रत धारकर, पाया केवलज्ञान।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, करने निजकल्याण

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

दर्शन करके विमलनाथ के, मन आनन्द समाता है।
सागर में सूर्योदय होते, ज्यों नीरज खिल जाता है॥
विमल गुणों को पाने वाले, पावन है शुभ जिनका नाम।
विशद हृदय में आह्वानन् कर, करते बारम्बार प्रणाम॥

दोहा **हृदय कमल में आनकर, तिष्ठो हे भगवान्!**
सुगुण आपके प्राप्त हों, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दश धर्म के अर्घ्य

(चौपाई छंद)

अन्दर में समता उपजाई, क्रोध नहीं जो करते भाई।
उत्तम क्षमा धर्म के धारी, मुनिवर हैं जग में उपकारी॥1॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मधारी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में अहंकार न आवे, प्राणी समता भाव जगावे।
मार्दव धर्म हृदय में धारे, धर्म ध्वजा को हाथ सम्हारें॥2॥

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मप्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुटिल भाव मन में न आवे, सरल भाव प्राणी उपजावे।
आर्जव धर्म हृदय में धारें, धर्म ध्वजा को हाथ सम्हारें॥3॥

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मप्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिसके मन मूर्छा न आवे, जो संतोष भाव को पावे।
उत्तम शौच हृदय में धारें, धर्म ध्वजा को हाथ सम्हारें॥4॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मप्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कहे वचन जो मन में होवे, असत् वचन की सत्ता खोवे।
उत्तम सत्य हृदय में धारें, धर्म ध्वजा को हाथ सम्हारें॥5॥
ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मप्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इन्द्रिय मन जीते सुखदायी, प्राणी रक्षा करते भाई।
वे हैं उत्तम संयम धारी, जन-जन के हैं करुणाकारी॥6॥
ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मप्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इच्छाओं को तजने वाले, द्वादश तप को तपने वाले।
वे हैं उत्तम तप के धारी, जन जन के हैं करुणाकारी॥7॥
ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मप्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पर द्रव्यों से राग हटावें, मन में समता भाव जगावें।
उत्तम त्याग धर्म के धारी, तन मन से होते अविकारी॥8॥
ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मप्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

किंचित् मन में राग न होवे, सारी इच्छाओं को खोवे।
वह हैं आकिंचन व्रतधारी, जन जन के हैं करुणाकारी॥9॥
ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्मप्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो हैं काम भोग के त्यागी, परम ब्रह्म के हैं अनुरागी।
वे है ब्रह्मचर्य व्रतधारी, जन जन के हैं करुणाकारी॥10॥
ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य व्रतप्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चित् चेतन को ध्याने वाले, निज आतम के हैं रखवाले।
उत्तम क्षमा आदि व्रतधारी, मोक्ष महल के हैं अधिकारी॥11॥
ॐ ह्रीं उत्तम दश धर्मप्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(तृतीय वलयः)

दोहा **नाश किए हैं विमल जिन, सोलह पूर्ण कषाय।**
चार बन्ध को नाशकर, शिव पदवी को पाय॥

(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

दर्शन करके विमलनाथ के, मन आनन्द समाता है।
सागर में सूर्योदय होते, ज्यों नीरज खिल जाता है॥
विमल गुणों को पाने वाले, पावन है शुभ जिनका नाम।
विशद हृदय में आह्वानन् कर, करते बारम्बार प्रणाम॥

दोहा **हृदय कमल में आनकर, तिष्ठो हे भगवान्!**
सुगुण आपके प्राप्त हों, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सोलह कषाय रहित जिन के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

क्रोध अनन्तानुबन्धी का, नाश किए हैं श्री भगवान।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाए, सर्व जगत् में हुए महान्॥
विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं॥1॥
ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी क्रोध कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान अनन्तानुबन्धी का, तीर्थंकर जिन नाश किए।
क्षायिक दर्शन पाने वाले, सिद्ध शिला पर वास किए॥
विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥
ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी मान कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया अनन्तानुबन्धी का, नाश किए हैं श्री भगवान।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाए, सर्व जगत में हुए महान्॥

विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी माया कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ अनन्तानुबन्धी का, विमलनाथ जिन शांत किए।
क्षायिक दर्शन पाने वाले, निज कषाय उपशांत किए।।
विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी लोभ कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशव्रती बनने न देवे, क्रोध रहे अप्रत्याख्यान।
सम्यक् चारित पाने हेतू, उसका करते प्रत्याख्यान।।
विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान क्रोध कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशव्रती बनने से रोके, मान रहे अप्रत्याख्यान।
सम्यक् चारित हमें प्राप्त हो, करें मान का प्रत्याख्यान।।
विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान मान कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशव्रती बनने न देवे, माया रहे अप्रत्याख्यान।
सम्यक् चारित पाने हेतू, करते हैं हम प्रत्याख्यान।।
विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान माया कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशव्रती बनने से रोके, लोभ रहे अप्रत्याख्यान।
सम्यक् चारित्र पाने हेतू, करते हैं हम प्रत्याख्यान।।

विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान लोभ कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाव्रती होने से रोके, प्रत्याख्यान क्रोध भाई।
नाश किया है क्रोध प्रभु ने, पाई है जग प्रभुताई।।
विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान क्रोध कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाव्रती होने ना देवे, प्रत्याख्यान मान भाई।
उसको नाश किए जिन स्वामी, पाए जग में प्रभुताई।।
विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान मान कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाव्रती होने न देवे, प्रत्याख्यान माया भाई।
नाश किए माया कषाय का, पाए जग में प्रभुताई।।
विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान माया कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाव्रती होने न देवे, प्रत्याख्यान लोभ भाई।
लोभ कषाय का नाश किए जिन, पाए जग में प्रभुताई।।
विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान लोभ कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात चारित का घाती, क्रोध संज्वलन कहलाए।
उसका नाश किए जिन स्वामी, तीर्थंकर पदवी पाए।।

विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं॥13॥

ॐ ह्रीं संज्वलन क्रोध कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात चरित का घातक, मान संज्वलन कहलाए।
नाश किए हैं मान महामद, तीर्थंकर पद प्रभु पाए॥
विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं॥14॥

ॐ ह्रीं संज्वलन मान कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात चरित का घातक, माया संज्वलन कहलाए।
उसका नाश किए जिन स्वामी, तीर्थंकर पदवी पाए॥
विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं॥15॥

ॐ ह्रीं संज्वलन माया कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात चरित का घातक, लोभ संज्वलन कहलाए।
लोभ कषाय का नाश किए जिन, तीर्थंकर पद को पाए॥
विमलनाथ के श्री चरणों की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
विशदभाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं॥16॥

ॐ ह्रीं संज्वलन लोभ कषाय विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतु:बन्ध रहित जिन के अर्घ

(चौपाई)

कर्मों की प्रकृति अनुसार, बन्ध करें जो भली प्रकार।
प्रकृति बन्ध कहे भगवान, भ्रमण कराए सर्व जहान॥
बन्ध का करके पूर्ण विनाश, पाते केवल ज्ञान प्रकाश।
अर्घ्य चढ़ाते यहाँ महान, मुक्ती पाने हे भगवान!॥17॥

ॐ ह्रीं प्रकृति बन्ध विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्मों की स्थिति अनुसार, बन्ध करे सारा संसार।
स्थिति बन्ध यही है खास, पाना है उससे अवकाश॥
बन्ध का करके पूर्ण विनाश, पाते केवल ज्ञान प्रकाश।
अर्घ्य चढ़ाते यहाँ महान, मुक्ती पाने हे भगवान!॥18॥

ॐ ह्रीं स्थिति बन्ध विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्मों के फल का हो योग, जीव प्राप्त करते दुख भोग।
बन्ध कहा है यह अनुभाग, करना कर्म बन्ध का त्याग॥
बन्ध का करके पूर्ण विनाश, पाते केवल ज्ञान प्रकाश।
अर्घ्य चढ़ाते यहाँ महान, मुक्ती पाने हे भगवान!॥19॥

ॐ ह्रीं अनुभाग बन्ध विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जीव कर्म हों एकामेक, दुख पाएँ यह जीव अनेक।
यह प्रदेश कहलाए बन्ध, अब विनाश करना सम्बन्ध॥
बन्ध का करके पूर्ण विनाश, पाते केवल ज्ञान प्रकाश।
अर्घ्य चढ़ाते यहाँ महान, मुक्ती पाने हे भगवान!॥20॥

ॐ ह्रीं प्रदेश बन्ध विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा॥

सोलह नाशे प्रभू कषाय, मोक्ष महल में पहुँचे जाय।
बन्ध के भेद बताए चार, जिससे रहता है संसार॥
बन्ध का करके पूर्ण विनाश, पाते केवल ज्ञान प्रकाश।
अर्घ्य चढ़ाते यहाँ महान, मुक्ती पाने हे भगवान!॥21॥

ॐ ह्रीं षोडसकषाय एवं चतु:बन्ध विनाशक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(चतुर्थ वलय:)

दोहा- **दोष अठारह से रहित, जिन परिषहजय वान।**
कर्म घातिया नाशकर, पाते पद निर्वाण॥

(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

दर्शन करके विमलनाथ के, मन आनन्द समाता है।
सागर में, सूर्योदय होते, ज्यों नीरज खिल जाता है॥

विमल गुणों को पाने वाले, पावन है शुभ जिनका नाम।
विशद हृदय में आह्वानन् कर, करते बारम्बार प्रणाम॥

दोहा **हृदय कमल में आनकर, तिष्ठो हे भगवान्!**
सुगुण आपके प्राप्त हों, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टादश दोष रहित जिन

(चाल छन्द)

जो क्षुधा दोष के धारी, वह जग में रहे दुखारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥1॥

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो तृषा दोष को पाते, वह अतिशय दुःख उठाते।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥2॥

ॐ ह्रीं तृषा दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो जन्म दोष को पावें, मरकर के फिर उपजावें।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥3॥

ॐ ह्रीं जन्म दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है जरा दोष भयकारी, दुख देता है जो भारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥4॥

ॐ ह्रीं जरा दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विस्मय करने वाले, प्राणी हैं दुखी निराले।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥5॥

ॐ ह्रीं विस्मय दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है अरति दोष जग जाना, दुखकारी इसको माना।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥6॥

ॐ ह्रीं अरति दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रम करके जग के प्राणी, बहु खेद करें अज्ञानी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥7॥

ॐ ह्रीं खेद दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है रोग दोष दुखदायी, सब कष्ट सहें कई भाई।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥8॥

ॐ ह्रीं रोग दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जब इष्ट वियोग हो जाए, तब शोक हृदय में आए।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥9॥

ॐ ह्रीं शोक दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मद में आकर के प्राणी, करते हैं पर की हानी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥10॥

ॐ ह्रीं मद दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो मोह दोष के नाशी, होते हैं शिवपुर वासी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥11॥

ॐ ह्रीं मोह दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भय सात कहे दुखकारी, जिनकी महिमा है न्यारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥12॥

ॐ ह्रीं भय दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निद्रा से होय प्रमादी, करते निज की बरबादी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥13॥

ॐ ह्रीं निद्रा दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चिन्ता को चिता बताया, उससे ही जीव सताया।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥14॥

ॐ ह्रीं चिन्ता दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन से जब स्वेद बहाए, जो भारी दुख पहुँचाए।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥15॥

ॐ ह्रीं स्वेद दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है राग आग सम भाई, जानो इसकी प्रभुताई।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥16॥

ॐ ह्रीं राग दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिसके मन द्वेष समाए, वह भारी क्षति पहुँचाए।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥17॥

ॐ ह्रीं द्वेष दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं मरण दोष के नाशी, वह होते शिवपुर वासी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥18॥

ॐ ह्रीं मरण दोष रहिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बाईस परीषहजय युक्त जिन

(चौपाई)

क्षुधा परीषह सहने वाले, मुनिवर जग में रहे निराले।
शिवपथ के राही शुभकारी, कर्म निर्जरा करते भारी॥19॥

ॐ ह्रीं क्षुधा परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तृषा परीषह के जयकारी, मुनिवर गाये मंगलकारी।
शिवपथ के राही शुभकारी, कर्म निर्जरा करते भारी॥20॥

ॐ ह्रीं तृषा परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुश्किल शीत परीषह सहना, वस्त्र रहित सर्दी में रहना।
शिवपथ के राही शुभकारी, कर्म निर्जरा करते भारी॥21॥

ॐ ह्रीं शीत परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऊष्ण परीषह जय के धारी, मुनिवर होते हैं शुभकारी।
शिवपथ के राही शुभकारी, कर्म निर्जरा करते भारी॥22॥

ॐ ह्रीं उष्ण परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दंश मशक परिषह जो सहते, फिर भी समता भाव में रहते।
शिवपथ के राही शुभकारी, कर्म निर्जरा करते भारी॥23॥

ॐ ह्रीं दंशमशक परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नग्न परीषह सहने वाले, मुनिवर जग में रहे निराले।
शिवपथ के राही शुभकारी, कर्म निर्जरा करते भारी॥24॥

ॐ ह्रीं नग्न परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो हैं तन मन से अविकारी, वे मुनि अरति परीषह धारी।
शिवपथ के राही शुभकारी, कर्म निर्जरा करते भारी॥25॥

ॐ ह्रीं अरति परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्त्री परीषह जयकर स्वामी, शिवपथ के बनते अनुगामी।
शिवपथ के राही शुभकारी, कर्म निर्जरा करते भारी॥26॥

ॐ ह्रीं स्त्री परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चर्या परीषह जयकर भाई, मुनिवर शिव पाते सुखदायी।
शिवपथ के राही शुभकारी, कर्म निर्जरा करते भारी॥27॥

ॐ ह्रीं चर्या परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

परिषह आप निषद्या सहते, निर्विकार होकर के रहते।
शिवपथ के राही शुभकारी, कर्म निर्जरा करते भारी॥28॥

ॐ ह्रीं निषद्या परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शैय्या परीषह, जय के धारी, क्षितिशयन करते अनगारी।
शिवपथ के राही शुभकारी, कर्म निर्जरा करते भारी॥29॥

ॐ ह्रीं शैय्या परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि आक्रोश परीषह सहते, फिर भी शांत भाव से रहते।
शिवपथ के राही शुभकारी, कर्म निर्जरा करते भारी॥30॥

ॐ ह्रीं आक्रोश परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बध परिषह जयधारी गाये, अविकारी साधक कहलाए।
शिवपथ के राही शुभकारी, कर्म निर्जरा करते भारी॥31॥

ॐ ह्रीं बध परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

परिषह आप याचना सहते, नहीं किसी से कुछ भी कहते।
शिवपथ के राही शुभकारी, कर्म निर्जरा करते भारी॥32॥

ॐ ह्रीं याचना परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(छन्द मुनयानन्द की चाल)

लाभ से हीन हो, शांत भाव से रहें,
मुनि अलाभ परीषह, शांत होके सहें।
वीतरागी निर्विकार, साधु पद आइये,
अष्ट द्रव्य का अरघ, भाव से चढ़ाइये॥33॥

ॐ ह्रीं अलाभ परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रोग परीषह जय, आप धारते सही,
निर्ग्रन्थ संत की यह, श्रेष्ठ महिमा कही।
वीतरागी निर्विकार, साधु पद आइये,
अष्ट द्रव्य का अरघ, भाव से चढ़ाइये॥34॥

ॐ ह्रीं रोग परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तृण स्पर्श परीषह, जयकार जानिए,
शूल को फूल सम, जानते हैं मानिए।
वीतरागी निर्विकार, साधु पद आइये,
अष्ट द्रव्य का अरघ, भाव से चढ़ाइये॥35॥

ॐ ह्रीं तृण स्पर्श परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मल परीषह जयकार, मुनिनाथ हैं,
चरण की वन्दना में, जोड़ते हम हाथ हैं।
वीतरागी निर्विकार, साधु पद आइये,
अष्ट द्रव्य का अरघ, भाव से चढ़ाइये॥36॥

ॐ ह्रीं मल परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सत्कार पुरस्कार, परीषह धारते,
सब विकल्पों में, मन को सम्हारते।
वीतरागी निर्विकार, साधु पद आइये,
अष्ट द्रव्य का अरघ, भाव से चढ़ाइये॥37।

ॐ ह्रीं सत्कार परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रज्ञा परीषह, केधारी जो गाए हैं,
उनकी वन्दना को, आज हम आए है।

वीतरागी निर्विकार, साधु पद आइये,
अष्ट द्रव्य का अरघ, भाव से चढ़ाइये॥38॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञा परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अज्ञान परीषह, जयकार जानिए,
शांत भाव धारते हैं, मुनिराज मानिए।
वीतरागी निर्विकार, साधु पद आइये,
अष्ट द्रव्य का अरघ, भाव से चढ़ाइये॥39॥

ॐ ह्रीं अज्ञान परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अदर्शन परीषह, मुनिवर का कहा,
सहना कठिन भाई, जिसका भी रहा।
वीतरागी निर्विकार, साधु पद आइये,
अष्ट द्रव्य का अरघ, भाव से चढ़ाइये॥40॥

ॐ ह्रीं अदर्शन परिषह विजयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा **दोष अठारह से रहित, विमलनाथ भगवान।**
बाईस परीषह जय करें, अनुपम पुण्य निधान॥41॥

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित द्वाविंशति परिषह जय सहित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्य नि. स्वाहा।

(पंचम वलयः)

दोहा- **अतिशय केवलज्ञान के, पाते हैं भगवान।**
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, विशद मिटे अज्ञान॥

(पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

दर्शन करके विमलनाथ के, मन आनन्द समाता है।
सागर में सूर्योदय होते, ज्यों नीरज खिल जाता है॥
विमल गुणों को पाने वाले, पावन है शुभ जिनका नाम।
विशद हृदय में आहवानन कर, करते बारम्बार प्रणाम॥

दोहा **हृदय कमल में आनकर, तिष्ठो हे भगवान्!**
सुगुण आपके प्राप्त हों, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

छियालिस मूलगुण सहित जिन

जन्म के 10 अतिशय

(गीता छंद)

स्वेद रहित शुभदेह सुंदर, अर्हंत की पहिचानिए।
यह जन्म से अतिशय जो होता, भव्य जन ये मानिए॥
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं॥1॥

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होत न मलमूत्र जिनके, तन सुखद निर्मल रहा।
जन्म से अतिशय ये होवे, जैन आगम में कहा॥
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं॥2॥

ॐ ह्रीं नीहार रहित सहजातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समचतुष्क संस्थान जिनका, नहीं हीनाधिक रहे।
जन्म से अतिशय ये होवे, जैन आगम ये कहे॥
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं॥3॥

ॐ ह्रीं सम चतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रवृषभ नाराच प्रभु का, संहनन शुभ जानिए।
जन्म का अतिशय रहा यह, भव्य जन पहिचानिए॥
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं॥4॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभ नाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ सुगंधित और सुरभित, तन प्रभु का जानिए।
जन्म का अतिशय रहा यह, भव्य जन पहिचानिए॥
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं॥5॥

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्रेश काम कुमार आदिक, से भी सुंदर रूप है।
लोक में अतिशय सुसुंदर, प्रभू का स्वरूप है॥
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं॥6॥

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस इक अरु आठ लक्षण, देह में शुभ जानिए।
जन्म का अतिशय रहा यह, भव्य जन पहिचानिए॥
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं॥7॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभ लक्षण सहजातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत सुंदर रक्त का रंग, प्रभु के तन का रहा।
जन्म से अतिशय ये होवे, जैन आगम में कहा॥
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं॥8॥

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर अरु हित मितप्रिय, जिनदेव की वाणी रही।
जन्म का अतिशय ये जानो, विशद जिनवाणी कही॥
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं॥9॥

ॐ ह्रीं प्रियहित वचन सहजातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अनंतानंत प्रभु का, अन्य कोई में नहीं।
जन्म का अतिशय ये जानो, और नहिं मिलता कहीं॥
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं॥10॥

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान के 10 अतिशय

(शम्भू छन्द)

समवशरण लगता जिनवर का, सौ योजन तक होय सुकाल।
श्री जिनवर जी जहाँ विराजें, रहे नहीं कोई दुष्काल॥
केवल ज्ञान प्रकट होते ही, श्री जिन यह अतिशय पाते।
भक्ति भाव से भक्त चरण में, नत होकर के सिरनाते॥11॥

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्वघातिक्षय सहजातिशय धारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वच्छ गगन में गमन प्रभु का, होता मध्यम चाल में।
सुर गण मिलकर भक्ती करते, नृत्य करें हर हाल में॥
केवल ज्ञान प्रकट होते ही, श्री जिन यह अतिशय पाते।
भक्ति भाव से भक्त चरण में, नत होकर के सिरनाते1।12॥

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षय सहजातिशय धारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आसन रहे जहाँ जिनवर का, जन-जन का हितकारी है।
मार सके न कोई किसी को, महिमा विस्मयकारी है॥

केवल ज्ञान प्रकट होते ही, श्री जिन यह अतिशय पाते।
भक्ति भाव से भक्त चरण में, नत होकर के सिरनाते1।13॥

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षय सहजातिशय धारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होय नहीं उपसर्ग कभी भी, केवलज्ञानी के ऊपर।
देव पशु नर और अचेतन, चारों में कोई भूपर॥
केवल ज्ञान प्रकट होते ही, श्री जिन यह अतिशय पाते।
भक्ति भाव से भक्त चरण में, नत होकर के सिरनाते1।14॥

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षय सहजातिशय धारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षुधा रोग से पीड़ित दिखते, सारे जग के प्राणी हैं।
क्षुधा रोग को जीत लिये प्रभु, कहती ये जिनवाणी है॥
केवल ज्ञान प्रकट होते ही, श्री जिन यह अतिशय पाते।
भक्ति भाव से भक्त चरण में, नत होकर के सिरनाते1।15॥

ॐ ह्रीं कवलाहार घातिक्षय सहजातिशय धारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण में कमलासन पर, श्री जिनवर शोभा पाते।
पूर्वोत्तर मुख रहता किंतू, चतुर्दिशा में दिख जाते॥
केवल ज्ञान प्रकट होते ही, श्री जिन यह अतिशय पाते।
भक्ति भाव से भक्त चरण में, नत होकर के सिरनाते1।16॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षय सहजातिशय धारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब विद्या के ईश्वर हैं जो, सर्व लोक के ज्ञाता हैं।
भक्तों की भव बाधा हरते, सारे जग के त्राता हैं॥
केवल ज्ञान प्रकट होते ही, श्री जिन यह अतिशय पाते।
भक्ति भाव से भक्त चरण में, नत होकर के सिरनाते1।17॥

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वर घातिक्षय सहजातिशय धारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुद्गल के अणुओं से मिलकर, प्रभु तन की रचना होती।
फिर भी छाया नहीं पड़े यह, विस्मयकर घटना होती॥
केवल ज्ञान प्रकट होते ही, श्री जिन यह अतिशय पाते।
भक्ति भाव से भक्त चरण में, नत होकर के सिरनाते1।18॥

ॐ ह्रीं छाया रहित घातिक्षय सहजातिशय धारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नख अरु केश नहीं बढ़ते हैं, कभी किसी भी काल में।
कर्म घातिया नाश हुए फिर, रहें किसी भी हाल में॥
केवल ज्ञान प्रकट होते ही, श्री जिन यह अतिशय पाते।
भक्ति भाव से भक्त चरण में, नत होकर के सिरनाते1।19॥

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षय सहजातिशय धारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नेत्रों में टिमकार न होती, खुलते नहीं बंद होते।
नाशा दृष्टी रहे सदा ही, सारे योग मंद होते॥
केवल ज्ञान प्रकट होते ही, श्री जिन यह अतिशय पाते।
भक्ति भाव से भक्त चरण में, नत होकर के सिरनाते1।20॥

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद घातिक्षय सहजातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौदह देवकृत अतिशय

(चौपाई)

अर्ध मागधी भाषा होय, सब जीवों की ग्राहक सोय।
अतिशय करते हैं यह देव, जिन चरणों में आन सदैव॥21॥

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधीय भाषा देवोपनीतातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब जीवों में मैत्री भाव, समवशरण का रहे प्रभाव।
अतिशय करते हैं यह देव, जिन चरणों में आन सदैव॥22॥

ॐ ह्रीं सर्व मैत्रीभाव देवोपनीतातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षट् ऋतु के फल फूल खिलाय, प्रभु के जहाँ चरण पड़ जाँय।
अतिशय करते हैं यह देव, जिन चरणों में आन सदैव॥23॥

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपनीतातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दर्पण सम भूमी चमकाय, चरण पड़ें प्रभु के सुखदाय।
अतिशय करते हैं यह देव, जिन चरणों में आन सदैव॥24॥

ॐ ह्रीं आदर्श तल प्रतिमारत्नमही देवोपनीतातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुरभित मंद पवन सुखदाय, सब जीवों के मन को भाय।
अतिशय करते हैं यह देव, जिन चरणों में आन सदैव॥25॥

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब जीवों में आनंद होय, सुरपति नरपति वंदे सोय।
अतिशय करते हैं यह देव, जिन चरणों में आन सदैव॥26॥

ॐ ह्रीं सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कंटक रहित भूमि शुभ जान, गमन करें जँह श्री भगवान।
अतिशय करते हैं यह देव, जिन चरणों में आन सदैव॥27॥

ॐ ह्रीं वायु कुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जग में होती जय-जयकार, सुखकारी है अपरंपार।
अतिशय करते हैं यह देव, जिन चरणों में आन सदैव॥28॥

ॐ ह्रीं आकाशे जय जयकार शब्द देवोपनीतातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टी होय, देव करें सुखकारी सोय।
अतिशय करते हैं यह देव, जिन चरणों में आन सदैव॥29॥

ॐ ह्रीं मेघकुमार कृत गंधोदकवृष्टि देवोपनीतातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु के पद तल कमल रचाय, सुरगण ये महिमा दिखलाए।
अतिशय करते हैं यह देव, जिन चरणों में आन सदैव॥30॥

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अति निर्मल होवे आकाश, जन-मन हर्षित होवे खास।
अतिशय करते हैं यह देव, जिन चरणों में आन सदैव॥31॥
ॐ ह्रीं गगन निर्मल देवोपनीतातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धूम रहित हो सर्व दिशाएँ, श्री जिनवर अति शोभा पाएँ।
अतिशय करते हैं यह देव, जिन चरणों में आन सदैव॥32॥
ॐ ह्रीं सर्व दिशा निर्मल देवोपनीतातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धर्म चक्र शुभ आगे जाय, जिनवर की महिमा दिखलाय।
अतिशय करते हैं यह देव, जिन चरणों में आन सदैव॥33॥
ॐ ह्रीं धर्म चक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मंगल द्रव्य अष्ट शुभ लेय, श्री जिनकी भक्ति दर्शेय।
अतिशय करते हैं यह देव, जिन चरणों में आन सदैव॥34॥
ॐ ह्रीं अष्ट मंगल देवोपनीतातिशयधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

(चौबोला छन्द)

तरु अशोक उन्नत है निर्मल, रत्न रश्मियाँ बिखराए।
सुन्दर रूप आपका मनहर, तरुवर का आश्रय पाए॥
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाए भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान॥35॥
ॐ ह्रीं अशोक तरू सत् प्रातिहार्य सहित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रंग बिरंगी किरणों वाला, सिंहासन अद्भुत छविमान।
उस पर कंचन काया वाले, शोभा पाते हैं भगवान॥
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाए भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान॥36॥
ॐ ह्रीं सिंहासन सत् प्रातिहार्य सहित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ्र चँवर ढुरते हैं अनुपम, कुन्द पुष्प सम आभावान।
दिव्य देह शोभा पाती है, स्वर्णाभासी कांतीमान॥
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाए भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान॥37॥
ॐ ह्रीं चतुः षष्ठिचँवर सत् प्रातिहार्य सहित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चन्द्र कांति सम छत्र त्रय हैं, मणिमुक्ता वाले अभिराम।
सिर पर शोभित होते अनुपम, अतिशय दीप्तीमान ललाम॥
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाए भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान॥38॥
ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत् प्रातिहार्य सहित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उच्च स्वरों में बजने वाली, देव दुन्दुभि करती नाद।
तीन लोकवर्ति जीवों के, मन में लाती है आह्लाद॥
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाए भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान॥39॥
ॐ ह्रीं देव दुन्दुभि सत् प्रातिहार्य सहित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टी करते, देव चलाते मंद पवन।
संतानक मंदार नमेरू, आदिके बरषें श्रेष्ठ सुमन॥
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाए भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान॥40॥
ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि सत् प्रातिहार्य सहित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन लोकवर्ती उपमाएँ, जो कहने में आती हैं।
तन भामण्डल के आगे वह, सब फीकी पड़ जाती हैं॥
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाए भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान॥41॥
ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्य सहित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वर्ग मोक्ष के दिग्दर्शक हैं, हे जिनेन्द्र! तव दिव्य वचन।
तीन लोक में सत्य धर्म को, प्रगटाएँ सम्यक् दर्शन॥

केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाए भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान॥42॥
ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत् प्रातिहार्य सहित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा

अनंत चतुष्टय के अर्घ्य

(चाल टप्पा)

चक्षु दर्शनावरण आदि सब, घातक कर्म नशाई।
सकल ज्ञेय युगपद अवलोके, सद् दर्शन पाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
तीर्थंकर श्री विमलनाथ जिन, पाए प्रभुताई॥43॥
ॐ ह्रीं अनंतदर्शनगुण प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

उभय लोक षट् द्रव्य अनंता, युगपद दर्शाई।
निरावरण स्वाधीन अलौकिक, विशद ज्ञान पाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
तीर्थंकर श्री विमलनाथ जिन पाए प्रभुताई॥44॥
ॐ ह्रीं अनंतज्ञानगुण प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

दुष्ट महाबली मोह कर्म का, नाश किए भाई।
निज अनुभव प्रत्यक्ष किए जिन, समकित गुण पाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
तीर्थंकर श्री विमलनाथ जिन पाए प्रभुताई॥45॥
ॐ ह्रीं अनंतसुखगुण प्राप्त सहित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

अंतराय कर्मों ने शक्ती, आतम की खोई।
ते सब घात किये जिन स्वामी, बल असीम पाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
तीर्थंकर श्री विमलनाथ जिन पाए प्रभुताई॥46॥
ॐ ह्रीं अनंतवीर्यगुण सहित श्री विमलनाथ श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

(गीता छन्द)

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, करते प्रभु के पद नमन।
शुभ मोक्ष के मारग पे होता, शीघ्र ही उनका गमन॥

वसु कर्म अपने नाश करके, मोक्ष सुख पाते सभी।
वह शिव सुखों को प्राप्त करते, अन्त ना होता कभी॥47॥
ॐ ह्रीं षड्चत्त्वारिंशद मूलगुण प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः सर्व शांतिं कुरु-कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा- कर्म अन्त कर शिव गये, विमलनाथ भगवन्त।
जयमाला गाते यहाँ, पाने मुक्ती पंथ॥

(चौबोला छन्द)

विमलनाथ के युगल चरण में, भाव सहित करते अर्चन।
रहें भाव नित मेरे निर्मल, तीन योग से है वन्दन॥
पूर्व भवों का पुण्य उदय में, एकत्रित होकर आया।
इस भव में जो प्रभू आपने, तीर्थंकर का पद पाया॥1॥
कर्म घातिया नाश किए तब, केवलज्ञान प्रकाश किए।
इन्द्र सैकड़ों स्वर्ग से आकर, चरण कमल में ढोक दिए॥
समवशरण की रचना करके, भाव सहित जयकार किए॥
कई भव्य जीवों ने आके, जिन पद में व्रत धार लिए॥2॥
दिव्य देशना देने वाले, हित उपदेशक प्रभु कहे।
तेरहवें तीर्थंकर बनकर, तेरह विधि चारित्र लहे॥
घाती कर्म विनाश प्रभू ने, नव लब्धी को पाया है।
केवलज्ञान जगाया पहले, ज्ञानावरण नशाया है॥3॥
कर्म दर्शनावरण नशाकर, क्षायिक दर्श जगे भाई।
नाश किया दानान्तराय का, क्षायिक दान लब्धि पाई॥
अभय दान देते हैं जग को, प्राणी मात्र के उपकारी।
लाभान्तराय विनाश किए प्रभु, क्षायिक लाभ लब्धिधारी॥4॥
क्षायिक लाभ लब्धि पाकर भी, नहीं कभी उपयोग करें।
भोगान्तराय नष्ट होने पर, भोग लब्धि से सुमन झरें॥
क्षयकर के उपभोग अन्तराय, उपभोग लब्धि प्रगटाते हैं।

क्षत्र चँवर सिंहासन आदिक, परम विभूती पाते हैं।।5।।
वीर्य अन्तराय कर्म का क्षयकर, वीर्यानन्त प्रकट करते।
मोहराज को जीत प्रभु जी, क्षायिक-चारित को धरते।।
मिथ्यादिक प्रकृति की सत्ता, कर देते हैं पूर्ण विनाश।
क्षायिक सम्यक् श्रद्धा पाके, करते हैं निज गुण में वास।।6।।
सिद्ध शिला पर आप विराजे, तव स्वरूप को है वन्दन।
सिद्धानन्त गुणों के धारी, भावों से है अभिवन्दन।।
नाथ! शरण में आये हैं हम, खाली हाथ ना जाएँगे।
विमल गुणों को पाकर के प्रभु, निज सौभाग्य जगाएँगे।।7।।

दोहा- विमलनाथ के पद युगल, झुका रहे हम माथ।
विमल बनें हम भी ''विशद'', देना भव-भव साथ।।

ॐ ह्रीं विमल गुण प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा- पूर्ण ज्ञान भण्डार तुम, गुण अनन्त के कोष।
तव गुण की पूजा करें, आप यहाँ निर्दोष।।

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्याः श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्याः विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते शास्त्री नगरे 1008 श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2538 वि.सं. 2069 मासोत्तम मासे कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे तेरस दिन सोमवार वासरे श्री विमलनाथ विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

श्री विमलनाथ चालीसा

दोहा- पंच परम परमेष्ठि को, वंदन बारम्बार।
चालीसा गाते यहाँ, पाने पद अनगार।।
पूज्य हुए हैं लोक में, विमलनाथ भगवान।
भक्ति भाव से हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप रहा मनहारी, भरत क्षेत्र जिसमें शुभकारी।
अंगदेश जिसमें शुभ गाया, नगर कम्पिला श्रेष्ठ बताया।।
राजा कृतवर्मा शुभ गाये, जैनधर्म धारी कहलाए।
जयश्यामा जिनकी महारानी, जिनकी नहीं है कोई शानी।।
वंश इक्ष्वाकु जिनका गाया, जो इस जग में श्रेष्ठ बताया।
ज्येष्ठ वदी दशमी शुभकारी, प्रातःकाल की बेला प्यारी।।
शुभ नक्षत्र आपने पाया, उत्तरा भाद्रपद नाम बताया।
सहस्रार से चयकर आये, माँ के गर्भ को धन्य बनाए।।
माघ कृष्ण की चौथ बताई, मीन राशि अतिशय शुभ गाई।
बृहस्पती राशी का स्वामी, पाये हैं जिन अन्तर्यामी।।
तप्त स्वर्ण सम तन शुभ पाए, उससे भी न नेह लगाए।
साठ धनुष तन की ऊँचाई, सूकर लक्षण जानो भाई।।
वर्ष साठ लख आयू पाए, जग के भोग तुम्हें न भाए।
मेघ विनाश देखकर स्वामी, हुए आप मुक्ती पथगामी।।
शुक्ला माघ चतुर्थी जानो, सन्ध्याकाल श्रेष्ठ पहिचानो।
चलकर देव स्वर्ग से आए, साथ पालकी अपने लाए।।
उसमें प्रभु जी को बैठाए, सहस्राम्र वन चलकर आये।
जम्बू वृक्ष रहा शुभकारी, जिसके नीचे दीक्षा धारी।।
एक सहस राजा भी आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
दो उपवास आपने कीन्हे, शुभ क्षीरान्न आहार में लीन्हे।।
नृपति कनक प्रभु अनुपम गाया, आहारदाता जो कहलाया।
चन्दनपुर नगरी शुभकारी, रही पारणा नगरी प्यारी।।

उत्तम संयम प्रभु जी पाए, तप से अपने कर्म नशाए।
माघ शुक्ल षष्ठी दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया॥
इन्द्र वहाँ चलकर के आया, धन कुबेर को साथ में लाया।
चरणों आकर ढोक लगाए, समवशरण रचना करवाए॥
छह योजन विस्तार बताया, जिसमें प्रभुजी को बैठाया।
पद्मासन से बैठे स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी॥
केवलज्ञानी अनुपम गाए, साढ़े पाँच सहस्र बतलाए।
ग्यारह सौ थे पूरबधारी, समवशरण में मुनि अविकारी॥
साढ़े अड़तिस सहस निराले, शिक्षक शिक्षा देने वाले।
विपुलमती मनःपर्ययज्ञानी, रहे पाँच सौ ज्ञानी ध्यानी॥
मुनि बानवे सौ अविकारी, रहे विक्रिया ऋद्धीधारी।
अड़तालिस सौ अवधिज्ञानी, आगम वर्णित संख्या मानी॥
वादी छत्तिस सौ बतलाए, मुक्ती पथ के नेता गाए।
पचपन गणधर श्रेष्ठ बताए, गणधर प्रथम मंदरजी गाये॥
अड़सठ सहस मुनि अविकारी, साथ में प्रभु के थे शुभकारी।
एक लाख आर्यिकाएँ जानो, गणिनी प्रमुख पद्मश्री मानो॥
श्रावक शुभ दो लाख बताए, श्रोता प्रमुख स्वयंभू गाए।
यक्ष चतुर्मुख जानो भाई, यक्षी वैरोटी बतलाई॥
अनुबद्ध केवली चालिस गाए, पन्द्रह लाख वर्ष तप पाए।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह पहिले शिवगामी॥
अषाढ़ कृष्ण आठें शुभ जानो, प्रातःकाल समय पहिचानो।
गिरि सम्मेद शिखर से भाई, कूट सुवीर से मुक्ती पाई॥
जग में कई जिनबिम्ब निराले, वीतराग दर्शाने वाले।
उनके शुभ दर्शन हम पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ॥

दोहा– चालीसा पढ़ते शुभम्, दिन में चालिस बार।
सुख शांती सौभाग्य पा, पाते भव से पार॥
विमलनाथ भगवान का, करते हम गुणगान।
यही भावना है 'विशद', होय शीघ्र निर्वाण॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा

श्री 1008 विमलनाथ भगवान की आरती

(तर्ज–ॐ जय जगदीश हरे...)

ॐ जय विमलनाथ स्वामी, प्रभु विमलनाथ स्वामी।
विशद आरती करके, बने मोक्ष गामी॥
ॐ जय...

नगर कम्पिला जन्मे, सुअर चिन्ह धारी-स्वामी...
साठ लाख पूरब की आयु, पाए त्रिपुरारी॥
ॐ जय...॥1॥

सुव्रत वर्मा के सुत हो तुम, माँ श्यामा थारी-स्वामी...
साठ धनुष ऊँचा तन प्रभु का, मनहर था भारी॥
ॐ जय...॥2॥

ज्येष्ठ वदी दशमी को, गर्भ में प्रभु आए-स्वामी...
पन्द्रह माह पूर्व से धनपति, रत्न श्री बरसाए॥
ॐ जय...॥3॥

माघ शुक्ल की चौथ को, प्रभु ने जन्म लिया-स्वामी...
इन्द्रों ने मेरु पर जाके, शुभ अभिषेक किया॥
ॐ जय...॥4॥

माघ शुक्ल की चौथ प्रभु ने, तप धारण कीन्हा॥-स्वामी...
पंच महाव्रत धारे, केशलुंच कीन्हा॥
ॐ जय...॥5॥

माघ सुदी षष्ठी को, 'विशद' ज्ञान पाया-स्वामी...
समवशरण देवों ने, आकर बनवाया॥
ॐ जय...॥6॥

षष्ठी कृष्ण आषाढ़ माह की, गिरि सम्मेद गये-स्वामी...
'विशद' ध्यान के द्वारा प्रभु जी, सारे कर्म क्षये॥
ॐ जय...॥7॥

विशद
श्री अनन्तनाथ विधान
माण्डला

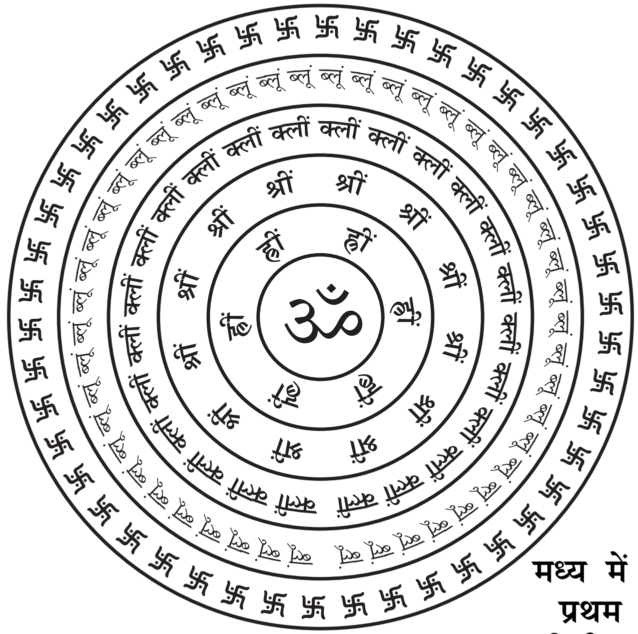

मध्य में	ॐ
प्रथम	06
द्वितीय	12
तृतीय	24
चतुर्थ	48
पंचम	46
कुल 136 अर्घ्य	

रचयिता

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागरजी महाराज

श्री अनन्तनाथ स्तवन

दोहा त्रिभुवन में जो पूज्य हैं, त्रिभुवन पति जगदीश।
तीन योग से चरण में, झुका रहे हैं हम शीश॥

(शम्मू छन्द)

अखिल विश्व के द्रव्य चराचर, ज्ञान में जिनके भाषित हैं।
निजगुण अरु पर्यायों में जो, नित्य निरन्तर शासित हैं।
सहज शुद्ध स्वरूप आपने, सहजभाव से पाया है
अक्षय सादि अनन्त अलौकिक, अनुपमधाम बनाया है॥

हरीषेण जयश्यामा माँ के गृह, नगर अयोध्या जन्म लिए।
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ती, अनन्तनाथ जी प्राप्त किए।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ॥

साढ़े पाँच योजन का सुन्दर, अनन्त नाथ का समवशरण।
तप्त स्वर्ण सम आभा तन की, छियालिस मूलगुण किए वरण॥
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार॥

आयू तीस लाख वर्षों की, अनन्तनाथ की रही महान।
धनुष पचास रही ऊँचाई, सेही प्रभू की है पहचान॥
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभू की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार॥

श्री अनन्त जिनवर के गणधर, आगम में बतलाए पचास।
'अरिष्टादि' कई अन्य मुनीश्वर, के पद में हो मेरा वास॥
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार॥

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत)

श्री अनन्तनाथ पूजा

(स्थापना)

तीर्थंकर पद के धारी हैं, गुण अनन्त जिनने पाए।
दर्श ज्ञान सुख वीर्य चतुष्टय, जिनने पावन प्रगटाए।।
श्री अनन्त जिन तीर्थंकर का, करते हम उर में आह्वान।
तीन योग से वन्दन करके, करते हम अतिशय गुणगान।।

दोहा **ज्ञान शरीरी हो गये, स्वयं सिद्ध भगवान।**
गुण अनन्त के कोष तुम, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

द्रव्य नित्य रहता अविनाशी, बनती मिटती पर्यायें।
भेद ज्ञान बिन जीव भटकते, जन्म धरें मृत्यू पायें।।
अनन्तनाथ के चरण कमल की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
हम भी शिव पद पा जाएँ यह, विशद भावना भाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन जैसा लगे हृदय में, यदि निज में उपयोग रहे।
भवाताप का नाश होय उर, ज्ञान की सरिता श्रेष्ठ बहे।।
अनन्तनाथ के चरण कमल की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
हम भी शिव पद पा जाएँ यह, विशद भावना भाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

नाशवान द्रव्यों के पीछे, अक्षय श्रद्धा को खोया।
नश्वर विषयों की आशा में, बीज कर्म का ही बोया।।
अनन्तनाथ के चरण कमल की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
हम भी शिव पद पा जाएँ यह, विशद भावना भाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

विषय भोग के दावानल में आत्म ब्रह्म गुण नाश किया।
धन्य अखण्ड ब्रह्म व्रतधारी, निज स्वरूप में वास किया।।
अनन्तनाथ के चरण कमल की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
हम भी शिव पद पा जाएँ यह, विशद भावना भाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

मोह वशी हो जड़ पदार्थ का, भोग अनन्तों बार किया।
क्षुधा शांत ना हुई कर्म का, भार स्वयं के माथ लिया।।
अनन्तनाथ के चरण कमल की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
हम भी शिव पद पा जाएँ यह, विशद भावना भाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह पतंगे नाश हेतु प्रभु, ज्ञान दीप प्रजलाते हैं।
शिव पथ के राही बनने को, नाथ शरण हम आते हैं।।
अनन्तनाथ के चरण कमल की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
हम भी शिव पद पा जाएँ यह, विशद भावना भाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

रहा पाप का उदय हमारा, पर द्रव्यों को अपनाया।
माया जाल विशद कर्मों का, नहीं समझ हमने पाया।।
अनन्तनाथ के चरण कमल की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
हम भी शिव पद पा जाएँ यह, विशद भावना भाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

काल अनादी कर्म फलों का, वेदन हम करते आये।
आज प्रबल पुण्योदय आया, तव पद श्रद्धा फल लाए।।
अनन्तनाथ के चरण कमल की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
हम भी शिव पद पा जाएँ यह, विशद भावना भाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

भोगों की अभिलाषा जागी, अर्घ्य अनेक चढ़ाए हैं।
पद अनर्घ्य पाने हे भगवन!, द्वार आपके आए हैं।।
अनन्तनाथ के चरण कमल की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
हम भी शिव पद पा जाएँ यह, विशद भावना भाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा **जिनानन्त के पद युगल, देते शांती धार।**
मोक्ष मार्ग में हे प्रभू, बनो आप आधार।। शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा **विशद ज्ञान पाके प्रभू, पाए परमानन्द।**
पुष्पांजलि करते यहां कर्मास्रव हो बन्द॥ पुष्पाजंलि क्षिपेत

पंच कल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

अनंतनाथ भगवान का, हुआ गर्भ कल्याण।
एकम् कार्तिक कृष्ण की, जयश्यामा उर आन॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ॥1॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की द्वादशी, सिंहसेन दरबार।
जन्मे प्रभू अनंत जिन, हुआ मंगलाचार॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ॥2॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छन्द)

बारस बदि ज्येष्ठ महान्, हुए प्रभु अविकारी।
श्री अनंतनाथ भगवान, बने थे अनगारी॥
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द चामर)

चैत कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम्।
श्री जिनेन्द्र अनंतनाथ, ज्ञान रूप मंगलम्॥
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्॥4॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

श्री अनंत जिन चैत अमावस, मोक्ष कई मुनियों के साथ।
गिरि सम्मेद शिखर से भगवन्, बने आप शिवपुर के नाथ॥
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभू अंतर्यामी।
हमको मुक्ती पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी॥5॥

ॐ ह्रीं चैत कृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा **चिन्मय चिंतामणि प्रभू, गुण अनन्त की खान।**
गाते हम जय मालिका, हे अनन्त! भगवान॥

(छन्द चामर)

दर्श करके आपका, यह कमाल हो गया।
अर्च के पादारविन्द, मैं निहाल हो गया॥
धन्य यह घड़ी हुई व, धन्य जन्म हो गया।
धन्य नेत्र हो गये प्रभु, धन्य शीश हो गया॥
पूज्य नाथ आप हैं, मैं पुजारी हो गया।
देशना से आपकी, मोह दूर हो गया॥
मोह व मिथ्यात्व नाथ, आज मेरा खो गया॥
आत्मा अनन्त है, अनन्त दीप्तिमान है।
गुण अनन्त की निधान, आत्म कीर्तिमान है॥
दर्शज्ञान वीर्य शुभ, अनन्त सौख्यवान है।
निर्विकार चेतना स्वरूप, की निधान है॥
आत्मज्ञान ध्यान से, सर्व कर्म नाश हो।
एक आत्म ज्ञान से, राग का विनाश हो॥
आत्म ज्ञान हीन जीव, लोक में भ्रमाएगा।
साम्यभाव हीन कभी, मोक्ष नहीं पाएगा॥
मोक्ष धाम दे यही, अन्य से न पाएगा।
स्वात्म ज्ञान ध्यान हीन, ठोकरें ही खाएगा॥
सौख्य दुख जन्म मृत्यु, शत्रु कोई मित्र हो।

लाभ या अलाभ में भी, साम्यता पवित्र हो॥
साम्य भाव प्राप्त हो, न राग न विकार हो।
कोई भी उपसर्ग हो, शत्रु का प्रहार हो॥
नाथ आप पादमूल, एक ही है चाहना।
मोक्ष मार्ग प्राप्त हो बस, और कोई चाह ना॥
कर रहे हैं आपसे हम, नाथ यही प्रार्थना।
अष्ट द्रव्य साथ ले प्रभु, कर रहे हम अर्चना॥
बार-बार हाथ जोड़, कर रहे हम वन्दना।
अष्ट कर्म का प्रभु अब, होय कभी बन्ध ना॥

दोहा- ब्रह्मा तुम विष्णु तुम्हीं, नारायण तुम राम।
तुम ही शिव जिनवर-तुम्हीं, चरणों 'विशद' प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वलयः

दोहा- छह द्रव्यों में जो करें, भाव सहित श्रद्धान।
अनुक्रम से वह जीव सब, पावें केवल ज्ञान॥

(प्रथम वलयोपरि परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

तीर्थंकर पद के धारी हैं, गुण अनन्त जिनने पाए।
दर्श ज्ञान सुख वीर्य चतुष्टय, जिनने पावन प्रगटाए॥
श्री अनन्त जिन तीर्थंकर का, करते हम उर में आह्वान।
तीन योग से वन्दन करके, करते हम अतिशय गुणगान॥

दोहा ज्ञान शरीरी हो गये, स्वयं सिद्ध भगवान।
गुण अनन्त के कोष तुम, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्त नाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अनन्त नाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री अनन्त नाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

छह द्रव्यों के अर्घ्य

(जोगीरासा छन्द)

है उपयोग 'जीव' का लक्षण, ऐसी श्रद्धा धारी।
सम्यक् दृष्टी जीव कहाए, अतिशय मंगलकारी॥
ज्ञानाचरण को पाने वाला, केवल ज्ञान जगाए।
अर्चा करने वाला जिन की, अर्हत् पदवी पाए॥1॥

ॐ ह्रीं जीव द्रव्य ज्ञायक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'पुद्गल द्रव्य' कहा है मूर्तिक, दश पर्यायों वाला।
जो सम्यक् श्रद्धान जगाए, है वह जीव निराला॥
ज्ञानाचरण को पाने वाला, केवल ज्ञान जगाए।
अर्चा करने वाला जिन की, अर्हत् पदवी पाए॥2॥

ॐ ह्रीं पुद्गल द्रव्य ज्ञायक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीव और पुद्गल द्रव्यों को, होवे चलन सहाई।
'धर्म द्रव्य' होता अमूर्त यह, श्रद्धा धारो भाई॥
ज्ञानाचरण को पाने वाला, केवल ज्ञान जगाए।
अर्चा करने वाला जिन की, अर्हत् पदवी पाए॥3॥

ॐ ह्रीं धर्म द्रव्य ज्ञायक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीव और पुद्गल द्रव्यों को रुकने हेतु सहाई।
'द्रव्य अधर्म' अचेतन गाया, यह श्रद्धा हो भाई॥
ज्ञानाचरण को पाने वाला, केवल ज्ञान जगाए।
अर्चा करने वाला जिन की, अर्हत् पदवी पाए॥4॥

ॐ ह्रीं अधर्म द्रव्य ज्ञायक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अवगाहन देता द्रव्यों को, वह 'आकाश' बताया।
ऐसी श्रद्धा धारी जिसने, उसने शिव पद पाया॥
ज्ञानाचरण को पाने वाला, केवल ज्ञान जगाए।
अर्चा करने वाला जिन की, अर्हत् पदवी पाए॥5॥

ॐ ह्रीं आकाश द्रव्य ज्ञायक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'काल द्रव्य' परिणमन, हेतु है, द्रव्यों का सहयोगी।
ऐसी श्रद्धा धारण करके, ज्ञानी बनते योगी॥

ज्ञानाचरण को पाने वाला, केवल ज्ञान जगाए।
अर्चा करने वाला जिन की, अर्हत् पदवी पाए।।6।।
ॐ ह्रीं काल द्रव्य ज्ञायक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छह द्रव्यों के साथ तत्त्व के, जो स्वरूप का ज्ञाता।
अल्प समय में रत्नत्रय पा, वह शिव पद को पाता।।
ज्ञानाचरण को पाने वाला, केवल ज्ञान जगाए।
अर्चा करने वाला जिन की, अर्हत् पदवी पाए।।7।।
ॐ ह्रीं षड् द्रव्य ज्ञायक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितिय वलय:

दोहा भाकर बारह भावना, पाते हैं वैराग्य।
वन्दन कर जिनराज पद, जगें भव्य के भाग्य।।

(द्वितिय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

तीर्थंकर पद के धारी हैं, गुण अनन्त जिनने पाए।
दर्श ज्ञान सुख वीर्य चतुष्टय, जिनने पावन प्रगटाए।।
श्री अनन्त जिन तीर्थंकर का, करते हम उर में आह्वान।
तीन योग से वन्दन करके, करते हम अतिशय गुणगान।।

दोहा ज्ञान शरीरी हो गये, स्वयं सिद्ध भगवान।
गुण अनन्त के कोष तुम, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्त नाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अनन्त नाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री अनन्त नाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

बारह भावना के अर्घ्य

(विष्णुपद छन्द)

धन परिजन गृह सम्पदादि सब, 'अध्रुव' कहलाए।
मोही प्राणी इनको, पाकर अति हर्षाए।।

ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते।।1।।
ॐ ह्रीं अनित्य भावना प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मात पिता सुत दारा भाई, 'शरण नहीं' कोई।
ज्ञानी जीव करे नित चिन्तन, इस प्रकार सोई।।
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते।।2।।
ॐ ह्रीं अशरण भावना प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यह 'संसार' असार बताया, इसमें सार नहीं।
चार गति में जाकर देखा, सुख ना मिला कहीं।।
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते।।3।।
ॐ ह्रीं संसार भावना प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जन्मे मरे अकेला प्राणी, ऋषियों ने गाया।
फिर भी पर को अपना माने, रही मोह माया।।
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते।।4।।
ॐ ह्रीं एकत्व भावना प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देहादिक सब अन्य जीव से, सत्य यही गाया।
फिर भी पर में राग लगाए, मोह की ये माया।।
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते।।5।।
ॐ ह्रीं अन्यत्व भावना प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मल से बनी देह यह मैली, नव मल द्वार बहे।
कर्मोदय से प्राणी मोहित, अपना इसे कहे।।
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते।।6।।
ॐ ह्रीं अशुचि भावना प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोहादिक के कारण प्राणी, आस्रव नित्य करें।
उसी कर्म के फल भव-भव में, अतिशय दुःख भरें।।

ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते॥7॥

ॐ ह्रीं आश्रव भावना प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुप्ति समिति व्रत पाने वाले, के संवर होवे।
लगे पूर्व के कर्म जीव के, अपने वह खोवे॥
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते॥8॥

ॐ ह्रीं संवर भावना प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म निर्जरा तप के द्वारा, होती है भाई।
अनुक्रम से शिव पद में कारण, होवे सुखदायी॥
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते॥9॥

ॐ ह्रीं निर्जरा भावना प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऊर्ध्व अधो अरु मध्य लोक यह, पुरुषाकार कहा।
कर्मोदय से प्राणी इसमें, भ्रमता सदा रहा॥
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते॥10॥

ॐ ह्रीं लोक भावना प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मिथ्या अविरति योग कषाएँ, प्राणी सब पावें।
बोधी दुर्लभ रही लोक में, जो ना प्रगटावें॥
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते॥11॥

ॐ ह्रीं बोधिदुर्लभ भावना प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भव दुख से छुटकारा देने, वाला धर्म कहा।
जिसको पाना विशद हमारा, अन्तिम लक्ष्य रहा॥
ऐसा चिन्तन करने वाले, निज को ही ध्याते।
होकर के अविकारी जग से, शिव पदवी पाते॥12॥

ॐ ह्रीं धर्म भावना प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **भावें बारह भावना, तीर्थंकर भगवान।**
संयम के पथ पर बढ़ें, पावें केवलज्ञान॥

ॐ ह्रीं द्वादश भावना प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतीय वलय:

दोहा **चौबिस परिगृह से रहित, होते जिन अर्हन्त।**
विशद ज्ञान पाके बनें, मुक्ति वधु के कंत॥

(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

तीर्थंकर पद के धारी हैं, गुण अनन्त जिनने पाए।
दर्श ज्ञान सुख वीर्य चतुष्टय, जिनने पावन प्रगटाए॥
श्री अनन्त जिन तीर्थंकर का, करते हम उर में आह्वान।
तीन योग से वन्दन करके, करते हम अतिशय गुणगान॥

दोहा **ज्ञान शरीरी हो गये, स्वयं सिद्ध भगवान।**
गुण अनन्त के कोष तुम, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चौबीस परिग्रह रहित जिन के अर्घ्य

(चौपाई)

जो 'मिथ्या' भाव जगावें, वे सत् श्रद्धा न पावें।
जो हैं मिथ्या के नाशी, होते वे शिवपुर वासी॥1॥

ॐ ह्रीं मिथ्या परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं 'क्रोध कषाय' के धारी, वह दुख पाते हैं भारी।
जो हैं कषाय जयकारी, इस जग में मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो 'मान' करें जग प्राणी, वह स्वयं उठाते हानी।
हैं मान कषाय के नाशी, वह होते शिवपुर वासी॥3॥

ॐ ह्रीं मान परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो करते 'मायाचारी', दुख सहते वह नर नारी।
जो नाशें मायाचारी, वे होते शिवपद धारी॥4॥

ॐ ह्रीं माया परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जग के सब 'लोभी' प्राणी, मानो पापों की खानी।
हैं लोभ कषाय विनाशी वे होते शिवपुरी वासी॥5॥

ॐ ह्रीं लोभ परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(तांटक छन्द)

'हास्य' कषाय करें जो प्राणी, वह दुःखों को पाते हैं।
शंकित होते हैं औरों से, निज संसार बढ़ाते हैं॥
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं हास्य नो कषाय परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'रति' उदय में जिनके आवे, वे सब राग बढ़ाते हैं।
राग आग में जलकर प्राणी, दुर्गति पंथ सजाते हैं॥
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं रति नो कषाय परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

'अरति' भाव मन में आने से, अप्रीति का भाव जगे।
बैर भाव के कारण मानव, कर्माश्रव में शीघ्र लगे॥
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं अरति नो कषाय परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कुछ भी इष्टानिष्ट देखकर, मन में 'शोक' जगाते हैं।
नित कषाय में जलने वाले, कर्म बन्ध ही पाते हैं॥
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं शोक नो कषाय परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देख कोई भयकारी वस्तू, मन में भय उपजाते हैं।
भय के कारण व्याकुल होकर, शांत नहीं रह पाते हैं॥

इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥10॥

ॐ ह्रीं भय नो कषाय परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

स्व-पर के गुण दोष देखकर, जो ग्लानी उपजाते हैं।
रहे कषाय 'जुगुप्सा' धारी, दुर्गति में ही जाते हैं॥
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥11॥

ॐ ह्रीं जुगुप्सा नो कषाय परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पुरुष जन्य जो भाव प्राप्त कर, रमने को खोजें नारी।
'पुरुष वेद' के धारी हैं वह, व्याकुल रहते हैं भारी॥
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।12॥

ॐ ह्रीं पुरुष वेद कषाय परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

स्त्री जन्य भाव पाकर के, पुरुषों में जो रमण करे।
'स्त्री वेद' प्राप्त करके वह, दुर्गति में ही गमन करे॥
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥13॥

ॐ ह्रीं स्त्री वेद कषाय परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मन में नर नारी की आशा, रखते हैं वह 'षण्ड' कहे।
करते हैं उत्पात विषय गत, भारी जो उद्दण्ड रहे॥
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥14॥

ॐ ह्रीं नपुंसक वेद कषाय परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

(छन्द भुजंगप्रयात)

खेती के मन में जो भाव जगाए,
'क्षेत्र परिग्रह' के धारी कहाए।

बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई,
जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई॥15॥

ॐ ह्रीं क्षेत्र परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कोठी महल बंगला जो बनावें,
'वास्तु परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई,
जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई॥16॥

ॐ ह्रीं वास्तु परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चाँदी की मन में जो आशा जगावें,
'परिग्रह हिरण्य' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई,
जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई॥17॥

ॐ ह्रीं हिरण्य परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोने के आभूषण आदी मंगावें,
'परिग्रह जो स्वर्ण' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई,
जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई॥18॥

ॐ ह्रीं स्वर्ण परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पशुओं के पालन में मन को लगावें,
वह 'धन परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई,
जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई॥19॥

ॐ ह्रीं धन परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

लेकर के धान्य जो कोठे भरावें,
वह 'धान्य परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई,
जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई॥20॥

ॐ ह्रीं धान्य परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सेवा के हेतू जो नौकर बुलावें
वह 'दास परिग्रह' के धारी कहावें।

बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई,
जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई॥21॥

ॐ ह्रीं दास परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्त्री से अपनी जो सेवा करावें,
वे 'दासी परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई,
जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई॥22॥

ॐ ह्रीं दासी परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कपड़े जो नये-नये लेकर कई आवें,
वे 'कुप्य परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई,
जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई॥23॥

ॐ ह्रीं कुप्य परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भांड़े या बर्तन से कोठे भरावें,
वह 'भाण्ड परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई,
जिनवर ने मुक्ती श्री श्रेष्ठ पाई॥24॥

ॐ ह्रीं भाण्ड परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बहिरंग परिग्रह के दश भेद गाए,
अभ्यन्तर के भेद चौदह बताए।
चौबिस परिग्रह के त्यागी जो भाई,
मुक्ति श्री उनके जीवन में पाई॥25॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति परिग्रह रहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा– **बारह अविरति से रहित, दोष अठारह हीन।**
समवशरण जिन शोभते, निज स्वभाव में लीन॥

(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

तीर्थंकर पद के धारी हैं, गुण अनन्त जिनने पाए।
दर्श ज्ञान सुख वीर्य चतुष्टय, जिनने पावन प्रगटाए॥

श्री अनन्त जिन तीर्थंकर का, करते हम उर में आह्वान।
तीन योग से वन्दन करके, करते हम अतिशय गुणगान॥

दोहा **ज्ञान शरीरी हो गये, स्वयं सिद्ध भगवान।**
गुण अनन्त के कोष तुम, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

बारह अविरति रहित जिन

(चौपाई)

पृथ्वी कायिक होते जीव, सहते हैं जो दुःख अतीव।
दया हीन नित करते बन्ध, अविरत त्याग बनें अर्हंत॥1॥

ॐ ह्रीं पृथ्वी कायिक अविरति विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जल कायिक हैं जल के जीव, कर्म बन्ध जो करें अतीव।
दया हीन नित करते बन्ध, अविरत त्याग बनें अर्हंत॥2॥

ॐ ह्रीं जल कायिक अविरति विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अग्नी कायिक हैं जो जीव, वह सहते हैं कष्ट अतीव।
दया हीन नित करते बन्ध, अविरत त्याग बनें अर्हंत॥3॥

ॐ ह्रीं अग्नि कायिक अविरति विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वायु कायिक जीव प्रधान, जिनको नहीं हैं निज का भान।
दयाहीन नित करते बन्ध, अविरत त्याग बनें अर्हंत॥4॥

ॐ ह्रीं वायु कायिक अविरति विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वनस्पति कायिक के जीव, जन्म मरण जो करें अतीव।
दया हीन नित करते बन्ध, अविरत त्याग बनें अर्हंत॥5॥

ॐ ह्रीं वनस्पति कायिक अविरति विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दो इन्द्रिय आदिक त्रस जीव, सारे जग में भरे अतीव।
दयाहीन नित करते बन्ध, अविरत त्याग बनें अर्हंत॥6॥

ॐ ह्रीं त्रस जीवाविरति कायिक अविरति विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

स्पर्शन इन्द्रिय के धारी, रहते हैं जो सदा विकारी।
भव सिन्धू में दुःख उठाते, तज विकार अर्हत् बन जाते॥7॥

ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रियाविरति विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रसना इन्द्रिय रही निराली, जग के विषय बढ़ाने वाली।
भव सिन्धू में दुःख उठाते, तज विकार अर्हत् बन जाते॥8॥

ॐ ह्रीं रसना इन्द्रियाविरति विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय के विषयी प्राणी, राग द्वेष करते या ग्लानी।
भव सिन्धू मे दुःख उठाते, तज विकार अर्हत् बन जाते॥9॥

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियाविरति विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चक्षू इन्द्रिय सदा लुभाए, भव में राग द्वेष उपजाए।
भव सिन्धू में दुःख उठाते, तज विकार अर्हत् बन जाते॥10॥

ॐ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय अविरति विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्णेन्द्रिय के विषय निराले, सुनकर मोह बढ़ाने वाले।
भव सिन्धू में दुःख उठाते, तज विकार अर्हत् बन जाते॥11॥

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रियाविरति विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मन मर्कट है बहु दुखदायी, मुश्किल वश में करना भाई।
भव सिन्धू में दुःख उठाते, तज विकार अर्हत् बन जाते॥12॥

ॐ ह्रीं अनिन्द्रियाविरति विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

''अष्टादश दोष रहित जिनेन्द्र''

(सखी छन्द)

जो 'क्षुधा' दोष के धारी, वह जग में रहे दुखारी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥13॥

ॐ ह्रीं क्षुधा रोग विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'तृषा' दोष को पाते, वह अतिशय दुःख उठाते।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥14॥

ॐ ह्रीं तृषा दोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'जन्म' दोष को पावें, वह मरकर फिर उपजावें।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥15॥

ॐ ह्रीं जन्मदोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है 'जरा' दोष भयकारी, दुख देता है जो भारी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥16॥

ॐ ह्रीं जरा दोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'विस्मय' करने वाले, प्राणी हैं दुखी निराले।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥17॥

ॐ ह्रीं विस्मय दोष विनाशक श्री अनन्तननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है 'अरति' दोष जग जाना, दुखकारी इसको माना।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥18॥

ॐ ह्रीं अरति दोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रम करके जग के प्राणी, बहु 'खेद' करें अज्ञानी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥19॥

ॐ ह्रीं खेद दोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है 'रोग' दोष दुखदायी, सब कष्ट सहें कई भाई।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥20॥

ॐ ह्रीं रोग दोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जब इष्ट वियोग हो जाए, तब 'शोक' हृदय में आए।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥21॥

ॐ ह्रीं शोक दोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मद' में आकर के प्राणी, करते हैं पर की हानी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥22॥

ॐ ह्रीं मददोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'मोह' दोष के नाशी, होते है शिवपुर वासी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥23॥

ॐ ह्रीं मोह दोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भय' सात कहे दुखकारी, जिनकी महिमा है न्यारी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥24॥

ॐ ह्रीं भय दोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निद्रा' से होय प्रमादी, करते निज की बरबादी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥25॥

ॐ ह्रीं निद्रा दोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चिंता' को चिता बताया, उससे ही जीव सताया।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥26॥

ॐ ह्रीं चिंता दोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तन से जब 'स्वेद' बहाए, जो भारी दुख पहुँचाए।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥27॥

ॐ ह्रीं स्वेद दोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है 'राग' आग सम भाई, जानो इसकी प्रभुताई।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥28॥

ॐ ह्रीं राग दोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिसके मन 'द्वेष' समाए, वह कमठ रूप हो जाए।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥29॥

ॐ ह्रीं 'द्वेष' दोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं मरण दोष के नाशी, वे होते शिवपुर वासी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी॥30॥

ॐ ह्रीं 'मृत्यु' दोष विनाशक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समवशरण के अष्टादश अर्घ

(सखी छन्द)

प्रभु केवलज्ञान जगाते, सुर समवशरण बनवाते।
हैं मानस्तंभ निराले, जो मान गलाने वाले॥
हम पूरव के शुभकारी, यहाँ पूज रहे मनहारी।
यह पावन अर्घ्य चढ़ाते, पद सादर शीश झुकाते॥31॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पूर्व दिशा मानस्तम्भ सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीर्थंकर केवलज्ञानी, की वाणी है कल्याणी।
हैं मानस्तभ निराले, शुभ अतिशय महिमा वाले॥
हम दक्षिण के शुभकारी, यहाँ पूज रहे मनहारी।
यह पावन अर्घ्य चढ़ाते, पद सादर शीश झुकाते॥32॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित दक्षिण दिशा मानस्तम्भ सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अर्हत की महिमा न्यारी, इस जग में मंगलकारी।
शुभ मानस्तंभ निराले, हैं मान गलाने वाले॥
हम पश्चिम के शुभकारी, यहाँ पूज रहे मनहारी।
यह पावन अर्घ्य चढ़ाते, पद सादर शीश झुकाते॥33॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पश्चिम दिशा मानस्तम्भ सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु समवशरण में सोहें, जन-जन के मन को मोहें।
सुर मानस्तंभ बनावें, जिनके सब दर्शन पावें।
हम उत्तर के शुभकारी, यहाँ पूज रहे मनहारी।
यह पावन अर्घ्य चढ़ाते, पद सादर शीश झुकाते॥34॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित उत्तर दिशा मानस्तम्भ सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

चैत्य प्रसाद भूमि है पहली, दुख दरिद्र की नाशी।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, प्राणी हों शिव वासी॥
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते।
विशद भाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते॥35॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित चैत्य प्रासाद भूमि सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भूमि खातिका है मनहारी, शांति प्रदायक भाई।
देवों द्वारा निर्मित होती, भविजन को सुखदायी॥
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते।
विशद भाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते॥36॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित खातिका भूमि सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लता भूमि तृतिय कहलाई, पुष्प लताओं वाली।
शोभा वरणी जाय ना जिसकी, देखत लगे निराली॥
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते।
विशद भाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते॥37॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित लता भूमि सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उपवन भूमि में तरुवर की, शोभा अतिशयकारी।
जिन बिम्बों से युक्त जिनालय, सोहें मंगलकारी॥
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते।
विशद भाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते॥38॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित उपवन भूमि सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दश चिन्हों से युक्त ध्वजाएँ, ध्वज भूमी में सोहें।
पवन चले लहराएँ फर-फर, भविजन का मन मोहें॥
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते।
विशद भाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते॥39॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित ध्वज भूमि सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कल्पवृक्ष भूमी है छठवीं, जो इच्छित फलदायी।
तरु शाखा पर सिद्ध बिम्बशुभ, पूज्य रहे हैं भाई।।
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते।
विशद भाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते।।40।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भवन भूमि सप्तम कहलाई, जिसमें देव विचरते।
जिन चरणों के भक्त भ्रमर जो, आकर क्रीड़ा करते।।
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते।
विशद भाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते।।41।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित भवन भूमि सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री मंडप भूमी में द्वादश, श्रेष्ठ सभाएँ आवें।
सुर नर पशु के जीव देशना, श्री जिनेन्द्र की पावें।।
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते।
विशद भाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते।।42।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री मंडप भूमि सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम पीठ रत्नों से मण्डित, समवशरण में भाई।
धर्म चक्र ले खड़े यक्ष शुभ, हो प्रसन्न सुखदायी।।
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते।
विशद भाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते।।43।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित धर्मचक्र सहिताय श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितिय पीठ मणी मुक्ता युत, श्रेष्ठ ध्वजा लहराएँ।
नव निधि मंगल द्रव्य धूप-घट, अतिशय शोभा पाएँ।।
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते।
विशद भाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते।।44।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित अष्टमंगल सहिताय श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गंध कुटी तृतिय पीठोपरि, कमलासन शुभकारी।
अधर विराजे श्री जिनवर जी, अतिशय मंगलकारी।।
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते।
विशद भाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते।।45।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंध कुटि ऊपर स्थित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

श्री अनन्तजिन दीक्षा धारे, एक सहस मुनियों के साथ।
पाकर केवल ज्ञान बने प्रभु, समवशरण लक्ष्मी के नाथ।।
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
विशद भाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं।।46।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित एक सहस्र मुनि सहिताय श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अरिष्टसेनआदिक पंचाशत, गणधर ऋषि छियासठ हज्जार।
एक लाख अरु सहस आठ शुभ, आर्यिकाएँ जानो शुभकार।।
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
विशद भाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं।।47।।

ॐ ह्रीं अरिष्ट सेनादि पञ्चाशद् गणधर ऋषि एवं आर्यिका संघ संयुक्त समवशरण स्थित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रावक रहे दो लाख चार लख, श्राविकाएँ, जिनवर के साथ।
यक्ष रहा किन्नर वैरोटी, यक्षी चरण झुकाए माथ।।
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
विशद भाव से नत होकर के, सादर शीश झुकाते हैं।।48।।

ॐ ह्रीं श्रावक श्राविका यक्ष यक्षी पूजित समवशरण स्थित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

छियालिस मूलगुणों के धारी, समवशरण के आप महीश।
गणधरादि चरणों में आके, सदा झुकावें सादर शीश।।
जिनानन्त के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
विशद भाव से पद पंकज में सादर शीश झुकाते हैं।।49।।

ॐ ह्रीं द्वादश अविरति अष्टादश दोष रहित समवशरण स्थित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचम वलय:

दोहा- **छियालिस पाए मूलगुण, जिनानन्त भगवान।**
जिनगुण पाने को यहाँ, करते हम गुणगान॥

(पंचम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(स्थापना)

तीर्थंकर पद के धारी हैं, गुण अनन्त जिनने पाए।
दर्श ज्ञान सुख वीर्य चतुष्टय, जिनने पावन प्रगटाए॥
श्री अनन्त जिन तीर्थंकर का, करते हम उर में आह्वान।
तीन योग से वन्दन करके, करते हम अतिशय गुणगान॥

दोहा **ज्ञान शरीरी हो गये, स्वयं सिद्ध भगवान।**
गुण अनन्त के कोष तुम, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जन्म के दस अतिशय

(चौपाई)

स्वेद रहित तन पाते स्वामी, तीर्थंकर जिन अन्तर्यामी।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥1॥

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

निर्मल सहज प्रभू तन पाते, जो मल मूत्र कभी ना जाते।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥2॥

ॐ ह्रीं निहार रहित सहजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रुधिर स्वेत है जिनका भाई, वात्सल्य की है प्रभुताई।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

समचतुस्र संस्थान बताया, सुन्दर जो सबके मन भाया।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥4॥

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

श्रेष्ठ संहनन प्रभू जी पाए, वज्रवृषभ नाराच कहाए।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥5॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मन मोहक है रूप निराला, जन जन का मन हरने वाला।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥6॥

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रहा सुगन्धित तन शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥7॥

ॐ ह्रीं सुगन्धित तन सहजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सहस्र आठ शुभ लक्षण धारी, तीर्थंकर जिन मंगलकारी।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥8॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभ लक्षण सहजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

बल अनन्त के धारी जानो, जन्म का अतिशय प्रभु का मानो।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥9॥

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रिय हित वचन मधुर मनहारी, प्रभू बोलते विस्मय कारी।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥10॥

ॐ ह्रीं हितमित प्रिय वचन सहजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

केवलज्ञान के दस अतिशय

(सखी छन्द)

सौ योजन सुभिक्ष हो भाई, है जिनवर की प्रभुताई।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते॥11॥

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्ट्य सूभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु होते गगन विहारी, इस जग में मंगलकारी।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते॥12॥

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु अदया भाव नशाते, शुभ दया भाव प्रगटाते।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते॥13॥

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हैं कवलहार के त्यागी, निज चेतन के अनुरागी।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते॥14॥

ॐ ह्रीं कवलाहाराभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उपसर्ग रहित जिन स्वामी, होते हैं शिवपथ गामी।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते॥15॥

ॐ ह्रीं उपसर्गाभावघातिक्षयजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हो चतुर्दिशा से भाई, जिनका दर्शन सुखदायी।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते॥16॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु विशद ज्ञान शुभ पाए, जिन विद्येश्वर कहलाए।
जब केवलज्ञान जगाते, जब यह अतिशय प्रगटाते॥17॥

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु छाया रहित निराले, हैं मूर्तिमान तन वाले।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते॥18॥

ॐ ह्रीं छाया रहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नहि नयनों में टिमकारी, नाशा दृष्टी है प्यारी।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते॥19॥

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नख केश ना वृद्धी पाते, ज्यों के त्यों रह जाते।
जब केवलज्ञान जगाते, जब यह अतिशय प्रगटाते॥20॥

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देवोपुनीत चौदह अतिशय

(छन्द हरिगीता)

भाषा है अर्धमागध, जिनराज की निराली।
जो भव्य प्राणियों को, शिव सौख्य देने वाली॥
जिनके चरण का अर्चन, सौभाग्य को बढ़ाए।
कर्मों का नाश करके, शिव राज को दिलाए॥21॥

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब प्राणियों में मैत्री का, भाव जाग जाए।
देवों के द्वारा अतिशय हो, जिन प्रभू के आए॥

जिनके चरण का अर्चन, सौभाग्य को बढ़ाए।
कर्मों का नाश करके, शिव राज को दिलाए।।22।।

ॐ ह्रीं सर्व मैत्रीभाव देवोपनीतातिशय धारक श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खिलते है फूल फल शुभ, सब ऋतु के सौख्यकारी।
आकर के देव जिन पद, अतिशय दिखाते भारी।।
जिनके चरण का अर्चन, सौभाग्य को बढ़ाए।
कर्मों का नाश करके, शिव राज को दिलाए।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपनीतातिशय धारक श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथ्वी हो रत्नमय शुभ, दर्पण समान भाई।
करते है देव मारग, जीवों को सौख्यदायी।।
जिनके चरण का अर्चन, सौभाग्य को बढ़ाए।
कर्मों का नाश करके, शिव राज को दिलाए।।24।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमसी देवोपनीतातिशय धारक श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भुजंगप्रयात छन्द)

चले श्रेष्ठ सुरभित पवन सौख्यदायी,
प्रभू के चरण की ये महिमा बताई।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभू जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।25।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपुनीतातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

परम श्रेष्ठ आनन्द पाते हैं प्राणी,
ये अतिशय भी होता कहे जैनवाणी।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभू जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वानन्दकारक देवोपुनीतातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हो भू स्वच्छ निर्मल परम सौख्यदायी,
रहे धूल कंटक जरा भी ना भाई।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभू जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।27।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपुनीतातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

करें देव गंधोदक की श्रेष्ठ वृष्टी,
हो आनन्दमय सर्वदिशा सर्व सृष्टी।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभू जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।28।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदक वृष्टि देवोपुनीतातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चरण तल कमल देव रचते है भाई,
दिखे श्रेष्ठ अनुपम परम सौख्यदायी।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभू जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।29।।

ॐ ह्रीं चरणकमलतल रचित स्वर्ण कमल देवोपुनीतातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रहित धूम से सोहें सारी दिशाएँ,
देवों कृत अतिशय से निर्मलता पाएँ।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभू जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।30।।

ॐ ह्रीं सर्वदिशा निर्मल देवोपुनीतातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गगन हो शरद कालवत स्वच्छ भाई,
है महिमा प्रभू की विशद मुक्तिदायी।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभू जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।31।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपुनीतातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

करे देव जय घोष आके निराले,
चारों निकायों के खुश होने वाले।

अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभू जी कहाते हैं अतिशय के धारी॥32॥

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपुनीतातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

धरम चक्र यक्षेन्द्र सिर पे सम्हालें,
जो खुश होके चउदिश में आगे ही चालें।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभू जी कहाते हैं अतिशय के धारी॥33॥

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपुनीतातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विशद मंगलदायी हैं द्रव्य अष्ट भाई,
ध्वजा छत्र कलशादी हैं सौख्यदायी।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभू जी कहाते हैं अतिशय के धारी॥34॥

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपुनीतातिशय धारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय

(सखी छन्द)

प्रभु ज्ञानावरण नशाते, फिर केवलज्ञान जगाते।
हम वन्दन करने आये, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥35॥

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुण प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु कर्म दर्शनावरणी, नाशे हैं भव से तरणी।
हम वन्दन करने आये, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥36॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुण प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं मोह कर्म के नाशी, जिन सुखानन्त प्रतिभासी।
हम वन्दन करने आये, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥37॥

ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुण प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु अन्तराय को नाशे, बलवीर्य अनन्त प्रकाशे।
हम वन्दन करने आये, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥38॥

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य गुण प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

(आडिल्य छन्द)

प्रातिहार्य सुर वृक्ष प्रथम जिन पाए हैं,
मरकत मणि सम जन जन के मन भाए हैं
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है॥39॥

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पुष्प वृष्टि कर देव सभी हर्षाए हैं,
तीर्थंकर की महिमा जो दिखलाए हैं।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है॥40॥

ॐ ह्रीं सुर पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौंसठ चँवर ढौरने वाले देव हैं,
तीर्थंकर प्रकृति पाते जिनदेव हैं।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है॥41॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठि चामर सत्प्रातिहार्य सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

कोटि सूर्य सम भामण्डल की कांति है,
जिन चरणों में मिटती मन की भ्रांति है।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है॥42॥

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

देव दुन्दुभी बजती मंगलकार है,
जिन महिमा का मानो यह उपहार है।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है॥43॥

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभी सत्प्रातिहार्य सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वा. स्वाहा।

तीन छत्र सिर के ऊपर दिखलाए हैं,
तीन लोक के प्रभु हैं यह बतलाए हैं।

केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है॥44॥

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सत्प्रातिहार्य सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि तिय कालों में खिरती अहा,
प्रातिहार्य यह भी इक जिनवर का रहा।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है॥45॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

सिंहासन पर जिन महिमा दिखलाए हैं,
प्रातिहार्य जिनवर के अनुपम गाए हैं।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है॥46॥

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

चौंतिस अतिशय प्रातिहार्य वसु पाए हैं,
अनन्त चतुष्टय जिनानन्त प्रगटाए हैं।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है॥47॥

ॐ ह्रीं षड् चत्त्वारिशंद् गुण सहित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जाप्य ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय: नम: स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **अनन्तनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त के कोष।**
जयमाला गाते विशद, जीवन हो निर्दोष॥

(ज्ञानोदय छन्द)

तीर्थंकर चौदहवे बनकर, इस जग का उद्धार किया।
दिव्य देशना देकर के प्रभु, नर जीवन का सार दिया॥
जीव समास मार्गणा चौदह, गुणस्थान बताए हैं।
चौदह कुलकर हुए पूर्व मे, कुल का ज्ञान कराए हैं॥1॥
तत्त्वों के श्रद्धान रहित हो, वह मिथ्यात्व कहाता है।

उपशम सम्यक् से गिरता जो, सासादन में आता है॥
गुणस्थान मिश्र है तृतिय, सम्यक् मिथ्या भाव जगे।
दधि गुड़ या चूना हल्दी सम, मिश्रित जैसा भिन्न लगे॥2॥
अविरत सम्यक् दृष्टि चौथा, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
त्रस हिंसा का त्यागी पंचम, देशव्रती कहलाता है॥
हो प्रमाद से युक्त महाव्रत, है प्रमत्त वह गुणस्थान।
अप्रमत्त होता प्रमाद बिन, ऐसा कहते हैं भगवान॥3॥
अष्टम गुणस्थान प्राप्त कर, उपशम क्षायिक श्रेणीवान।
हो परिणाम अपूर्व श्रेष्ठ शुभ, कहलाए अपूर्व गुणस्थान॥
भेद नहीं सम समय वर्ति में, अनिवृत्ती गुण कहलाए।
सूक्ष्म साम्पराय दसम गुणस्थान, सूक्ष्म लोभ युत पाए॥4॥
है उपशान्त मोह ग्यारहवाँ, मोह पूर्ण होवे उपशांत।
बारहवें गुणस्थान में भाई, पूर्ण मोह का होता अन्त॥
संयोग केवली कर्म घातिया, क्षयकर पाते गुणस्थान।
अयोग केवली योग नाशकर, चौदहवाँ पाते गुण स्थान॥5॥
गुण स्थानातीत सिद्ध जिन, सिद्ध शिला पर करते वास।
नित्य निरंजन अविनाशी हो, आत्म गुणों का करें प्रकाश॥
समवशरण में दिव्य देशना, देकर किया जगत कल्याण।
भव्य जीव जिन मार्ग प्राप्त कर, बनते अतिशय महिमावान॥6॥
अनन्तनाथ जिनवर अनन्त गुण, पाने वाले हुए महान।
शत इन्द्रों ने चरणों आकर, किया विनत होके गुणगान॥
'विशद' भाव से श्री अनन्त जिन की पूजा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित कर में लाए॥7॥

दोहा **कोटि सूर्य से भी अधिक, जिनवर ज्योर्तिमान।**
जिन अनन्त तीर्थेश हैं, गुण अनन्त की खान॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **इस अपार संसार में, आप एक आधार।**
अतः आपके पद युगल, वन्दन बारम्बार॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

श्री 1008 अनन्तनाथ भगवान की आरती

(तर्ज-आज थारी आरती उतारूँ)

श्री अनन्तनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारे थारी, मूरत निहारें॥
प्रभु कर दो विशद उद्धार, आज थारी आरती उतारें...
जयश्यामा माँ के सुत प्यारे, सिंहसेन के राजदुलारे।
जन्मे अयोध्या धाम, आज थारी आरती उतारें...॥1॥
पचास लाख पूरब की जानो, श्री जिनेन्द्र की आयु मानो।
सेही चिन्ह पहिचान, आज थारी आरती उतारें...॥2॥
पचास धनुष ऊँचाई पाए, स्वर्ण रंग तन का प्रभु पाए।
'विशद' ज्ञान के ताज, आज थारी आरती उतारें...॥3॥
कार्तिक वदी एकम को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी।
ज्येष्ठ वदी द्वादशि जन्म, आज थारी आरती उतारें...॥4॥
जेठ वदी बारस तप पाए, चैत अमावस ज्ञान जगाए।
चैत अमावस मोक्ष, आज थारी आरती उतारें...॥5॥

प्रभु के दर्शन से यह जन्म सफल हो जाता है,
आशीष से गुरुवर के श्मशान महल हो जाता है।
गुरुवाणी के एक-एक शब्द में विशद छंद छुपा है,
गुरु भक्ति का हर लफ्ज गजल हो जाता है॥

श्री अनन्तनाथ चालीसा

दोहा- **नव देवों के चरण में, वंदन बारम्बार।**
अनन्तनाथ जिनराज का, चालीसा शुभकार॥

(चौपाई)

जम्बूद्वीप रहा शुभकारी, भरत क्षेत्र जिसमें मनहारी।
जिसमें कौशल देश बताया, नगर अयोध्या पावन गाया॥
राजा सिंहसेन कहलाए, इक्ष्वाकु वंशी शुभ गाए।
जयश्यामा रानी कहलाई, शुभ लक्षण से युक्त बताई॥
अच्युत स्वर्ग से चयकर आये, पुष्पोत्तर विमान शुभ पाए।
श्री जिन माँ के गर्भ में आए, माता के सौभाग्य जगाए॥
ज्येष्ठ कृष्ण बारस शुभकारी, जन्म प्रभु पाये मनहारी।
राशि श्रेष्ठ मीन शुभ जानो, बृहस्पति स्वामी पहिचानो॥
तन का वर्ण स्वर्ण शुभ गाया, पग में सेही चिन्ह बताया।
तीस लाख वर्षों की भाई, अनन्तनाथ ने आयु पाई॥
धनुष पचास रही ऊँचाई, श्री जिनेन्द्र के तन की भाई।
पन्द्रह लाख वर्ष का स्वामी, राजभोग पाए शिवगामी॥
उल्का पतन देखकर भाई, हो विरक्त शुभ दीक्षा पाई।
शुभ नक्षत्र रेवती गाया, सांयकाल का समय बताया॥
नगर अयोध्या अनुपम जानो, सागरदत्त पालकी मानो।
आप सहेतुक वन में आए, पीपल वृक्ष श्रेष्ठ शुभ पाए॥
दीक्षा वृक्ष की शुभ ऊँचाई, छह सौ धनुष शास्त्र में गाई।
एक हजार नृपति शुभ आए, दीक्षा प्रभु के साथ में पाए॥
केशलुंच कर दीक्षा धारे, अपने सारे वस्त्र उतारे।
दो उपवास आपने कीन्हे, फिर क्षीरान्न आप शुभ लीन्हे॥
नगर अयोध्या में शुभ जानो, नृपति विशाखराज पहिचानो।
आहारदाता जो कहलाया, उसने अनुपम पुण्य कमाया॥

वन उपवन में ध्यान लगाए, दो वर्षों का समय बिताए।
कृष्णा चैत अमावस जानो, केवलज्ञान तिथि पहचानो॥
इन्द्र कुबेर आदि शुभकारी, देव चरण में आये भारी।
समवशरण रचना करवाई, खुश हो जय-जयकार लगाई॥
साढ़े पाँच योजन का भाई, मणि रत्नों का है सुखदाई।
पाँच हजार केवली गाए, पूरबधारी सहस बताए॥
साढ़े पैंतिस सहस निराले, शिक्षक शिक्षा देने वाले।
विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी, पाँच सहस्र कही जिनवाणी॥
तैंतालिस सौ अवधिज्ञानी, बत्तिस सौ वादी विज्ञानी।
आठ सहस ऋद्धि के धारी, छियासठ सहस मुनि अविकारी॥
गणधर श्रेष्ठ पचास बताए, गणधर श्री जय प्रथम कहाए।
किन्नर यक्ष रहा शुभकारी, यक्षी वैरोटी मनहारी॥
एक माह पहले जिन स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी।
गिरि सम्मेद शिखर शुभकारी, कूट स्वयंप्रभ है मनहारी॥
कृष्णा चैत अमावस जानो, अपरान्ह काल श्रेष्ठ पहिचानो।
रेवती शुभ नक्षत्र बताया, आसन कायोत्सर्ग कहाया॥
एक हजार शिष्य शुभ गाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
शुभ अनुबद्ध केवली गाये, छत्तिस आगम में बतलाये॥
वीतराग जिनकी प्रतिमाएँ, भव्यों को शिवमार्ग दिखाएँ।
जिनबिम्बों के हम गुण गाते, नत हो सादर शीश झुकाते॥

सोरठा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े सुने जो कोय।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य श्री, सुख समृद्धि होय॥
गुण अनन्त के कोष हैं, अनन्त नाथ भगवान।
उनकी अर्चा से मिले, 'विशद' शीघ्र निर्वाण॥

जाप्य ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

प्रशस्ति

दोहा

भरत क्षेत्र में जम्बू द्वीप, आरज खण्ड प्रधान।
भारत देश का हृदय जो, मध्य प्रदेश है नाम॥
नाथूराम जी जैन का, रहा कुपी में धाम।
जिला छतरपुर में शुभम्, आता है यह ग्राम॥
जिनके गृह में जन्म ले, पाया नाम रमेश।
विराग सिन्धु के चरण में, धरा दिगम्बर वेष॥
सन् उन्नीस सौ छियानवे, आठ फरवरी जान।
मुनि दीक्षा पाए विशद, करने निज कल्याण॥
दो हजार सन् पाँच की, तेरह फरवरी खास।
पद आचार्य धारा गुरु, भरत सिन्धु के पास॥
तीन लोक में श्रेष्ठ है, भारत देश महान।
राजधानी है देश की, दिल्ली श्रेष्ठ प्रधान॥
जैन धर्म का केन्द्र है, रहते जैन अनेक।
देव शास्त्र गुरु की करें, अर्चा माथा टेक॥
बीस सौ बारह का किया, पावन वर्षा योग।
शास्त्री नगर को शुभ मिला, इसका सद संयोग॥
वीर निर्वाण पच्चीस सौ, उन्तालीस शुभकार।
कार्तिक शुक्ला दशे तिथि, दिन पाया शुक्रवार॥
भक्ति भाव मन में जगा, किया प्रभु गुणगान।
अनन्त नाथ जिनराज का, लिक्खा गया विधान॥
पार्श्वनाथ जिनराज का, मंदिर बना महान।
न्यू रोहतक शुभ रोड़ पर, किया गया गुणगान॥
पर्व अठाई में यहाँ, सिद्ध चक्र का पाठ।
भक्तों ने जिन भक्ति से, किया दिनों तक आठ॥
लघु धी तथा प्रमाद से, हुई हो कोई भूल।
ज्ञानी जन उसको करें, पढ़कर के निर्मूल॥

विशद
श्री धर्मनाथ विधान
माण्डला

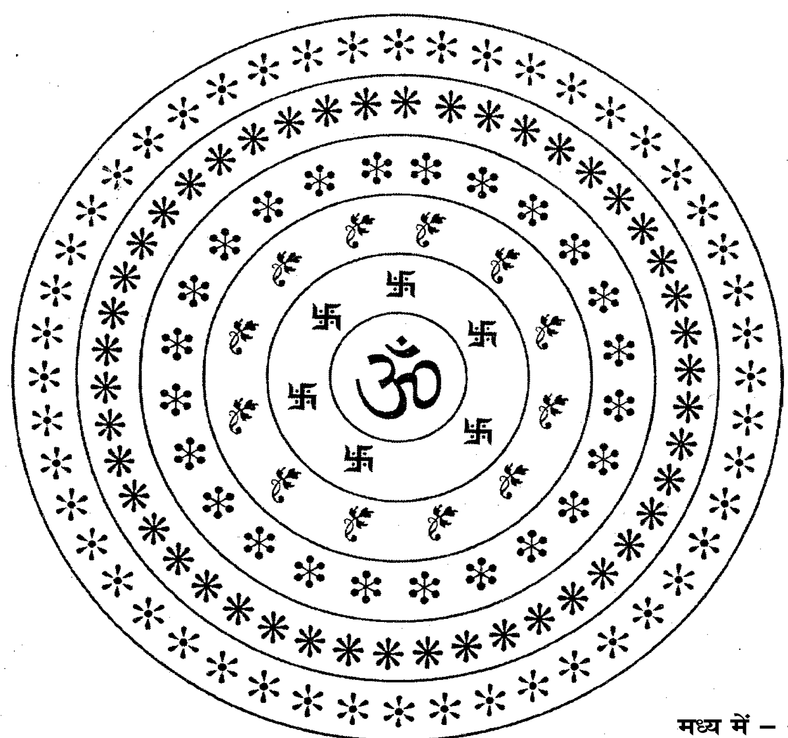

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 6 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 12 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 24 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 46 अर्घ्य
पंचम वलय में – 48 अर्घ्य
कुल 136 अर्घ्य

रचयिता

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागरजी महाराज

तीर्थंकर स्तवन

दोहा धर्मनाथ भगवान का, करते हम गुणगान।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, मिले शीघ्र निर्वाण।।

(शम्भू छन्द)

परम पवित्र श्रेष्ठ शोभामय, भवि जीवों को मंगल रूप।
नित्य निरन्तर उत्सव संयुत, परम अद्वितीय तीर्थ स्वरूप।।
अनुपम तीन लोक के भूषण धर्मनाथ की शरण मिले।
चरण कमल में श्री जिनेन्द्र के, वन्दन कर मम हृदय खिले।।1।।

मात सुव्रता भानुराय गृह, जन्मे धर्म नाथ भगवान।
रत्नपुरी को धन्य किए प्रभु, गिरि सम्मेदशिखर निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाए नाथ।
पद पंकज में 'विशद' भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।2।।

पंच योजन का समवशरण है, धर्मनाथ का अतिशयकार।
तप्त स्वर्ण सम आभा तन की, वज्रदण्ड लक्षण मनहार।।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।3।।

आयु है दश लाख वर्ष की, छियालिस मूलगुणों के नाथ।
एक सौ अस्सी हाथ प्रभु का, अवगाहन भी जानो साथ।।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभू की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा हम, वन्दन करते बारम्बार।।4।।

'अरिष्ट सेनादी' तैतालिस, धर्मनाथ के कहे गणेश।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।5।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री धर्मनाथजिन पूजन

स्थापना (वीर छन्द)

हे धर्मनाथ! हे धर्मतीर्थ!, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ।
तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ॥
तुमने मुक्ती पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन।
मम हृदय कमल के बीच कर्णिका, में आकर तिष्ठो भगवन्॥
भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भक्ति के हेतु पुकारा है।
न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

हम निर्मल जल भर लाएँ, चरणों में धार कराएँ।
जन्मादिक रोग नशाएँ, भव सागर से तिर जाएँ॥
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन यह श्रेष्ठ घिसाए, पद में अर्चन को लाए।
संसार ताप विनशाएँ, भव सागर से तिर जाएँ॥
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय अक्षत लाए, अक्षय पद पाने आए।
प्रभु अक्षय पदवी पाएँ, भव सागर से तिर जाएँ॥
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन के पुष्प मँगाए, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए।
प्रभु काम बाण नश जाए, भव से मुक्ती मिल जाए॥

जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य बनाए, हम क्षुधा नशाने आये।
प्रभु क्षुधा रोग नश जाए, भव से मुक्ति मिल जाए॥
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह नशाने आए, अनुपम यह दीप जलाए।
प्रभु मोह नाश हो जाए, भव से मुक्ति मिल जाये॥
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजी यह धूप बनाए, अग्नी से धूम उड़ाएँ।
प्रभु कर्म नाश हो जाएँ, भव सागर से तिर जाएँ॥
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विविध सरस फल लाए, ताजे हमने मँगवाए।
हम मोक्ष महाफल पाएँ, भव सागर से तिर जाएँ॥
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आठों द्रव्य मिलाए, यह पावन अर्घ्य बनाए।
हम पद अनर्घ पा जाएँ, भव सागर से तिर जाएँ॥
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा **धर्मनाथ जिन के चरण, देते शांति धार।**
अष्टकर्म का नाश कर, होवे भवदधि पार॥

(शान्तये शांतिधारा)

नाथ आप जग में रहे, सुख शांति दातार।
अतः आपके पद युगल, वंदन बारम्बार॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

पंच कल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

तेरस शुक्ल वैशाख की, मात सुव्रता जान।
जिनके उर में अवतरे, धर्मनाथ भगवान॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ॥ 1॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला त्रयोदश्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी तेरस तिथि, जन्मे धर्म जिनेन्द्र।
करते हैं अभिषेक सब, सुर-नर-इन्द्र महेन्द्र॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ॥2॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छंद)

तेरस सुदि माघ महान्, प्रभू दीक्षा धारे।
श्री धर्मनाथ भगवान, बने मुनिवर प्यारे॥
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

पौष शुक्ला पूर्णिमा को, हुए मंगलकार हैं।
धर्म जिन तीर्थेश ज्ञानी, कर्म घाते चार हैं।
जिन प्रभू की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं॥4॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल पक्ष की, धर्मनाथ जिनवर स्वामी।
गिरि सम्मेद शिखर से जिनवर, बने मोक्ष के अनुगामी॥
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभू अंतर्यामी।
हमको मुक्तिपथ दर्शाओ, बनो प्रभू मम् पथगामी॥5॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- पूजा कर जिनराज की, जीवन हुआ निहाल।
धर्मनाथ भगवान की, गातें अब जयमाल॥

(तर्ज भक्ति बेकरार है)

धर्मनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त की खान हैं।
दिव्य देशना देकर प्रभु जी, करते जग कल्याण हैं।टेक॥
सर्वार्थ-सिद्धि से चय करके, रत्नपुरी में आये जी।
मात सुव्रता भानु नृप के, गृह में मंगल छाये जी॥
धर्मनाथ भगवान...
रत्नपुरी में देवों ने कई, रत्न श्रेष्ठ वर्षाए जी।
दिव्य सर्व सामग्री लाकर, नगरी खूब सजाए जी॥
धर्मनाथ भगवान...
चौथ शुक्ल की ज्येष्ठ माह में, सारे कर्म नशाए जी।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर पदवी पाए जी॥
धर्मनाथ भगवान...

हम भी शिव पद पाने की शुभ, विशद भावना भाते जी।
तीन योग से प्रभु चरणों में, सादर शीश झुकाते जी।।
धर्मनाथ भगवान...
त्रयोदशी शुभ माघ शुक्ल की, जन्मोत्सव प्रभु पायाजी।
पाण्डुक वन में इन्द्रों द्वारा, शुभ अभिषेक कराया जी।।
धर्मनाथ भगवान...
वज्र दण्ड लख दांये पग में, नामकरण शुभ इन्द्र किया।
धर्म ध्वजा के धारी अनुपम, धर्मनाथ शुभ नाम दिया।।
धर्मनाथ भगवान...
अष्ट वर्ष की उम्र प्राप्त कर, देशव्रतों को धारा जी।
युवा अवस्था में राजा पद, प्रभु ने श्रेष्ठ सम्हारा जी।।
धर्मनाथ भगवान...
त्रयोदशी को माघ शुक्ल की, संयम पथ अपनाया जी।
पंच मुष्ठि से केश लुंचकर, रत्नत्रय शुभ पाया जी।।
धर्मनाथ भगवान...
उभय परिग्रह त्याग प्रभु ने, आतम ध्यान लगाया जी।
धर्म ध्यान कर शुक्ल ध्यान का, अनुपम शुभ फल पाया जी।।
धर्मनाथ भगवान...
चार घातिया कर्मनाश कर, केवल ज्ञान जगाया जी।
रत्नमयी शुभ समवशरण तब, इन्द्रों ने बनवाया जी।।
धर्मनाथ भगवान...
गंध कुटी में कमलासन पर, प्रभु ने आसन पाया जी।
दिव्य देशना देकर प्रभु ने, सब का मन हर्षाया जी।।
धर्मनाथ भगवान...

दोहा धर्मनाथ जी धर्म का, हमें दिखाओ पंथ।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, होय कर्म का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा रत्नत्रय की नाव से, पार करें संसार।
विशद भावना बस यही, पावें भव से पार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

प्रथम वलय

दोहा पर्याप्ति के भेद छह, पाकर के भगवान।
संयम का पालन करें, पावें पद निर्वाण।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना (वीर छन्द)

हे धर्मनाथ! हे धर्मतीर्थ!, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ।
तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ।।
तुमने मुक्ति पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन।
मम हृदय कमल के बीच कर्णिका, में आकर तिष्ठो भगवन्।।
भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भक्ति के हेतु पुकारा है।
न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पर्याप्ति धारक जिन के अर्घ्य

(चौबोला छन्द)

पर्याप्ती 'आहार' योग्य शुभ, हो शक्ति का पूर्ण विकास।
ग्रहण वर्गणाए करता है, जीव स्वयं ही करे प्रयास।।
छह पर्याप्ती पाकर जिनवर, करते हैं नित आतम ध्यान।
आत्म साधना करने वाले, पा जाते हैं पद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं आहार पर्याप्ति धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'शरीर' के योग्य शक्ति की, करें पूर्णता जीव प्रधान।
वे शरीर पर्याप्तीधारी, तन की रचना करें महान।।
छह पर्याप्ती पाकर जिनवर, करते हैं नित आतम ध्यान।
आत्म साधना करने वाले, पा जाते हैं पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं शरीर पर्याप्ति धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'इन्द्रिय' पर्याप्ति हेतु शुभ, शक्ति पूर्णता करें विशेष।
वे इन्द्रिय पर्याप्ती पाकर, इन्द्रिय सुख पावें अवशेष।।
छह पर्याप्ती पाकर जिनवर, करते हैं नित आतम ध्यान।
आत्म साधना करने वाले, पा जाते हैं पद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं इन्द्रिय पर्याप्ति धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'श्वासोच्छवास' पर्याप्ती की जो, करें पूर्णता जीव महान।
वह पर्याप्त जीव होकर के, जीवन में करते कल्याण।।
छह पर्याप्ती पाकर जिनवर, करते हैं नित आतम ध्यान।
आत्म साधना करने वाले, पा जाते हैं पद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं श्वासोच्छवास पर्याप्ति धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'भाषा' के योग्य शक्ति की, करें पूर्णता जीव सदैव।
वह भाषा पर्याप्ती पाकर, वचन बोलते प्राणी एव।।
छह पर्याप्ती पाकर जिनवर, करते हैं नित आतम ध्यान।
आत्म साधना करने वाले, पा जाते हैं पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं भाषा पर्याप्ति धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मन' पर्याप्ति योग्य शक्ति की, करें पूर्णता जीव प्रधान।
पञ्चेन्द्रिय संज्ञी प्राणी हो, करते हैं निज का कल्याण।।
छह पर्याप्ती पाकर जिनवर, करते हैं नित आतम ध्यान।
आत्म साधना करने वाले, पा जाते हैं पद निर्वाण।।6।।

ॐ ह्रीं मन पर्याप्ति धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आहारादि छह पर्याप्ति के, योग्य पूर्णता करें महान।
उत्तम संयम पालन करके, उन जीवों का हो कल्याण।।
छह पर्याप्ती पाकर जिनवर, करते हैं नित आतम ध्यान।
आत्म साधना करने वाले, पा जाते हैं पद निर्वाण।।7।।

ॐ ह्रीं छह पर्याप्ति धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितीय वलय:

दोहा द्वादश अविरति त्याग कर, हो जाएँ व्रतवान।
संयम के धारी कहे, इस जग में गुणवान।।

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना (वीर छन्द)

हे धर्मनाथ! हे धर्मतीर्थ!, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ।
तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ।।
तुमने मुक्ति पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन।
मम हृदय कमल के बीच कर्णिका, में आकर तिष्ठो भगवन्।।
भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भक्ति के हेतु पुकारा है।
न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

बारह अविरति रहित जिन

(शम्भू छन्द)

है शरीर 'पृथ्वी' जिनका, वह पृथ्वी जीव कहाते हैं।
होके विकल रहें एकेन्द्रिय, जीवन भर दुख पाते हैं।।
जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी।
शिवपुर के राही बनते जिन, हिंसा तज मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिक अविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'जल' ही है शरीर जिनका वह, जल कायिक कहलाते जीव।
मारण तापन छेदन भेदन, आदी के दुख सहें अतीव।।
जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी।
शिवपुर के राही बनते जिन, हिंसा तज मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं जलकायिक अविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अग्नि' में रहने वाले सब, जीव उष्णता जो पाते।
जलकर स्वयं जलाने वाले, कष्ट स्वयं सहते जाते।।
जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी।
शिवपुर के राही बनते जिन, हिंसा तज मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अग्निकायिक अविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वायू' जिनका है शरीर वह, वायू कायिक जीव कहे।
गर्जन तर्जन आदि के दुख, से व्याकुल वह नित्य रहे।।

जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी।
शिवपुर के राही बनते जिन, हिंसा तज मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं वायुकायिक अविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वनस्पती' में रहने वाले, एकेन्द्रिय हैं जीव अपार।
वनस्पति कायिक कहलाते, जिनके दुख का नहीं है पार॥
जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी।
शिवपुर के राही बनते जिन, हिंसा तज मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं वनस्पति कायिकअविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दो इन्द्रिय' से पंचेन्द्रिय तक, जंगम होते हैं त्रस जीव।
कर्मोदय से छेदन भेदन, के दुख पाते स्वयं अतीव॥
जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी।
शिवपुर के राही बनते जिन, हिंसा तज मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं त्रस जीवाविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्पर्शन इन्द्रिय' के भाई, आठ भेद बतलाए हैं।
जिसकी आशक्ती के कारण, जीव जगत भटकाए हैं॥
जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी।
शिवपुर के राही बनते हैं, अविरत तज मंगलकारी॥7॥

ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रियाविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पाँच भेद 'रसना इन्द्रिय' के, जीव रहें उसमें आसक्त।
लीन रहें खाने पीने में, रात होय या दिन हर वक्त॥
जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी।
शिवपुर के राही बनते हैं अविरत तज मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं रसना इन्द्रियाविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'घ्राणेन्द्रिय' के विषय कहे दो, एक सुगन्ध और दुर्गन्ध।
मधुकर सम आसक्त हुए नर, विषयों में होकर के अंध॥
जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी।
शिवपुर के राही बनते हैं अविरत तज मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय अविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चक्षु इन्द्रिय' की आशक्ती रखते हैं जो जग के जीव।
मोहित हो इन्द्रिय विषयों में कर्मबन्ध जो करें अतीव॥
जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी।
शिवपुर के राही बनते हैं अविरत तज मंगलकारी॥10॥

ॐ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय कायिकाविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कर्णेन्द्रिय' के भेद सात हैं, उनमें आशक्ती को धार।
दु:ख उठाते हैं भव-भव में, प्राणी जग के बारम्बार॥
जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी।
शिवपुर के राही बनते हैं, अविरत तज मंगलकारी॥11॥

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रियाविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कभी हिताहित का विवेक जो, जाग्रत न कर पाते हैं।
इन्द्रिय 'मन' की आशक्ती से, दु:ख अनेक उठाते हैं॥
जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी।
शिवपुर के राही बनते हैं, अविरत तज मंगलकारी॥12॥

ॐ ह्रीं अनिन्द्रियाविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्रिय प्राणी संयम पाकर, उत्तम व्रत जो धार रहे।
रत्नत्रय की निधि के स्वामी, शिव के राही जीव कहे॥
जीवों पर करुणा ना करते, होते अव्रत के धारी।
शिवपुर के राही बनते हैं, अविरत तज मंगलकारी॥13॥

ॐ ह्रीं इन्द्रिय संयमाविरति विनाशक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

तृतीय वलय:

सोरठा भेद कहे चौबीस, परिग्रह के दुखकार ये।
चरण झुकाते शीश, धर्मनाथ जिन के चरण।

(तृतीय वल्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

स्थापना (वीर छन्द)

हे धर्मनाथ! हे धर्मतीर्थ!, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ।
तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ॥
तुमने मुक्ति पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन।
मम हृदय कमल के बीच कर्णिका, में आकर तिष्ठो भगवन्॥

भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भक्ती के हेतु पुकारा है।
न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

24 परिग्रह रहित जिन के अर्घ्य

(चौपाई)

जो 'मिथ्या' भाव जगावें, वे सत् श्रद्धा न पावें।
जो है मिथ्यात्व के धारी, वह दुख पाते हैं भारी।।1।।

ॐ ह्रीं मिथ्या परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो हैं 'कषाय' जयकारी, इस जग में मंगलकारी।
हैं क्रोध कषाय के धारी, वह दुख पाते हैं भारी।।2।।

ॐ ह्रीं कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'मान' करें जग प्राणी, वह स्वयं उठाते हानी।
हैं मान कषाय के धारी, वह दुख पाते हैं भारी।।3।।

ॐ ह्रीं मान परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो करते 'मायाचारी', दुख सहते वह नर नारी।
हैं माया कषाय के धारी, वह दुख पाते हैं भारी।।4।।

ॐ ह्रीं माया परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जग के सब 'लोभी' प्राणी, मानो पापों की खानी।
हैं लोभ कषाय के धारी, वह दुख पाते हैं भारी।।5।।

ॐ ह्रीं लोभ परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(तांटक छन्द)

'हास्य' कषाय करें जो प्राणी, वह दुःखों को पाते हैं।
शंकित होते हैं औरों से, निज संसार बढ़ाते हैं।।

इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं हास्य नो कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'रति' उदय में जिनके आवे, वे सब राग बढ़ाते हैं।
राग आग में जलकर प्राणी, दुर्गति पंथ सजाते हैं।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं रति नो कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अरति' भाव मन में आने से, अप्रीति का भाव जगे।
बैर भाव के कारण मानव, कर्माश्रव में शीघ्र लगे।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अरति नो कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कुछ भी इष्टानिष्ट देखकर, मन में 'शोक' जगाते हैं।
नित कषाय में जलने वाले, कर्म बन्ध ही पाते हैं।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं शोक नो कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

देख कोई भयकारी वस्तु, मन में भय उपजाते हैं।
भय के कारण व्याकुल होकर, शांत नहीं रह पाते हैं।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं भय नो कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्व-पर के गुण दोष देखकर, जो ग्लानी उपजाते हैं।
रहे कषाय 'जुगुप्सा' धारी, दुर्गति में ही जाते हैं।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं जुगुप्सा नो कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पुरुष जन्य जो भाव प्राप्त कर, रमने को खोजें नारी।
'पुरुष वेद' के धारी हैं वह, व्याकुल रहते हैं भारी॥
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।12॥

ॐ ह्रीं पुरुष वेद कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्त्री जन्य भाव पाकर के, पुरुषों में जो रमण करें।
'स्त्री वेद' प्राप्त करके वह, दुर्गति में ही गमन करें॥
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥13॥

ॐ ह्रीं स्त्री वेद कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मन में नर नारी की आशा, रखते हैं वह 'षण्ड' कहे।
करते हैं उत्पात विषय गत, भारी जो उद्दण्ड रहे॥
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं॥14॥

ॐ ह्रीं नपुंसक वेद कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(छन्द भुजंगप्रयात)

खेती के मन में जो भाव जगाए, 'क्षेत्र परिग्रह' के धारी कहाए।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई॥15॥

ॐ ह्रीं क्षेत्र परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कोठी महल बंगला जो बनावें, 'वास्तु परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई॥16॥

ॐ ह्रीं वास्तु परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चाँदी की मन में जो आशा जगावें, 'परिग्रह हिरण्य' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई॥17॥

ॐ ह्रीं हिरण्य कषाय परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सोने के आभूषण आदी मंगावें, 'परिग्रह जो स्वर्ण' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई॥18॥

ॐ ह्रीं स्वर्ण परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पशुओं के पालन में मन को लगावें, वह 'धन परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई॥19॥

ॐ ह्रीं धन परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लेकर के धान्य जो कोठे भरावें, वह 'धान्य परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई॥20॥

ॐ ह्रीं धान्य परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सेवा के हेतु जो नौकर बुलावें, वह 'दास परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई॥21॥

ॐ ह्रीं दास परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्त्री से अपनी जो सेवा करावें, वे 'दासी परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई॥22॥

ॐ ह्रीं दासी परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कपड़े जो नये-नये कइ लेकर के आवें, वे 'कुप्य परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई॥23॥

ॐ ह्रीं कुप्य परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भाड़े या बर्तन से कोठे भरावें, वह 'भाण्ड परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई॥24॥

ॐ ह्रीं भाण्ड परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा परिग्रह चौबिस का प्रभु, करके पूर्ण विनाश।
शिवपथ के राही बने, कीन्हे शिवपुर वास॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति परिग्रह रहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

चतुर्थ वलय:

दोहा छियालिस पाए मूलगुण, धर्मनाथ भगवान।
पुष्पाञ्जलि करके यहाँ, करते हम गुणगान॥

(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना (वीर छन्द)

हे धर्मनाथ! हे धर्मतीर्थ!, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ।
तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ॥

तुमने मुक्ति पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन।
मम हृदय कमल के बीच कर्णिका, में आकर तिष्ठो भगवन्॥
भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भक्ति के हेतु पुकारा है।
न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जन्म के अतिशय

(नरेन्द्र छन्द)

'स्वेद रहित' तन जानो अनुपम, जन-जन का मन मोहे।
प्रभु के जन्म समय से अतिशय, शुभ तन में यह सोहे।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥1॥

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गर्भ से जन्मे हैं माता के, फिर भी निर्मल गाये।
'मल मूत्रादि रहित' देह प्रभु, अतिशय पावन पाये।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥2॥

ॐ ह्रीं निहार मूत्रादि रहित सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तन का 'रुधिर श्वेत' है अनुपम, अतिशय पावन गाया।
रुधिर लाल नहि यह शुभ अतिशय, जन्म समय का पाया॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥3॥

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तन सुडोल आकार मनोहर, 'सम चतुष्क' बतलाया।
जिस अवयव का माप है जितना, उतना ही मन भाया।

सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥4॥

ॐ ह्रीं सम चतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वज्र वृषभ नाराच' संहनन, जिनवर तन में पाते।
गणधरादि नित हर्षित मन से, प्रभु का ध्यान लगाते॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥5॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कामदेव का रूप लजावे, जिन प्रभु तन के आगे।
'अतिशय रूप' मनोहर प्रभु का, देखत में शुभ लागे॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥6॥

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

परम 'सुगंधित तन' है प्रभु का, अनुपम महिमाकारी।
अन्य सुरभि नहिं है इस जग में, प्रभु तन सम मनहारी॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥7॥

ॐ ह्रीं परम सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'एक हजार आठ शुभ लक्षण', प्रभु के तन में सोहे।
अद्भुत महिमाशाली जिनवर, त्रिभुवन का मन मोहे॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥8॥

ॐ ह्रीं सह।।ष्ट शुभ लक्षण सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तुलना रहित 'अतुल बल' प्रभु के, अतिशय तन में गाया।
इन्द्र चक्रवर्ति से अद्भुत, शक्ती मय बतलाया।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥9॥

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'हित मितप्रिय वचन' अमृत सम, प्रभु के होते भाई।
त्रिभुवन के प्राणी सुनते हैं, मंत्र मुग्ध सुखदायी॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥10॥

ॐ ह्रीं प्रियहित वचन सहजातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

केवलज्ञान के अतिशय

(रोला छन्द)

'चार-चार सौ कोष', चारों दिश में गाया।
होय सुभिक्ष सुकाल, यह अतिशय प्रभु पाया॥
यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥11॥

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पाते केवल ज्ञान, 'नभ में गमन' करे हैं।
देव रचावें पुष्प, तिन पर चरण धरे हैं।
यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥12॥

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जहाँ गमन प्रभु होय, प्राणी 'वध न' होवे।
दया सिन्धु जिन देव, जग की जड़ता खोवे॥
यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥13॥

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कवलाहार विहीन' रहते हैं, जिन स्वामी।
कुछ कम कोटि पूर्व रहें, जिन अन्तर्यामी॥
यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥14॥

ॐ ह्रीं कवलाहार रहित घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हो 'उपसर्गाभाव', अतिशय यह शुभकारी।
सुर नर पशू अजीव कृत उपसर्ग निवारी॥

यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥15॥

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समवशरण में देव, 'चउ दिश दर्शन' देवें।
मुख पूरब में होय सबका, दुख हर लेवें॥
यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥16॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सब विद्या के एक, ईश्वर' आप कहाए।
तुम्हें पूजते भव्य, ज्ञान कला प्रगटाए॥
यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥17॥

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वर घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

परमौदारिक देह पुद्‌गलमय, प्रभु पाए।
फिर भी 'छाया हीन' अतिशय, यह प्रगटाए॥
यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥18॥

ॐ ह्रीं छाया रहित अतिशय घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पलक झपकती नाहिं,' न ही हो टिमकारी।
सौम्य दृष्टि नाशाग्र, लगती अतिशय प्यारी॥
'यह अतिशय हे नाथ!' जन-जन के मन आवे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥19॥

ॐ ह्रीं अक्ष स्पंद रहित घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नहीं बढ़ें नख केश, केवल ज्ञानी होते।
दिव्य शरीर विशेष, मन का कल्मष खोते।
यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन आवे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥20॥

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

(छन्द जोगीरासा)

भाषा है 'सर्वार्धमागधी', जिन अतिशय शुभकारी।
भव-भव के दुख हरने वाली, भव्यों को सुखकारी॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥21॥

ॐ ह्रीं अर्धमागधी भाषाधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बैर भाव सब तज देते हैं, जाति विरोधी प्राणी।
'मैत्री भाव' बढ़े आपस में, जिन मुद्रा कल्याणी॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥22॥

ॐ ह्रीं सर्व मैत्री भावधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सब ऋतु के फल फूल' खिलें शुभ, एक साथ मनहारी।
कई योजन तक होवे ऐसा, अतिशय अद्‌भुत भारी॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥23॥

ॐ ह्रीं सर्वऋतुफलादि तरू देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रत्नमयी पृथ्वी 'दर्पण तल सम', होवे अतिशयकारी।
प्रभु के विहरण हेतु रचना, करें देवगण सारी॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥24॥

ॐ ह्रीं आदर्श तल प्रतिमा रत्नमई देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वायुकुमार देव विक्रिया कर, 'शीतल पवन' चलावें।
हो अनुकूल वायु विहार में, ये अतिशय प्रगटावें।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥25॥

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

परमानन्द प्राप्त कर प्राणी, जिन प्रभु के गुण गाते।
भय संकट क्लेशादि रोग सब, मन में नहीं सताते॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥26॥

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुखद वायु चलने से 'धूलि, कंटक न' रह पावें।
प्रभु विहार के समय देवगण, भूमी स्वच्छ बनावे॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥27॥

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मेघ कुमार करें नित वृष्टि, गंधोदक की भाई।
इन्द्रराज की आज्ञा से हो, यह प्रभू की प्रभुताई॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥28॥

ॐ ह्रीं मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्वर्ण कमल' की रचना सुरगण, श्री विहार में करते।
चरण कमल में नत मस्तक हो, अपना मस्तक धरते॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥29॥

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य मंगल मय पावन, सुरगण जहाँ सजाते
देवों कृत अतिशय यह सुन्दर, सबको सुखी बनाते॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥30॥

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शरद ऋतू सम स्वच्छ सुनिर्मल, गगन होय मनहारी।
उल्कापात धूम्र आदिक से, रहित होय शुभकारी॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥31॥

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपनीतिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शरद मेघ सम सर्व दिशाएँ, होवें जन मनहारी।
रोगादिक पीड़ाएँ हरते, देव सभी की सारी॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥32॥

ॐ ह्रीं आकाश गमन देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चतुर्निकाय के देव शीघ्र ही, प्रभु भक्ति को आओ।
इन्द्राज्ञा से देव बुलाते, आकर प्रभु गुण गाओ॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥33॥

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'धर्म चक्र' ले यक्ष इन्द्र शुभ, आगे आगे जावें।
चार दिशा में दिव्य चक्र ले, मानो प्रभु गुण गावें॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥34॥

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशयधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय

(चाल छन्द)

'दर्शन अनन्त' गुण पाए, प्रभु लोकालोक दर्शाए।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥35॥

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन सहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु ज्ञानावरणी नाशे, फिर 'केवल ज्ञान' प्रकाशे
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥36॥

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान सहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु मोह कर्म के नाशी, जिनवर 'अनन्त सुखराशी'।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥37॥

ॐ ह्रीं अनन्तसुख सहित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

न अन्तराय रह पावे, प्रभु 'वीर्यानन्त' प्रगटावें।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥38॥

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य सहिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(अष्ट प्रातिहार्य)

(नरेन्द्र छन्द)

शत इन्द्रों से अर्चित अर्हत्, प्रातिहार्य वसु पाये।
'तरु अशोक' शुभ प्रातिहार्य जिन, विशद आप प्रगटाये॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥39॥

ॐ ह्रीं तरु अशोक सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वा.।

सघन 'पुष्प की वृष्टी' करके, नभ में सुर हर्षाते।
ऊर्ध्वमुखी हो पुष्प बरसते, जिन महिमा दिखलाते॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥40॥

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वा.।

देव शरण में हुए अलंकृत, 'चौसठ चँवर' ढुराते।
श्वेत चवर ये नम्रभूत हो, विनय पाठ सिखलाते॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥41॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि चंवर सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वा.।

घाति कर्म का क्षय होते ही, भामण्डल प्रगटावे।
कोटि सूर्य की कांति जिसके, आगे भी शर्मावे॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥42॥

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वा.।

आओ-आओ जग के प्राणी, देव जगाने आये।
श्रेष्ठ 'दुन्दुभि' के द्वारा शुभ, वाद्य बजा के गाये॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥43॥

ॐ ह्रीं देव दुंदुभि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वा.।

तीन लोक के ईश प्रभु हैं, 'तीन छत्र' बतलाते।
गुरु लघुतम लघु छत्र ऊर्ध्व में, धवल कांति फैलाते॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥44॥

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वा.।

अर्हत् के 'गम्भीर वचन' शुभ, प्रमुदित होकर पाते।
मोह महातम हरने वाले, सभी समझ में आते॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥45॥

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वा.।

समवशरण के मध्य रत्नमय, 'सिंहासन' मनहारी।
कमलासन पर अधर विराजे, अर्हत जिन त्रिपुरारी॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥46॥

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा छियालिस पाए मूलगुण, धर्मनाथ भगवान।
यह गुण पाने के लिए, करते हम गुणगान॥47॥

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशद गुण सहिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचम वलय:

दोहा अड़तालिस यह ऋद्धियाँ, पाते जिन अरहंत।
पुष्पाञ्जलि करते चरण, पाने भव का अंत॥

(पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना (वीर छन्द)

हे धर्मनाथ! हे धर्मतीर्थ!, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ।
तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ॥
तुमने मुक्ति पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन।
मम हृदय कमल के बीच कर्णिका, में आकर तिष्ठो भगवन्॥
भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भक्ति के हेतु पुकारा है।
न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

48 ऋद्धियों के अर्घ्य

(चौपाई)

केवल बुद्धि ऋद्धि के धारी, चार घातिया नाशनहारी।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं केवल बुद्धि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उत्तम तप जिन मुनिवर पाते, देशावधि मुनि ज्ञान जगाते।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं देशावधि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

परमावधि ज्ञान प्रगटावें, फिर निज केवलज्ञान जगावें।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं परमावधि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्वावधी ज्ञान के धारी, केवल ज्ञानी हों शिवकारी।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वावधी ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अनन्तावधि मुनिवर जी पाएँ, परम विशुद्धी हृदय जगाएँ।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥5॥
ॐ ह्रीं अनन्तावधि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बीज बुद्धि ऋद्धीधर गाये, बीज भूत सब ज्ञान जगाए।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥6॥
ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पदानुसारिणी ऋद्धीधारी, जाने सब आगम अनगारी।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥7॥
ॐ ह्रीं पदानुसारिणी ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

संभिन्न संश्रोतृ ऋद्धीधर भाई, जाने सब भाषा सुखदायी
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥8॥
ॐ ह्रीं संभिन्न संश्रोतृ ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्वयंबुद्ध ऋद्धी जो पाएँ, निज आतम का ज्ञान जगाएँ।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥9॥
ॐ ह्रीं स्वयं बुद्ध ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रत्येक बुद्ध ऋद्धीधर ज्ञानी, पाएँ संयमादि कल्याणी।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥10॥
ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बोधित बुद्ध ऋद्धि शुभ पाते, आगम में निज बोधि जगाते।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥11॥
ॐ ह्रीं बोधित बुद्ध ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऋजुमति ज्ञानी शुभकारी, सरल भाव जानें अनगारी।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥12॥
ॐ ह्रीं ऋजुमति ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

विपुलमती ऋद्धी शुभ पाते, आगम से निज बोधि जगाते।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥13॥
ॐ ह्रीं विपुल मति ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कोष्ठ बुद्धि ऋद्धी जो पावें, भिन्न-भिन्न सब विषय बतावें।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥14॥
ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दश पूर्वित्व ऋद्धिधर गाये, विद्याओं की चाह भुलाए।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥15॥
ॐ ह्रीं दश पूर्वित्व ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चौदह पूरवधर श्रुत पावें, ऋद्धी से प्रत्यक्ष जगावें।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते॥16॥
ॐ ह्रीं चौदह पूर्व ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(बारहमासा चाल)

ज्योतिष आदिक लक्षण जाने, निमित्त ऋद्धि के धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥17॥
ॐ ह्रीं ज्योतिष चारण ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
बहु विधि अणिमादिक ऋद्धि शुभ, पाए विक्रिया धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥18॥
ॐ ह्रीं अणिमादिक ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
भूमी जल जन्तू आदिक का, घात न हो मुनि द्वारा जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥19॥
ॐ ह्रीं भूचारण ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
पग छूते ही चलें गगन में, चारण ऋद्धीधारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥20॥
ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
खग सम चलें गगन में मुनिवर, गगन चारिणी धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धि पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥21॥
ॐ ह्रीं गगनचारिणी ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
वाद कुशल को करें पराजित, परामर्श ऋद्धीधर जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥22॥
ॐ ह्रीं परामर्ष ऋद्धि धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

विष को अमृत करें ऋद्धि से, आशीनिर्विष धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥23॥

ॐ ह्रीं आशी निर्विष ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

विष का करें विनाश देखते, दृष्टी निर्विषधारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥24॥

ॐ ह्रीं दृष्टी निर्विष ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उग्र सुतप की करें साधना, मुनिवर ऋद्धी धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥25॥

ॐ ह्रीं उग्र सुतप ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बढ़े देह की कांती अनुपम, दीप्त ऋद्धि के द्वारा जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥26॥

ॐ ह्रीं दीप्त सुतप ऋद्धि धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चन्द्र कला सम बढ़े साधना, तप्त सुतप के द्वारा जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥27॥

ॐ ह्रीं तप्त सुतप ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वृद्धिंगत नित करें साधना, ऋद्धि महातप द्वारा जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥28॥

ॐ ह्रीं महातप ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गिरि सरिता तट करें साधना, ऋद्धि घोर तप द्वारा जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥29॥

ॐ ह्रीं घोर तप ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वन में निर्विकार हो तिष्ठें, ऋद्धि पराक्रम धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥30॥

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

महागुणों को पाने वाले, ऋद्धि घोर गुण धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥31॥

ॐ ह्रीं घोर गुण ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

काम विजय को पाने वाले, ऋद्धि ब्रह्मचर्य धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी॥32॥

ॐ ह्रीं घोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(भुजंगप्रयात)

आमर्ष औषधि जिन सिद्ध पाए।
सकल रोग स्पर्श करते नशाए॥
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥33॥

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

क्ष्वेलौषधि श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
बने क्ष्वेल औषधि है ऋद्धी सुखारी।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥34॥

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

विडौषधि जिन्हें प्राप्त ऋद्धि है भाई।
बने मूत्र औषधि शुभम् सौख्यदायी।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥35॥

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बने जल्ल औषधि मुनि तन का प्यारा।
ऋद्धी का पाया है जिनने सहारा॥
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥36॥

ॐ ह्रीं जल्ल औषधि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

करे मुनि को स्पर्श वायु बहाए।
तभी रोग वायु सभी के नशाए॥
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥37॥

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मन बल बढ़ाते हैं मुनि ऋद्धिधारी।
करें श्रुत का चिन्तन मुहूरत में भारी॥
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥38॥

ॐ ह्रीं मन बल ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वचन बल करें प्राप्त ऋद्धी के धारी।
करें श्रुत का वर्णन मुहूरत में भारी॥

सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥39॥

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि काय बल ऋद्धि धारी जो होते।
वे श्रम खेद तन की थकावट के खोते॥
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥40॥

ॐ ह्रीं काय बल ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि क्षीर ।॥वि शुभ ऋद्धि जो पावें।
विरस भोज को क्षीर सम जो बनावें॥
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥41॥

ॐ ह्रीं क्षीर ।॥वी ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बने रुक्ष आहार रसदार भाई।
मुनि सर्पि ।॥वी के कर सौख्यदायी॥
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥42॥

ॐ ह्रीं सर्पि ।॥वी ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मधु॥वि के हाथ में रुक्ष आहार।
मधु सम मधुर, हो शुभ ऋद्धि के आधार॥
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥43॥

ॐ ह्रीं मधु॥वि ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि अमृत॥वि हैं ऋद्धी के धारी।
बने रुक्ष आहार, अमृत सा भारी॥
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥44॥

ॐ ह्रीं अमृत।॥वि ऋद्धि धारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जहाँ जीमते ऋद्धि अक्षीण धारी।
बढ़े श्रेष्ठ आहार अक्षय हो भारी॥
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥45॥

ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बढ़े सिद्ध राशि हो वर्धमान भारी।
बने सिद्ध वह भी जो हैं ऋद्धि धारी॥

सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥46॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञान ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

करें दर्श सिद्धायतन के निराले।
मुनिश्रेष्ठ हैं जो महत् ज्ञान वाले।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥47॥

ॐ ह्रीं सिद्धायतन ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

णमो भयवदोमहदि महावीर नामी।
कहाए प्रभू वर्धमान मोक्षगामी॥
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी॥48॥

ॐ ह्रीं वर्धमान ऋद्धिधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा अड़तालिस यह ऋद्धियाँ, पाते हैं भगवान।
कर्म नाश करके विशद, प्राप्त करें निर्वाण॥49॥

ॐ ह्रीं अष्टचत्त्वारिंशद ऋद्धीधारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

जाप्य ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐंम् अर्हं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा धर्मादि त्रय वर्ग तज, पावें मोक्ष महान।
जयमाला गाते यहाँ, करने जिन गुणगान॥

(सखी छन्द)

जय धर्मनाथ हितकारी, इस जग में मंगलकारी।
पितु भानुराज कहलाए, प्रभु मात सुव्रता पाए॥
प्रभु चार ध्यान बतलाए, दो उसमें हेय कहाए।
वह आर्त रौद्र हैं भाई, होते जग में दुखदायी॥
है धर्म शुक्ल शुभकारी, यह ध्यान रहे हितकारी।
मुक्ती के कारण गाये, ये उपादेय कहलाए॥
प्रभु शुक्ल ध्यान जब ध्यायें, तब घाती कर्म नशाएँ।
फिर केवल ज्ञान जगाएँ, सुर समवशरण बनवाएँ॥
सौ इद्र शरण में आवें, शुभ प्रातिहार्य प्रगटावें।

प्रभु जीवों को हितकारी, उपदेश दिए शुभकारी॥
प्रभु चिदानन्द कहलाए, मुनिवृन्द प्रभु गुण गाए।
जो दर्श आपका पाए, वह निज सौभाग्य जगाए॥
मम पुण्य उदय जो आया, प्रभु दर्श आपका पाया।
हम काल अनादी स्वामी, भटके जग अन्तर्यामी॥
तुम ही ब्रह्मा कहलाए, विष्णु महेश तुम गाए।
तुमने शिव पद को पाया, जीवों को मार्ग दिखाया॥
हम शरण आपकी आए, इस जग से प्रभु सताए।
अब मुक्ती राह दिखाओ, हमको भव पार लगाओ॥
जय ऋद्धि सिद्धि के दाता, इस जग के भाग्य विधाता।
तव भक्ति से गुण गावें, वे जीव सुखी हो जावे॥
प्रभु जग दुख मैटन हारे, जन जन के रहे सहारे।
जो चरण शरण में आया, जग का सुख वैभव पाया॥
अब आई मेरी बारी, भव पार करो त्रिपुरारी।
हम 'विशद' भावना भाते, पद सादर शीश झुकाते॥

(छन्द घत्तानन्द)

जय धर्म जिनेशं, हित उपदेशं, धर्म विशेषं दातारं।
जय धर्माधारं, शिव कर्तारं, भव हरतारं सुखकारं॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा जिन शासन के कोष जिन, दिव्य भानु सम रूप।
धर्मनाथ को पूजकर, पाएँ धर्म स्वरूप॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्या श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते शास्त्री नगर स्थित 1008 श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2538 वि.सं. 2069 मासोत्तम मासे द्वितिय भादौ मासे शुक्लपक्षे बारसतिथि दिन गुरुवासरे श्री धर्मनाथ विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

श्री धर्मनाथ चालीसा

दोहा रहे पूज्य नव देवता, तीनों लोक महान्।
धर्मनाथ भगवान का, करते हम गुणगान॥
चालीसा गाते यहाँ, भाव सहित शुभकार।
वन्दन करते पद युगल, जिन पद बारम्बार॥

(चौपाई)

लोकालोक रहा शुभकारी, मध्य लोक जिसमें मनहारी।
मध्य में जम्बूद्वीप बताया, भरत क्षेत्र जिसमें शुभ गाया॥
जिसमें अंग देश है भाई, रत्नपुरी नगरी सुखदायी।
भानुराय जिसमें कहलाए, कुरु वंश के स्वामी गाए॥
कश्यप गोत्री जो कहलाए, महारानी, सुव्रता जो पाए।
वैसाख शुक्ल त्रयोदशी जानो, प्रातःकाल समय पहिचानो॥
शुभ नक्षत्र रेवती पाए, चयकर सर्वार्थ सिद्धि से आए।
तीर्थंकर प्रकृति शुभ पाए, प्रभु जी माँ के गर्भ में आए॥
माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, पुष्य नक्षत्र रहा मनहारी।
अतिशय जन्म प्रभुजी पाए, जन्म कल्याणक जो कहलाए॥
कर्क राशि का योग बताया, राशि स्वामी चन्द्र कहाया।
स्वर्ण वर्ण तन का है भाई, धनुष पैंतालिस है ऊँचाई॥
वर्ष लाख दश आयु पाए, वज्रदण्ड पहिचान कराए।
उल्कापात देखकर स्वामी, दीक्षा पाए अन्तर्यामी॥
माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, पुष्य नक्षत्र रहा मनहारी।
दीक्षा नगर रत्नपुर गाया, सायंकाल का समय बताया॥
देव पालकी लेकर आये, नागदत्ता शुभ नाम बताए।
शालिवन उद्यान बताया, दीर्घपर्ण तरुवर कहलाया॥
एक सौ अस्सी धनुष ऊँचाई, दीक्षा वृक्ष की जानो भाई।
एक सहस राजा भी आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए॥
दो उपवास आपने कीन्हें, शुभ क्षीरान्न बाद में लीन्हे।

धर्म मित्र दाता कहलाया, पाटलिपुत्र नगर शुभ गाया।।
एक वर्ष तप काल बताया, बाद में केवलज्ञान जगाया।
पौष शुक्ल पूनम शुभ जानो, संध्याकाल समय शुभ मानो।।
इन्द्र राज-चरणों में आया, धन कुबेर को साथ में लाया।
साथ में देव अन्य कई आए, समवशरण रचना बनवाए।।
पाँच योजन विस्तार बताया, पद्मासन प्रभु ने शुभ पाया।
साथ में केवलज्ञान जगाए, साढ़े चार सहस बतलाए।।
सात हजार विक्रियाधारी, नौ सौ पूरब धर अविकारी।
चालीस सहस सात सौ भाई, शिक्षक की संख्या बतलाई।।
चार हजार पाँच सौ जानो, मनःपर्यय ज्ञानी पहिचानो।
अवधि ज्ञानधारी मुनि आए, तीन सहस छह सौ बतलाए।।
दो हजार आठ सौ भाई, वादी मुनि संख्या बतलाई।
प्रभु के साथ मुनीश्वर आए, चौंसठ सहस पूर्ण कहलाए।।
गणधर तैंतालिस कहलाए, अरिष्टसेन गणि प्रथम कहाए।
यक्ष किंपुरुष जानो भाई, अनन्तमति यक्षी कहलाई।।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, कूट सुदत्तवर अनुपम गाए।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह पहले शिवगामी।।
कायोत्सर्गासन प्रभु पाए, स्वामी प्रातः मोक्ष सिधाए।
चौथ ज्येष्ठ शुक्ला की जानो, मोक्ष कल्याणक की तिथिमानो।।
पन्द्रहवें तीर्थंकर गाए, जग को मुक्ति मार्ग दिखाए।
जिन प्रतिमाएँ हैं शुभकारी, वीतराग मुद्रा अविकारी।।
दर्शन कर सद्दर्शन पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाए।
प्रभू की महिमा है शुभकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।

दोहा चालीसा चालीस दिन, पढ़ें सुने जो लोग।
सुख शांती सौभाग्य का, मिले उन्हें संयोग।।
धर्मनाथ के चरण को, ध्याये जो गुणवान।
अल्प समय में ही 'विशद', पावे वह निर्वाण।।

श्री 1008 धर्मनाथ भगवान की आरती

(तर्ज जीवन है पानी की बूँद)

धर्मनाथ के दर पे शुभ, दीप जलाए रे।
जिनवर हो जिनवर, सब आरती गाए रे।।टेक

मात सुव्रता के जाये, पिता भानु नृप कहलाए।
रत्नपुरी में जन्म लिया, उस धरती को धन्य किया।।
वज्र चिह्न जिनवर की हो-हो-पहिचान बताए रे।
जिनवर हो जिनवर, सब आरती गाए रे।।1।।

बैशाख सुदी त्रयोदशी जानो, गर्भ में प्रभु आये मानो।
माघ सुदी तेरस आई, जन्म लिया प्रभु ने भाई।
दस लाख पूर्व की आयु, हो-हो जिनवर जी पाए रे।
जिनवर हो जिनवर, सब आरती गाए रे।।2।।

धनुष पैतालिस ऊँचाई, जिनवर के तन की गाई।
माघ सुदी तेरस भाई, प्रभु जी ने दीक्षा पाई।
समवशरण आकर के, हो-हो शुभ देव बनाए रे।
जिनवर हो जिनवर, सब आरती गाए रे।।3।।

पौष पूर्णिमा दिन आया, 'विशद' ज्ञान प्रभु ने पाया।
अनन्त चतुष्टय प्रकटाए, देव इन्द्र सब सिरनाए।
सम्मेद शिखर पे जाके, हो-हो प्रभु ध्यान लगाए रे।।
जिनवर हो जिनवर, सब आरती गाए रे।।4।।

ज्येष्ठ शुक्ल की चौथ अहा, मंगलमय दिन श्रेष्ठ कहा।
जिनवर ने शिवपद पाया, मुक्ति वधू को अपनाया।
जिन भक्ति से हमको, हो-हो शिव पद मिल जाए रे।
जिनवर हो जिनवर, सब आरती गाए रे।।5।।

विशद

श्री शान्तिनाथ विधान

माण्डला

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 4 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 8 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 16 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 32 अर्घ्य
पंचम वलय में – 64 अर्घ्य
कुल 124 अर्घ्य

रचयिता

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

शान्तिनाथ स्तवन

दोहा- जग की भ्रान्ती मैटकर, दो शान्ती हे नाथ!।
अखिल शान्ति के भाव से, झुका चरण में माथ।।

(शम्भू छन्द)

हे नाथ! आपके गुण अनुपम, जिसका कोइ आदी-अन्त नहीं।
गम्भीर अपरिमित हैं अगणित, न मिलते जग में और कहीं।।
जगती पर रहते नहीं प्रभो! फिर भी जगती पति कहलाते।
जगती के जीव सभी आकर, तव चरणों वन्दन को आते।।1।।

तुम पूज्य त्रिलोकी नाथ रहे, महिमा भी अपरम्पार रही।
तव स्याद्वाद से युक्त परम, वाणी इस जग में श्रेष्ठ कही।।
नर सुर न जिसको झेल सकें, गणधर उसका व्याख्यान करें।
जो भव्य जीव हैं इस जग में, वह सभी पूर्ण सम्मान करें।।2।।

हे नाथ! अनाथों के जिनवर, तुम दीनानाथ कहे जाते।
जो नाथ कहे हैं इस जग में, वह शरण आपकी सब पाते।।
हम शरणागत बनकर आए, दो चरण शरण हमको भगवन्।
प्रभु शीश झुकाकर करते हैं, हम चरणों में शत् शत् वन्दन।।3।।

तुम करुणाकर सर्वेश्वर हो, अतिशय महिमा को कौन कहे।
यह भक्त आपका द्वार खड़ा, क्यों वह इस जग के कष्ट सहे।।
हो पार करैया भक्तों के, हमको भव पार कराओगे।
हम भक्त बनेंगे जनम-जनम, जब तक लेने न आओगे।।4।।

तुम लोक हितैषी एक मात्र, जन-जन के बन्धू निष्कारण।
प्रभु नहीं लोक में दिखता है, तुम बिन कोइ और तरण तारण।।
मेरे मनहर मन मंदिर में, हे नाथ! कृपा कर आओगे।
विश्वास लिए यह भक्त खड़ा, इसको न तुम बिसराओगे।।5।।

।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री शान्तिनाथ पूजन

स्थापना

हे शांतिनाथ! हे विश्वसेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन।
हे कामदेव! हे चक्रवर्ति! है तीर्थंकर पद अभिनन्दन॥
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतीमय हो।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ! शीघ्र उनका क्षय हो॥
यह शीश झुकाते चरणों में, आशीश आपका पाने को।
हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को॥
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं।
आह्वानन् करने हेतु नाथ!, यह पुष्प मनोहर लाए हैं॥

ॐ ह्रीं सर्वमंगलकारी, सर्व लोकोत्तम, जगतशरण परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवोषट आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठःस्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

हे नाथ! नीर को पीकर हम, इस तन की प्यास बुझाते हैं।
किन्तू कुछ क्षण के बाद पुनः, फिर से प्यासे हो जाते हैं॥
है जन्म जरा मृत्यू दुखकर, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो।
हम नीर चढ़ाते चरणों में, मम् जीवन भी शांतीमय हो॥1॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशक परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! हमारे इस तन को, चन्दन शीतल कर देता है।
आता है मोह उदय में तो, सारी शांती हर लेता है॥
हम भव आतप से तप्त हुए, हे नाथ! पूर्ण इसका क्षय हो।
यह चन्दन अर्पित करते हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो॥2॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशक परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! लोक में क्षयकारी, सारे पद हमने पाए हैं।
ना प्राप्त हुआ है शाश्वत पद, उसको पाने हम आए हैं॥

हम पूजा करते भाव सहित, इस पूजन का फल अक्षय हो।
शुभ अक्षत चरण चढ़ाते हैं, मम जीवन भी शांतीमय हो॥3॥

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जगदापद्विनाशक परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! सुगन्धी पुष्पों की, मन के मधुकर को महकाए।
किन्तू सुगन्ध यह क्षयकारी, जो हमको तृप्त न कर पाए॥
है काम वासना दुखकारी, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो।
हम पुष्प चढ़ाते हैं पुष्पित, मम् जीवन भी शांतीमय हो॥4॥

ॐ रां रीं रूं रौं रः जगदापद्विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वशंनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस व्यंजन से नाथ! सदा, हम क्षुधा शांत करते आए।
किन्तू हम काल अनादीं से, न तृप्त अभी तक हो पाए॥
यह क्षुधा रोग करता व्याकुल, इसका हे नाथ। शीघ्र क्षय हो।
नैवेद्य समर्पित करते हैं, मम् जीवन भी मंगलमय हो॥5॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जगदापद्विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक से हुई रोशनी तो, खोती है बाह्य तिमिर सारा।
छाया जो मोह तिमिर जग में, वह रोके ज्ञान का उजियारा॥
मोहित करता है मोह महा, यह मोह नाथ मेरा क्षय हो।
हम दीप जलाकर लाए हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो॥6॥

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूँ झ्रौं झ्रः जगदापद्विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशकाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में गंध जलाने से, महकाए चारों ओर गगन।
किन्तू कर्मों का कभी नहीं, हो पाया उससे पूर्ण शमन॥
हैं अष्ट कर्म जग में दुखकर, उनका अब नाथ मेरे क्षय हो।
हम धूप जलाने आए हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो॥7॥

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जगदापद्विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फल को पाने भटक रहे, जग के सब फल निष्फल पाए।
हम भटक रहे हैं सदियों से, वह फल पाने को हम आए।।
दो श्रेष्ठ महाफल मोक्ष हमें, हे नाथ! आपकी जय जय हो।
हैं विविध भांति के फल अर्पित, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।8।।
ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः जगदापद्विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अष्ट द्रव्य हम लाए हैं, हमने शुभ अर्घ्य बनाया है।
करने अनर्घ पद प्राप्त प्रभू, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाया है।।
हमको डर लगता कर्मों से, हे नाथ! दूर मेरा भय हो।
हम अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित मम् जीवन भी शांतिमय हो।।9।।।
ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूँ उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक के अर्घ्य

माह भाद्र पद कृष्ण पक्ष की, तिथि सप्तमी रही महान्।
चय कीन्हे सर्वार्थ सिद्धि से, पाए आप गर्भ कल्याण।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूंजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांतिनाथ का जय-जयकार।।1।।
ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तम्यां गर्भमंगल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष में, चतुर्दशी है सुखकारी।
तीन लोक में शांति प्रदाता, जन्म लिए मंगलकारी।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांतिनाथ का जय-जयकार।।2।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी शुभ रही महान्।
केश लुंच कर दीक्षाधारी, हुआ आपका तप कल्याण।।

स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांतिनाथ का जय-जयकार।।3।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष माह में शुक्ल पक्ष की, दशमी हुई है महिमावान।
चार घातिया कर्म विनाशी, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांतिनाथ का जय-जय कार।।4।
ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी मंगलकारी।
गिरि सम्मेद शिखर से अनुपम, मोक्ष गये जिन त्रिपुरारी।।
स्वर्ग लोग से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांतिनाथ का जय जय कार।।5।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष मंगलमण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- शान्तिनाथ की भक्ति से, शान्ति होय त्रिकाल।
वन्दन करते भाव से, गाते हैं जयमाल।।

तर्ज-मेरे मन मंदिर में आन पधारो...

हमारे हृदय कमल पर आन, विराजो शांतिनाथ भगवान।
सुर नर मुनिवर जिनको ध्याते, इन्द्र नरेन्द्र भी महिमा गाते।।
जिनका करते निशदिन ध्यान-विराजो...।
प्रभु सर्वार्थ सिद्धि से आए, देवों ने तब हर्ष मनाए।
भारी किया गया यशगान-विराजो...।।
प्रभु का जन्म हुआ मन भावन, रत्न वृष्टि तब हुई सुहावन।
जग में हुआ सुमंगल गान-विराजो...।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, देवों ने उत्सव करवाया।

मिलकर हस्तिनागपुर आन-विराजो...॥
कामदेव पद तुमने पाया, छह खण्डों पर राज्य चलाया।
पाई चक्रवर्ति की शान-विराजो...॥
यह सब भोग जिन्हें न भाए, सभी त्याग जिन दीक्षा पाए।
जाकर वन में कीन्हा ध्यान-विराजो...॥
तीर्थंकर पदवी के धारी महिमा जिनकी जग से न्यारी।
तुमने पाए पञ्चकल्याण-विराजो...॥
तुमने कर्म घातिया नाशे, क्षण में लोकालोक प्रकाशे।
पाये क्षायिक केवल ज्ञान-विराजो...॥
ॐकार मय जिनकी वाणी, जन-जन की जो है कल्याणी।
सारे जग में रही महान्-विराजो...॥
शेष कर्म भी न रह पाए, पूर्ण नाश कर मोक्ष सिधाए।
पाए प्रभू मोक्ष कल्याण-विराजो...॥
जो भी शरणागत बन आया, उसको प्रभु ने पार लगाया।
प्रभु जी देते जीवन दान-विराजो...॥
शांति नाथ शांती के दाता, अखिल विश्व के आप विधाता।
सारा जग गाये यशगान-विराजो...॥
शरणागत बन शरण में आए, तव चरणों में शीश झुकाए।
कर लो हमको स्वयं समान-विराजो...॥
रोम-रोम में वास तुम्हारा, ऋणी रहेगा तव जग सारा।
तुम हो जग में कृपा निधान-विराजो...॥
प्रभु जग मंगल करने वाले, दुखियों के दुख हरने वाले।
तुमने किया जगत कल्याण-विराजो...॥
सारा जग है झूठा सपना, व्यर्थ करे जग अपना-अपना।
प्राणी दो दिन का मेहमान-विराजो...॥
शांतिनाथ हैं शांति सरोवर, शांति का बहता शुभ निर्झर।
तुमसे यह जग ज्योर्तिमान-विराजो...॥
आर्या छन्द- शांति नाथ अनाथों के हैं, नाथ जगत में शिवकारी।
चरण शरण को पाने वाला, होता जग मंगलकारी॥
ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशक परम शान्ति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- शांती मिले विशेष, पूजा कर जिनराज की।
रहे कोई न शेष, दुख दारिद्र सब दूर हो॥
इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रथम वलयः

दोहा- अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, हुए शांति के नाथ।
पुष्पाञ्जलि करता परम, चरण झुकाएँ माथ॥
(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे शांतिनाथ! हे विश्वसेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन।
हे कामदेव! हे चक्रवर्ति! है तीर्थंकर पद अभिनन्दन॥
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतीमय हो।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ! शीघ्र उनका क्षय हो॥
यह शीश झुकाते चरणों में, आशीश आपका पाने को।
हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को॥
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं।
आह्वानन् करने हेतु नाथ! यह पुष्प मनोहर लाए हैं॥
ॐ ह्रीं सर्वमंगलकारी लोकोत्तम जगत शरण परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

"अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य"

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, अनुपम पाया केवल ज्ञान।
अतिशय शांती पाने वाले, सर्व लोक में हुए महान्॥
शांतिनाथ शांती के दाता, भवि जीवों के हितकारी।
प्रभू की अर्चा करके बनता, जीवन यह मंगलकारी॥1॥
ॐ ह्रीं अनंत ज्ञान गुण प्राप्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्म दर्शनावरणी भाई, क्षण में आप विनाश किए।
केवल दर्शन निज शक्ती के, द्वारा आप प्रकाश किए॥

शांतिनाथ शांती के दाता, भवि जीवों के हितकारी।
प्रभू की अर्चा करके बनता, जीवन यह मंगलकारी।।2।।
ॐ ह्रीं अनंत दर्शन गुण प्राप्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग को मोहित करता, मोहनीय है कर्म विशेष।
सर्व नाश कर उस शत्रु का, पाए जिनवर सौख्य अशेष।।
शांतिनाथ शांती के दाता, भवि जीवों के हितकारी।
प्रभू की अर्चा करके बनता, जीवन यह मंगलकारी।।3।।
ॐ ह्रीं अनंत सुख गुण प्राप्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षमार्ग में जो अनादि से, विघ्न डालता रहा महान्।
अन्तराय का नाश किए जिन, सुख अनन्त पाए भगवान।।
शांतिनाथ शांती के दाता, भवि जीवों के हितकारी।
प्रभू की अर्चा करके बनता, जीवन यह मंगलकारी।।4।।
ॐ ह्रीं अनंत वीर्य गुण प्राप्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा अनन्त चतुष्टय प्राप्तकर, जग में हुए महान्।
अतः आप इस लोक में, कहलाए भगवान।।5।।
ॐ ह्रीं अनंत चतुष्टय गुण प्राप्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा- प्रातिहार्य से शोभते, भूपर श्री जिनराज।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, श्री जिनेन्द्र पद आज।।
(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे शांतिनाथ! हे विश्वसेन, सुत ऐरादेवी के नन्दन।
हे कामदेव! हे चक्रवर्ति! है तीर्थंकर पद अभिनन्दन।।
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतीमय हो।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ! शीघ्र उनका क्षय हो।।

यह शीश झुकाते चरणों में, आशीश आपका पाने को।
हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को।।
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं।
आह्वानन् करने हेतु नाथ! यह पुष्प मनोहर लाए हैं।।
ॐ ह्रीं सर्वमंगलकारी लोकोत्तम जगत शरण परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

"अष्ट प्रतिहार्य के अर्घ्य"

पिण्डाक्षर स्ववर्ग प्राप्त शुभ, अग्नी बिन्दू सहित प्रधान।
प्रातिहार्य है तरु अशोक शुभ, हं बीजाक्षर युक्त महान।।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पद का पाए हैं साम्राज।
शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज।।1।।
ॐ ह्रीं अशोक तरू सत्प्रातिहार्य मण्डिताय शोभनपद प्रदाय-हम्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पिण्डाक्षर स्वर्ग प्राप्त शुभ, अग्नी बिन्दु संयुक्त प्रधान।
प्रातिहार्य सुर पुष्पवृष्टि शुभ, भं बीजाक्षर सहित महान।।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पद का पाए हैं साम्राज।
शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज।।2।।
ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि शोभन पद प्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पिण्डाक्षर स्ववर्ग प्राप्त शुभ, अग्नि बिन्दु संयुक्त प्रधान।
प्रातिहार्य जिन दिव्यध्वनि शुभ, मं बीजाक्षर सहित महान्।।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पद का पाए हैं साम्राज।
शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज।।3।।
ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय दिव्य ध्वनि शोभन पद प्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वापद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पिण्डाक्षर स्ववर्ग प्राप्त शुभ, अग्नि बिन्दु युक्त प्रधान।
धवल चँवर शुभ प्रतिहार्य। शुभ, रं बीजाक्षर सहित महान्।।

कामदेव चक्री तीर्थंकर, पद का पाए हैं साम्राज।
शांतिनाथ जिन के पद पकंज, शीश झुकाए सकल समाज॥4॥

ॐ ह्रीं चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य मण्डिताय चामरोज्ज्वल शोभनपद प्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि बिन्दु संयुक्त वर्ग शुभ, पिण्डाक्षर जग में पावन।
प्रातिहार्य है सिंहासन शुभ, घं बीजाक्षर मन भावन॥
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पद का पाए हैं साम्राज।
शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज॥5॥

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य मण्डिताय सिंहासन प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अग्नि बिन्दु से युक्त वर्ग शुभ, पिण्डाक्षर जग में पावन।
प्रातिहार्य है भामण्डल शुभ, झं बीजाक्षर मन भावन॥
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पद का पाए हैं साम्राज।
शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज॥6॥

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य मण्डिताय भामण्डल प्रतिहार्य शोभन पदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अग्नि बिन्दु से युक्त वर्ग शुभ, पिण्डाक्षर जग में पावन।
प्रातिहार्य दुन्दुभी मनोहर, सं बीजाक्षर मनभावन।।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पद का पाए हैं साम्राज।
शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज।।7।।

ॐ ह्रीं दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य मण्डिताय दुन्दुभि प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अग्नि बिन्दु से युक्त वर्ग शुभ, पिण्डाक्षर जग में पावन।
छत्रत्रय है प्रातिहार्य शुभ, खं बीजाक्षर मन भावन॥
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पद का पाए हैं साम्राज।
शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज॥8॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य मण्डिताय छत्रत्रय प्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ह भ म र घ झ स ख, बीज वर्ण जग में पावन।
प्रातिहार्य वसु युक्त जिनेश्वर, तीन लोक में मनभावन॥
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पद का पाए हैं साम्राज।
शांतिनाथ जिन के पद पंकज, शीश झुकाए सकल समाज॥9॥

ॐ ह्री अष्ट प्रातिहार्य सहिताय अष्ट बीजमण्डन मण्डिताय सर्व विघ्नहराय सर्वोपद्रव शान्तिकराय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

तृतीय वलयः

दोहा- सोलह कारण भावना, भावे जो भवि जीव।
तीर्थंकर पद प्राप्तकर, पावे सौख्य अतीव॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पांञ्जलि क्षिपेत्)

स्थापना

हे शांतिनाथ! हे विश्वसेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन।
हे कामदेव! हे चक्रवर्ति! है तीर्थंकर पद अभिनन्दन॥
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतीमय हो।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ! शीघ्र उनका क्षय हो॥
यह शीश झुकाते चरणों में, आशीश आपका पाने को।
हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को॥
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं।
आह्वानन् करने हेतु नाथ! यह पुष्प मनोहर लाए हैं॥

ॐ ह्रीं सर्वमंगलकारी लोकोत्तम जगतशरण परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

सोलहकारण भावना के अर्घ्य

(अडिल्ल छन्द)

दर्शविशुद्धी भावना भाऊँ भाव से, निर्मल सम्यक् दर्शन पाऊँ चाव से।
तीर्थंकर पद दायक सोलह भावना, जैन धर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित दर्शन विशुद्धि भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय सम्पन्न भावना भाऊँ भाव से, मुक्तिवधु से नाता जोड़ूँ चाव से।
तीर्थंकर पद दायक सोलह भावना, जैन धर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित विनय सम्पन्न भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निरतिचार व्रत शील सुव्रत पालन करूँ, सम्यक्चारित से कर्मों को परिहरूँ।
तीर्थंकर पद दायक सोलह भावना, जैन धर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित अनतिचार शीलव्रत भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परमशान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग मेरा प्रभो! केवल ज्ञान प्रकट हो जावे हे विभो।,
तीर्थंकर पद दायक सोलह भावना, जैनधर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हितकारी संवेग भाव मेरे जगे, भव तन भोग विरक्ती में भी मन लगे।
तीर्थंकर पददायक सोलह भावना, जैनधर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित संवेग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ती पूर्वक त्याग करूँ मैं भाव से, सर्व परिग्रह त्याग करूँ निज चाव से।
तीर्थंकर पद दायक सोलह भावना, जैनधर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना॥6॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित शक्ति तस्त्साग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्तीपूर्वक तप का पालन हो सदा, मन में मेरे खेद नहीं जागे कदा।
तीर्थंकर पद दायक सोलह भावना, जैनधर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना॥7॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित शक्तितस्तप भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु समाधी प्राप्त करूँ शुभ भाव से, भव सागर हो पार धर्म की नाव से।
तीर्थंकर पद दायक सोलह भावना, जैन धर्म की होवे श्रेष्ठ प्रभावना॥8॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहित साधु समाधि भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द चौपाई)

वैय्यावृत्त्य करण दुखहारी, संतों की सेवा सुखकारी।
भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थंकर शुभ पदवी पाऊँ॥9॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित वैय्यावृत्ति भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

करूँ भाव से अर्हत् भक्ती, भव सागर से पाऊँ मुक्ति।
भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थंकर शुभ पदवी पाऊँ॥10॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित अर्हत् भक्ति भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥10॥

आचार्यों के दर्शन पाऊँ, भक्ती करके मैं हर्षाऊँ।
भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थंकर शुभ पदवी पाऊँ॥11॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित आचार्य भक्ति भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥11॥

बहुश्रुत भक्ती है सुखकारी, ज्ञान प्रदायक मंगलकारी।
भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थंकर शुभ पदवी पाऊँ॥12॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥12॥

प्रवचन भक्ती मैं कर पाऊँ, जैनागम से ज्ञान बढ़ाऊँ।
भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थंकर शुभ पदवी पाऊँ॥13॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित प्रवचन भक्ति भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥13।

आवश्यक अपरिहार्य भावना, पूर्ण होय न हो विराधना।
भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थंकर शुभ पदवी पाऊँ॥14॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित आवश्यकापरिहार्य भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥14॥

जैन धर्म की हो प्रभावना, विशद हमारी यही भावना।
भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थंकर शुभ पदवी पाऊँ।।15।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित मार्ग प्रभावना भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

वत्सल भाव हृदय में जागे, रक्षा में मेरा मन लागे।
भव्य भावना सोलह भाऊँ, तीर्थंकर शुभ पदवी पाऊँ।।16।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित वात्सल्य भावनायै सर्व कर्म बन्धन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

(गीता छन्द)

सोलह कारण भावना हम, भाव से भाते रहें।
आपदाएँ हों कोई भी, शांत होकर सब सहें।।
दर्शन विशुद्धी भावना शुभ, श्रेष्ठ मंगलमय अहा।
बिना इसके अन्य का कुछ, भी प्रयोजन न रहा।।
दोहा- सोलह कारण भावना, जग में मंगलकार।
पूर्ण अर्घ्य अर्पण करूँ, पाने भव से पार।।

ॐ ह्रीं श्रीं सर्व दोष रहित दर्शन विशुद्धि आदि षोडश भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त परम शान्ति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

चतुर्थ वलयः

दोहा- श्री जिन की पूजा करें, आकर बत्तिस देव।
पुष्पाञ्जलि अर्पित करूँ, पाने जिन पद एव।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे शांतिनाथ! हे विश्वसेन सुत, एरादेवी के नन्दन।
हे कामदेव! हे चक्रवर्ति! है तीर्थंकर पद अभिनन्दन।।
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतीमय हो।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ! शीघ्र उनका क्षय हो।।
यह शीश झुकाते है चरणो में, आशीश आपका पाने को।

हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को।।
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं।
आह्वानन् करने हेतु नाथ! यह पुष्प मनोहर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगलकारी लोकोत्तम जगतशरण परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

32 इन्द्रों से पूजित जिन के अर्घ्य

तर्ज-चौबीसी पूजन

जिन पूजा को असुरेन्द्र, उत्तम द्रव्य लावें।
अति हर्ष भाव के साथ, प्रभु के गुण गावें।।
भवनों से आवें इन्द्र, लावें परिवारा।
श्री शान्तिनाथ की श्रेष्ठ, बोलें जयकारा।।1।।

ॐ ह्रीं असुर कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पूजा को धरणेन्द्र, उत्तम द्रव्य लावें।
अति हर्ष भाव के साथ, प्रभु के गुण गावें।।
भवनों से आवें इन्द्र, लावें परिवारा।
श्री शान्तिनाथ की श्रेष्ठ, बोलें जयकारा।।2।।

ॐ ह्रीं धरणेन्द्र कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा को विद्युत इन्द्र, भक्ती से आवें।
ले अष्ट द्रव्य का थाल, मन में हर्षावें।।
भवनों से आवें इन्द्र, लावें परिवारा।
श्री शान्तिनाथ की श्रेष्ठ, बोलें जयकारा।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युत कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा को इन्द्र सुपर्ण, उत्तम द्रव्य लावें।
अर्चा कर भाव समेत, मन में हर्षावें।।

भवनों से आवें इन्द्र, लावें परिवारा।
श्री शान्तिनाथ की श्रेष्ठ, बोलें जयकारा॥4॥

ॐ ह्रीं सुपर्ण कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा को अग्नी इन्द्र, उत्तम द्रव्य लावें।
अति हर्ष भाव के साथ, प्रभु के गुण गावें।
भवनों से आवें इन्द्र, लावें परिवारा।
श्री शान्तिनाथ की श्रेष्ठ, बोलें जयकारा॥5॥

ॐ ह्रीं अग्नि कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा को मारुत इन्द्र, उत्तम द्रव्य लावें।
शुभ अष्ट द्रव्य के साथ, प्रभु के गुण गावें॥
भवनों से आवें इन्द्र, लावें परिवारा।
श्री शान्तिनाथ की श्रेष्ठ, बोलें जयकारा॥6॥

ॐ ह्रीं मारुत कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा को स्तनित इन्द्र, प्रभु पद में आवें।
ले अष्ट द्रव्य का थाल, हर्ष कर गुण गावें॥
भवनों से आवें इन्द्र, लावें परिवारा।
श्री शान्तिनाथ की श्रेठ, बोलें जयकारा॥7॥

ॐ ह्रीं स्तनित कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा को उदधिकुमार, इन्द्र आवें भाई।
शुभ अष्ट द्रव्य का थाल, लावें हर्षाई॥
भवनों से आवें इन्द्र, लावें परिवारा।
श्री शान्तिनाथ की श्रेष्ठ, बोलें जयकारा॥8॥

ॐ ह्रीं उदधि कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पूजा को द्वीपेन्द्र, भक्ती से आवें।
ले अष्ट द्रव्य का थाल, मन में हर्षावें॥
भवनों से आवें इन्द्र, लावें परिवारा।
श्री शान्तिनाथ की श्रेष्ठ, बोलें जयकारा॥9॥

ॐ ह्रीं द्वीपेन्द्र कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अष्ट द्रव्य के साथ, दिक् असुरेन्द्र मही।
अति हर्ष भाव के साथ, आवें यहाँ सही॥
भवनों से आवें इन्द्र, लावें परिवारा।
श्री शान्तिनाथ की श्रेष्ठ, बोलें जयकारा॥10॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितने पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

किन्नर के स्वामी आवें, नाचें गावें हर्षावें।
जिन पूजा करते भारी, इस जग में अतिशयकारी॥
जिन उत्तम शान्ती दाता, जग जन के आप विधाता।
हे शान्तिनाथ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥11॥

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किम्पुरुष इन्द्र जब आवे, भक्ती में ही रम जावे।
जिन पूजा करते भारी, इस जग में मंगलकारी॥
जिन उत्तम शान्ती दाता, जग जन के आप विधाता।
हे शान्तिनाथ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥12॥

ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ इन्द्र महोरग आवे, जिन पूजा कर हर्षावे।
करते हैं अतिशय भारी, इस जग में मंगलकारी॥

जिन उत्तम शान्ती दाता, जग जग के आप विधाता।
हे शान्तिनाथ! अविकारी हम पूजा करें तुम्हारी॥13॥

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धर्व इन्द्र जब आवे, वह नाचे ढोल बजावे।
पूजा करता शुभकारी, इसजग में मंगलकारी॥
जिन उत्तम शान्ती दाता, जग जन के आप विधाता।
हे शान्तिनाथ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥14॥

ॐ ह्रीं गन्धर्वेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्षेन्द्र शरण में आवें, जिन महिमा को दर्शावे।
जिन पूजा करता भारी, परिवार सहित शुभकारी॥
जिन उत्तम शान्ती दाता, जग जन के आप विधाता।
हे शान्तिनाथ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥15॥

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षस के इन्द्र भी आवें, कौतूहल खूब दिखावे।
करते पूजा शुभकारी, इस जग में मंगलकारी॥
जिन उत्तम शान्ती दाता, जग जन के आप विधाता।
हे शान्तिनाथ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥16॥

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूतेन्द्र भक्ति से आवें, महिमा भारी दिखलावें।
पूजा करते हैं भारी, इस जग में मंगलकारी॥
जिन उत्तम शान्ती दाता, जग जन के आप विधाता।
हे शान्तिनाथ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥17॥

ॐ ह्रीं भूतेन्द्र स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहाँ पिशाचेन्द्र भी आवें, जिन पूजा कर हर्षावें।
अतिशय दिखलावें भारी, इस जग में मंगलकारी॥
जिन उत्तम शान्ती दाता, जग जन के आप विधाता।
हे शान्तिनाथ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥18॥

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब इन्द्र चन्द्रमा आवे, परिवार साथ में लावे।
पूजा करता है भारी, इस जग में मंगलकारी॥
जिन उत्तम शान्ती दाता, जग न के आप विधाता।
हे शान्तिनाथ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥19॥

ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहाँ सूर्य इन्द्र भी आवे, जिन पूजाकर हर्षावे।
जो करे रोशनी भारी, इस जग में मंगलकारी॥
जिन उत्तम शान्ती दाता, जग जन के आप विधाता।
हे शान्तिनाथ! अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥20॥

ॐ ह्रीं भास्करेन्द्रेण स्वपरिवार सहितने पद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह।

(छन्द शम्भू)

सौधर्म इन्द्र पुलकित होकर के, कलश नीर के भरते हैं।
पूजा अरु अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का करते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थंकर पद धारी हैं।
शांतिनाथ जिन की भक्ती इस, जग में मंगलकारी है॥21॥

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर्षित हो ईशान स्वर्ग के, इन्द्र चरण में आते हैं।
पूजा करते भक्ति भाव से, अतिशय चँवर ढुराते हैं॥

चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थंकर पद धारी हैं।
शांतिनाथ जिन की भक्ती इस, जग में मंगलकारी है॥22॥

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सनत कुमार इन्द्र भक्ति से, जिनको शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, अतिशय चँवर ढुराते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थंकर पद धारी हैं।
शांतिनाथ जिन की भक्ती इस, जग में मंगलकारी है॥23॥

ॐ ह्रीं सनत कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र स्वर्ग के इन्द्र भक्ति से, वन्दन करने आते हैं।
अर्चा करते विस्मयकारी, भाव सहित गुण गाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थंकर पद धारी हैं।
शांतिनाथ जिन की भक्ती इस, जग में मंगलकारी है॥24॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वमपीति स्वाहा।

ब्रह्म युगल के स्वर्गों से भी, इन्द्र शरण में आते हैं।
हेम थाल में द्रव्य सजाकर, पूजन कर हर्षाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थंकर पद धारी हैं।
शांतिनाथ जिन की भक्ती इस, जग में मंगलकारी है॥25॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म युगलेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र शुभ द्रव्य मनोहर, लेकर पद में आते हैं।
पूजा करके भक्ति भाव से, चरणों शीश झुकाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थंकर पद धारी हैं।
शांतिनाथ जिन की भक्ती इस, जग में मंगलकारी है॥26॥

ॐ ह्रीं लान्तव युगलेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र युगल के इन्द्र स्वर्ग से, पूजा करने आते हैं।
स्वर्ण थाल में द्रव्य सजाकर, अतिशय कई दिखाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थंकर पद धारी हैं।
शांतिनाथ जिन की भक्ती इस, जग में मंगलकारी है॥27॥

ॐ ह्रीं शुक्र युगलेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र जिन चरण कमल में, अतिशय प्रीति बढ़ाते हैं।
नृत्यगान करते हैं अनुपम, पूजा नित्य रचाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थंकर पद धारी हैं।
शांतिनाथ जिन की भक्ती इस, जग में मंगलकारी है॥28॥

ॐ ह्रीं शतार युगलेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनत स्वर्ग से आनतेन्द्र, जिन भक्ती करने आते हैं।
मंगलमयी द्रव्य से मंगल, पूजन नित्य रचाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थंकर पद धारी हैं।
शांतिनाथ जिन की भक्ती इस, जग में मंगलकारी है॥29॥

ॐ ह्रीं आनत युगलेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तर्थव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाल जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणतेन्द्र गाजे बाजे से, पूजा करने आते हैं।
अतिशय कारी दिव्य मनोहर, जिन के चरण चढ़ाते हैं॥
चक्रवर्ति करु कामदेव शुभ, तीर्थंकर पद धारी हैं।
शांतिनाथ जिन की भक्ती इस, जग में मंगलकारी है॥30॥

ॐ ह्रीं प्राणत युगलेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेन्द्र जिन चरण कमल में, मधुकर बनकर आते हैं।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति में जो, पूर्ण निरत हो जाते हैं॥
चक्रवर्ति अरू कामदेव शुभ, तीर्थंकर पद धारी हैं।
शांतिनाथ जिन की भक्ती इस, जग में मंगलकारी है॥31॥

ॐ ह्रीं आरण युगलेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र जिनवर के चरणों, भव्य भक्ति से आते हैं।
दिव्य पुष्प आदि द्रव लेकर, पूजा शुभम् रचाते हैं॥
चक्रवर्ति अरु कामदेव शुभ, तीर्थंकर पद धारी हैं।
शांतिनाथ जिन की भक्ती इस, जग में मंगलकारी है॥32॥

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शान्तिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव भवनवासी व्यन्तर अरु, ज्योतिष के सब इन्द्र प्रधान।
सोलह स्वर्गों से आकर के, पूजा करते मंगलगान॥
बत्तिस देवों ने उत्सवकर, पूजा कीन्हीं मंगलकार।
ऐसे शान्तिनाथ जिन की हम, बोल रहे हैं जय-जयकार॥33॥

ॐ ह्रीं चतुर्णिकाय देवेन्द्र पूजिताय परम शांति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा- त्रेसठ प्रकृतियाँ प्रभु, करके आप विनाश।
कमल पुष्प पर शोभते, करते ज्ञान प्रकाश।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्थापना

हे शांतिनाथ! हे विश्वसेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन।
हे कामदेव हे! चक्रवर्ति! हे तीर्थंकर पद अभिनन्दन॥
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतीमय हो।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ! शीघ्र उनका क्षय हो॥
यह शीश झुकाते चरणों में, आशीश आपका पाने को।
हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को॥
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं।
आह्वानन् करने हेतु नाथ!, यह पुष्प मनोहर लाए हैं॥

ॐ ह्रीं सर्वमंगलकारी लोकोत्तम जगतशरण परम शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

63 कर्म प्रकृतियां विनाशी जिन के अर्घ्य

ज्ञानावरण (छन्द जोगीरासा)

मतिज्ञान पर पड़े आवरण, के जिनराज विनाशी।
विशद ज्ञान को पाए श्री जिन, लोकालोक प्रकाशी॥1॥

ॐ ह्रीं मति ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञान का नाश आवरण, हो गये सम्यक् ज्ञानी।
विशद ज्ञान को पाए श्री जिन, वीतराग विज्ञानी॥2॥

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधि ज्ञान पर पड़ा आवरण, पूर्ण रूप से नाशा।
विशद ज्ञान को पाए श्री जिन, त्यागी जग की आशा॥3॥

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान मनः पर्यय का जिनवर, पूर्ण आवरण नाशे।
विशद ज्ञान को पाए श्री जिन, लोकालोक प्रकाशे॥4॥

ॐ ह्रीं मनः पर्ययज्ञानावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानावरणी नाशे, कर्म हुए अविकारी।
विशद ज्ञान को पाए श्री जिन, जग में मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनावरण

(चाल छन्द)

चक्षू पे आवरण आवे, फिर वस्तू न दिख पावे।
जिससे अनुभव न होवे, इन्द्री की शक्ती खोवे॥
प्रभु कर्मावरण विनाशी, हैं लोकालोक प्रकाशी।
जिन केवल दर्शन पाए, शुभ पूर्ण रूप अविनाशी॥6॥

ॐ ह्रीं चक्षु दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन चार इन्द्री भाई, यह कर्म आवरण पाई।
इनसे अनुभव न होवे, अपनी शक्ती यह खोवे।।
प्रभु कर्मावरण विनाशी, हैं लोकालोक प्रकाशी।
जिन केवल दर्शन पाए, शुभ पूर्ण रूप अविनाशी।।7।।

ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म आवरण आवे, न अवधि दर्श हो पावे।
वस्तू का अनुभव भाई, न समीचीन हो पाई।।
प्रभु कर्मावरण विनाशी, हैं लोकोलोक प्रकाशी।
जिन केवल दर्शन पाए, शुभ पूर्ण रूप अविनाशी।।8।।

ॐ ह्रीं अवधि दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म आवरण होवे, तब केवल दर्शन खोवे।
चेतन का अनुभव प्राणी, न होय कहे जिनवाणी।।
प्रभु कर्मावरण विनाशी, हैं लोकोलोक प्रकाशी।
जिन केवल दर्शन पाए, शुभ पूर्ण रूप अविनाशी।।9।।

ॐ ह्रीं केवल दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

यह कर्म दर्शनावरण भाई, निद्रा निमग्र कर देता है।
जीवों में हिम के चिन्तन की, शक्ती को जो हर लेता है।।
यह कर्म बड़े हैं दुखकारी, इस जग में भ्रमण कराते हैं।
हो कर्म रहित हे नाथ! आप, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं निद्रा दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा-निद्रा का उदय होय, तब गहरी नींद सताती है।
जगकर के सोता पुनः पुनः, कोई बात समझ न आती है।।

यह कर्म बड़े हैं दुखकारी, इस जग में भ्रमण कराते हैं।
हो कर्म रहित हे नाथ! आप, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं निद्रा-निद्रा दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्मोदय हो प्रचला का, निद्रा निमग्न रहते प्राणी।
बैठे ऊँघें झपकी लेवें, ऐसा कहती है जिनवाणी।।
यह कर्म बड़े हैं दुखकारी, इस जग में भ्रमण कराते हैं।
हो कर्म रहित हे नाथ! आप, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं प्रचला दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रचला-प्रचला का उदय होय, तो दांत घिसे अरु लार बहे।
कर देय मूत्र पुरीषादिक भी, बेहोशी जैसा जीव रहे।।
यह कर्म बड़े हैं दुखकारी, इस जग में भ्रमण कराते हैं।
हो कर्म रहित हे नाथ! आप, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं प्रचला-प्रचला दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोते-सोते सब काम करें, पर होश नहीं प्राणी पावें।
जब नींद खुले तब विस्मय से, आश्चर्य चकित वह हो जावें।।
स्त्यानगृद्धि कर्मोदय से, इस जग में नाच नचाते हैं।
हो कर्म रहित हे नाथ! आप, हम चरणों में शीश झुकाते हैं।।14।।

ॐ हीं स्त्यानगृद्धि दर्शनावरण कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय (चाल छन्द)

मिथ्यात्व उदय में आवे, सम्यक्त्व नहीं हो पावे।
न श्रद्धा उर में जागे, विपरीत धर्म से भागे।।
जिन शांतिनाथ गुण गाऊँ, उर में श्रद्धान जगाऊँ।
अब हमने तुम्हें पुकारा, दो हमको नाथ! सहारा।।15।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व दर्शन मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व पूर्ण न होवे, मिथ्या शक्ती भी खोवे।
गुड़ दही मिला हो जैसे, इसकी परिणति हो वैसे॥
जिन शांतिनाथ गुण गाऊँ, उर में श्रद्धान जगाऊँ।
अब हमने तुम्हें पुकारा, दो हमको नाथ!सहारा॥16॥

ॐ ह्रीं सम्यक् मिथ्यात्व दर्शन मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व पूर्ण खो जावे, सम्यक्त्व उदय में आवे।
कुछ रहे मलिनता भाई, सम्यक् प्रकृति बतलाई॥
जिन शांतिनाथ गुण गाऊँ, उर में श्रद्धान जगाऊँ।
अब हमने तुम्हें पुकारा, दो हमको नाथ! सहारा॥17॥

ॐ ह्रीं सम्यक प्रकृति दर्शन मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीर छन्द)

क्रोध अनन्तानुबन्धी का, किया आपने पूर्ण विनाश।
मोहनीय कर्मों से पाया, पूर्ण रूप तुमने अवकाश॥
इस जग की मायाको लखकर, जाना यह संसार असार।
शांतिनाथ तव चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार॥18॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीक्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनायपरम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान अनन्तानुबन्धी का, पूर्ण रूप से करके नाश।
मार्दव धर्म प्राप्त कर प्रभु ने, कीन्हा सम्यक् ज्ञान प्रकाश॥
इस जग की मायाको लखकर, जाना यह संसार असार।
शांतिनाथ तव चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार॥19॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया अनन्तानुबन्धी को, नाश हुए जो सर्व महान।
आर्जव धर्म प्राप्त कर प्रभु ने, पाया निर्मल सम्यक् ज्ञान॥

इस जग की मायाको लखकर, जाना यह संसार असार।
शांतिनाथ तव चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार॥20॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायकश्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ अनन्तानुबन्धी का, जिनको रहा न नाम निशान।
उत्तम शौच धर्म के धारी, पाए निर्मल सम्यक् ज्ञान॥
इस जग की माया को लखकर, जाना यह संसार असार।
शांतिनाथ तव चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार॥21॥

ॐ ह्री अनन्तानुबंधी लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

क्रोध अप्रत्याख्यान, अणुव्रत का घाती कहा।
नाश किए भगवान, पूज्य हुए हैं लोक में॥22।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान अप्रत्याख्यान, को नाशा है आपने।
अतः हुए भगवान, महिमा जिनकी अगम है॥23॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया अप्रत्याख्यान, छल प्रपंच जागृत करे।
जग में हुए महान्, पूर्ण रूप से शांत कर॥24॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ अप्रत्याख्यान, न होने दे देशव्रत।
कर कषाय की हान, पाए जिन अर्हन्त पद॥25॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

प्रत्याख्यान क्रोध जो होवे, महाव्रतों की क्षमता खोवे।

उसका नाश किए जिन स्वामी, हुए आप तब अन्तर्यामी॥26॥
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान मान के होते, महाव्रतों की शक्ती खोते।
मद की दम को प्रभू नशाए, अर्हत् पदवी को तब पाए॥27॥
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया प्रत्याख्यान उदय हो, महाव्रतों की शक्ती क्षय हो।
माया की छाया तक नाशी, ज्ञानी आप हुए अविनाशी॥28॥
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान लोभ आ जावे, प्राणी संयम न धर पावे।
प्रत्याख्यान लोभ परिहारी, हुए आप जिन मंगलकारी॥29॥
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा छन्द)

यथाख्यात न होय, क्रोध संज्वलन उदय से।
पूर्ण रूप यह खोय, वह अर्हत् पदवी लहे॥30॥
ॐ ह्रीं संज्वलन क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान संज्वलन होय, यथाख्यात न प्राप्त हो।
इसको प्राणी खोय, केवलज्ञानी जिन बने॥31॥
ॐ ह्रीं संज्वलन मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात न पाय, माया संज्वलन उदय में।
जिनवर इसे नशाय, अर्हत् बनते लोक में॥32॥
ॐ ह्रीं संज्वलन माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ संज्वलन पाय, यथाख्यात न हो कभी।
अर्हत् पदवी पाय, लोभ संज्वलन नाशकर॥33॥
ॐ ह्रीं संज्वलन लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

जब हास्य उदय में आवे, हँस हँस प्राणी खिल जावे।
प्रभु हास्य कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥34॥
ॐ ह्रीं हास्य चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब रती उदय में आवे, जग से नर प्रीति जगावे।
प्रभु रती कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥35॥
ॐ ह्रीं रति चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब अरति उदय में आवे, अप्रीतिभाव जगावे।
प्रभु अरति कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥36॥
ॐ ह्रीं अरति चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोइ इष्टानिष्ट दिखावे, मन में तब शोक मनावे।
प्रभु शोक कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥37॥
ॐ ह्रीं शोक चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोइ चीज दिखे भयकारी, भय होय उदय में भारी।
भय कर्म नाश कर भाई, प्रभु अर्हत् पदवी पाई॥38॥
ॐ ह्रीं भय चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-पर गुण दोष दिखावे, मन में ग्लानी उपजावे।
प्रभु कर्म जुगुप्सा नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥39॥
ॐ ह्रीं जुगुप्सा चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो व्याकुल होवे भारी, रमने को खोजे नारी।
प्रभु पुरुष वेद के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥40॥
ॐ ह्रीं पुरुष वेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुषों में रमती भारी, उसके वेदोदय नारी।
प्रभु स्त्री वेद के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥41॥
ॐ ह्रीं स्त्रीवेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर-नारी की अभिलाषा, रमने की रखते आशा।
प्रभु वेद नपुंसक नाशी, पद पाए हैं अविनाशी॥42॥

ॐ ह्रीं नपुंसकवेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म (चौपाई छन्द)

दिव्य भोग स्वर्गों के पाये, फिर भी तृप्त नहीं हो पाए।
नाश करें देवायू प्राणी, बनते क्षण में केवलज्ञानी॥43॥

ॐ ह्रीं देव आयु कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पशूगति में हम भटकाए, वध बन्धन आदि दुख पाए।
तिर्यंचायूआप विनाशी, पद पाए प्रभुजी अविनाशी॥44॥

ॐ ह्रीं तिर्यञ्च आयु कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरकायु में दुःख सहे हैं, शेष कोई भी नहीं रहे हैं।
नरकायू के हुए विनाशी, पद पाए जिनवर अविनाशी॥45॥

ॐ ह्रीं नरक आयु कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म (शम्भू छन्द)

कर्मोदय से नाम कर्म के, नाना भेष बनाए हैं।
नरक गती में जाकर भगवन्, दुःख अनेकों पाए हैं।
नरक गती जो नाम कर्म है, उसका तुमने नाश किया।
बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यक् ज्ञान प्रकाश किया॥46॥

ॐ ह्रीं नरकगति नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छेदन भेदन वध बन्धन कई, भूख प्यास के दुःख सहे।
भार वहन की मायाचारी, बँधते खोटे कर्म रहे॥
पशुगती जो नामकर्म है, उसका तुमने नाश किया।
बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यक् ज्ञान प्रकाश किया॥47॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच गति नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरण करें नर पशू लोक के, नरक गती जब जाते हैं।
विग्रह गति में पूर्व देह की, आकृति प्राणी पाते हैं॥
यही नरक गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभू विनाश।
बनकर केवलज्ञानी भगवन, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश॥48॥

ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वी नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गती के जीव मरण कर, पशु गति को जब पाते हैं।
विग्रह गति में पूर्व देह सम, आकृति में ही जाते हैं॥
यह तिर्यंच गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभू विनाश।
बनकर केवल ज्ञानी भगवन्, करते सम्यक ज्ञानप्रकाश॥49॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचगत्यानुपूर्वी नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय से जग से प्राणी, एकेन्द्रिय तन पाते हैं।
नामकर्म स्थावर पाके, दुःख अनेक उठाते हैं॥
श्री जिनेन्द्र ने उक्त कर्म का, पूर्ण रूप से नाश किया।
बनकर केवल ज्ञानी प्रभु ने, केवल ज्ञान प्रकाश किया॥50॥

ॐ ह्रीं स्थावर नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

एक इन्द्री जीव जग में, प्राप्त जो करते सही।
एक इन्द्री जाति उनकी, जैन आगम में कही॥
एक इन्द्री जाति है यह, कर्म दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥51॥

ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक में दो इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं सही।
जाति दो इन्द्री सभी की, जैन आगम में कही॥
कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥52॥

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक में तिय इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं सही।
जाति तिय इन्द्री सभी की, जैन आगम में कही॥
कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥53॥

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियाँ हैं चार जिनके, चार इन्द्री वह कहे।
चार इन्द्री जीव जग में, घोर दुखमय जो रहे॥
कर्म है यह नाम जाती, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥54॥

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उष्ण किरणें सूर्य सम हैं, मूल में जो शीत है।
कर्म यह दुखकर जगत में, न किसी का मीत है॥
कर्म है यह नाम आतप, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥55।

ॐ ह्रीं आतप नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रमा सम शीत किरणें, मूल में भी शीत है।
कर्म यह दुखकर जगत में, न किसी का मीत है॥
कर्म यह उद्योत भाई, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥56॥

ॐ ह्रीं उद्योत नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

जीव एक तन पाने वाला, एक रहे जिसका स्वामी।
नामकर्म प्रत्येक कहा यह, कहते हैं अन्तर्यामी।।
कर्म नाश यह किया प्रभू ने, तीन लोक में हुए महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भाव सहित करते गुणगान॥57॥

ॐ ह्रीं प्रत्येक नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक देह को पाने वाले, हैं अनेक जिसके स्वामी।
नामकर्म साधारण है यह, कहते जिन अन्तर्यामी।।
कर्म नाश यह किया प्रभू ने, तीन लोक में हुए महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भाव सहित करते गुणगान॥58॥

ॐ ह्रीं साधारण नाम कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- दाता देना चाहते, दे न पावें दान।
अन्तराय यह दान है, नाश किए भगवान॥59॥

ॐ ह्रीं दानान्तराय कर्म विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लेना चाहें लाभ जो, ले न पावे दान।
अन्तराय यह लाभ है, नाश किएभगवान॥60॥

ॐ ह्री लाभान्तराय कर्म विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग भोगना चाहते, भोग सकें न भोग।
अन्तराय यह भोग है, मैटे प्रभु यह रोग॥61॥

ॐ ह्रीं भोगान्तराय कर्म विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाह रहे उपभोग कई, मिले नहीं उपभोग।
अन्तराय उपभोग यह, मैटे जिन यह रोग॥62॥

ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय कर्म विनाशक परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय से वीर्य की, प्राणी करते हान।
यही वीर्य अन्तराय है, नाश किए भगवान॥63॥

ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्म विनाश परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष अरू मोह विकारी, भावों से संसारी जीव।
भाव कर्म का आस्रव करके, कर्म बन्ध भी करें अतीव॥
भाव कर्म का नाश किए जिन, तीन लोक में हुए महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, भाव सहित करते गुणगान।।64।।

ॐ ह्रीं भाव कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का पतझड़ हो जाए, विशद धर्म की आए बहार।
द्रव्य कर्म तिरेसठ प्रकृतियाँ, भाव कर्म का हो संहार।।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, त्रिभुवन पति बनते अविराम।
तीर्थंकर जिन शांतिनाथ पद, मेरा बारम्बार प्रणाम।।65।।

ॐ ह्रीं परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप मंत्र (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्रीं शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रवशांतिं कुरू कुरू ह्रीं नमः स्वाहा। ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्व शान्तिं कुरू कुरू नमः स्वाहा।।

जयमाला

दोहा- विश्व वंद्य तुम हो प्रभू, नाशी कर्म कलंक।
गाते हम जयमालिका, आप हुए अकलंक।।

(छन्द अष्टक)

श्री शांतिनाथ की पूजा से, जीवों को शांती मिलती है।
जो श्रद्धा भक्ती हृदय धरे, तो ज्ञान रोशनी खिलती है।।
प्रभु पूरब भव में भी तुमने, सद् संयम को अपनाया था।
सर्वार्थ सिद्धि के सुख भोगे, यह पुण्य का ही फल पाया था।।
तैंतिस सागर की आयुपूर्ण, करके तुमने अवतार लिया।
श्री हस्तिनागपुर में माता, ऐरादेवी को धन्य किया।।
माता ने स्वप्न देख सोलह, मन में भारी विस्मय पाया।
श्री विश्वसेन नृप ने उसका, फल रानी को था समझाया।।
छह माह पूर्व से नगरी में, रत्नों की वृष्टि तीन काल।
नो माह गर्भ के अवसर पर, देवों ने आकर की विशाल।।
शुभ ज्येष्ठ बदी चौदस अनुपम, बालक ने भूपर जन्म लिया।
तब इन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्रों ने, उत्सव आकर के महत् किया।।
सौधर्म इन्द्र ले ऐरावत, श्री हस्तिनागपुर में आया।
तब शची ने बालक लिया हाथ, मायामयी बालक पधराया।।
सौधर्म इन्द्र ने बालक का, पाण्डुक वन में अभिषेक किया।
फिर शची ने चंदन चर्चित कर, बालक के तन को पोंछ दिया।।
दायें पग में लख हिरण चिन्ह, सौधर्म इन्द्र ने उच्चारा।
यह शांतिनाथ हैं तीर्थंकर, बोलो सब मिलकर जयकारा।।
फिर नाचत गावत इन्द्र सभी, श्री विश्वसेन दरबार जाय।

बालक को माँ के हाथ सौंप, तन मन में अतिशय हर्ष पाय।।
अनुक्रम से वृद्धी को पाकर, फिर युवा अवस्था को पाया।
लखकर स्वरूप प्रभु के तन का, तब कामदेव भी शर्माया।।
फिर शांतिराज भी हुए विशद, श्री कामदेव पद के धारी।
बन गये चक्रवर्ती जिनवर, शुभ चक्र रत्नके अधिकारी।।
छह खण्ड राज्य का भोग किया, पर योग मयी न हो पाए।
भोगों से भोगे गये स्वयं, पर भोग पूर्ण न हो पाए।।
यह सोच हृदय में आने से, वैराग्य भाव मन में आया।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी, को संयम प्रभु ने अपनाया।।
फिर ध्यान अग्नि से कर्म चार, प्रभु कर्म घातिया नाश किए।
फिर पौष शुक्ल की दशमी को, शुभ केवल ज्ञान प्रकाश किए।।
श्री शांतिनाथ तीर्थंकर जिन, सोलहवें जग में कहलाए।
प्रभु समवशरण उपदेश दिए, तब सुनने भव्य जीव आए।।
वह श्रद्धा ज्ञानाचरण प्राप्त कर, मोक्ष मार्ग को अपनाए।
पूजा भक्ती कर भाव सहित, श्री जिनवर की महिमा गाए।।
फिर ज्येष्ठ कृष्ण चौदस को प्रभु जी, कर्म अघाती नाश किए।
श्री विश्व हितंकर शांतिनाथ, जिन मोक्ष महल में वास किए।।
प्रभु की महिमा जग में अनुपम, जिसका कोई ओर न छोर कहीं।
शांती का दाता अवनी पर, हे नाथ! आप सम कोई नहीं।।
भक्ती से मुक्ती मिलती है, यह आज समझ में आया है।
जीवन का पाया राज अहा, जब से तव दर्शन पाया है।।
भक्ती कर भगवन् बनते हैं, जो भक्त शरण में आते हैं।
क्या त्रिभुवन पति के द्वारे से, कोइ खाली हाथों जाते हैं।।
हम पूजा करने हेतु नाथ, यह द्रव्य मनोहर लाए हैं।
दो मुक्ति हमें भवसागर से, यह फल पाने को आए हैं।।

दोहा- कामदेव चक्रेश अरु, जिन तीर्थेश महान्।
तीन-तीन पद धार कर, शिवपुर कियाप्रयाण।।

ॐ ह्रीं परमशांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा- शान्ति जिन के नाम का, करो 'विशद' तुम जाप।
चरण कमल की भक्ति, से कट जायेंगे पाप।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री शान्तिनाथ चालीसा

दोहा अरहन्तों को नमन कर, सिद्धों को उर धार।
आचार्योपाध्याय साधु को, वन्दन बारम्बार॥
चैत्य-चैत्यालय धर्म जिन, आगम यह नवदेव।
शांतिनाथ के चरण में, वन्दन करूँ सदैव॥

(तर्ज-नित देव मेरी.....)

शांति जिन की वन्दना जो, जीव करते हैं सभी।
सुख-शांति में रहते मगन वह, खेद न पाते कभी॥
प्रभु हैं दिगम्बर वीतरागी, शुद्ध हैं निर्दोष हैं।
जो ज्ञान दर्शन वीर्य सुखमय, सद्गुणों के कोष हैं॥1॥
चयकर प्रभु सर्वार्थसिद्धि, से यहाँ पर आए हैं।
विश्वसेन नृप के पुत्र, माता ऐरादेवी पाए हैं॥
जन्में हस्तिनापुर में, वंश इक्ष्वाकु कहा।
भरणी शुभ नक्षत्र पाए, काल प्रातः का रहा॥2॥
माह भादों कृष्ण सातें, गर्भ में आए प्रभो!।
स्वप्न सोलह मात देखे, नृत्य सुर कीन्हें विभो!॥
ज्येष्ठ वदि चौदस प्रभु का, जन्म कल्याणक कहा।
इन्द्र ने लक्षण चरण में, हिरण शुभ देखा अहा॥3॥
चक्रवर्ती रहे पंचम, मदन बारहवें कहे।
प्रभु सोलहवें कहे जिन, स्वर्ण रंग के जो रहे॥
वर्ष इक लख श्रेष्ठ आयु, प्रभु की उत्तम कही।
धनुष चालिस श्रेष्ठ प्रभु के, तन की ऊँचाई रही॥4॥
जाति स्मरण से प्रभु, वैराग्य धारण कर लिए।
वैशाख शुक्ला तिथि एकम्, भक्त तृतिय जो किए॥
आम्रवन में नन्द तरु तल, में प्रभु दीक्षा धरे।
दीक्षा करके सहस्र राजा, केश लुन्चन खुद करे॥5॥
गरुड प्रभु का यक्ष मानो, मानसी यक्षी कही।
हरिषेणा मुख्य प्रभु की, आर्यिका अनुपम रही॥
पौष शुक्ला तिथि दशमी, ज्ञानकेवल पाए हैं।
समवशरण तब देव आके, श्रेष्ठ शुभ बनवाए हैं॥6॥
व्यास साढ़े चार योजन, सभा का शुभ जानिए।
नगर हस्तिनापुर में, ज्ञान पाए मानिए।

एक महिने पूर्व से जो, योग का शुभ रोधकर।
ध्यान चेतन का लगाए, आत्मा का बोधकर॥7॥
गिरि सम्मेदाचल से मुक्ति, शांति जिनवर पाए हैं।
ज्येष्ठ कृष्णा तिथि चौदश, शिव गमन बतलाए हैं॥
भूप नौ सौ साथ में, मुक्तिश्री को पाए हैं।
काल प्रातः मोक्ष शुभ श्री, शांति जिन का गाए हैं॥8॥
गणी छत्तिस शांति जिन के, वीतरागी जानिए।
प्रथम चक्रायुध गणी थे, श्रेष्ठतम शुभ मानिए॥
शांति जिन की अर्चन कर, शांति पाते हैं सभी।
ध्यान जो करते प्रभु का, वे दुःखी न हों कभी॥9॥
शांति जिन के बिम्ब जग में, कष्ट इस जग के हरें।
भक्त के गृह शांति जिनवर, शांति की वर्षा करें॥
शांति जिन के तीर्थ जग में, कई जगह पर छाए हैं।
शांति पाने शांति जिन के, चरण में हम आए हैं॥10॥
बानपुर आहार थूवौन, वीना खजुराहो कहा।
हस्तिनापुर देवगढ़ अरु, रामटेक अतिशय रहा।
भाव से जिन अर्चना कर, पुण्य का अर्जन करें।
शांति जिन का ध्यान करके, भव जलधि से हम तरें॥11॥

दोहा चालीसा चालिस दिन, पढ़े जो चालिस बार।
'विशद' शांति सौभाग्य पा, पावे भव से पार॥

आरती

(तर्ज-म्हारी मां जिनवाणी...)

म्हारे शांति जिनवर, थारी तो जय जयकार।
हो...थारे हम द्वारे आए, करने को आरती लाए॥
दीपक ले मंगलकार...थारी तो...।
मन वच तन तुमको ध्याऊँ, भावों से प्रभु गुण गाऊँ।
कर दो मेरा उद्धार...थारी...॥
सुर नर गुण थारे गाते, भक्ती से शीश झुकाते।
अर्चा करें मनहार...थारी तो...॥
शांती के तुम हो दाता, जग के हो भाग्य विधाता।
महिमा है अपरम्पार....थारी तो...॥
महिमा जिन की जो गाते, अक्षय कारी हो जाते।
होते विशद भव पार...थारी तो...॥

तुमरे गुण हम भी गाएँ, भव से अब मुक्ती पाएँ।
तुम हो भव तारणहार...थारी तो...।।

प्रशस्ति

लोका-लोक के मध्य में, मध्य लोक मनहार।
मध्य लोक के मध्य है, मेरू मंगलकार।।1।।
मेरू की दक्षिण दिशा, में शुभ क्षेत्र महान।
भरत क्षेत्र शुभ नाम है, अलग रही पहिचान।।2।।
उत्तर में हिमवन गिरि, दक्षिण लवण समुद्र।
तिय नदियाँ जिसमें महा, अन्य कई हैं क्षुद्र।।3।।
मध्य रहा विजयार्द्ध शुभ, जिसमें हैं छह खण्ड।
रहते हैं नर पशु जहाँ, और रहे कई खण्ड।।14।।
कर्मभूमि जो है परम, बना है धनुषाकार।
मंगलमय रचना बनी, जग में अपरम्पार।।5।।
वर्तमान अवसर्पिणी, में चौबीस जिनेश।
तीर्थंकर पद में हुए, धार दिगम्बर भेष।।6।।
कामदेव चक्री हुए, तीर्थंकर भी साथ।
सोलहवे तीर्थेश का, नाम है शान्तीनाथ।।7।।
शांतीदायक जो कहे, तीनों लोक प्रसिद्ध।
अष्ट कर्म को नाशकर, आप हुए हैं सिद्ध।।8।।
सुख शांती की चाह में, घूमें सारे जीव।
कर्मोदय से लोक में, पाते दुःख अतीव।।9।।
शांती जिन की अर्चना, करे दुःखों का नाश।
जीवन मंगलमय बने, होवे आत्मप्रकाश।।10।।
चैत्र कृष्ण एकम् तिथि, पच्चीस सौ चौंतीस।
रहा वीर निर्वाण शुभ, तारीख जानो बाईस।।11।।
जयपुर शास्त्री नगर में, शान्ती नाथ विधान।
शान्ति के शुभ भाव से, पूर्ण किया गुणगान।।12।।
लघु धी से जो कुछ लिखा, मानो यही प्रमाण।
सर्व गुणी जन दें 'विशद', हमको करुणा दान।।13।।
खास दास की आस यह, और न कोई अरदास।
संयम मय जीवन रहे, अन्तिम मुक्तीवास।।14।।

विशद
श्री कुन्थुनाथ विधान
माण्डला

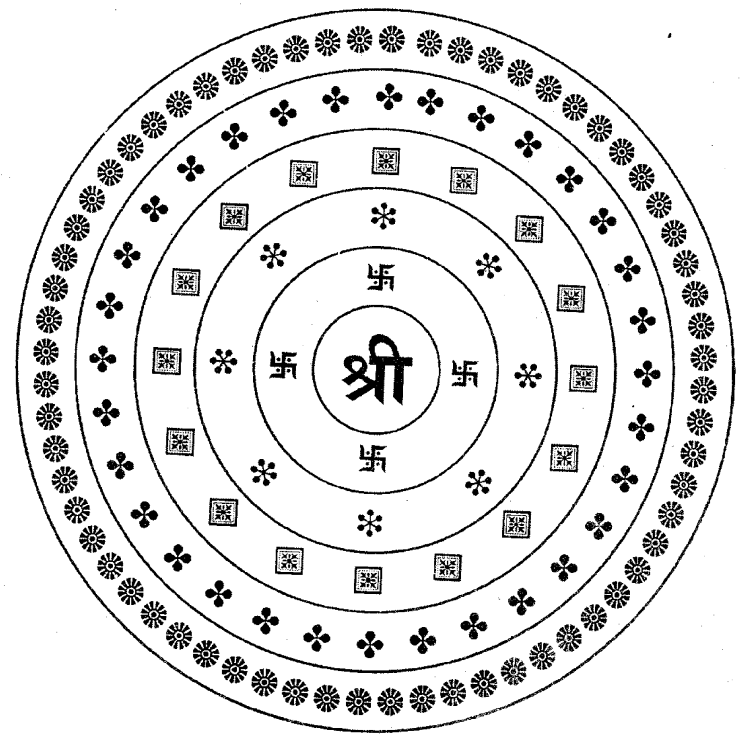

प्रथम वलय में – 4 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 8 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 16 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 32 अर्घ्य
पंचम वलय में – 64 अर्घ्य
कुल 124 अर्घ्य

रचयिता
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागरजी महाराज

श्री कुन्थुनाथ स्तवन

(शम्भू छन्द)

कर्म घातिया नाश किए तब, प्रकट हुए गुण उपमातीत।
कुन्थुनाथ जिन के पद वन्दन, रहे चरण में उनके प्रीत॥
सर्व गुणों के धारी जिनवर, भव्यों का करते कल्याण।
विशद स्तवन उनके चरणों, भक्तिभाव से है गुणगान॥1॥

हे देवाधिदेव सिद्ध श्री!, हे सर्वज्ञ! त्रिलोकीनाथ।
हे परमेश्वर! वीतराग श्री, जिन तीर्थंकर के पद माथ॥
हे जिन श्रेष्ठ महानुभाव कई, वर्धमान! स्वामिन् शुभ नाम।
तव चरणों की शरण प्राप्त हो, करते बारंबार प्रणाम॥2॥

जिनने जीते हर्ष द्वेष मद, अरु जीता है ईर्ष्याभाव।
मोह परीषह को भी जीता, अन्तर में जागा समभाव॥
जन्म मरण आदिक रोगों को, जीत लिया भव का कर अन्त।
ऐसे श्री जिनदेव हमारे, सदा-सदा होवें जयवन्त॥3॥

तीन लोकवर्ती जीवों के, हितकारक हैं आप महान्।
धर्म चक्ररूपी सूरज हैं, लाल चरण हैं आभावान॥
इन्द्र मुकुट में चूड़ामणि की, किरणों से अति शोभामान।
जयवन्तों श्री कुन्थुनाथ को, करते हैं जग का कल्याण॥4॥

तीन लोक के शिखामणि हे, भगवन्! आपकी जय-जय हो।
तिमिर विनाशक जग के रवि तुम, मोह तिमिर मम् दूर करो॥
अविनाशी शांति हे भगवन्! हमको आप प्रदान करें।
रक्षक नहीं दूसरा कोई, एक आप कल्याण करें॥5॥

दोहा- जीवों पर करुणा करें, प्रभू त्रिलोकीनाथ।
भक्त वन्दना कर रहे, चरण झुकाकर माथ॥

(पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

श्री कुन्थुनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

कुन्थु जिन की अर्चना को, भाव से हम आए हैं।
पुष्प यह अनुपम सुगन्धित, साथ अपने लाए हैं॥
कामदेव चक्री जिनेश्वर, तीन पद के नाथ हैं।
जोड़कर द्वय हाथ अपने, पद झुकाते माथ हैं॥
हे नाथ! हमको मोक्ष पद का, मार्ग शुभ दर्शाइये।
प्रभु करुण होकर के हृदय में, आज मेरे आइये॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौबोला छन्द)

छानके निर्मल जल भर लाए, उसको गरम कराते हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, जिन पद श्रेष्ठ चढ़ाते हैं॥
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का पावन चंदन, केसर संग घिसा लाए।
भव आताप मिटाने हेतू, चरण चढ़ाने हम आए॥
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बासमती के अक्षय अक्षत, श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
अक्षय पद पाने को भगवन्, चरण शरण में आए हैं॥
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन से शुभ पुष्प सुगन्धित, चुनकर के हम लाए हैं।
काम बाण की महावेदना, शीघ्र नशाने आए हैं॥
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य मनोहर, श्रेष्ठ बनाकर लाए हैं।
क्षुधा वेदना नाश हेतु प्रभु, यहाँ चढ़ाने लाए हैं॥
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय घृत के दीप मनोहर, अतिशय यहाँ जलाते हैं।
मोह महातम नाश हेतु हम, जिनवर के गुण गाते हैं॥
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध मय धूप जलाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, चरण शरण को पाते हैं॥
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे-ताजे श्रेष्ठ सरस फल, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
मोक्ष महाफल पाने हेतु, भाव सहित गुण गाए हैं॥
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्पादिक, चरुवर दीप जलाते हैं।
धूप और फल साथ मिलाकर, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं॥

कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

श्रीमती के गर्भ में, कुंथुनाथ भगवान।
सावन दशमी कृष्ण की, पाए गर्भ कल्याण॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ॥1॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

एकम् सुदी वैशाख माह में, कुंथुनाथ जी जन्म लिए।
मात श्रीमती से जन्मे प्रभु, हस्तिनागपुर धन्य किए॥
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हों हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार॥2॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

वैशाख सुदी एकम् तिथि पाय, दीक्षा पाए कुंथु जिनाय।
हुए स्वात्म रस में लवलीन, कर्म किए प्रभु क्षण में क्षीण॥
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

चैत्र शुक्ला तीज स्वामी, कुंथु जिन तीर्थेश जी।
ज्ञान केवल प्राप्त कीन्हें, दिए शुभ संदेश जी॥

जिन प्रभू की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला तृतीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

कुंथुनाथ सम्मेदाचल से, मोक्ष गये मुनियों के साथ।
एकम् सुदी वैशाख माह को, बने आप शिवपुर के नाथ।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभू अंतर्यामी।
हमको मुक्ती पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- गुण गाते जिनदेव के, गुण पाने मनहार।
जयमाला गाते यहाँ, प्रभू की बारम्बार।।

(वेसरी छन्द)

कुन्थुनाथ तीर्थंकर स्वामी, केवलज्ञानी अंतर्यामी।
उनकी हम जयमाला गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, नगर हस्तिनापुर उपजाए।
माता श्रीमती को जानो, सूर्यसेन नृप पितु पहिचानो।।
प्रभु ने अतिशय पुण्य कमाया, तीर्थंकर पदवी को पाया।
कामदेव की पदवी पाई, चक्रवर्ति पद पाए भाई।।
तप्त स्वर्ण सम तन था प्यारा, मोहित जो करता था न्यारा।
चक्ररत्न प्रभु ने प्रगटाया, छह खण्डों पर राज्य चलाया।।
होकर नव निधियों के स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।
चौदह रत्न आपने पाए, त्याग सभी संयम अपनाए।।
तृण की भांति सब कुछ छोड़ा, सारे जग से नाता तोड़ा।
भोगों में जो नहीं लुभाए, परिजन उन्हें रोक न पाए।।
केश लौंचकर दीक्षाधारी, संयम धार बने अनगारी।

निज आतम का ध्यान लगाए, संवर और निर्जरा पाए।।
कर्म घातिया प्रभु ने नाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे।
समवशरण तब देव बनाए, भक्ति करके वह हर्षाए।।
पाँच हजार धनुष ऊँचाई, समवशरण की जानो भाई।
बीस हजार सीढ़ियाँ जानों, अष्ट भूमिया अतिशय मानो।।
कमलासन पर जिन को जानो, अधर विराजें ऐसा मानो।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, जन-जन के मन तब हर्षाए।।
प्रातिहार्य तब प्रगटे भाई, यह है जिन प्रभू की प्रभुताई।
कोई सद्श्रद्धान जगाते, कोई संयम को पा जाते।।
लगें सभाएँ बारह भाई, जिनकी महिमा कही न जाई।
मुनि आर्यिका गणधर आवें, देव देवियाँ भाग्य जगावें।।
मानव और पशु भी आते, भाव सहित प्रभु के गुण गाते।
योग निरोध प्रभु जी कीन्हें, कर्म नाश शिव पदवी लीन्हें।।

दोहा भाते हैं यह भावना, शिव नगरी के नाथ।
तव पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा चक्री काम कुमार जी, तीर्थंकर जिनदेव।
यही भावना है 'विशद', अर्चा करूँ सदैव।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

प्रथम वलयः

दोहा कर्म बन्ध कर जीव यह, भटक रहा संसार।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने भव से पार।।

(प्रथमवलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

कुन्थु जिन की अर्चना को, भाव से हम आए हैं।
पुष्प यह अनुपम सुगन्धित, साथ अपने लाए हैं।।
कामदेव चक्री जिनेश्वर, तीन पद के नाथ हैं।

जोड़कर द्वय हाथ अपने, पद झुकाते माथ हैं॥
हे नाथ! हमको मोक्ष पथ का, मार्ग शुभ दर्शाइये।
प्रभु करुण होकर के हृदय में, आज मेरे आइये॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चतुः बन्ध रहित जिन

(चौपाई छन्द)

कर्मों की प्रकृति अनुसार, बन्ध करें जो भली प्रकार।
प्रकृति बन्ध कहे भगवान, भ्रमण कराए सर्व जहान॥
बन्ध का करके पूर्ण विनाश, पाते केवल ज्ञान प्रकाश।
अर्घ्य चढ़ाते यहाँ महान, मुक्ती पाने हे भगवान॥1॥

ॐ ह्रीं प्रकृति बन्ध विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्मों की स्थिति अनुसार, बन्ध करे सारा संसार।
स्थिति बन्ध यही है खास, पाना है उससे अवकाश॥
बन्ध का करके पूर्ण विनाश, पाते केवल ज्ञान प्रकाश।
अर्घ्य चढ़ाते यहाँ महान, मुक्ती पाने हे भगवान॥2॥

ॐ ह्रीं स्थिति बन्ध विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्मों के फल का हो योग, जीव प्राप्त करते दुख भोग।
बन्ध कहा है यह अनुभाग, करना कर्मबन्ध का त्याग॥
बन्ध का करके पूर्ण विनाश, पाते केवल ज्ञान प्रकाश।
अर्घ्य चढ़ाते यहाँ महान, मुक्ती पाने हे भगवान॥3॥

ॐ ह्रीं अनुभाग बन्ध विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जीव कर्म हों एक मेक, दुख पाएँ यह जीव अनेक।
यह प्रदेश कहलाए बन्ध, अब विनाश करना सम्बन्ध॥
बन्ध का करके पूर्ण विनाश, पाते केवल ज्ञान प्रकाश।
अर्घ्य चढ़ाते यहाँ महान, मुक्ती पाने हे भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं प्रदेश बन्ध विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बन्ध के भेद बताए चार, जिससे रहता है संसार।
जीव कर्म का यह सम्बन्ध, काल अनादि होता बन्ध॥

बन्ध का करके पूर्ण विनाश, पाते केवल ज्ञान प्रकाश।
अर्घ्य चढ़ाते यहाँ महान, मुक्ती पाने हे भगवान॥5॥

ॐ ह्रीं चतुः भेद बन्ध विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा **दुखदायी वसु कर्म हैं, देते दुःख अतीव।**
जिन पूजा व्रत ध्यान से, मुक्ती पावें जीव॥

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

कुन्थु जिन की अर्चना को, भाव से हम आए हैं।
पुष्प यह अनुपम सुगन्धित, साथ अपने लाए हैं॥
कामदेव चक्री जिनेश्वर, तीन पद के नाथ हैं।
जोड़कर द्वय हाथ अपने, पद झुकाते माथ हैं॥
हे नाथ! हमको मोक्ष पद का, मार्ग शुभ दर्शाइये।
प्रभु करुण होकर के हृदय में, आज मेरे आइये॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

8 कर्म विनाशक जिन

(चाल) अहो जगत गुरु...

'ज्ञानावरणी' कर्म ज्ञान को ढाके भाई,
कर्म घातिया खास आत्मा को दुखदायी।
करके कर्म विनाश आप शिव सुख उपजाए,
बहु गुण पाने नाथ चरण में अर्घ्य चढ़ाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म बन्ध विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्म 'दर्शनावरण' दर्श गुण का है नाशी,
कर्म नाश जिन द्रव्यों के होते प्रतिभाषी।

करके कर्म विनाश आप शिव सुख उपजाए,
बहु गुण पाने नाथ चरण में अर्घ्य चढ़ाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्म 'वेदनीय' सुख दुख का वेदन करवाए,
वेदनीय कर नाश प्रभु जी शिव पद पाए।
करके कर्म विनाश आप शिव सुख उपजाए,
बहु गुण पाने नाथ चरण में अर्घ्य चढ़ाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मोहनीय' है कर्म दुखों को देने वाला,
करके आतम ध्यान उसे कर दिया निकाला।
करके कर्म विनाश आप शिव सुख उपजाए,
बहु गुण पाने नाथ चरण में अर्घ्य चढ़ाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'आयु' कर्म चारों गतियों में भ्रमण कराए,
बैर करे जीवों को भारी दुख पहुँचाए।
करके कर्म विनाश आप शिव सुख उपजाए,
बहु गुण पाने नाथ चरण में अर्घ्य चढ़ाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं आयु कर्म विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चतुर्गति में 'नाम' कर्म कई रूप बनाए,
जिसके कारण प्राणी जग में बहुत सताए।
करके कर्म विनाश आप शिव सुख उपजाए,
बहु गुण पाने नाथ चरण में अर्घ्य चढ़ाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं नाम कर्म विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऊँच नीच यह 'गोत्र' कर्म के भेद कहे हैं,
जिसके कारण प्राणी दुखमय सभी रहे हैं।
करके कर्म विनाश आप शिव सुख उपजाए,
बहु गुण पाने नाथ चरण में अर्घ्य चढ़ाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अन्तराय' के कारण विघ्न अनेकों आते,
जिसके कारण प्राणी जग में दुख बहु पाते।
करके कर्म विनाश आप शिव सुख उपजाए,
बहु गुण पाने नाथ चरण में अर्घ्य चढ़ाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

काल अनादी कर्मों ने यह जगत भ्रमाया,
श्री जिनवर ने उनका अब कर दिया सफाया।
करके कर्म विनाश आप शिव सुख उपजाए,
बहु गुण पाने नाथ चरण में अर्घ्य चढ़ाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा **अशुभ ध्यान तजके विशद, करें शुद्ध जो ध्यान।
उन जीवों का शीघ्र ही, हो जाता कल्याण॥**

(तृतीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

कुन्थु जिन की अर्चना को, भाव से हम आए हैं।
पुष्प यह अनुपम सुगन्धित, साथ अपने लाए हैं॥
कामदेव चक्री जिनेश्वर, तीन पद के नाथ हैं।
जोड़कर द्वय हाथ अपने, पद झुकाते माथ हैं॥
हे नाथ! हमको मोक्ष पथ का, मार्ग शुभ दर्शाइये।
प्रभु करुण होकर के हृदय में, आज मेरे आइये॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

16 ध्यान सम्बन्धी अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

'आर्त्तध्यान' होने लगता है, हो जाये यदि इष्ट वियोग।
जिसके कारण बढ़े जीव को, जन्म जरा मृत्यु का रोग॥

आर्त्तध्यान का नाश किए हैं, जिनवर कुन्थुनाथ भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥1॥

ॐ ह्रीं इष्ट वियोगज आर्त्तध्यान विनाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'अनिष्ट संयोग' यदि तो, होने लगता आर्त्तध्यान।
जागृत होता है क्लेश फिर, उसको रहे न निज का ज्ञान॥
आर्त्तध्यान का नाश किए हैं, जिनवर कुन्थुनाथ भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥2॥

ॐ ह्रीं अनिष्ट संयोग आर्त्तध्यान विनाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोगादि के कारण कोई, तन में पीड़ा होय महान्।
'पीड़ा चिन्तन' ध्यान होय तब, ऐसा कहते हैं भगवान॥
आर्त्तध्यान का नाश किए हैं, जिनवर कुन्थुनाथ भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥3॥

ॐ ह्रीं पीड़ा चिन्तन आर्त्तध्यान विनाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगामी भोगों की वाञ्छा, जग में करता जो इंसान।
तप के फल से चाहे यदि तो, जैनागम में कहा 'निदान'॥
आर्त्तध्यान का नाश किए हैं, जिनवर कुन्थुनाथ भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥4॥

ॐ ह्रीं निदान आर्त्तध्यान विनाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके हैं परिणाम क्रूर अति, 'हिंसा में माने आनन्द'।
रौद्र ध्यान का प्रथम भेद यह, कहलाता है हिंसानन्द॥
रौद्र ध्यान का नाश किए हैं, जिनवर कुन्थुनाथ भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥5॥

ॐ ह्रीं हिंसानन्द रौद्रध्यान विनाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झूठ बोलकर खुश होता जो, 'मृषानन्द' वह ध्यान रहा।
कर्म बन्ध दुर्गति का कारण, जैनागम में यही कहा॥

रौद्र ध्यान का नाश किए हैं, जिनवर कुन्थुनाथ भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥6॥

ॐ ह्रीं मृषानन्द रौद्रध्यान विनाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मालिक की आज्ञा बिन वस्तु, लेना चोरी रहा सदैव।
चोरी कर आनन्द मनाना, 'चौर्यानन्द' ध्यान है एव॥
रौद्र ध्यान का नाश किए हैं, जिनवर कुन्थुनाथ भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥7॥

ॐ ह्रीं चौर्यानन्द रौद्रध्यान विनाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्छाभाव को कहा परिग्रह, परिग्रह पा खुश हों जो लोग।
'परिग्रहानन्द' ध्यान का उनको, होता है भाई संयोग॥
रौद्र ध्यान का नाश किए हैं, जिनवर कुन्थुनाथ भगवान।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, पाने को हम पद निर्वाण॥8॥

ॐ ह्रीं परिग्रहानन्द रौद्रध्यान विनाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिरोधार्य जिन आज्ञा करते, भाव सहित जग में जो लोग।
चिन्तन में जो लीन रहें नित, 'आज्ञा विचय' ध्यान के योग॥
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भव सागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥9॥

ॐ ह्रीं आज्ञा विचय धर्मध्यान विनाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो संसार देह भोगों के, चिन्तन में रहते लवलीन।
वह हैं 'अपाय विचय' के धारी, आत्म ध्यान में रहते लीन॥
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भव सागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥10॥

ॐ ह्रीं अपाय विचय धर्मध्यान विनाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने कृत कारित के फल को, स्वयं भोगते कर्म संयोग।
ऐसा चिन्तन ध्यान करें जो, 'विपाक विचयधारी' वह लोग॥

धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भव सागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥11॥

ॐ ह्रीं विपाक विचय धर्मध्यान विनाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक का क्या स्वरूप है, उसमें जो भी है आकार।
होता है 'संस्थान विचय' से, ध्यान लोक का कई प्रकार॥
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भव सागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥12॥

ॐ ह्रीं संस्थान विचय धर्मध्यान विनाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथक द्रव्य गुण पर्यायों का, शब्दों का जो करते ध्यान।
'पृथक्त्व वितर्क' वीचार ध्यान है, ऐसा कहते हैं भगवान॥
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥13॥

ॐ ह्रीं पृथक्त्ववितर्कवीचार शुक्लध्यान विनाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञान के अवलम्बन से, चिन्तन करते हैं जो लोग।
एक द्रव्य पर्याय योग का, 'एकत्व वितर्क' ध्यान के योग॥
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥14॥

ॐ ह्रीं एकत्व वितर्क शुक्लध्यान विनाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रिया सूक्ष्म हो जाती तन की, प्रकट होय जब केवल ज्ञान।
निज आतम में होय लीनता, 'सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती' ध्यान॥
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥15॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती शुक्लध्यान प्रकाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रिया योग तन की रुकते ही, होते आतम में लवलीन।
'व्युपरत क्रिया निवृत्ति' ध्यानी, रहते निज चेतन में लीन॥

शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ती पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास॥16॥

ॐ ह्रीं व्युपरत क्रिया निवृत्ति शुक्लध्यान प्रकाशक कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा **अशुभ ध्यान से बंध हो, बढ़े नित्य संसार।**
शुद्ध ध्यान से मोक्ष हो, है आगम का सार॥

ॐ ह्रीं षोडश प्रकार शुभाशुभ ध्यान रहित कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा **आगम में बत्तिस कहे, कर्माश्रव के द्वार।**
करके उनका रोध अब, जाना भव से पार।

(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

कुन्थु जिन की अर्चना को, भाव से हम आए हैं।
पुष्प यह अनुपम सुगन्धित, साथ अपने लाए हैं॥
कामदेव चक्री जिनेश्वर, तीन पद के नाथ हैं।
जोड़कर द्वय हाथ अपने, पद झुकाते माथ हैं॥
हे नाथ! हमको मोक्ष पथ का, मार्ग शुभ दर्शाइये।
प्रभु करुण होकर के हृदय में, आज मेरे आइये॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

32 आश्रव रहित जिन

(चौपाई)

तत्त्वों में श्रद्धा ना पावे, वह ही 'मिथ्याज्ञान' कहावे।
प्रभु सम्यक श्रद्धान जगाए, कर्म नाश कर शिव पद पाए॥1॥

ॐ ह्रीं अज्ञान मिथ्यात्व रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हो 'विपरीत' मार्ग श्रद्धानी, मिथ्यादृष्टी वह अज्ञानी।
प्रभु सम्यक श्रद्धान जगाए, कर्म नाश कर शिव पद पाए॥2॥
ॐ ह्रीं विपरीत मिथ्यात्व रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हो 'एकान्त मार्ग' श्रद्धानी, फिरे भटकता जग अज्ञानी।
प्रभु सम्यक श्रद्धान जगाए, कर्म नाश कर शिव पद पाए॥3॥
ॐ ह्रीं एकान्त मिथ्यात्व रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हो 'मिथ्यात्व विनय' का धारी, वह अज्ञानी है संसारी।
प्रभु सम्यक श्रद्धान जगाए, कर्म नाश कर शिव पद पाए॥4॥
ॐ ह्रीं विनय मिथ्यात्व रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'संशय मिथ्यावादी' प्राणी, शंका करे निपट अज्ञानी।
प्रभु सम्यक श्रद्धान जगाए, कर्म नाश कर शिव पद पाए॥5॥
ॐ ह्रीं संशय मिथ्यात्व रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चाल छन्द)

'हिंसा अविरत' के धारी, होते हैं जीव दुखारी।
जो उत्तम व्रत शुभ पावें, वे शिवपुर धाम बनावें॥6॥
ॐ ह्रीं हिंसाविरति रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'झूठी' है जिनकी वाणी, उनकी दुखमय जिन्दगानी।
तजके अविरत व्रत पावें, वे शिवपुर धाम बनावें॥7॥
ॐ ह्रीं असत्याविरति रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'चौर्याविरति' के धारी, वह दुख पाते हैं भारी।
तजके अविरत व्रत पावें, वे शिवपुर धाम बनावें॥8॥
ॐ ह्रीं चौर्याविरति रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो शील व्रतों को खोते, वे 'अब्रह्म' के धारी होते।
तजके अविरत व्रत पावें, वे शिवपुर धाम बनावें॥9॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्याविरति रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं जीव 'परिग्रह' धारी, दुख पाते हैं नर नारी।
तजके अविरत व्रत पावें, वे शिवपुर धाम बनावें॥10॥
ॐ ह्रीं परिग्रहाविरति रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

'कषाए अनन्तानुबंधी' से, मिथ्या अविरति पाते हैं।
काल अनन्त भ्रमण करते नर, दुःख अनेक उठाते हैं॥
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥11॥
ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी कषाय रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कषाय अप्रत्याख्यान' उदय से, अणुव्रत भी न पाते हैं।
अविरति रहकर के कर्मों का, आस्रव करते जाते हैं॥
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥12॥
ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान कषाय रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'प्रत्याख्यान कषायोदय' से, महाव्रती न बन पाते।
महाव्रतों के भाव हृदय में, उन जीवों के ना आते॥
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥13॥
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान कषाय रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उदय संज्ज्वलन' हो कषाय का, यथाख्यात न हो चारित्र।
कर्मों से मुक्ती न मिलती, भ्रमण करें प्राणी जग मित्र॥
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥4॥
ॐ ह्रीं संज्वलन कषाय रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्त्री की चर्चा' करने में, रहते हैं जो हरदम लीन।
वह प्रमाद विकथा के धारी, भ्रमण करे जग में हो दीन॥
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥15॥
ॐ ह्रीं स्त्री विकथा प्रमाद रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चोरी की चर्चा' करके जो, अपना मन बहलाते हैं।
धन की लालच करने वाले, कर्मा।व बहु पाते हैं।।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें।।16।।

ॐ ह्रीं चोर विकथा प्रमाद रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भोजन की चर्चा' करने में, लीन रहे जो जग के जीव।
भोज्य कथा के रहे प्रमादी, कर्म बन्ध वह करें अतीव।।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें।।17।।

ॐ ह्रीं भोजन विकथा प्रमाद रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'राजनीति राजा की चर्चा', करने में जो सुख पावें।
राज कथा को पाने वाले, प्राणी वह सब कहलावे।।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें।।18।।

ॐ ह्रीं राज विकथा रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पाँच इन्द्रियों के विषय

आठ 'विषय स्पर्शन' के हैं भाई रे,
जो प्रमाद के कारण माने भाई रे।
तज प्रमाद जिनवर ने मुक्ती पाई रे,
तीन लोक में पाई है प्रभुताई रे।।19।।

ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रिय प्रमाद रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पाँच 'विषय' रसना के जानो भाई रे,
जो प्रमाद के कारण मानो भाई रे।
तज प्रमाद जिनवर ने मुक्ती पाई रे,
तीन लोक में पाई है प्रभुताई रे।।20।।

ॐ ह्रीं रसना इन्द्रिय प्रमाद रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'घ्राणेन्द्रिय के विषय' कहे दो भाई रे,
जो प्रमाद के हेतू हैं दुखदायी रे।
तज प्रमाद जिनवर ने मुक्ती पाई रे,
तीन लोक में पाई है प्रभुताई रे।।21।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय प्रमाद रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पंच विषय चक्षू' के पाते भाई रे,
जो प्रमाद करवाते जग को भाई रे।
तज प्रमाद जिनवर ने मुक्ती पाई रे,
तीन लोक में पाई है प्रभुताई रे।।22।।

ॐ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय प्रमाद रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कर्णेन्द्रिय' के सप्त विषय दुखदायी रे,
जग में भ्रमण कराने वाले भाई रे।
तज प्रमाद जिनवर ने मुक्ती पाई रे,
तीन लोक में पाई है प्रभुताई रे।।23।।

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय प्रमाद रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो प्रमाद करके निद्रा में, अपना समय गवाते हैं।
वह निद्रा प्रमाद के धारी, दुर्गति पन्थ बनाते हैं।।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें।।24।।

ॐ ह्रीं निद्रा प्रमाद रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पुत्र मित्र स्त्री आदिक में, जो स्नेह बढ़ाते हैं।
वह 'प्रमाद प्रणय' के धारी, दुःख अनेक उठाते हैं।।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण पा, अपने कर्म विनाश करें।
निज आतम का ध्यान करें वह, केवल ज्ञान प्रकाश करें।।25।।

ॐ ह्रीं प्रणय प्रमाद रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चौपाई)

हैं 'क्रोध कषाय' के धारी, निज गुण घाती दुखकारी।
जो क्रोध कषाय विनाशें, वह केवल ज्ञान प्रकाशें।।26।।

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'मान' करें जग प्राणी, वह रहे दुखों की खानी।
जो मान कषाए विनाशें, वह केवल ज्ञान प्रकाशें।।27।।
ॐ ह्रीं मान कषाय विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो करते 'मायाचारी', वह दुख सहते हैं भारी।
जो यह कषाय भी नाशें, वह केवल ज्ञान प्रकाशें।।28।।
ॐ ह्रीं माया कषाय विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो जोड़-जोड़ मर जाते, वह 'लोभी' जीव कहाते।
जो लोभ कषाय नशाते, वह शिव पदवी को पाते।।29।।
ॐ ह्रीं लोभ कषाय विनाशक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'मनोयोग' के धारी, आश्रव करते हैं भारी।
मन की चेष्टा के त्यागी, प्राणी होते बड़भागी।।
जो मन को रोकें भाई, उनके फैले प्रभुताई।
वह अपने कर्म नशावें, फिर शिव पदवी को पावें।।30।।
ॐ ह्रीं मनोयोग रहित श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'वचन योग' को पावें, जीवन में कष्ट उठावें।
कर्माश्रव करते भारी, होते वह जीव दुखारी।।
जो वचन को रोकें भाई, उनकी फैले प्रभुताई।
वह अपने कर्म नशावें, फिर शिव पदवी को पावें।।31।।
ॐ ह्रीं वचनयोग रहित श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'काया चंचल' हो जावे, तो आश्रव खूब करावे।
जो नाना रूप बनावे, इस जग में नाच नचावे।।
जो काय को रोकें भाई, उनकी फैले प्रभुताई।
वह अपने कर्म नशावें, फिर शिव पदवी को पावें।।32।।
ॐ ह्रीं काय योग रहित श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा **आश्रव के बत्तिस कहे, यह दुखकारी द्वार।**
रोध करें जो जीव यह, होवें भव से पार।।
ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत आश्रव रहिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचम वलय:

दोहा **शिव पथ के राही बने, चौंसठ ऋद्धीवान।**
अल्प समय में जीव वह, पावें पद निर्वाण।।

(पञ्चमवलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

कुन्थु जिन की अर्चना को, भाव से हम आए हैं।
पुष्प यह अनुपम सुगन्धित, साथ अपने लाए हैं।।
कामदेव चक्री जिनेश्वर, तीन पद के नाथ हैं।
जोड़कर द्वय हाथ अपने, पद झुकाते माथ हैं।।
हे नाथ! हमको मोक्ष पथ का, मार्ग शुभ दर्शाइये।
प्रभु करुण होकर हृदय में, आज मेरे आइये।।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

64 ऋद्धि के अर्घ्य

(अडिल्य छन्द)

कर्म घातिया अपने पूर्ण नशाए हैं, 'केवल बुद्धि ऋद्धि' जिनवर प्रगटाए हैं।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो।।।1।।
ॐ ह्रीं केवलज्ञान बुद्धि ऋद्धि धारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप कर 'ज्ञान मनः पर्यय' जिन पाए हैं, आप महा ऋद्धीधारी कहलाए हैं।
हे जिनवर चरणों में आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो।।।2।।
ॐ ह्रीं मनः पर्यय बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अवधि ऋद्धि धारी जग में जिन संत हैं, कर्म नाश कर होते जो अरहंत हैं।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो।।3।।
ॐ ह्रीं अवधि बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

एक बीज पद सुन सब ग्रन्थ प्रकाशते, बीज बुद्धि ऋद्धीधर जग में शासते।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो।।4।।
ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भिन्न भिन्न तत्त्वों का ज्ञान बखानते, 'कोष्ठ बुद्धि' ऋद्धीधर सब कुछ जानते।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो॥5॥
ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आदि मध्य या अन्तिम पद सुन जानते, 'पदानुसारिणी' ऋद्धीधर सार बखानते।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो॥6॥
ॐ ह्रीं पदानुसारिणी बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सेना के जीवों की ध्वनि पहिचानते, 'संभिन्न सोतृत्त्व ऋद्धि धारी सब जानते।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो॥7॥
ॐ ह्रीं संभिन्न ।।तृत्व बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दूरास्वादन' ऋद्धिधर मुनि जानिए, कई योजन का लें आस्वादन मानिए।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो॥8॥
ॐ ह्रीं दूरास्वादन बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कई योजन से दूर की वस्तु छू रहे, 'दूर स्पर्शन' ऋद्धीधर जिन मुनि कहे।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो॥9॥
ॐ ह्रीं दूर स्पर्शन ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दूरावलोकन' बुद्धि ऋद्धिधर जानिए, कई योजन तक दूर की देखें मानिए।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो॥10॥
ॐ ह्रीं दूरावलोकन बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दूर घ्राणत्व' की शक्ति जिन मुनि पाए हैं, ऐसे मुनिवर जग में पूज्य कहाए हैं।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो॥11॥
ॐ ह्रीं दूर घ्राणत्व बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दूर श्रवण' की शक्ति पाते मुनि अहा, तप की शक्ति का फल यह अनुपम रहा।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो॥12॥
ॐ ह्रीं दूर श्रवण बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दश पूर्वित्व' बुद्धि ऋद्धी धारी सभी, विद्यायें पा विचलित ना होते कभी।
हे जिनवर चरणों में पूर्ण आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो॥13॥
ॐ ह्रीं दूर पूर्वित्व बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पूर्व चतुर्दश' ऋद्धीधार मुनि जानिए, श्रुतज्ञान सब जानें यह पहिचानिए।
हे जिनवर चरणों में पूर्ण आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो॥14॥
ॐ ह्रीं पूर्व चतुर्दश बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अंतरिक्ष आदिक निमित्त से जानते, 'अष्टांग निमित्त' धारी मुनिवर पहचानते।
हे जिनवर चरणों में पूर्ण आश हो, मम अन्तर से सम्यक ज्ञान प्रकाश हो॥15॥
ॐ ह्रीं अष्टांग निमित्त बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'प्रज्ञा श्रमण' बुद्धि ऋद्धि मुनि पाए हैं, द्वादशांग का ज्ञान मुनि प्रगटाए हैं।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥16॥
ॐ ह्रीं प्रज्ञा श्रमण बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'प्रत्येक बुद्धि' ऋद्धी धारी मुनि जानिए, बिना पढ़े उपदेश करें पहिचानिए।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥17॥
ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि 'वादित्व ऋद्धि' धारी कहलाए हैं, वाद कुशल को क्षण में आप हराए हैं।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥18॥
ॐ ह्रीं वादित्व बुद्धि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(छन्द चन्द्रायण)

सौ सौ धनुष देह पाते मुनि जानिए, तन को अणु सम लघु करें यह मानिए।
'अणिमा ऋद्धी' धारी मुनि कहलाए हैं, भक्त चरण में उनके शीश झुकाए हैं॥19॥
ॐ ह्रीं अणिमा विक्रिया ऋद्धि धारी श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'महिमा ऋद्धी' धारी मुनिवर जानिए, मेरु समान बना लेते तन मानिए।
महिमा ऋद्धी धारी मुनि कहलाए हैं, भक्त चरण में उनके शीश झुकाए हैं॥20॥
ॐ ह्रीं महिमा विक्रिया ऋद्धि धारी श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'लघिमा ऋद्धी' धारी मुनिवर जो कहे, आक तूल सम हल्के मुनिवर हो रहे।
लघिमा ऋद्धी धारी मुनि कहलाए हैं, भक्त चरण में उनके शीश झुकाए हैं॥21॥
ॐ ह्रीं लघिमा विक्रिया ऋद्धि धारी श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गरिमा ऋद्धी' धारी मुनिवर जानिए, गिरि समभारी ऋद्धि से हों मानिए।
गरिमा ऋद्धि धारी मुनि कहलाए हैं, भक्त चरण में उनके शीश झुकाए हैं॥22॥
ॐ ह्रीं गरिमा विक्रिया ऋद्धि धारी श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'प्राप्ति ऋद्धी' धर की शक्ति जानिए, भूपर बैठे छूते सुर गिरि मानिए।
प्राप्ति ऋद्धि धारी मुनि कहलाए हैं, भक्त चरण में उनके शीश झुकाए हैं॥23॥
ॐ ह्रीं प्राप्ति विक्रिया ऋद्धि धारी श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि 'ईशत्व ऋद्धि' धारी गुणवान हैं, चक्री इन्द्र करें जिनका गुणगान हैं।
श्रेष्ठ विक्रिया ऋद्धी धारी मुनिवर कहे, जिनके चरणों सुर नर शीश झुका रहे॥24॥
ॐ ह्रीं ईशत्व विक्रिया ऋद्धि धारी श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि 'वशित्व ऋद्धि' धारी वश में करें, अपनी शक्ति से सबके मन को हरें।
वसित्व ऋद्धि धारी मुनिवर कहलाए हैं, भक्त चरण में उनके शीश झुकाए हैं॥25॥
ॐ ह्रीं वशित्व विक्रिया ऋद्धिधारी श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जल में थल, थल में जल सम जो चलें, मुनि प्राकम्प ऋद्धिधारी निज में ढलें।
'प्राकम्प ऋद्धी' धारी मुनि कहलाए हैं, भक्त चरण में उनके शीश झुकाए हैं॥26॥
ॐ ह्रीं प्राकम्प विक्रिया ऋद्धिधारी श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पर्वत आदी में मुनिवर करते गमन, अप्रतिघात ऋद्धिधर के पद में नमन।
'अप्रतिघात ऋद्धीधारी' कहलाए हैं, भक्त चरण में उनके शीश झुकाए हैं॥27॥
ॐ ह्रीं अप्रतिघात विक्रिया ऋद्धिधर श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अन्तर्धान ऋद्धि' धारी मुनि का अहा, अदृश होना गुण यह शुभ अनुपम रहा।
अन्तर्धान ऋद्धीधर मुनि कहलाए हैं, भक्त चरण में उनके शीश झुकाए हैं॥28॥
ॐ ह्रीं अन्तर्धान विक्रिया ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कामरूप ऋद्धी' धारी मुनि जानिए, इच्छित रूप बनाते हैं यह मानिए।
कामरूप ऋद्धीधारी कहलाए हैं, भक्त चरण में उनके शीश झुकाए हैं॥29॥
ॐ ह्रीं कामरूप विक्रिया ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चौपाई)

'जंघाचारण ऋद्धी' धारी, गगन गमन करते अविकारी।
भू से ऊपर चलने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले॥30॥
ॐ ह्रीं जंघाचारण ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'जल चारण ऋद्धी' धर भाई, जल पर गमन करें सुखदायी।
जल के ऊपर चलने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले॥31॥
ॐ ह्रीं जलचारण ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'श्रेणी चारण ऋद्धि' धारे, नभ पंक्ति के चलें सहारे।
नभ श्रेणी पर चलने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले॥32॥
ॐ ह्रीं श्रेणी चारण ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पत्र चारण ऋद्धि' मुनि पाते, पत्तों पर जो चलते जाते।
ऋद्धि यह शुभ पाने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले॥33॥
ॐ ह्रीं पत्र चारण ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अग्नी चारण' ऋद्धीधारी, चले अग्नि पर हो अविकारी।
ऋद्धी यह शुभ पाने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले॥34॥
ॐ ह्रीं अग्नि चारण ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'फल चारण' ऋद्धीधर ज्ञानी, चलें फलों पर मुनि विज्ञानी।
ऋद्धी यह शुभ पाने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले॥35॥
ॐ ह्रीं फल चारण ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तन्तू चारण' ऋद्धी पाते, तन्तु पर मुनि चलते जाते।
ऋद्धी यह शुभ पाने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले॥36॥
ॐ ह्रीं तन्तु चारण ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पुष्प चारण' ऋद्धीधर गाये, गमन पुष्प पर करते पाये।
ऋद्धी यह शुभ पाने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले॥37॥
ॐ ह्रीं पुष्प चारण ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

फल चारण ऋद्धीधर स्वामी, फलों पर चलते अन्तर्यामी।
ऋद्धी यह शुभ पाने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले॥38॥
ॐ ह्रीं फल चारण ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चाल छन्द)

क्रमशः उपवास बढ़ावें, तप उग्र ऋद्धि मुनि पावें।
मुनि तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी॥39॥
ॐ ह्रीं उग्र तप ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि दीप्त ऋद्धि शुभ पावें, तप करके दीप्ति बढ़ावें।
हैं तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।40।।

ॐ ह्रीं दीप्त तप ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि तप्त ऋद्धि प्रगटाते, किन्तु निहार ना जाते।
हैं तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोके हमारी।।41।।

ॐ ह्रीं तप्त तप ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि ऋद्धि महातप पाते, आतम का ज्ञान जगाते।
हैं तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।42।।

ॐ ह्रीं महातप ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप घोर ऋद्धि के धारी, निज ध्यान लीन अनगारी।
जिन तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।43।।

ॐ ह्रीं घोर तप ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि घोर पराक्रम ऋद्धी, धारें हो सर्व प्रसिद्धी।
जिन तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।44।।

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि अघोर ब्रह्मचर्य धारें, सब भीषण रोग निवारें।
जिन तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।45।।

ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मन बल ऋद्धी प्रगटाएँ, मुनि द्वादशांग श्रुत पाएँ।
मुनि तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।46।।

ॐ ह्रीं मन बल ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बल वचन ऋद्धि जो पाएँ, वह द्वादशांग श्रुत गाएँ।
मुनि तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।47।।

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बल काय ऋद्धीधर ज्ञानी, अविचल होते निज ध्यानी।
मुनि तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।48।।

ॐ ह्रीं काय बल ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(छन्द अवतार)

शुभ आमर्षौषधि ऋद्धी, सबका कष्ट हरे,
पद रज करके स्पर्श, सबको स्वस्थ करे।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।49।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जल्लौषधि ऋद्धीवान, का तन स्वेद लगे,
तत्क्षण व्याधी या रोग, सारा दूर भगे।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।50।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

क्ष्वेलौषधि ऋद्धीवान, का तन थूक लगे,
हो तन में रोग असाध्य क्षण में दूर भगे।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।51।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मल्लौषधि ऋद्धीवान, का मल व्याधि हरे,
मल कान दांत का रोग, सबका पूर्ण हरे।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।52।।

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है ऋद्धि विडौषधि श्रेष्ठ, जग जन दुखहारी,
मलमूत्र वीर्य विष्टादि, रोग के परिहारी।।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।53।।

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्वौषधि ऋद्धी श्रेष्ठ, सबका हित करती।
तन से स्पर्शित वायु, सबका दुख हरती।।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।54।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आशीर्विष ऋद्धी पाय, विष अमृत करते।
विष की बाधा मुनिराज, करुणाकर हरते।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं॥55॥

ॐ ह्रीं आशीर्विष ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दृष्टीनिर्विष ऋद्धी धार, पथ अवलोकन करते।
विष सर्पादि का आप, क्षण भर में हरते।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं॥56॥

ॐ ह्रीं दृष्टीनिर्विष ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(हरिगीता)

क्षीर।ाावि ऋद्धीधारी मुनि, लेते हैं नीरस आहार।
क्षीर समान सरस हो जाता, ऋद्धी का पाके आधार॥
हम ऋद्धीधारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं॥57॥

ॐ ह्रीं क्षीर।ाावि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मधु।ाावि ऋद्धीधारी मुनि, ग्रहण करें जो भी आहार।
मधु सम मिष्ठ स्वादु हो जाता, है शुभ ऋद्धी के आधार।
हम ऋद्धीधारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं॥58॥

ॐ ह्रीं मधु।ाावि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्पि।ाावि रस ऋद्धी धारी, भोजन लेते सर्पिविहीन।
घृत सम स्वादुमिष्ट हो जावे, सर्पि ऋद्धिधर रहें प्रवीण।
हम ऋद्धीधारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं॥59॥

ॐ ह्रीं सर्पि।ाावि रस ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अमृत।ाावि ऋद्धीधारी, विष मिश्रित भी लें आहार।
अमृत सम हो जावे तत्क्षण, विशद ऋद्धि का ले आधार॥
हम ऋद्धीधारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं॥60॥

ॐ ह्रीं अमृत।ाावि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आशीर्विष रस ऋद्धी धारी, क्रोध से कह दें यदि वचन।
तो उस प्राणी का हो जाए, उसी समय तत्काल मरण॥
कभी किसी को ऐसी वाणी, मुनिवर नहीं सुनाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ, बनाकर यहाँ चढ़ाने लाते हैं॥61॥

ॐ ह्रीं आर्शीविष ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दृष्टीविष रस ऋद्धी धारी, देखें क्रोध दृष्टि के साथ।
तत्क्षण वहीं गिरे मर जावे, लगा सके न कोई हाथ॥
कभी किसी को ऐसी दृष्टी, मुनिवर नहीं दिखाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं॥62॥

ॐ ह्रीं दृष्टीविष ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऋद्धी क्षेत्र अक्षीण महानस, पाने वाले मुनि अनगार।
सेना जीमे चक्रवर्ति की, श्रेष्ठ ऋद्धिधर के आधार।
हम ऋद्धीधारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं॥63॥

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अक्षीण महालय ऋद्धीधारी, भूमी चार हाथ शुभ पाय।
चक्रवर्ति का सेन्य वहाँ पर, ऋद्धि के आधार समाय॥
हम ऋद्धी धारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं॥64॥

ॐ ह्रीं अक्षीण महालय ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चौंसठ ऋद्धी धारी जिन मुनि, होते जग में मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन मेरा, नत होकर के बारम्बार॥
हम ऋद्धी धारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं॥65॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

जाप्य ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐंम् अर्हं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा आतम रूप निखारने पूजा करते आज।
कुन्थुनाथ जिनराज पद, झुकता सकल समाज॥

(चौबोला छन्द)

कुन्थुनाथ तीर्थंकर स्वामी, दया सिन्धु कहलाते हो।
कुन्थु आदी सब जीवों के, रक्षक आप कहाते हो॥
श्री मती के राज दुलारे, सूर्यसेन के पुत्र महान।
नगर हस्तिनापुर में जन्में, कुरुवंश में आप प्रधान॥
कामदेव सुन्दर तन पाये, महिमा पाए अपरम्पार।
उन्नत तन पैंतीस धनुष का, तप्त स्वर्ण सम जो शुभकार॥
षट् खण्डों पर विजय प्राप्त की, चक्रवर्ति का पद पाया।
फिर भी उससे हुए विरागी, जग का वैभव ना भाया॥
पूर्व भवों के भोग यादकर, भोगों को प्रभु ने छोड़ा।
चक्री पद का वैभव तजकर, विषयों से मुख को मोड़ा॥
आयु वर्ष सहस पञ्चानवे, पाकर जग का भोग किया।
विशद साधना में इस जीवन, का प्रभु ने उपयोग किया॥
चैत शुक्ल की तृतीया को प्रभु, केवल ज्ञान जगाया था।
तीर्थंकर प्रकृति के फल से, समवशरण शुभ पाया था॥
गणधर पैंतिस समवशरण में, प्रथम स्वयंभू कहलाए।
मुख्य आर्यिका भाव श्री थी, जिसने जिन दर्शन पाए॥
सत्रहवें तीर्थंकर स्वामी, छठवे चक्रीश्वर गाए।
कामदेव थे तेरहवें प्रभु, तीन-तीन पद प्रभु पाए॥
दिव्य देशना देकर प्रभु ने, तत्त्वों का उपदेश दिया।
मोक्ष मार्ग की राह दिखाई, भव्यों का कल्याण किया॥
गिरि सम्मेद शिखर पर स्वामी, कूट ज्ञानधर पर आये।
योग रोधकर एक माह में, कर्म नाशकर शिव पाये॥
अष्टम वसुधा पाकर भगवन, निजानन्द में लीन हुए।
सादि अनन्त सिद्ध पद पाकर, शाश्वत प्रभु स्वाधीन हुए॥
निज के गुण निज में पाने हम, प्रभु आपको ध्याते हैं।
''विशद'' ज्ञान को पाने पद में, सादर शीश झुकाते हैं॥

दोहा भक्ती है शक्ति नहीं, पाएँ हम भगवान।
''विशद'' भाव से हे प्रभू, किया लघू गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा भाते हैं हम भावना, करते हैं गुणगान।
शिव पद पावें शीघ्र ही, जो है श्रेष्ठ महान॥

: इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् :

श्री कुन्थुनाथ चालीसा

दोहा परमेष्ठी के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
चालीसा जिन कुन्थु का, गाते हम शुभकार॥

(चौपाई)

मध्य लोक पृथ्वी पर गाया, जिसमें जम्बूद्वीप बताया।
भरत क्षेत्र जानो शुभकारी, आर्य खण्ड की महिमा न्यारी॥
कुरुजांगल शुभ देश कहाया, नगर हस्तिनापुर शुभ गाया।
सूरसेन राजा कहलाए, कुरुवंश के स्वामी गाए॥
रानी श्रीमती शुभ गाई, धर्म परायण जानो भाई।
श्रावण कृष्णा दशमी जानो, अन्तिम पहर रात का मानो॥
कृतिका शुभ नक्षत्र बताया, गर्भ प्रभु ने जिसमें पाया।
चयकर सर्वार्थ सिद्धि से आये, आप वहाँ अहमिन्द्र कहाए॥
सुदि एकम वैशाख कहाया, जन्म प्रभु कुन्थु जिन पाया।
कृतिका शुभ नक्षत्र बताया, आग्नेय शुभ योग कहाया॥
वृषभ राशि पाए शुभकारी, स्वामी शुक्र रहा मनहारी।
इन्द्रराज तब स्वर्ग से आए, प्रभु के पद में शीश झुकाए॥
ऐरावत स्वर्गों से लाए, प्रभु जी को उस पर बैठाए।
पाण्डुक शिला पे लेकर आए, क्षीर नीर से न्हवन कराए॥
बकरा चिह्न पैर में पाया, स्वर्ण रंग तन का शुभ गाया।
सहस पञ्चानवे आयु पाई, पैंतिस धनुष रही ऊँचाई॥
जाति स्मरण करके स्वामी, बने मुक्ती पथ के अनुगामी।
सुदि एकम बैसाख बताई, संध्याकाल में दीक्षा पाई॥
विजया देव पालकी लाए, उस पर प्रभुजी को बैठाए।
आप सहेतुक वन में आए, तिलक वृक्ष तल दीक्षा पाए॥
चार सौ बीस धनुष ऊँचाई, दीक्षा तरु की जानो भाई।
प्रभु ने तेला के व्रत कीन्हे, सहस भूप सह दीक्षा लीन्हे॥
नगर हस्तिनापुर के स्वामी, अपराजित राजा थे नामी।
पड़गाहन प्रभु का शुभ कीन्हे, क्षीरान्न शुभ आहार में दीन्हे॥
तप में सोलह वर्ष बिताए, फिर प्रभु केवलज्ञान जगाए।
चैत्र शुक्ल तृतीया शुभ जानो, अपराह्न काल समय शुभ मानो॥

इन्द्र राज स्वर्गों से आए, धनपति इन्द्र साथ में लाए।
समवशरण सुन्दर बनवाए, चार योजन विस्तार कहाए॥
समवशरण में आसन भाई, मुद्रा खड्गासन प्रभू की बतलाई।
बत्तिस सहस केवली गाए, सात सौ पूरवधारी आए॥
पैंतीस सौ मनःपर्यय ज्ञानी, ढाई सहस थे अवधि ज्ञानी।
इक्यावन सौ विक्रिया धारी, दो हजार वादी अविकारी॥
साठ सहस कुल साधु जानो, समवशरण की संख्या मानो।
प्रभु के पैंतीस गणधर गाए, प्रथम स्वयंभू जी कहलाए॥
यक्ष श्रेष्ठ गन्धर्व था भाई, यक्षी जयादेवी बतलाई।
श्री सम्मेद शिखर पर आए, कूट ज्ञानधर प्रभु जी पाए॥
एक माह पहले से स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी।
सुदि एकम वैसाख बताई, सांयकाल में मुक्ती पाई॥
कृतिका शुभ नक्षत्र जो पाए, चौबीस अनुबद्ध केवली गाए॥
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर पदवी शुभ पाए।
आप हुए त्रयपद के धारी, महिमा तुमरी जग से न्यारी॥
सत्तरहवे तीर्थंकर गाये, जग को मुक्ती मार्ग दिखाए।
महिमा 'विशद' आपकी गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥

दोहा कुन्थुनाथ भगवान का, चालीसा शुभकार
पढ़े सुने जो भाव से, पावे भवदधि पार॥
चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति सौभाग्य पा, बने श्री का नाथ॥

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्याः श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते शास्त्री नगरे 1008 श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2538 वि.सं. 2069 मासोत्तम मासे श्रावण मासे शुक्लपक्षे बारसतिथि दिन सोमवारवासरे श्री कुन्थुनाथ विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

श्री 1008 कुन्थुनाथ भगवान की आरती

(तर्ज शांति अपरम्पार है...)

कुन्थुनाथ भगवान हैं, जग में हुए महान् हैं।
विशद योग से आरति करके, गाते हम यशगान हैं॥ टेक

राजा सूरसेन श्री मति के, प्रभु जी लाल कहाए जी।
नगर हस्तिनापुर में जन्मे, अतिशय मंगल छाए जी॥1॥
कुन्थुनाथ...

पैंतीस धनुस रही ऊँचाई, स्वर्ण सा तन प्रभु पाए जी।
बकरा चिह्न दाहिने पग में, इन्द्र श्रेष्ठ बतलाए जी॥2॥
कुन्थुनाथ...

श्रावण कृष्ण दशे को स्वामी, गर्भकल्याणक पाए थे।
छह महिने पहले से धनपति, रत्न श्रेष्ठ बरसाए थे॥3॥
कुन्थुनाथ...

जन्म शुक्ल वैशाख सु एकम्, को जिनवर ने पाया था।
इसी तिथि को कुन्थुनाथ ने, मुक्ती पथ अपनाया था॥4॥
कुन्थुनाथ...

चैत्र सुदी तृतीया को स्वामी, केवलज्ञान जगाए थे।
वैशाख सुदी एकम् सम्मेद गिरि, से प्रभु मुक्ती पाए थे॥5॥
कुन्थुनाथ...

विशद

श्री अरहनाथ विधान

माण्डला

मध्य में – ह्रीं
प्रथम वलय में – 4 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 8 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 16 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 32 अर्घ्य
पंचम वलय में – 64 अर्घ्य
कुल 124 अर्घ्य

रचयिता

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य

श्री 108 विशदसागरजी महाराज

अरहनाथ स्तवन

दोहा नेता मुक्ती मार्ग के, गुण रत्नों की खान।
नाथ आपके नाम का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

हे अरहनाथ सुख के सागर, हमने तव दर्शन पाया है।
है अल्प बुद्धि का सेवक यह, प्रभु तव गुण गाने आया है॥
तुम महाबली कर्मारि जयी, तुम तो प्रभु करुणा सागर हो।
तुम कामजयी शिव रमाकंत, तुम धर्म रत्न रत्नाकर हो॥1॥
तुम कोटि सूर्य ज्योति भूषण, तुममें यह लोक समाया है।
तुम भाग्य विधाता दीनों के, तुमने प्रभु शिवसुख पाया है॥
तुमने विषयों को त्यागा है, जग को सन्मार्ग दिखाया है।
जो भूले भटके राही हैं, उनको शिव मार्ग बताया है॥2॥
तुमरे चरणों की रज पाने, इस जग के प्राणी व्याकुल हैं।
प्रभु दर्शन पाने नेत्र मेरे, हे भगवन्! भारी आकुल हैं।
कटते हैं अशुभ कर्म सारे, तव दर्शन करने से स्वामी॥
शुभ वाणी जग कल्याणी है, हे त्रिभुवन! के अन्तर्यामी॥3॥
तुम जग को साता देते हो, जग में सन्मार्ग प्रदाता हो।
तुम मुक्ती पद के नायक हो, भक्तों के भाग्य विधाता हो॥
हम महिमा सुनकर हे भगवन्! अब चरण शरण में आए हैं।
तब दर्शन करके नाथ आज, मन में अतिशय हर्षाए हैं॥4॥
हम भक्त आपके चरणों में, यह आश लगाए रहते हैं।
हे प्रभू आपके गुण अनन्त, जिनवाणी में यह कहते हैं॥
जिस पद को तुमने पाया है, वह चाह रहे हैं हम स्वामी।
अब राह दिखा दो हमें 'विशद', बन जाओ मेरे पथगामी॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री अरहनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए।
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ।
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीश हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-भुजंग प्रयात)

प्रभो! नीर निर्मल ये, प्रासुक कराके।
चढ़ाने को लाये हैं, कलशा भराके।।
प्रभू आपके हम, गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद, में सर झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाल जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! गंध केसर, घिस के हम लाए,
भवताप के नाश, हेतु हम आए।।
प्रभू आपके हम, गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद, में सर झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

परम थाल तन्दुल के, हमने भराए,
विशद भाव अक्षय, सुपद के बनाए।।
प्रभू आपके हम, गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद, में सर झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सलौने सुगन्धित, खिले फूल लाए।
प्रभो! काम बाधा, नशाने को आए।।
प्रभू आपके हम, गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद, में सर झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य हमने, सरस ये बनाए।
क्षुधा रोग के नाश, हेतू चढ़ाए।।
प्रभू आपके हम, गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद, में सर झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! दीप घृत के, मनोहर जलाए।
महामोह तम नाश, करने को आए।।
प्रभू आपके हम, गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद, में सर झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोहांधाकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! धूप हमने, दशांगी जलाई।
सुधी नाश कर्मों की, मन में जगाई।।
प्रभू आपके हम, गणुगान गाते।
अरहनाथ तव पाद, में सर झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! श्रेष्ठ ताजे, सरस फल मँगाए।
महामोक्ष फल प्राप्त, करने को आए।।
प्रभू आपके हम, गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद, में सर झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

मिलाके सभी द्रव्य, का अर्घ्य लाए।
परम श्रेष्ठ शाश्वत्, सुपद पाने आए।।
प्रभू आपके हम, गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद, में सर झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

दोहा

फाल्गुन शुक्ला तीज को, अरहनाथ भगवान।
मात मित्रसेना वती, उर अवतारे आन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

अगहन शुक्ला चतुर्दशी को, भूप सुदर्शन के दरबार।
हस्तिनागपुर अरहनाथ जी, जन्म लिए हैं मंगलकार॥
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हो हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार॥2॥

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

अगहन सुदी दशमी जिनराज, धारे प्रभु संयम का ताज।
भेष दिगम्बर धारे नाथ, जिनके चरण झुकाऊँ माथ॥
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणका प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

द्वादशी कार्तिक सुदी की, कर्म नाशे चार हैं।
जिनवर अरह तीर्थेश ज्ञानी, हुए मंगलकार हैं॥
जिनअरह प्रभू की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं॥4॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्तश्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण की तिथि अमावस, गिरि सम्मेदशिखर शुभ धाम।
अरहनाथ जिन मोक्ष पधारे, तिनके चरणों करूँ प्रणाम॥
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभू अंतर्यामी।
हमको मुक्ती पथ दर्शाओ, बनो प्रभू मम् पथगामी॥5॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणाक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जयमाला गाते परम, भाव सहित हे नाथ!
तव पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ॥

(छन्द टप्पा)

काम देव चक्री पद पाया, बने मोक्ष गामी।

तीर्थंकर की पदवी पाए, अरहनाथ स्वामी॥
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी-जिनेश्वर...॥
फाल्गुन कृष्ण तीज अवतारे, हस्तिनापुर स्वामी।
मात सुमित्रा के उर आये, अपराजित गामी॥
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी-जिनेश्वर...॥
मगसिर शुक्ला चौदस तिथि को, जन्म लिए स्वामी।
इन्द्रों ने अभिषेक कराया, जिनवर का नामी॥
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी-जिनेश्वर...॥
कार्तिक शुक्ल द्वादशी तिथि को, बने विशद ज्ञानी।
समवशरण में कमलासन पर, अधार हुए स्वामी॥
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी-जिनेश्वर...॥
चैत्र कृष्ण की तिथि अमावस, बने मोक्ष गामी।
अक्षय अनुपम सुख पाये तब, शिवपुर के स्वामी॥
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी-जिनेश्वर...॥
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ति, पाये जिन स्वामी।
सिद्ध शुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्ध बने नामी॥
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी-जिनेश्वर...॥
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पावें स्वामी।
रत्नत्रय को पाकर हम भी, बने मोक्ष गामी॥
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी-जिनेश्वर...॥
संयम त्याग तपस्या करना, कठिन रहा स्वामी।
फिर भी हमने लक्ष्य बनाया, बन के अनुगामी॥
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी-जिनेश्वर...॥

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय हितकारी, संयमधारी गुण, अनन्त के अधिकारी।
तुम हो अविकारी, ज्ञान पुजारी, सिद्ध सनातन अविकारी॥
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- अरहनाथ के साथ में, हुए जीव कई सिद्ध।
सिद्ध दशा हमको मिले, जो है जगत् प्रसिद्ध॥
॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

प्रथम वलयः

दोहा- सद्दर्शन के मूल हैं, मैत्री आदिक भाव।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने निज स्वभाव॥
(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए॥
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ॥
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीश हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते॥
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सम्यक्त्व की चार भावनाएँ

मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दरश विशुद्धी वाले हैं वह, जिनके ऐसे भाव रहे॥
मैत्री भाव रहे जिसके वह, जग में मंगलकारी है।
ऐसा भाव बनाने वाला, जैन धर्म का धारी है॥1॥
ॐ ह्रीं मैत्री भावना संयुक्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणीजनों को देख हृदय में, मम प्रमोद का भाव जगे।
उनकी सेवा करने में ही, मेरा तन मन ध्यान लगे॥

जो प्रमोद का भाव धरे वह, जग में मंगलकारी है।
ऐसा भाव बनाने वाला, जैन धर्म का धारी है॥2॥
ॐ ह्रीं प्रमोद भावना संयुक्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीन दुखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्रोत बहे।
हो जावे कल्याण सभी का, शांती से हर जीव रहे॥
धारे करुणा भाव हृदय में, वह जग मंगलकारी है।
ऐसा भाव बनाने वाला, जैन धर्म का धारी है॥3॥
ॐ ह्रीं करुणा भावना संयुक्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्जन क्रूर कुमार्ग रतों पर, क्षोभ नहीं हमको आवे।
साम्यभाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसा जीवन बन जावे॥
जो माध्यस्थ भाव रखता वह, जग में मंगलकारी है।
ऐसा भाव बनाने वाला, जैन धर्म का धारी है॥4॥
ॐ ह्रीं माध्यस्थ भावना संयुक्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन के कारण हैं, मैत्री आदिक भाव विशेष।
रत्नत्रय को पाने वाले, बनते अर्हत् प्रभू जिनेश॥
उनके गुण की माला को सब, गाते हैं इस जग के जीव।
पूजा भक्ती अर्चा करके, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव॥5॥
ॐ ह्रीं चतुः भावना संयुक्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा- आठ अंग सम्यक्त्व के, पाएँ हम हे नाथ।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, चरण झुकाते माथ॥
(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए॥
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ॥
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीश हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते॥
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवोषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

आठ अंग (छन्द जोगीरासा)

देव शास्त्र गुरु जैन धर्म में, शंका मन में आवे।
दोष करें सम्यक् दर्शन में, भव-भव में भटकावे॥
जो निशंक जिन धर्म वचन में, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे॥1॥

ॐ ह्रीं निशंकित अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मवशी जो अंत सहित है, बीज पाप का गाया।
भव सुख की चाहत करना ही, कांक्षा दोष कहाया॥
यह सुख वांछा तजने वाले, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धार अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे॥2॥

ॐ ह्रीं निष्कांक्षित अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है स्वभाव से देह अपावन, रत्नत्रय से है पावन।
त्याग जुगुप्सा गुण में प्रीति, मुनि तन है मन भावन॥
ग्लानी को तजने वाले ही, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे॥3॥

ॐ ह्रीं निर्विचिकित्सा अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुपथ पंथ पंथी की स्तुति, और प्रशंसा करना।
भव दुख का कारण है भाई, दर्शन दोष समझना॥
करें मूढ़ की नहीं प्रशंसा, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे॥4॥

ॐ ह्रीं अमूढ़ दृष्टि अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं शुद्ध है मोक्ष का मारग, मोही दोष लगावे।
धर्म की निन्दा होय जहाँ यह, दर्शन दोष कहावे॥
अवगुण ढाकें दोषी जन के, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे॥5॥

ॐ ह्रीं उपगूहन अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन या चारित्र से, चलित कोई हो जावे।
अज्ञानी भव भ्रमण करे वह, दर्शन दोष लगावे॥
धर्मभाव से उनके मन में, पुनः धर्म उपजावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे॥6॥

ॐ ह्रीं स्थितिकरण अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म और साधर्मीजन में, प्रीति नहीं जो धरते।
सम्यक् दर्शन में वह प्राणी, दोष अनेकों करते॥
वात्सल्य का भाव धारें तो, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे॥7॥

ॐ ह्रीं वात्सल्य अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या अरु अज्ञान तिमिर जो, फैला सारे जग में।
समकित में वह दोष लगावे, चले न मुक्ति मग में॥
जैन धर्म को करें प्रकाशित, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे॥8॥

ॐ ह्रीं धर्मप्रभावना अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ अंग सम्यक् दर्शन के, जो भी प्राणी पाते हैं।
अन्तर्मन में वह सब प्राणी, भेद ज्ञान प्रगटाते हैं॥
मोक्ष मार्ग के राही बनते, पा लेते हैं केवल ज्ञान।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, पा जाते हैं पद निर्वाण॥9॥

ॐ ह्रीं अष्ट अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीया वलयः

दोहा- सोलह कारण भावना, भाते हैं जो जीव।
तीर्थंकर बनते स्वयं, पाते पुण्य अतीव॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाऽजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए॥
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ॥
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीश हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सोलह भावना (चाल छंद)

मन में श्रद्धान जगाएँ, वे दर्श विशुद्धी पाएँ।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥1॥

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो विनय भाव दर्शाते, वे विनय सम्पन्नता पाते।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥2॥

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नता भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्दोष व्रतों के धारी, हो जाते हैं अविकारी।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥3॥

ॐ ह्रीं शीलव्रत भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोगी, वह धर्म भाव संयोगी।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥4॥

ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव से विरक्त हो जाते, संवेग भाव उपजाते।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥5॥

ॐ ह्रीं संवेग भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है त्याग भावना भाई, भवि जीवों को सुखदायी।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥6॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सुतप भावना भाते, वे कर्म निर्जरा पाते।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥7॥

ॐ ह्रीं शक्तिस्तप भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि साधु समाधि धारे, समता निज हृदय सम्हारे।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥8॥

ॐ ह्रीं साधु-समाधि भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो साधु के उपकारी, हैं वैय्यावृत्ति धारी।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥9॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अर्हत् के गुण गाए, अर्हत भक्ती कहलाए।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्ती भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपातीति स्वाहा।

गुण आचार्यों के गाते, वे आचार्य भक्ती पाते।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥11॥

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ती भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण उपाध्याय के गावें, वे बहुश्रुत भक्ती पावें।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥12॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ती भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जिनवाणी को ध्यावें, वे भक्ती हृदय जगावें।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥13॥

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ती भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जन आवश्यक पालें, शुभ अपने भाव सम्हालें।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥14॥

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहार्य भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मार्ग प्रभावना धारी, होते जग मंगलकारी।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥15॥

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचन वात्सल्य के धारी, जन-जन के हों उपकारी।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥16॥

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सोलह कारण भावना, भाय भक्ती के साथ।
भव सिन्धू से पार हो, बने मुक्ति के नाथ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि षोडश भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

बत्तिस इन्द्र प्रभू की पूजा, भाव सहित करते हैं आन।
पुष्पाञ्जलि से पूजा करते, चरणों में करते गुणगान॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए॥
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ॥
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीश हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते॥

ॐ ह्रीं श्री अहरनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(बत्तीस देव इन्द्र पूजा)

(चौपाई)

असुर इन्द्र परिवार के साथ, श्री जिन चरण झुकाए माथ।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥1॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारेण परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाग इन्द्र लावे परिवार, भक्ती करने अपरम्पार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥2॥

ॐ ह्रीं नागेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतेन्द्र लावे परिवार, अर्चा करने अतिशयकार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥3॥

ॐ ह्रीं विद्युतेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपर्णेन्द्र लावे परिवार, जिन गुण गावे मंगलकार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥4॥

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि इन्द्र लावे परिवार, अर्घ्य बनाए अपरम्पार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥5॥

ॐ ह्रीं अग्नि इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मारुतेन्द्र लावे परिवार, जिन अर्चा को विस्मयकार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥6॥

ॐ ह्रीं मारुतेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तनितेन्द्र लावे परिवार, भक्ती करने मंगलकार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥7॥

ॐ ह्रीं स्तनितेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागरेन्द्र परिवार समेत, आता है भक्ती के हेत।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥8॥

ॐ ह्रीं सागरेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप इन्द्र परिवार समेत, जिन चरणों भक्ती के हेत।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥9॥

ॐ ह्रीं द्वीप इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिग्सुरेन्द्र भक्ती के हेत, अर्चा करता भाव समेत।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥10॥

ॐ ह्रीं दिक्सुरेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किन्नरेन्द्र लावे परिवार, ढोक लगावे बारम्बार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥11॥

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किम्पुरुषेन्द्र लावे परिवार, पूजा करने अपरम्पार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥12॥

ॐ ह्रीं किम्पुरूषेन्द्र परविार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महोरगेन्द्र परिवार समेत, आवे जिन भक्ती के हेत।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥13॥
ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धर्व इन्द्र भक्ति के साथ, आकर विशद झुकाए माथ।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥14॥
ॐ ह्रीं गन्धर्व इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष इन्द्र लावे परिवार, जिन पूजा को बारम्बार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥15॥
ॐ ह्रीं यक्ष इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षसेन्द्र परिवार समेत, आता है भक्ती के हेत।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥16॥
ॐ ह्रीं राक्षस इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र लावे परिवार, जिन चरणों में अरपम्पार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥17॥
ॐ ह्रीं भूत इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिशाचेन्द्र परिवार समेत, जिन चरणों भक्ति के हेत।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन॥18॥
ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

चन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आता है।
अरहनाथ के श्रीचरणों में, सादर शीश झुकाता है॥19॥
ॐ ह्रीं चन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य इन्द्र परिवार सहित मिल, जिन पूजा को आता है।
अरहनाथ की पूजा करके, सादर शीश झुकाता है॥20॥
ॐ ह्रीं रवि इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्मेन्द्र सहित भक्ती से, जिन पूजा को आता है।
अरहनाथ की पूजा को, परिवार साथ में लाता है॥21॥
ॐ ह्रीं सौधर्म इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईशानेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, उत्तम अर्घ्य चढ़ाता है॥22॥
ॐ ह्रीं ईशान इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सानत इन्द्र सहित भक्ती से, अर्घ्य चढ़ाने आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥23॥
ॐ ह्रीं सानतेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥24॥
ॐ ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित भक्ती से, ब्रह्म इन्द्र भी आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥25॥
ॐ ह्रीं ब्रह्म इन्द्र परिवार सहितायश्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥26॥
ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र इन्द्र आता जिन चरणों, निज परिवार को लाता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥27॥
ॐ ह्रीं शुक्र इन्द्र परिवार सहिताय श्री अराहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र परिवार सहित, जिन अर्चा करने आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥28॥
ॐ ह्रीं शतारेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित भक्ती से, आनतेन्द्र भी आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥29॥
ॐ ह्रीं आनतेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणतेन्द्र परिवार सहित, जिन भक्ती करने आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥30॥
ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेन्द्र जिन भक्ती करने, निज परिवार भी लाता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥31॥
ॐ ह्रीं आरणेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र प्रभु भक्ति करने, निज परिवार भी लाता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है।।32।।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनालय व्यन्तरवासी अरु, इन्द्र स्वर्ग से आते हैं।
झूम झूमकर नृत्य गान कर, पूजन श्रेष्ठ रचाते हैं।।
अरहनाथ के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
विशद भाव से श्री चरणों में, अपना शीश झुकाते हैं।।33।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशद इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम वलयः

दोहा दश धर्मों को प्राप्त जिन, गुण पाए छियालीस।
आठ मूल गुण सिद्ध के, तिन्हें झुकाएँ शीश।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए।।
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ।।
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीश हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दशधर्मधारीजिन

(चौपाई)

जो भी क्रोध कषाय नशाए, उत्तम क्षमा धर्म वह पाए।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान हृदय से जिसके जाए, मार्दव धर्म वहीं प्रगटाए।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायाचार हटाए प्राणी, आर्जव पावे कह सद्ज्ञानी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ त्याग कर हो अविकारी, शौच धर्म पाए मनहारी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असद् कटुक शब्दों को त्यागे, सत्य धर्म में प्राणी लागे।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दयावान इन्द्रिय जय धारी, संयम पावे वह अनगारी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छा रोध करे जो भाई, उत्तम तप पावे सुखदाई।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग त्याग कर बनता दानी, उत्तम त्याग धरे वह ज्ञानी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में किंचित् राग न लावें, धर्माकिञ्चन प्राणी पावें।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिञ्चन धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज से जिन का ध्यान लगावें, उत्तम ब्रह्मचारी कहलावे।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।10।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म के अतिशय (नरेन्द्र छंद)

प्रभु के जन्म समय से अतिशय, शुभ तन में दश सोहे।
स्वेद रहित तन जानो अनुपम, जन-जन का मन मोहे।।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ती भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें।।11।।

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ से जन्मे हैं माता के, फिर भी निर्मल गाये।
मल-मूत्रादी रहित देह प्रभु, अतिशय पावन पाये॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ती भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥12॥

ॐ ह्रीं नीहाररहित सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

तन का रुधिर श्वेत है अनुपम, अतिशय पावन गाया।
रुधिर लाल नहिं यह शुभ अतिशय, जन्म समय का पाया॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ती भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥13॥

ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशयधारकर श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन सुडोल आकार मनोहर, समचतुरस्र बताया।
जिस अवयव का माप है जितना, उतना ही मन भाया॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ती भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥14॥

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्र वृषभ नाराच संहनन, जिनवर तन में पाते।
गणधरादि नित हर्षित मन से, प्रभु का ध्यान लगाते॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ती भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥15॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव का रूप लजावे, जिन प्रभु तन के आगे।
अतिशय रूप मनोहर प्रभु का, देखत में शुभ लागे॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ती भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥16॥

ॐ ह्रीं अतिशयरूप सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगंधित तन है प्रभु का, अनुपम महिमाकारी।
अन्य सुरभि नहिं है इस जग में, प्रभु तन सम मनहारी॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ती भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥17॥

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक हजार आठ शुभ लक्षण, प्रभु के तन में सोहें।
अद्भुत महिमाशाली जिनवर, त्रिभुवन का मन मोहें॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ती भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥18॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्टलक्षण सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुलना रहित अतुल बल प्रभु के, अतिशय तन में गाया।
इन्द्र चक्रवर्ती से अद्भुत, शक्ती मय बतलाया॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ती भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥19॥

ॐ ह्रीं अतुल्यबल सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित-मित-प्रिय वचन अमृत सम, प्रभु के होते भाई।
त्रिभुवन के प्राणी सुनते हैं, मंत्र मुग्ध सुखदायी॥
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ती भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें॥20॥

ॐ ह्रीं प्रियहितवचन सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10 केवलज्ञान के अतितशय (रोला छंद)

चार-चार सौ कोष, चारों दिश में गाया।
होय सुभिक्ष सुकाल, यह अतिशय प्रभु पाया॥
यह अतिशय हे नाथ!, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥21॥

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षय जातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाते केवल ज्ञान, नभ में गमन करे हैं।
देव रचावें पुष्प, तिन पर चरण धरे हैं॥
यह अतिशय हे नाथ!, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥22॥

ॐ ह्रीं आकाशगमन घातिक्षयजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ गमन प्रभु होय प्राणी वध न होवे।
दया सिन्धु जिनदेव, जग की जड़ता खोवे॥

यह अतिशय हे नाथ!, जन-जनके मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥23॥

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षय जातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवलाहार विहीन, रहते हैं जिन स्वामी।
कुछ कम कोटि पूर्व तक, रहें प्रभु अन्तर्यामी॥
यह अतिशय हे नाथ!, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥24॥

ॐ ह्रीं कवलाहार घातिक्षयजातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो उपसर्ग अभाव, अतिशय यह शुभकारी।
सुर नर पशू अजीव, कृत उपसर्ग निवारी॥
यह अतिशय हे नाथ!, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥25॥

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में देव, चउ दिश दर्शन देवें।
मुख पूरब में होय, सबका दुख हर लेवें॥
यह अतिशय हे नाथ!, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥26॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुखदर्श घातिक्षयजातिशय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्या के एक, ईश्वर आप कहाए।
तुम्हें पूजते भव्य, ज्ञान कला प्रगटाए॥
यह अतिशय हे नाथ! जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥27॥

ॐ ह्रीं सर्व विधेश्वरत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमौदारिक देह, पुद्गलमय प्रभु पाए।
फिर भी छाया हीन, अतिशय यह प्रगटाए॥

यह अतिशय हे नाथ!, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥28॥

ॐ ह्रीं छायारहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पलक झपकती नाहिं, न ही हो टिमकारी।
सौम्य दृष्टि नाशाग्र, लगती अतिशय प्यारी॥
यह अतिशय हे नाथ!, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥29॥

ॐ ह्रीं अक्षस्पंदरहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं बढ़ें नख केश, केवल ज्ञानी होते।
दिव्य शरीर विशेष, मन का कल्मश खोते॥
यह अतिशय हे नाथ!, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे॥30॥

ॐ ह्रीं समान नखकेशत्व घातिक्षयजातिक्षय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय (छन्द जोगीरासा)

भाषा है सर्वार्धमागधी, जिन अतिशय शुभकारी।
भव-भव के दुख हरने वाली, भव्यों को सुखकारी॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ती भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ा के हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥31॥

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बैर भाव सब तज देते हैं, जाति विरोधी प्राणी
मैत्री भाव बढ़े आपस में, जिन मुद्रा कल्याणी॥
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ती भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ॥32॥

ॐ ह्रीं सर्वमैत्रीभाव देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

सब ऋतु के फल फूल खिलें, एक साथ मनहारी।
कई योजन तक होवे ऐसा, अतिशय अद्भुत भारी॥

अर्घ्य चढ़ाकर भक्ती भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।33।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी पृथ्वी दर्पण तल, सम होवे शुभकारी।
प्रभु के विहरण हेतु रचना, करें देवगण सारी।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ती भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।34।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमही देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुकुमार देव विक्रिया कर, शीतल पवन चलावें।
हो अनुकूल वायु विहार में, ये अतिशय प्रगटावें।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ती भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।35।।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमानन्द प्राप्त कर प्राणी, जिन प्रभु के गुण गाते।
भय संकट क्लेशादि रोग सब, मन में नहीं सताते।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ती से, श्रीजिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।36।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखद वायु चलने से धूलि, कंटक न रह पावें।
प्रभु विहार के समय देवगण, भूमि स्वच्छ बनावें।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ती भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।37।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघ कुमार करें नित वृष्टि, गंधोदक की भाई।
इन्द्रराज की आज्ञा से हो, यह प्रभू की प्रभुताई।।

अर्घ्य चढ़ाकर भक्ती भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।38।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण कमल की रचना, सुरगण श्री विहार में करते।
नभ का धूम धूलि आदिक सब, देव वहाँ पर हरते।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ती भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।39।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तलरचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु विधि धान्य सभी ऋतुओं के, फलने से झुक जाते।
देवों कृत अतिशय यह सुन्दर, सबको सुखी बनाते।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ती भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।40।।

ॐ ह्रीं सर्वऋतुफल देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शरद ऋतू सम स्वच्छ सुनिर्मल, गगन होय मनहारी।
उल्कापात धूम्र आदिक से, रहित होय शुभकारी।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ती भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।41।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरद मेघ सम सर्व दिशाएँ, होवें जन मनहारी।
रोगादिक पीड़ाएँ हरते, देव सभी की सारी।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ती भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।42।।

ॐ ह्री आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्निकाय के देव शीघ्र ही, प्रभु भक्ती को आओ।
इन्द्राज्ञा से देव बुलाते, आकर प्रभु गुण गाओ।।

अर्घ्य चढ़ाकर भक्ती भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।43।।

ॐ ह्रीं परापराह्वान देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

धर्मचक्र ले यक्ष इन्द्र शुभ, आगे-आगे जावें।
चार दिशा में दिव्य चक्र ले, मानो प्रभु गुण गावें।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ती भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।44।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रचतुष्टय भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनंत चतुष्टय

(चाल छन्द)

जिनवर अनन्त गुण पाए, प्रभु लोकालोक दर्शाए।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।45।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शन गुण प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ज्ञानावरणी नाशे, फिर केवल ज्ञान प्रकाशे।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाए।।46।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञान गुणप्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोहकर्म के नाशी, जिनवर अनन्त सुखराशी।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।47।।

ॐ ह्रीं अनंतसुख गुणप्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न अन्तराय रह पावे, प्रभु वीर्यानन्त प्रगटावें।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।48।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्य गुणप्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य (सोरठा)

तरु अशोक सुखदाय, शोक निवारी जानिए।
प्रातिहार्य कहलाय, समवशरण की सभा में।।49।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ सिंहासन होय, रत्न जड़ित सुंदर दिखे।
अधर तिष्ठते सोय, उदयाचल सों छविदिखे।।50।।

ॐ ह्रीं सिंहासनमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पवृष्टि शुभ होय, भांति-भांति के कुसुम से।
महा भक्तिवश सोय, मिलकर करते देव गण।।51।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्य श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनी सुखकार, सुने पाप क्षय हो भला।
पावैं सौख्य अपार, सुर नर पशु सब जगत के।।52।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ चँवर ढुरांय, प्रभु के आगे देवगण।
भक्ती सहित गुण गाय, अतिशय महिमा प्रकट हो।।53।।

ॐ ह्रीं चामरमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त सुभव दर्शाय, भामण्डल निज कांति से।
महा ज्योति प्रगटाय, कोटि सूर्य फीके पड़ें।।54।।

ॐ ह्रीं भामण्डलमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

देव दुंदुभि नाद, करें देव मिलकर सुखद।
करें नहीं उन्माद, समवशरण में जाय के।।55।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ित सुनग तिय छत्र, तीन लोक के प्रभू की।
दर्शाते सर्वत्र, महिमाशाली है कहा।।56।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धों के 8 गुण

मोह कर्म को नाशकर पाया सद् श्रद्धान।
समकित गुण को प्राप्तकर, किया आत्म उत्थान।।
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार।।57।।

ॐ ह्रीं समकितगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म का, होवे पूर्ण विनाश।
विशद ज्ञान का मम हृदय, अतिशय होय प्रकाश।।
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार।।58।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावर्ण का, कर देते जो घात।
दर्शन गुण वह जीव शुभ, कर लेते हैं प्राप्त॥
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार॥59॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म अन्तराय नाशकर, पाते वीर्य अनन्त।
अल्प समय में वह बनें, मुक्ति वधु के कन्त॥
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार॥60॥

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकट होय सूक्ष्मत्व गुण, नाम कर्म हो नाश।
शीघ्र मोक्ष पद पायेगा, है पूरा विश्वास॥
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार॥61॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवगाहन गुण प्राप्त हो, आयु कर्म नशजाय।
चतुर्गति से मुक्त हो, मुक्ति वधु का पाए॥
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार॥62॥

ॐ ह्रीं अवगाहनगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगुरुलघु गुण प्रकट हो, गोत्र कर्म हो नाश।
ऊँच-नीचे पद मैटकर, हो सिद्धों में वास॥
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार॥63॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाएँ अव्याबाध गुण, वेदनीय हो नाश।
निराबाध सुख प्राप्त हो, हो शिवपुर में वास॥

अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार॥64॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्मों को पाने वाले, जिनवर का करते गुणगान॥
छियालिस मूल गुणों के धारी, अरहनाथजी हुए महान्।
अष्ट गुणों की सिद्धि पाने, करते तव पद में अर्चन।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं शत्-शत् वंदन॥65॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि गुण दर्शधर्म एवं अष्ट गुणयुक्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- अरहनाथ भगवान का, करते हम गुणगान।
जयमाला गाते यहाँ, पावें पद निर्वाण॥

(पद्धरि छन्द)

जय अरहनाथ अन्तर्यामी, जय जय त्रिभुवन के हे स्वामी।
अद्भुत महिमा तुमरी अपार, तव गुण का जग में नहीं पार॥
स्वर्गों से चय कर के जिनेश, प्रभु हस्तिनागपुर में विशेष।
तुम भूप सुदर्शन धन्य कीन, मित्रा माता उर जन्म लीन॥
फाल्गुन शुक्ला तृतीया प्रधान, प्रभु गर्भ प्राप्त कीन्हा महान।
दश अतिशय पाकर हे जिनेश, प्रभु जन्म लिया तुमने विशेष॥
मंगसिर शुक्ला चौदश विशेष, उस दिन को जन्में श्री जिनेश।
तन का अवगाहन था महान, शुभ तीस धनुष जानो प्रधान॥
आयु थी अस्सी सहस वर्ष, तुमने पाया शुभ अतिहर्ष।
संसार वास जाना असार, पाना जो चाहा विभव पार॥
संयम को धारण कर जिनेश, प्रभु महाव्रतादिक धर विशेष।
मंगसिर शुक्ला दशमी प्रधान, सम्यक् तप धारे तव महान॥
मुनिवर की दीक्षा लिए धार, निर्ग्रन्थ भेष धारे अपार।
मछली लक्षण है चरण खास, जग जीव बने तव चरणदास॥
कार्तिक बदि बारस को सुजान, प्रभु ने पाया केवल्य ज्ञान।
तव देव राज शत चरण आन, प्रभु का कीन्हें शुभ सुयशगान॥
शुभ समवशरण रचना विशेष, करके हर्षाए सुर अशेष।

सुर नर पशु आए शरण आन, प्रभु पूजा करके किए ध्यान॥
करके चरणों में नमस्कार, गुण गा हर्षाए बार-बार।
शुभ कमलाशन बैठे जिनेश, तब दिव्य ध्वनि दीन्हें विशेष॥
गणधर ने पाए चार ज्ञान, जो दिव्य ध्वनि कीन्हें बखान।
श्रद्धान जगाए कई जीव, वह पुण्य उपाए शुभा अतीव॥
संयम भी धारे कई महान, फिर किए स्वयं ही आत्म ध्यान।
महिमा जिनवर की है अनूप, चरणों आ झुकते कई भूप॥
जिनके गुण का है नहीं पार, हम वन्दन करते बार-बार।
सम्मेद शिखर पहुँचे जिनेश, सारे जग में महिमा विशेष॥
शुभ चैत अमावस तिथि जान, जिनराज प्राप्त कीन्हें निर्वाण।
मम लगी चरण में प्रभू आस, हम भी पा जाएँ मुक्ति वास॥

दोहा- अरहनाथ प्रभु जी किए, अपने कर्म विनाश।
सिद्ध शिला पर पा लिया, जिनने अपना वास॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिन पूजा कर पूज्य सब, बनते जीव महान।
सुर सुरेन्द्र बनकर 'विशद', पाते पद निर्वाण॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्

अरहनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद नमन, करते योग सम्हार।
अरहनाथ के चरण में, वन्दन बारम्बार॥

चौपाई

अरहनाथ भगवान हमारे, भवि जीवों के तारण हारे।
तीन लोक में मंगलकारी, जो हैं जन-जन के उपकारी॥
उनकी महिमा हम भी गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
स्वर्ग लोक से चयकर आये, नगर हस्तिनापुर शुभ गाए॥
पिता सुदर्शन जी कहलाए, मातश्री मित्रावति पाए।
फाल्गुन सुदी तीज को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी॥
देव स्वर्ग से चलकर आए, गर्भ कल्याणक श्रेष्ठ मनाए।

रत्नवृष्टि कीन्हें शुभकारी, नगर सजाए अतिशयकारी॥
अष्टकुमारिकाएँ भी आई, गर्भ का शोधन श्रेष्ठ कराईं।
मंगसिर सुदी चौदस को स्वामी, जन्म लिए मुक्ति पथ गामी॥
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, मेरु गिरि पर न्हवन कराया।
मछली चिह्न प्रभु पद पाया, अरहनाथ तब नाम सुनाया॥
तीन धनुष तन की ऊँचाई, प्रभु ने अपनी देह की पाई।
अस्सी सहस्र वर्ष की स्वामी, आयू पाए अन्तर्यामी॥
बयालिस सहस वर्ष तक भाई, राज्य किए प्रभुजी सुखदायी।
मेघ विनाश देखकर स्वामी, हुई विरक्ति जग से नामी॥
रेवती नक्षत्र श्रेष्ठ सुखदायी, गये सहेतुक वन में भाई।
कुरुवंश के लाल कहाए, स्वर्ण वर्ण प्रभु तन का पाए॥
मंगसिर शुक्ल दशें शुभ जानो, शुभ नक्षत्र में प्रभुजी मानो।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, हुए जहाँ से मुनि अविकारी॥
तृतिय भक्त प्रभु जी कीन्हें, आत्म ध्यान में चित्त जो दीन्हें।
अपराह्णकाल का समय बताया, प्रभु ने संयम को जब पाया॥
एक हजार मुनि शुभकारी, सह दीक्षित थे मंगलकारी।
सोलह दिनका समय बिताया, प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया॥
कार्तिक शुक्ला बारस जानो, अपराह्णकाल समय पहिचानो।
श्रेष्ठ सहेतुक वन शुभ गाया, रेवती नक्षत्र परमपद पाया॥
साढ़े तीन योजन का भाई, समवशरण था मंगलदायी।
आम्र वृक्ष सुरतरु शुभ गाया, कुबेर यक्ष प्रभु का बतलाया॥
यक्षी जया श्रेष्ठ शुभ गाई, गणधर तीस बताए भाई।
कुंभ प्रथम गणधर शुभ जानो, पचास हजार ऋषी पहिचानो॥
छह सौ दश थे पूरबधारी, सोलह सौ वादी शुभकारी।
अट्ठाइस सौ अवधिज्ञानी, अठ्ठाइस सौ केवलज्ञानी॥
पैंतिस सहस आठ सौ भाई, पैंतिस संख्या शिक्षक गाई।
तैंतालिस सौ विक्रियाधारी, छह हजार आर्यिका शुभकारी॥
साढ़े सत्रह सौ शुभ गाए, विपुल मति ज्ञानी कहलाए।
तीन लाख श्राविकाएँ जानो, एक लाख श्रावक पहिचानो॥

प्रभु सम्मेद शिखर जी आए, एक माह का ध्यान लगाए।
कृष्णा चैत अमावस भाई, रोहिणी नक्षत्र में मुक्ति पाई।।
आप हुए त्रय पद के धारी, कामदेव जिन चक्र के धारी।
जिला ललितपुर में शुभकारी, क्षेत्र नवागढ़ मंगलकारी।।
भू से प्रगट हुए जिन स्वामी, मंगलकारी शिवपद गामी।
उनके दर्शन जो भी पाए, 'विशद' स्वयं सौभाग्य जगाए।।

दोहा- 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीस।
पावे सुख सौभाग्य वह, बने श्री का ईश।।

जाप-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री 1008 अरहनाथ भगवान की आरती

(तर्ज-शांति अपरम्पार है...)

अरहनाथ भगवान हैं, गुण अनंत की खान हैं।
तीन लोक में मेरे स्वामी, अतिशय हुए महान् हैं।। टेक
हस्तिनापुर में जन्म लिया है, अतिशय मंगल छाया जी।
पिता सुदर्शन मित्रा माता, को प्रभु धन्य बनाया जी।।
अरहनाथ...
अस्सी हजार वर्ष की आयू, श्री जिनवर ने पाई जी।
तीन धनुष शुभ मेरे प्रभू की, रही श्रेष्ठ ऊँचाई जी।।
अरहनाथ...
जन्मोत्सव पर अरहनाथ के, तीन लोक हर्षाया जी।
पाण्डुक शिला पे इन्द्रों ने शुभ, प्रभु का न्हवन कराया जी।
अरहनाथ...
मछली चिह्न प्रभु का जानो, छियालिस गुण प्रगटाए जी।
गिरि सम्मेद शिखर से प्रभु जी, मुक्ति वधू को पाए जी।।
अरहनाथ...
'विशद' मोक्ष न पाया जब तक, प्रभु के गुण हम गाएँ जी।
भव-भव में हम शरण प्रभू की, जैनधर्म शुभ पाएँ जी।।
अरहनाथ...

प्रशस्ति

लोकालोक के मध्य में, मध्य लोक मनहार।
मध्य लोक के मध्य है, मेरु मंगलकार।।1।।
मेरू की दक्षिण दिशा, में शुभ क्षेत्र महान।
भरत क्षेत्र शुभ नाम है, अलग रही पहचान।।2।।
उत्तर में हिमवन गिरि, दक्षिण लवण समुद्र।
तिय नदियाँ जिसमें महा, अन्य कई हैं क्षुद्र।।3।।
मध्य रहा विजयार्द्ध शुभ, अतिशय अपम्पार।
रहते हैं नर पशु जहाँ, श्रेष्ठ दिये शुभकार।।4।।
कर्म भूमि जो है परम, बना है धनुषाकार।
मंलगमय रचना बनी, जग में अपरम्पार।।5।।
वर्तमान अवसर्पिणी, में चौबीस जिनेश।
तीर्थंकर पद में हुए, धार दिगम्बर भेष।।6।।
कामदेव चक्री हुए, तीर्थंकर भी साथ।
अठारहवें तीर्थेश का, नाम है अरहनाथ।।7।।
अरहनाथ जिनवर कहे, तीनों लोक प्रसिद्ध।
अष्ट कर्म को नाशकर, आप हुए हैं सिद्ध।।8।।
सुख-शांति की चाह में, घूमें सारे जीव।
कर्मोदय से लोक में, पाते दुःख अतीव।।9।।
शांति जिनकी अर्चना, करें दुःखों का नाश।
जीवन मंगलमय बने, होवे आत्म प्रकाश।।10।।
पौष शुक्ल पाँचे तिथि, पच्चिस सौ अड़तीश।
रहा वीर निर्वाण शुभ, तारीख है उनतीस।।11।।
दिल्ली सूरज विहार में, कीन्हा शीत प्रवास।
लेखन करके ग्रंथ का, लिया यहाँ अवकाश।।12।।
लघु धी से जो कुछ लिखा, मानो यही प्रमाण।
सर्व गुणी जद दें 'विशद', हमको करूणा दान।।13।।
खास दास की आस यह, और न कोई अरदास।
संयम मय जीवन रहे, अन्तिम मुक्तिवास।।14।।

विशद
श्री मल्लिनाथ विधान
माण्डला

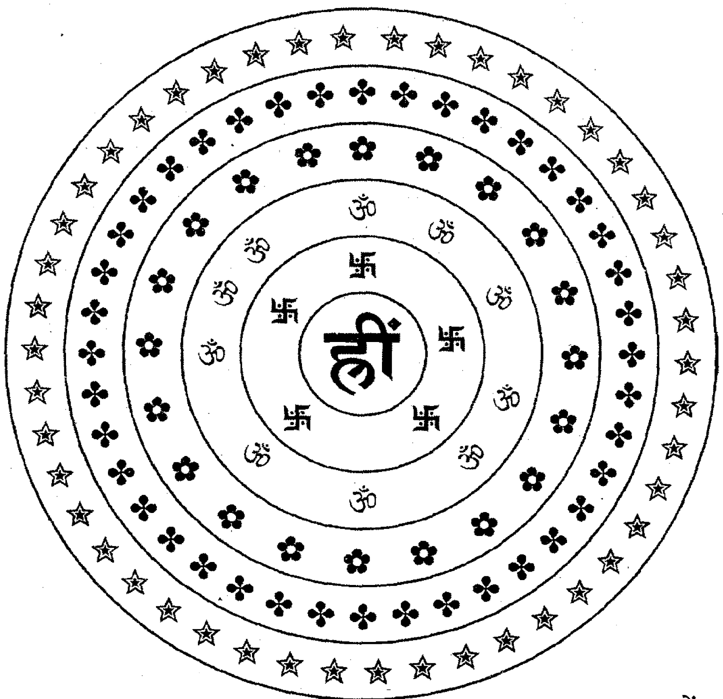

मध्य में – ह्रीं
प्रथम वलय में – 5 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 10 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 20 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 40 अर्घ्य
पंचम वलय में – 46 अर्घ्य
कुल 121 अर्घ्य

रचयिता
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागरजी महाराज

श्री मल्लिनाथ स्तवन
(चौबोला छन्द)

भव्य जीव रूपी कमलों को, मल्लिनाथ जिन सूर्य समान।
प्राणी मात्र के हितकारी का, करते भाव सहित गुणगान।।
देवों द्वारा पूजनीय हैं, श्री जिनवर देवाधिदेव।
चर अरु अचर द्रव्य दर्शायक, तव चरणों में नमन सदैव।।1।।

दोष नष्ट हो गये हैं जिनके, देवों से अर्चित जिनदेव।
गुण के सागर श्री जिनेन्द्र के, चरणों वन्दन करूँ सदैव।।
मोक्ष मार्ग के उपदेशक शुभ, जो हैं देवों के भी देव।
श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, विशद नमन् मैं करूँ सदैव।।2।।

हे देवाधिदेव सिद्ध श्री!, हे सर्वज्ञ! त्रिलोकी नाथ।
हे परमेश्वर! वीतराग श्री, जिन तीर्थंकर के पद माथ।।
हे जिन श्रेष्ठ महानुभाव कई, वर्धमान! स्वामिन् शुभ नाम।
तव चरणों की शरण प्राप्त हो, करते बारंबार प्रणाम।।3।।

जिनने जीते हर्ष द्वेष मद, अरु जीता है ईर्ष्याभाव।
मोह परीषह को भी जीता, अन्तर में जागा समभाव।।
जन्म मरण आदिक रोगों को, जीत किया है भव का अन्त।
ऐसे श्री जिनदेव हमारे, सदा-सदा होवें जयवन्त।।4।।

तीन लोकवर्ती जीवों के, हितकारक हैं आप महान्।
धर्म चक्ररूपी सूरज हैं, लाल चरण हैं आभावान।।
इन्द्र मुकुट में चूड़ामणि की, किरणों से अति शोभामान।
जयवन्तों श्री मल्लिनाथ पद, करते हैं जग का कल्याण।।5।।

दोहा- तीर्थंकर जिन लोक में, करते जग कल्याण।
भव्य जीव गुणगान कर, पाते पद निर्वाण।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री मल्लिनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश॥
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, में करते आह्वान॥
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ!
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हम माथ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

इन्द्रिय के विषयों की आशा, हम पूर्ण नहीं कर पाए हैं।
हे नाथ! अतीन्द्रिय सुख पाने, यह नीर चढ़ाने लाए हैं॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है॥1॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवभोगों में फंसे रहे हम, मुक्त नहीं हो पाए हैं।
भवाताप से मुक्ती पाने, चन्दन घिसकर लाए हैं॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके तीनों लोको में पर, स्वपद प्राप्त न कर पाए।
प्रभु अक्षय पद पाने हेतू यह, अक्षय अक्षत हम लाए॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है॥3॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पीड़ित हो काम व्यथा से कई, हम जन्म गंवाते आए हैं।
हो काम वासना नाश प्रभो!, हम पुष्प चढ़ाने लाए हैं॥

श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है॥4॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा वेदना से व्याकुल, भव-भव में होते आए हैं।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतू, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता है मोह कर्म, हम उसके नाथ सताए हैं।
अब नाश हेतू इस शत्रु के, यह दीप जलाने लाए हैं॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है॥6॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म के बन्धन में, बँधकर जग में भटकाए हैं।
अब नाश हेतू उन कर्मों के, यह धूप जलाने लाए हैं॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है॥7॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल है कितने सारे जग में, गिनती भी न कर पाए हैं।
वह त्याग मोक्ष फल पाने को, यह फल अर्पण को लाए हैं॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है॥8॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

संसार वास दुखकारी है, हम इससे अब घबराए हैं।
पाने अनर्घ पद नाथ परम, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है॥9॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा **जल से यहाँ प्रधान, शांती धारा दे रहे।**
मल्लिनाथ भगवान, हमको भी निज सम करो॥ *शान्तये शांतिधारा...*

सोरठा **पुष्पाञ्जलि के साथ, अर्चा करते भाव से।**
चरण झुकाते माथ, शिवपद पाने के लिए॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

प्रभावती के गर्भ में, मल्लिनाथ भगवान।
चैत शुक्ल की प्रतिपदा, हुआ गर्भ कल्याण॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ॥1॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शुम्भू छंद)

अगहन शुक्ला ग्यारस को प्रभु, जन्में मल्लिनाथ भगवान।
प्रभावती माँ कुम्भराज के, गृह में हुआ था मंगलगान॥
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हों हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार॥2॥

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

मगसिर सुदी ग्यारस जिनदेव, मल्लिनाथ तप धारे एव।
केशलुंच कर तप को धार, छोड़ दिया सारा आगार॥
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्शशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

पौष कृष्णा दूज मल्लि, नाथ जिनवर ने अहा।
कर्मघाती नाश करके, ज्ञान पाया है महा॥
जिन प्रभू की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं॥ 4॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल टप्पा)

फाल्गुन शुक्ला तिथि पंचमी, मल्लिनाथ स्वामी।
गिरि सम्मेदशिखर से जिनवर, बने मोक्षगामी॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए॥5॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त भी मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- आतम के हित में प्रभु, छोड़ दिए जगजाल।
मल्लिनाथ भगवान की, गातें हम जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

जय-जय तीर्थंकर मल्लिनाथ, जय-जय शिव पदवी के धारी।
जय रत्नत्रय के सूत्र धार, जय मोक्ष महल के अधिकारी॥
तुम अपराजित से चय करके, मिथिलापुर नगरी में आए।
नृप कुम्भराज माँ प्रभावति, के गृह में बहु खुशियाँ लाए॥
सुदि चैत माह की तिथि एकम्, अश्विनी नक्षत्र जानो पावन।
प्रभु गर्भ में आए इसी समय, वह घड़ी हुई शुभ मनभावन॥
नव माह गर्भ में रहे प्रभु, शचियाँ कई सेवा को आई।
हर्षित होकर प्रभु भक्ति में, कई दिव्य सामग्री भी लाई॥
फिर मगसिर सुदी एकादशी को, प्रभु मल्लिनाथ ने जन्म लिया।
शुभ पुण्य के वैभव से प्रभु ने, तीनों लोकों को धन्य किया॥
शचियों ने जात कर्म कीन्हा, फिर इन्द्र ऐरावत ले आया।
शचि ने बालक को लेकर के, मायामयी बालक पधराया॥
फिर पाण्डुक शिला पर ले जाकर, इन्द्रों ने जय-जय कार किया।
अभिषेक कराया भाव सहित, तब पुण्य सुफल शुभ प्राप्त किया॥
अनुक्रम से वृद्धि को पाकर, प्रभु युवा अवस्था को पाए।
विद्युत की चंचलता को लखकर, संयम को प्रभु जी अपनाए॥
शुभ मगसिर सुदि एकादशि को, पौर्वाह्ण काल अतिशय जानो।

प्रभु बैठ जयन्त पालकी में, शाली वन में पहुँचे मानो॥
फिर नृपति तीन सौ के संग में, दीक्षा धर तेला धार लिया।
होकर एकाग्र प्रभु ने अनुपम, निज चेतन तत्त्व का ध्यान किया॥
फिर पौष कृष्ण की द्वितिया को, प्रभु केवल ज्ञान प्रकट कीन्हे।
तब देव बनाए समवशरण, प्रभु दिव्य देशना शुभ दीन्हे॥
शुभ फाल्गुन शुक्ल पंचमी को, अश्वनी नक्षत्र प्रभु जी पाए।
सम्मेद शिखर पर जाकर के, प्रभु मुक्ति वधु को प्रगटाए॥
प्रभु का दर्शन अघ नाशक है, अनुपम सौभाग्य प्रदायक है।
जो बोधि समाधि का कारण, शुभ मोक्ष मार्ग दर्शायक है॥
जो भाव सहित अर्चा करता, वह अतिशय पुण्य कमाता है।
सुख शांति प्राप्त कर लेता है, फिर मोक्ष महल को जाता है॥
प्रभु के गुण होते हैं अनन्त, गणधर भी नहिं कह पाते हैं।
गुणगान करें जो भव्य जीव, प्रभु के गुण वह प्रगटाते हैं॥
शुभ महिमा सुनकर हे प्रभुवर! तव चरण शरण में आए हैं।
हम अष्ट गुणों को पा जाएँ, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं॥

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय उपकारी, संयम धारी, तीन लोक में पूज्य अहा।
त्रिभुवन के स्वामी, 'विशद' नमामी, तव शासन यह पूज्य रहा॥
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा मल्लिनाथ निज हाथ से, दीजे शुभ आशीश।
चरण शरण के भक्त यह, झुका रहे हैं शीश॥
॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

प्रथम वलयः

दोहा पञ्च महाव्रत धारते, तीर्थंकर भगवान।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने निज का ध्यान॥
(प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश॥

अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, में करते आह्वान॥
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ!
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हम माथ॥
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पाँच व्रतधारी श्री मल्लि जिन

(शम्भू छन्द)

श्रेष्ठ अहिंसा व्रत को धारण, करके बनते जिन अरहंत।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, प्राप्त करें गुण स्वयं अनन्त॥
गणधर मुनि इन्द्रों से पूजित, श्री जिनवर के चरण कमल।
विशद भाव से अष्ट द्रव्य ले, करते हैं सविनय अर्चन॥1॥
ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रत धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सत्य महाव्रत धारण करके, परम सत्य के धारी हो।
शिव पथ के अनुगामी अनुपम, पूर्ण रूप अविकारी हो॥
गणधर मुनि इन्द्रों से पूजित, श्री जिनवर के चरण कमल।
विशद भाव से अष्ट द्रव्य ले, करते हैं सविनय अर्चन॥2॥
ॐ ह्रीं सत्य महाव्रत धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

व्रत अचौर्य को पाने वाले, बन जाते अर्हत् भगवान।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, भव्य जीव करते गुणगान॥
गणधर मुनि इन्द्रों से पूजित, श्री जिनवर के चरण कमल।
विशद भाव से अष्ट द्रव्य ले, करते हैं सविनय अर्चन॥3॥
ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रत धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके, परम ब्रह्म में वास करें।
कर्म घातिया नाश करें फिर, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥
गणधर मुनि इन्द्रों से पूजित, श्री जिनवर के चरण कमल।
विशद भाव से अष्ट द्रव्य ले, करते हैं सविनय अर्चन॥4॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रत धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

संत अपरिग्रह के धारी हो, बन जाते हैं जो निर्ग्रन्थ।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, बनते तीर्थंकर अर्हंत॥
गणधर मुनि इन्द्रों से पूजित, श्री जिनवर के चरण कमल।
विशद भाव से अष्ट द्रव्य ले, करते हैं सविनय अर्चन॥5॥

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रत धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पंच महाव्रत का फल अनुपम, पाते हैं इस जग के जीव।
संयम तप के द्वारा अर्जन, करते हैं जो पुण्य अतीव॥
गणधर मुनि इन्द्रों से पूजित, श्री जिनवर के चरण कमल।
विशद भाव से अष्ट द्रव्य ले, करते हैं सविनय अर्चन॥6॥

ॐ ह्रीं पञ्च महाव्रत धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा **मल्लिनाथ जिनराज पद, पूज रहे दिग्पाल।**
पुष्पांजलि करते विशद, हम भी यहाँ त्रिकाल॥

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश॥
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, में करते आह्वान॥
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ।
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हम माथ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दश दिग्पाल द्वारा पूज्य मल्लिजिन

(शम्भू छन्द)

गजारुढ़ हो पूर्व दिशा से, शची इन्द्र कई साथ प्रधान।
अक्षत शस्त्र कोटि ले हाथों, शोभित होता सूर्य महान्॥

श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, दिक्सुरेन्द्र का है आह्वान।
पूर्व दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान॥1॥

ॐ ह्रीं सूर्य इन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शुभ दैदीप्यमान ज्वालायुत, आग्नेय से अग्निदेव।
तीव्र फुलिंगें उठती जिसमें, शक्ति हस्त से युक्त सदैव॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, अग्नि इन्द्र का है आह्वान।
आग्नेय के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान॥2॥

ॐ ह्रीं अग्नि इन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुभट प्रचण्ड दण्ड बाहुयुत, चण्डान्वित है तेज प्रचण्ड।
छाया कटाक्षद्युति भासमान शुभ, लोलाय बाहयत श्रेष्ठ अखण्ड॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, सुर चमरेन्द्र का है आह्वान।
दक्षिण दिश के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान॥3॥

ॐ ह्रीं चमरेन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रतिहारी नैऋत्य दिशा का, रत्न कांति सम आभावान।
ऋक्षारुढ़ अस्त्र मुद्गर ले, अतिशय उज्ज्वल कांतिमान॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, नैऋत्य देव का है आह्वान।
नैऋत्य दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान॥4॥

ॐ ह्रीं नेऋृत्य इन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मकरारुढ़ अस्त्र परिवेष्टित, नागपाश ले अपने साथ।
मुक्तामय कल्पित है अनुपम, सुन्दर द्रव्य लिए है हाथ॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, वरुण देव का है आह्वान।
पश्चिम दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान॥5॥

ॐ ह्रीं वरुणेन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

महामहिज आयुध ले हाथों, अश्वारुढ़ शक्तिधारी।
वायुवेग विलास भूषान्वित, वायव्यकोण का अधिकारी॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, पवनइन्द्र का है आह्वान।
वायव्य दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान॥6॥

ॐ ह्रीं पवनेन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रत्नोज्वल पुष्पों से शोभित, देवि धनादिक को ले साथ।
उत्तर से विमान पर चढ़कर, धनद कई इन्द्रों का नाथ।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, है कुबेर का शुभ आह्वान।
उत्तर दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।7।।

ॐ ह्रीं कुबेरेन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जटा मुकुट वृषभादिरुढ़ हो, गिरिवर पुत्री को ले साथ।
धवलोज्वल अंगों का धारी, शुभ त्रिशूल ले अपने हाथ।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, ईशान देव का शुभ आह्वान।
ईशान दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।8।।

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वायु वेग वेगार्जित निज के, धरणेन्द्र पद्मावति का ईश।
उच्च कठोर कूर्म आरोही, अधोलोक का है आधीश।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, धरणेन्द्र का भी है आह्वान।
अधर दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।9।।

ॐ ह्रीं धरणेन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चटाटोप चल शौर्य उदारी, मूर्ति विदारित है विकराल।
सिंहारुढ़ मदभ्र कांतियुत, रोहणीश करता नत भाल।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, सोम इन्द्र का है आह्वान।
ऊर्ध्व दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।10।।

ॐ ह्रीं सोमेन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा मल्लिनाथ जिनराज पद, झुकते हैं दिग्पाल।
चरण वन्दना जो करें, नत हो चरण त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं दश दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा गुण पाये सम्यक्त्व के, द्वादश तप को धार।
मल्लिनाथ जिनराज जी, हुऐ विभव से पार।।

(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश।।
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, में करते आह्वान।।
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ!
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हम माथ।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सम्यकदर्शन के गुण

(नरेन्द्र छन्द)

आठ अंग सम्यक दर्शन के, आठ अन्य गुण गाये।
है संवेग प्रथम गुण अनुपम, धर्मानुराग कहाए।।
सम्यक दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए।।1।।

ॐ ह्रीं संवेग गुण धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गुण निर्वेग प्राप्त जो करते, भोग उन्हें ना भाते।
इस संसार शरीर भोग से, पूर्ण विरक्ती पाते।।
सम्यक दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए।।2।।

ॐ ह्रीं निर्वेग गुण धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज पापों की निन्दा करके, मन में खेद मनाते।
प्रायश्चित्त करते भावों से, यत्नाचार जगाते।।
सम्यक दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए।।3।।

ॐ ह्रीं आत्मनिंदा गुण धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

राग द्वेष आदी भावों से, पाप हुए जो भाई।
गुरु सम्मुख आलोचन करना, यह गर्हा कहलाई।।

सम्यक दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए॥4॥

ॐ ह्रीं गर्हा गुण धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

क्रोध लोभ रागादिक जिनके, मन में ना रह पावें।
उपशम गुण से जीव युक्त वह, सारे पाप भगावें॥
सम्यक दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए॥5॥

ॐ ह्रीं उपशम गुण धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

देव शास्त्र गुरु नव देवों में, विनय भाव आचरते।
भक्ती गुण के धारी प्राणी, कर्म कालिमा हरते॥
सम्यक दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए॥6॥

ॐ ह्रीं भक्ति गुण धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

साधर्मी से प्रीति बढ़ाना, वात्सल्य कहलाए।
धर्मायतन की रक्षा करने, में उसका मन जाए॥
सम्यक दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए॥7॥

ॐ ह्रीं वात्सल्य गुण धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भव सिन्धु में डूबे प्राणी, के प्रति करुणा आए।
अनुकम्पा गुण सम्यकदृष्टी, का पावन कहलाए॥
सम्यक दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए॥8॥

ॐ ह्रीं अनुकम्पा गुण सहित तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चाल छन्द)

जो विषयाहार को त्यागें, वे अनशन तप में लागें।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥9॥

ॐ ह्रीं अनशन तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप ऊनोदर जो पावें, वह अपने कर्म नशावें।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥10॥

ॐ ह्रीं उनोदर तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

व्रत परिसंख्यान तपधारी, नित करें निर्जरा भारी।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥11॥

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो भिन्न भिन्न रस त्यागी, निज आतम के अनुरागी।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥12॥

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन विविक्त शय्यासन पावें, निज गुण में रमते जावें।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥13॥

ॐ ह्रीं विविक्त शय्यासन तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप काय क्लेश जगाते, मन में जो खेद ना लाते।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥14॥

ॐ ह्रीं काय क्लेश तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप प्रायश्चित्त जो धारें, वे अपने दोष निवारें।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥15॥

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो विनय गुणों को पाते, वे ज्ञानी जीव कहाते।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥16॥

ॐ ह्रीं विनय तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वैय्यावृत्ती तप धारी, पावन होते अनगारी।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥17॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ती तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रत स्वाध्याय में रहते, उनको शिवगामी कहते।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥18॥

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

व्युत्सर्ग सुतप जो पावें, संवर कर कर्म नशावें।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥19॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो आतम ध्यान लगाए, वह ध्यान सुतप को पाए।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥20॥

ॐ ह्रीं ध्यान तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा पावें गुण सम्यक्त्व के, तप धारें जिनराज।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, पाते शिवपद राज॥
ॐ ह्रीं अष्ट गुण द्वादश तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा इन्द्र पूजते जिन चरण, लौकान्तिक के देव।
मल्लिनाथ के पद युगल, पूजें सभी सदैव॥
(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश॥
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, में करते आह्वान॥
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ!
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हम माथ॥
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

बत्तीस देवों द्वारा पूज्य मल्लिजिन

(भुजंग प्रयात)

असुर इन्द्र पंक भाग भवनों से आवें, पूजा को द्रव्य के थाल भर लावें।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें॥1॥
ॐ ह्रीं असुरेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाग इन्द्र खर भाग भवनों से आते, भक्ति में अपने जो मन को लगाते।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें॥2॥
ॐ ह्रीं नागेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

विद्युतेन्द्र भवनवासी, महिमा दिखाते, अर्चा में अपने जो मन को लगाते।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें॥3॥
ॐ ह्रीं विद्युतेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुपर्णेन्द्र पूजा कर मन में हर्षावें, जयकारा बोल के महिमा जो गावें।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें॥4॥
ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अग्नीन्द्र खर भाग भवनों के वासी, करते हैं अर्चना जिनवर की खासी।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें॥5॥
ॐ ह्रीं अग्नीन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मारूतेन्द्र भवनों से फल लेके आवें, भक्ति में लीन हो जिन के गुण गावें।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें॥6॥
ॐ ह्रीं मारूतेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्तनित शुभ इन्द्र की महिमा है न्यारी, चरणों का बनता जो प्रभु के पुजारी।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें॥7॥
ॐ ह्रीं स्तनित इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उदधि इन्द्र की भक्ती जग से निराली, भव्य प्राणियों का जो मन हरने वाली।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें॥8॥
ॐ ह्रीं उदधि इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दीपेन्द्र भक्ती से दीपक जलावें, नाचें औ गावें जो मन में हर्षावें।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें॥9॥
ॐ ह्रीं दीपेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दिक् सुरेन्द्र भवनालय वासी कहावें, पूजा को परिवार साथ में जो लावें।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें॥10॥
ॐ ह्रीं दिक् कुमारेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(अडिल्य छन्द)

किन्नर इन्द्र प्रथम व्यन्तर का जानिए, श्री जिनवर का भक्त जिसे पहिचानिए।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥11॥
ॐ ह्रीं किन्नर इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्र किम्पुरुष द्वितिय व्यन्तर का कहा, भव्य भ्रमर जिनचरण कमल का जो रहा।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥12॥
ॐ ह्रीं किम्पुरुष इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्र महोरग व्यन्तर का जानो सही, जिन चरणों में उसकी भी भक्ती रही।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥13॥
ॐ ह्रीं महोरग इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्र रहा गन्धर्व व्यन्तरों का अहा, हो जिनेन्द्र की पूजा वह पहुँचे वहाँ।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥14॥
ॐ ह्रीं गन्धर्व इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

यक्ष इन्द्र की महिमा का ना पार है, जिसकी भक्ती रहती अपरम्पार है।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥15॥
ॐ ह्रीं यक्षेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

राक्षस इन्द्र भी आते भावों से भरें, भक्ती करके औरों के मन को हरें।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥16॥
ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भूत इन्द्र भी अपनी वृत्ती छोड़ते, जिन अर्चा से अपना नाता जोड़ते।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥17॥
ॐ ह्रीं भूतेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पिशाच इन्द्र आते हैं भावों से अरे!, नव कोटी से भक्ती भावों से भरे।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥18॥
ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चन्द्र इन्द्र ज्योतिष का भाई जानिए, जिन चरणों का भक्त भ्रमर पहचानिए।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥19॥
ॐ ह्रीं चन्देन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्योतिषवासी है प्रतीन्द्र सूरज महा, जिनचरणों का भक्त श्रेष्ठतम जो रहा।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥20॥
ॐ ह्रीं प्रतीन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(शेर छन्द)

सौधर्म इन्द्र श्रीफल ले, स्वर्ग से आवे।
पूजा कर प्रसन्न हो, मन हर्ष बढ़ावे॥
श्री मल्लिनाथ जिन की, पूजा को आए हैं।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं॥21॥
ॐ ह्रीं सौधर्म इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ईशान इन्द्र पूंगी फल, साथ में लावे।
होके सवार गज पे, भक्ति से जो आवे॥
श्री मल्लिनाथ जिन की, पूजा को आए हैं।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं॥22॥
ॐ ह्रीं ईशानेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सानत कुमार इन्द्र, गजारूढ़ हो आवे।
आमों के गुच्छे साथ में, परिवार जो लावे॥
श्री मल्लिनाथ जिन की, पूजा को आए हैं।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं॥23॥
ॐ ह्रीं सानत कुमार इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

माहेन्द्र इन्द्र केले के, गुच्छे ले आवे।
होके सवार अश्व पे, परिवार को लावे॥
श्री मल्लिनाथ जिन की, पूजा को आए हैं।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं॥24॥
ॐ ह्रीं माहेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

होके सवार ब्रह्म इन्द्र, हंस पे आवे।
जो पुष्प केतकी से, प्रभु पूज रचावे॥
श्री मल्लिनाथ जिन की, पूजा को आए हैं।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं॥25॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शुभ लान्तवेन्द्र दिव्य फल ले, भाव से आवे।
परिवार साथ में लाके, हर्ष मनावें॥

श्री मल्लिनाथ जिन की, पूजा को आए हैं।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं॥26॥
ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

होके सवार चकवा पे, शुक्रेन्द्र भी आवे।
शुभ पुष्प ले सेवन्ती, के पूज रचावे॥
श्री मल्लिनाथ जिन की, पूजा को आए हैं।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं॥27॥
ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कोयल पे हो सवार, शतारेन्द्र जो आवे।
जो नील कमल से, पूजे अर्घ्यं चढ़ावे॥
श्री मल्लिनाथ जिन की, पूजा को आए हैं।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं॥28॥
ॐ ह्रीं शतारेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चढ़के गरुढ़ पे, आनतेन्द्र वेग से आवे।
परिवार सहित श्री जिन, को पूज रचावे॥
श्री मल्लिनाथ जिन की, पूजा को आए हैं।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं॥29॥
ॐ ह्रीं आन्तेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चढ़के विमान पद्म पे, प्राणतेन्द्र भी आवे।
परिवार सहित तुम्बरु, ले पूजा रचावे॥
श्री मल्लिनाथ जिन की, पूजा को आए हैं।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं॥30॥
ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चढ़के कुमुद विमान पे, आरणेन्द्र जो आवे।
परिवार सहित गन्ने, ले आन चढ़ावे॥
श्री मल्लिनाथ जिन की, पूजा को आए हैं।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं॥31॥
ॐ ह्रीं आरणेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अच्युतेन्द्र हो सवार, जो मयूर पे आवे।
परिवार सहित भक्ति से, जो चँवर ढुरावे॥
श्री मल्लिनाथ जिन की, पूजा को आए हैं।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं॥32॥
ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लौकान्तिक देव पूजित जिन

(आल्हा छन्द)

लौकान्तिक सारस्वत आते, ब्रह्मलोक की दिश ईशान।
तप कल्याणक में सम्बोधन, करते हैं जिनवर को आन॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान॥33॥
ॐ ह्रीं सारस्वत देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आता है आदित्य इन्द्र भी, पूर्व दिशा से यहाँ प्रधान।
श्री जिनेन्द्र के चरणों में जो, रखता है अनुपम श्रद्धान॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान॥34॥
ॐ ह्रीं आदित्य देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आग्नेय से अग्नि इन्द्र शुभ, भक्ति करता मंगलकार।
स्वयं भक्ति से शीश झुकाकर, वन्दन करता बारम्बारं।
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहा प्रधान॥35॥
ॐ ह्रीं अग्नि देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अरुण इन्द्र दक्षिण से आकर, करता है प्रभु का सम्मान।
प्रभु के चरणों अर्चा करके, करता है शुभ मंगलगान॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान॥36॥
ॐ ह्रीं अरुण देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आता है वायव्य दिशा से, गर्दतोय लौकान्तिक देव।
जिन चरणों की भक्ती करने, में रत रहता विशद सदैव॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान॥37॥

ॐ ह्रीं गर्दतोय देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तुषित इन्द्र पश्चिम से आकर, जिन चरणों में करे प्रणाम।
भक्ति वन्दना करके फिर वह, जाता है स्वर्गों के धाम॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान॥38॥

ॐ ह्रीं तुषित देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आता है नैऋत्य कोण से, लौकान्तिक सुर अव्यावाध।
जिन चरणों की भक्ति करके, पाता प्रभु का आशीर्वाद॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान॥39॥

ॐ ह्रीं अव्याबाध देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्र अरिष्ट उत्तर से आकर, भक्ति करता है कर जोर।
भक्ती के फल से इस जग में, मंगल होता चारों ओर॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान॥40॥

ॐ ह्रीं अरिष्ट देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भवन वानव्यन्तर ज्योतिष अरु, स्वर्गों के सब इन्द्र महान।
लौकान्तिक वासी सुरेन्द्र सब, करते हैं प्रभु का गुणगान॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान॥41॥

ॐ ह्रीं चतुर्निकाय देव एवं लौकान्तिक देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा होती पूरी आश है, मल्लिनाथ के पास।
मंगलमय जीवन बने, होवे मुक्ती वास॥

(पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश॥
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, में करते आह्वान॥
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ!
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हम माथ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

46 मूलगुण के अर्घ्य

(10 जन्म के अतिशय) (सखी छन्द)

प्रभु अतिशय रूप सुपावें, लख कामदेव शर्मावें।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥1॥

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तन में सुगंध प्रभु पाए, नर नारी सुर हर्षाए।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥2॥

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तन में न स्वेद रहा है, यह अतिशय एक कहा है।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥3॥

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तन में मलमूत्र न होई, न रहे अशुद्धी कोई।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥4॥

ॐ ह्रीं नीहार रहित सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हित मित प्रिय वचन उच्चारें जीवों में करुणा धारें
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥5॥

ॐ ह्रीं हित मित प्रिय सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु बल अतुल्य के धारी, है शक्ति जग से न्यारी।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥6॥

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है श्वेत रुधिर प्रभु तन में, वात्सल्य रहे जन-जन में।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥7॥

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वसु लक्षण एक सहस तन, दर्शन कर हर्षित हो मन।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥8॥

ॐ ह्रीं सह।।ाष्ट लक्षण सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समचतुष्क पाए संस्थाना, तन हीनाधिक नहिं माना।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥9॥

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शुभ वज्रवृषभ कहलाए, प्रभु उत्तम संहनन पाए।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी॥10॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

10 केवलज्ञान के अतिशय

शत् योजन सुभिक्षता होई, दुर्भिक्ष रहे न कोई,
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, सौ इन्द्र चरण में आते॥
प्रभु केवलज्ञान जगाए, दश अतिशय प्रभु ने पाए।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥11॥

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो गमन गगन में करते, औरों के संकट हरते।
हे विशद ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी।
प्रभु केवलज्ञान जगाए........॥12॥

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो समवशरण में आवें, चारों दिश दर्श दिखावें।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, सौ इन्द्र चरण में आते॥
प्रभु केवलज्ञान जगाए........॥13॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु दयावान हितकारी, इस जग में मंगलकारी।
हे विशद ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी।
प्रभु केवलज्ञान जगाए........॥14॥

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर नर पशु कृत जड़ कोई, जिन पर उपसर्ग न होई।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, सौ इन्द्र चरण में आते॥
प्रभु केवलज्ञान जगाए, दश अतिशय प्रभु ने पाए।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥15॥

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन है औदारिक प्यारा, प्रभु करें न कवलाहारा।
हे विशद ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी॥
प्रभु केवलज्ञान जगाए........॥16॥

ॐ ह्रीं कवलाहाराभाव घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु सब विद्या के ईश्वर, त्रलोक्यपति जगदीश्वर।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, सौ इन्द्र चरण में आते॥
प्रभु केवलज्ञान जगाए........॥17॥

ॐ ह्रीं विद्येश्वरत्व घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

न बढ़ें केश नख कोई, ज्यों के त्यों रहते सोई।
हे विशद ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी।
प्रभु केवलज्ञान जगाए........॥18॥

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु के लोचन मनहारी, है नाशा दृष्टी प्यारी।
हे विशद ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी।
प्रभु केवलज्ञान जगाए........॥19॥

ॐ ह्रीं अक्षस्पद घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन परमौदारिक पाए, पर छाया नहीं दिखाए।
हे विशद ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी।
प्रभु केवलज्ञान जगाए........॥20॥

ॐ ह्रीं छायारहित घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

है अर्ध मागधी भाषा, सुरकृत है शुभ परिभाषा।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों कृत कहलाए।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥21॥

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीवों में मैत्री जागे, जिनभक्ति में मन लागे।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥
प्रभु चौदह........॥22॥

ॐ ह्रीं सर्वमैत्रीभाव देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षट्ऋतु के फल फलते हैं, अरु फूल स्वयं खिलते हैं।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥
प्रभु चौदह........॥23॥

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरुपरिणाम देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दर्पण सम भूमि चमकती, सूरज सी कांति दमकती।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥
प्रभु चौदह........॥24॥

ॐ ह्रीं आदर्श तल प्रतिमा देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुरभित शुभ वायु चलती, जन-जन की वृत्ति बदलती।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥
प्रभु चौदह........॥25॥

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब जग में आनंद छावे, हर प्राणी बहु सुख पावे।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों कृत कहलाए।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥26॥

ॐ ह्रीं सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कंटक से रहित जमीं हो, दोषों की वहाँ कमी हो।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥
प्रभु चौदह........॥27॥

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नभ में गूंजे जयकारा, जीवों में सौख्य अपारा।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥
प्रभु चौदह........॥28॥

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो गंधोदक की वृष्टी, सौभाग्य मई सब सृष्टी।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥
प्रभु चौदह........॥29॥

ॐ ह्रीं मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर पग तल कमल रचाते, प्रभु के गुण मंगल गाते।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥
प्रभु चौदह........॥30॥

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्णकमल देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो गगन सुनिर्मल भाई, यह प्रभू की है प्रभुताई।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥
प्रभु चौदह........॥31॥

ॐ ह्रीं शरद कमल वन्निर्मल गगन देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निर्मल हो सभी दिशाएँ, जिनवर जहाँ शोभा पाएँ।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥
प्रभु चौदह........॥32॥

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर धर्मचक्र ले आवे, आगे जो चलता जावे।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥
प्रभु चौदह........॥33॥

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वसु मंगल द्रव्य सुहावन, लाते हैं सुर अति पावन।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥
प्रभु चौदह........॥34॥

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

8 प्रातिहार्य

(चाल टप्पा)

प्रातिहार्य जुत समवशरण की, शोभा दर्शाई।
तरु अशोक है, शोक निवारक, भविजन सुखदाई॥
जिनेश्वर पूजों हों भाई।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई जिनेश्वर....॥35॥

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

महाभक्ति वश सुरपुरवासी, पुष्प लिए भाई।
पुष्पवृष्टि करते हैं मिलकर, मन में हर्षाई।
जिनेश्वर पूजों हों भाई।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई जिनेश्वर....॥36॥

ॐ ह्रीं सुरपुष्प वृष्टि सत्प्रातिहार्य सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुपथ विनाशक सुपथ प्रकाशक, शुभ मंगलदाई।
दिव्य ध्वनि सुनते नर सुर पशु, हिरदय हर्षाई।
जिनेश्वर पूजों हों भाई।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन पाए प्रभुताई जिनेश्वर....॥37॥

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अतिशय अनुपम धवल मनोहर, सुंदर सुखदाई।
चौंसठ चंवर ढुरें प्रभु आगे, अति शोभा पाई।
जिनेश्वर पूजों हों भाई।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई जिनेश्वर....॥38॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्टि चामर सत्प्रातिहार्य सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

परमवीर अतिवीर जिनेश्वर, जगत पूज्य भाई।
रत्न जड़ित अति शोभा मण्डित, सिंहासन पाई॥
जिनेश्वर पूजों हों भाई।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन पाए प्रभुताई जिनेश्वर....॥39॥

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

महत् ज्योति जिनवर के तन की, अतिशय चमकाई।
प्रभा पुंज युत प्रातिहार्य शुभ, भामण्डल पाई।।
जिनेश्वर पूजों हों भाई।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन पाए प्रभुताई जिनेश्वर....।।40।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्यातिशय सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हर्षभाव से सुरगण मिलकर, बाजे बजवाई।
देव दुंदुभि प्रातिहार्य शुभ, श्री जिनवर पाई।।
जिनेश्वर पूजों हों भाई।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन पाए प्रभुताई जिनेश्वर....।।41।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि सत्प्रातिहार्य सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जड़े कनक नग छत्र मणीमय, रत्नमाल लपटाई।
तीन लोक के स्वामी हों ज्यों, छत्रत्रय पाई।।
जिनेश्वर पूजों हों भाई।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन पाए प्रभुताई।।42।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

4 अनन्त चतुष्टय

चक्षु दर्शनावरण आदि सब, घातक कर्म नशाई।
सकल ज्ञेय युगपद अवलोके, सद् दर्शन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हों भाई।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन पाए प्रभुताई।।43।।

ॐ ह्रीं अनंत दर्शनगुण प्राप्त द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

उभय लोक षट् द्रव्य अनंता, युगपद दर्शाई।
निरावरण स्वाधीन अलौकिक, विशद ज्ञान पाई।।
जिनेश्वर पूजों हों भाई।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन पाए प्रभुताई।।44।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञान गुण प्राप्त द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

दुष्ट महाबली मोह कर्म का, नाश किए भाई।
निज अनुभव प्रत्यक्ष किए जिन, समकित गुण पाई।।
जिनेश्वर पूजों हों भाई।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन पाए प्रभुताई।।45।।

ॐ ह्रीं अनंत सुख प्राप्त सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

अंतराय कर्मों ने शक्ति, आतम की खोई।
ते सब घात किये जिन स्वामी, बल असीम पाई।।
जिनेश्वर पूजों हों भाई।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन पाए प्रभुताई।।46।।

ॐ ह्रीं अनंत वीर्य गुण सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

दोहा मल्लिनाथ जिन प्रभू की, भक्ति फले अविराम।
द्वितिय बालयति पूज कर, पावें मुक्ति धाम।।

ॐ ह्रीं द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम अर्हं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा मोह मल्ल को जीतकर, जग में हुए महान।
मल्लिनाथ भगवान का, करते हम गुणगान।।

(पद्धड़ी छन्द)

जय जय मल्लिनाथ जिन स्वामी, त्रिभुवन पति हे अन्तर्यामी।
जय जय परम धर्म के धारी, जय जय वीतराग अविकारी।।
जय जय अशरण शरण सहाई, विश्व विलोकन जन हितदायी।
जय जय तीर्थंकर पदधारी, ईश्वर दर्शायक मनहारी।।
जय जय केवल ज्ञान प्रकाशी, जय जय कर्म घातिया नाशी।
जय सुर समवशरण बनवाए, जय शतेन्द्र पद शीश झुकाए।।
परमानन्द गुणी शुभकारी, विश्व विजेता मंगलकारी।
जय जय त्रिभुवन के हितकारी, जय जय मल्लिनाथ भवहारी।।
सप्त तत्त्व दर्शाने वाले, शिव पथ राही आप निराले।

एक शुद्ध अनुभव जिन पाये, दो विधि राग द्वेष बतलाए॥
श्रेणी नय दो धर्म बताए, दो प्रमाण आगम गुण गाए।
तीन लोक तिय काल कहाए, शल्य पल्य त्रय वात गिनाए॥
चार बंध संज्ञा गति ध्यानी, आराधन निक्षेप सुदानी।
पंच प्रमाद लब्धि आचारे, बन्ध के हेतू पैंताले सारे॥
पंच भाव छह द्रव्य निराले, छह-आवश्यक साधू पाले।
छह विध हानि वृद्धि के ज्ञाता, सप्त भंग वाणी के दाता॥
संयम समुद्घात भय जानों, तत्त्व व्यसन धातू पहिचानो।
आठ सिद्ध के गुण मद गाए, प्रतिहार्य द्रव्य कर्म बताए॥
नव लब्धि हैं हरि प्रतिहर भाई, नव पदार्थ बलभद्र सुहाई।
नवग्रह लब्धी क्षायिक नव निधियाँ, नो कषाए भक्ति की विधियाँ॥
दशों बन्ध के मूल नशाएँ, विशद ज्ञान से प्रभु दर्शाएँ।
शाश्वत तीर्थराज से स्वामी, आप हुए मुक्ती के गामी॥
बार-बार यह अर्ज हमारी, तीन लोक पति हे त्रिपुरारी।
पर परिणति को पूर्ण नशाएँ, परमानन्द स्वरूप जगाएँ॥
'विशद' भावना हम यह भाते, पद में सादर शीश झुकाते।
शिव पदवी जब तक ना पाएँ, 'विशद' आपको हृदय बसाएँ॥

(घत्ता छन्द)

जय जय जिन त्राता, भव सुख दाता, भाग्य विधाता सुखकारी।
जय गुण गणधारी, शिव सुखकारी, जग हितकारी भवहारी॥
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा चरणों में वन्दन करें, हे जिन भक्त त्रिकाल।
कट जाए भव भ्रमण का, शीघ्र नाथ जंजाल॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री 1008 मल्लिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज मैं तो आरती उतारूँ रे...)

हम तो आरती उतारे जी, मल्लिनाथ जिनवर की होऽऽ
जय-जय श्री मल्लिनाथ, जय-जय हो हम...।टेक

माँ प्रभावती के लाल, कुंभ नृप के प्यारे।
प्रभु छोड़ के जगत् जंजाल, संयम को धारे।
लिए मिथिला नगर अवतार, स्वर्ग से चय कीन्हे।
आओ मंदिर में दौड़-दौड़, हाथों को जोड़-जोड़। हो...ऽऽ॥1॥

प्रभु वीतराग जिनराज, करुणा के धारी।
हम करें आरती आज, प्रभू की मनहारी।
मिले हमको सौख्य अपार, प्रभू की भक्ति से।
आओ मंदिर में डोल-डोल, हृदय के पट खोल-खोल। हो...ऽऽ॥2॥

नई जीवन में आये बहार, जिन गुण गाने से।
मिले मुक्ति की शुभ राह, दर्शन पाने से।
'विशद' मिलता है आनन्द अपार, चरण में आने से।
आओ दर्शन को देख-देख, माथा को टेक-टेक। हो...ऽऽ॥3॥

श्री मल्लिनाथ चालीसा

दोहा परमेष्ठी के पद युगल, चौबिस जिन के साथ।
मल्ल्नािथ जिनराज पद, विनत झुकाते माथ॥

चौपाई

मल्लिनाथ जिनराज कहाए, संयम पाके शिवसुख पाए।
प्रभु है वीतरागता धारी, सारे जग में मंगलकारी॥
अपराजित से चय कर आये, चैत्र शुक्ल एकम तिथि गाए।
मिथिला के नृप कुम्भ कहाए, प्रभावति के गर्भ में आए॥
इक्ष्वाकु नन्दन कहलाए, कलश चिह्न पहिचान बताए।

अश्विनी नक्षत्र श्रेष्ठ बतलाए, प्रातः काल का समय कहाए॥
मगसिर शुक्ला ग्यारस गाए, जन्म प्रभू मल्ली जिन पाए।
पच्चिस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का है भाई॥
तड़ित देख वैराग्य समाया, प्रभु ने सद् संयम को पाया।
इन्द्र पालकी लेकर आए, उसमें प्रभु जी को बैठाए॥
इन्द्र पालकी जहाँ उठाते, नरपति तव आगे आ जाते।
मानव लेकर आगे बढ़ते, देव गगन में लेकर उड़ते॥
मगशिर शुक्ला ग्यारस पाए, उत्तम संयम आप जगाए।
श्रेष्ठ मनोहर वन शुभ पाया, तरु अशोक वन अनुपम गाया॥
समवशरण शुभ देव रचाए, त्रय योजन विस्तार कहाए।
पोष कृष्ण द्वितिया तिथि पाए, प्रभु जी केवल ज्ञान जगाए॥
पौर्वाह्न का समय बताया, षष्ठम भक्त प्रभु ने पाया।
शालि वन में पहुँचे स्वामी, तरु अशोक तल में शिवगामी॥
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।
वरुण यक्ष प्रभु का शुभ गाया, यक्षी पद विजया ने पाया॥
पचपन सहस्र वर्ष की भाई, प्रभू की शुभ आयु बतलाई।
गणधर शुभ अट्ठाइस बताए, गणी विशाख जी पहले गाए॥
साढ़े पाँच सौ पूरब धारी, उन्तिस सहस्र शिक्षक अविकारी।
बाईस सौ अवधिज्ञानी गाए, चौदह सौ वादी बतलाए॥
उन्तीस सौ विक्रिया के धारी, बाईस सौ केवली मनहारी।
सत्रह सौ पचास मुनि गाए, मनःपर्ययज्ञानी बतलाए॥
पचपन सहस्र आर्यिका भाई, मधुसेना गणिनी बतलाई।
एक लाख श्रावक कहलाए, चालीस सहस्र मुनि सब गाए॥
योग रोधकर ध्यान लगाए, एक माह का समय बिताए।
फाल्गुन शुक्ल पञ्चमी जानो, गिरि सम्मेद शिखर पर मानो॥
भरणी शुभ नक्षत्र बताया, प्रभु ने मुक्ति पद शुभ पाया।
सायंकाल रहा शुभकारी, गौधूलि बेला मनहारी॥
तीर्थंकर पद पाके स्वामी, बने मोक्षपद के अनुगामी।

महा मनोहर मुद्राधारी, जिनबिम्बों की शोभा न्यारी॥
भावसहित जो पूजें ध्यावें, वे अपने सौभाग्य बढ़ावें।
यश कीर्ति बल वैभव पावें, ओज तेज कांति उपजावे॥
सर्वमान्य जग पदवी पावें, रण में विजयश्री ले आवें।
हों अनुकूल स्वजन परिवारी, सेवक होंवे आज्ञाकारी॥
अर्चा के शुभ भाव बनाएँ, चरण-शरण में हम भी आएँ।
शांतिमय हो जगती सारी, यही भावना रही हमारी॥
जब तक हम शिवपद न पाएँ, चरण आपके हृदय सजाएँ।
'विशद' भाव से तव गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥

दोहा चालीसा चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
पढ़े सुने जो भाव से, तीनों योग सम्हार॥
मित्र स्वजन अनुकूल हों, बढ़े पुण्य का कोष।
अन्तिम शिव पदवी मिले, जीवन हो निर्दोष॥

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते शास्त्री नगर स्थित 1008 श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2538 वि.सं. 2069 मासोत्तम मासे प्रथम भादौ मासे शुक्लपक्षे बारसतिथि दिन मंगलवासरे श्री मल्लिनाथ विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

शनि अरिष्ट ग्रह निवारक

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

माण्डला

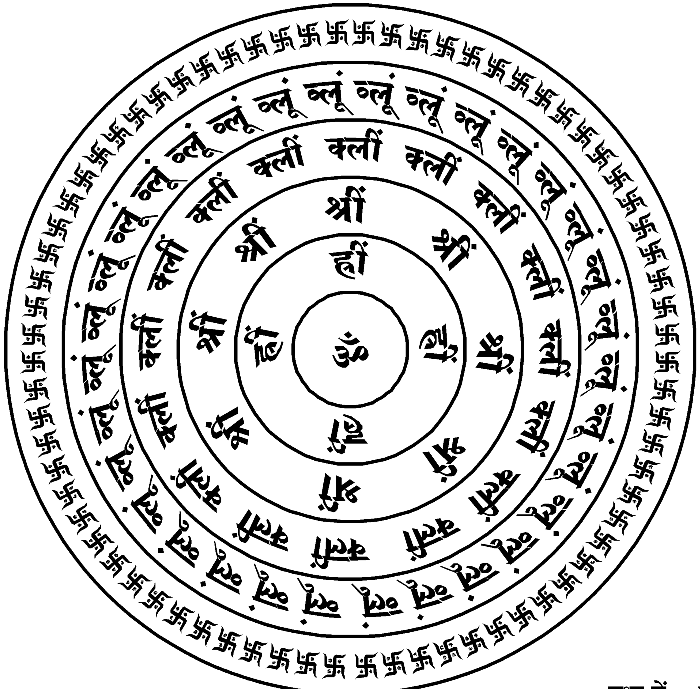

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 4 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 8 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 16 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 32 अर्घ्य
पंचम वलय में – 64 अर्घ्य
कुल 124 अर्घ्य

रचयिता
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागरजी महाराज

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तोत्र

दोहा– भूमण्डल के ज्योति प्रभू, तीन लोक के नाथ।
वन्दन कर जिनदेव के, चरण झुकाऊँ माथ।।

हे नाथ ! आपने जग बन्धन, तजकर के व्रत को धार लिया।
जो पथ पाया था सिद्धों ने, उसको तुमने स्वीकार किया।।
यह तीन लोक में पावन पथ, इसके हम राही बन जावें।
हम शीश झुकाते चरणों में, प्रभू सिद्धों की पदवी पावें।१।

शुभ तीर्थंकर सम पुण्य पदक, यह पूर्व पुण्य से पाये हैं।
सब कर्म घातिया नाश किए, अरु केवल ज्ञान जगाये हैं।
शुभ ज्ञान की महिमा अनुपम है, यह द्रव्य चराचर ज्ञाता हैं।
इस ज्ञान को पाने वाला तो, निश्चय मुक्ति को पाता है।२।

जिनको यह ज्ञान प्रकट होता, वह अर्हत् पद के धारी हों।
वह सर्व लोक में पूज्य रहे, अरु स्व पर के उपकारी हों।
वह दिव्य देशना के द्वारा, जग जीवों का कल्याण करें।
करते सद् ज्ञान प्रकाश अहा, भवि जीवों का अज्ञान हरें।३।

यह प्रभू का पद ऐसा पद है, जग में कोई और समान नहीं।
हम तीन लोक में खोज लिए, पर पाया नहीं है और कहीं।
उस पद का मन में भाव जगा, जिसको तुमने प्रभू पाया है।
यह भक्त जगत की माया तज, प्रभू आप शरण में आया है।४।

ये जग दुक्खों से पूरित है, सुख शांती का है लेश नहीं।
तीनों लोकों में भटक लिया, पर सुख पाया है नहीं कहीं।
हम सुख अतिन्द्रिय पाने को, प्रभू तव चरणों में आए हैं।
हम भक्ति भाव से शीश झुकाकर, प्रभू चरणों सिर नाए हैं।५।

श्री मुनिसुव्रत जिन पूजन विधान

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दन।
मुनिव्रत धारी हे भवतारी!, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वानन्।
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

है अनादि की मिथ्या भ्रांति, समकित जल से नाश करूँ।
नीर सु निर्मल से पूजा कर, मृत्यु आदि विनाश करूँ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।1।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

द्रव्य भाव नो कर्मों का मैं, रत्नत्रय से नाश करूँ।
शीतल चंदन से पूजा कर, भव आताप विनाश करूँ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।2।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अविनश्वर पद पाने, निज स्वभाव का भान करूँ।
अक्षय अक्षत से पूजा कर, आतम का उत्थान करूँ।

शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।3।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

संयम तप की शक्ति पाकर, निर्मल आत्म प्रकाश करूँ।
पुष्प सुगधित से पूजा कर, कामबली का नाश करूँ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।4।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पंचाचार का पालन करके, शिवनगरी में वास करूँ।
सुरभित चरु से पूजा करके, क्षुधा रोग का ह्रास करूँ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।5।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पुण्य पाप आस्रव विनाश कर, केवल ज्ञान प्रकाश करूँ।
दिव्य दीप से पूजा करके, मोह महातम नाश करूँ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।6।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अष्ट गुणों की सिद्धि करके, अष्टम भू पर वास करूँ।
धूप सुगन्धित से पूजा कर, अष्ट कर्म का नाश करूँ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।7।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाकर भगवन्, आतम धर्म प्रकाश करूँ।
विविध फलों से पूजा करके, मोक्ष महल में वास करूँ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।8।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

भेद ज्ञान का सूर्य उदय कर, अविनाशी पद प्राप्त करूँ।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उर अनर्घ पद व्याप्त करूँ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतू, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।9।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच कल्याणक के अर्घ्य

श्रावण कृष्णा दोज सुजान, देव मनाए गर्भ कल्याण।
पद्मा माता के उर आन, राजगृही नगरी सु महान्।1।

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भमंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बारस कृष्ण वैशाख सुजान, सुर नर किए जन्म कल्याण।
नृप सुमित्र के घर में आन, सबको दिए किमिच्छित दान।2।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वादशम्यां जन्ममंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कृष्ण दशम वैशाख महान्, प्रभू ने पाया तप कल्याण।
चंपक तरु तल पहुँचे नाथ, मुनि बनकर प्रभू हुए सनाथ।3।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपोमंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नवमी कृष्ण वैशाख महान्, प्रभू ने पाया केवल ज्ञान।
सुरनर करते प्रभू गुणगान, मंगलकारी और महान्।4।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानमंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण द्वादशी महान्, प्रभू ने पाया पद निर्वाण।
मोक्ष पधारे श्री भगवान, नित्य निरंजन हुए महान्।5।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा

मुनिसुव्रत मुनिव्रत धरूँ, त्याग करूँ जगजाल।
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, करता हूँ जयमाल।

पद्धरि छंद

जय मुनिसुव्रत जिनवर महान्, जय किए कर्म की प्रभू हान।
जय मोह महामद दलन वीर, दुर्द्धर तप संयम धरण धीर।
जय हो अनंत आनन्द कंद, जय रहित सर्व जग दंद फंद।
अघ हरन करन मन हरणहार, सुखकरण हरण भवदुःख अपार।

जय नृप सुमित्र के पुत्र नाथ, पद झुका रहे सुर नर सुमाथ।
जय पद्मावति के गर्भ आय, सावन वदि दुतिया हर्ष दाय।
जय-जय राजगृही जन्म लीन, वैशाख कृष्ण द्वादशी प्रवीण।
जय जन्म से पाए तीन ज्ञान, जय अतिशय भी पाये महान्।
तन सहस आठ लक्षण सुपाय, प्रभू जन्म लिए जग के हिताय।
सौधर्म इन्द्र को हुआ भान, राजगृह नगरी कर प्रयाण।
जाके सुमेरु अभिषेक कीन, चरणों में नत हो ढोक दीन।
वैशाख कृष्ण दशमी सुजान, मन में जागा वैराग्य भान।
कई वर्ष राज्य कर चले नाथ, इक सहस सु नृप भी चले साथ।
शुभ अशुभ राग की आग त्याग, हो गए स्वयं प्रभू वीतराग।
नित आतम में हो गए लीन, चारित्र मोह प्रभू किए क्षीण।
प्रभू ध्यानी का हो क्षीण राग, वह भी हो जाए वीतराग।
तीर्थंकर पहले बने संत, सबने अपनाया यही पंथ।
जिनधर्म का है बस यही सार, प्रभू वीतराग को नमस्कार।
वैशाख वदी नौमी सुजान, प्रभू ने पाया केवल्य ज्ञान।
सुर समवशरण रचना बनाय, सुर नर पशु सब उपदेश पाय।
जय-जय छियालिस गुण सहित देव, शत् इन्द्र भक्ति वश करें सेव।
जय फाल्गुन वदि द्वादशी नाथ, प्रभू मुक्ति वधु को किए साथ।

(छन्द घत्तानन्द)

मुनिसुव्रत स्वामी, अन्तर्यामी, सर्व जहाँ में सुखकारी।
जय भव भय हारी आनंदकारी, रवि सुत ग्रह पीड़ा हारी।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

मुनिसुव्रत के चरण का, बना रहूँ मैं दास।
भाव सहित वन्दन करूँ, होवे मोक्ष निवास।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

प्रथम वलय

दोहा– **मुनिसुव्रत के चरण में, चढ़ा रहे हम अर्घ्य।**
चउ संज्ञाएँ नाश हों, पाऊँ सुपद अनर्घ।

मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती मां के नन्दन।
मुनिव्रत धारी हे ! भवतारी, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वानन्।
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

4 संज्ञा विनाशक श्री जिन के अर्घ्य

मुनिव्रतों को जिसने धारा, बने कर्म आ करके दास।
तीर्थंकर पद पाया प्रभू ने, भोजन संज्ञा हुई विनाश।
रहे निवारक शनि अरिष्ट के, मुनिसुव्रत है जिनका नाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणाम। १।

ॐ ह्रीं आहार संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रहनिवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि:स्वाहा।

निर्भय होकर बीहड़ वन में, निज आतम में कीन्हा वास।
सप्त महामय भारी जग में, क्षण में उनका किया विनाश।
रहे निवारक शनि अरिष्ट के, मुनिसुव्रत है जिनका नाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणाम। २।

ॐ ह्रीं भय संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कामबली ने मोह पास में, सारे जग को बाँध लिया।
ब्रह्मभाव से मैथुन संज्ञा, को प्रभू ने निर्मूल किया।
रहे निवारक शनि अरिष्ट के, मुनिसुव्रत है जिनका नाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणाम। ३।

ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बाह्याभ्यन्तर कहा परिग्रह, उसके होते चौबिस भेद।
परिग्रह की संज्ञा के नाशी, नाश किया है जिसने खेद।
रहे निवारक शनि अरिष्ट के, मुनिसुव्रत है जिनका नाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणाम। ४।

ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **मुनिसुव्रत भगवान ने, संज्ञाएँ की नाश।**
आत्म ध्यान से कर दिये, घातीकर्म विनाश।

ॐ ह्रीं चतु: संज्ञा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय

दोहा - **अष्टकर्म ने जीव को, जग में दिया क्लेश।**
पुष्पांजलि करता विशद, नाशूँ कर्म अशेष।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती मां के नन्दन।
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वानन्।
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्ट कर्म विनाशक श्री जिन के अर्घ्य

जो ज्ञान सुगुण को ढक लेता, वह ज्ञानावरणी कर्म कहा।
इस कारण जीव अनादि से, भवसागर में ही भटक रहा।
हो ज्ञानावरणी कर्म शमन, प्रभू शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँ।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 1।

जो दर्शन गुण का घात करे, वह दर्शन आवरणी जानो।
यह कर्म महा दुखदायी है, इसको भी तुम कम न मानो।
मैं नाश हेतु इस शत्रु के, प्रभू शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँ।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 2।

सुख दु:ख के वेदन का कारण, यह कर्म वेदनीय होता है।
सुख में तो हँसता है लेकिन, दु:ख आने पर नर रोता है।

मैं कर्म वेदनीय समन हेतु, प्रभू शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँ।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।3।

यह मोह महा बलशाली है, इसने दो रूप बनाए हैं
दर्शन चारित्र दोनों गुण में, यह अपनी रोक लगाए हैं।
मैं मोह कर्म के नाश हेतु, प्रभू शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँ।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

है बन्धन आयु कर्म महा, चारों गतियों में कैद करे।
वह उठा पटक करता रहता, प्राणी की शक्ति पूर्ण हरे।
मैं कर्म आयु के नाश हेतु, प्रभू शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँ।

ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

है शिल्पकार सम नाम कर्म, जो नाना रूप बनाता है।
ज्यों खेल खिलौना पाने को, बालक का मन ललचाता है।
मैं नामकर्म का नाश करूँ, प्रभू शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँ।

ॐ ह्रीं नामकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।6।

जो ऊँच नीच का कारण है, जग में कटुता का काम करे।
जो अरति ईर्ष्या का कारण, जीवों को कष्ट प्रदान करे।
मैं गोत्रकर्म का नाश करूँ, प्रभू शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँ।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।7।

जो कदम-कदम पर विघ्न करे, वह अन्तराय दुःखदाई है।
शान्ति को क्षीण करे प्रतिपल, यह कर्म की ही प्रभुताई है।
हो अन्तराय का नाश प्रभो! मैं शरण आपकी आया हूँ।
चरणों में वन्दन करता हूँ, यह अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँ।

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।8।

दोहा – अष्टकर्म का नाश हो, प्रकट होंय गुण आठ।
मुक्ति वधु को प्राप्त कर, होवें ऊँचे ठाठ।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।9।

तृतीय वलय

दोहा– कर्म निर्जरा बन्ध का, कारण होता ध्यान।
अशुभ छोड़ शुभ ध्यान से, होय विशद कल्याण।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दन।
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वानन्।
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

16 ध्यान सम्बन्धी अर्घ्य

आर्त्तध्यान होने लगता है, हो जाये यदि इष्ट वियोग।
जिसके कारण बढ़े जीव को, जन्म जरा मृत्यु का रोग।
आर्त्तध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगान।

ॐ ह्रीं इष्ट वियोगज आर्त्तध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

हो अनिष्ट संयोग यदि तो, होने लगता आर्त्तध्यान।
जागृत होता है क्लेश फिर, उसको रहे न निज का ज्ञान।
आर्त्तध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगान।

ॐ ह्रीं अनिष्ट संयोग आर्त्तध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।2।

रोगादि के कारण कोई, तन में पीड़ा होय महान्।
पीड़ा चिन्तन ध्यान होय तब, ऐसा कहते हैं भगवान।
आर्त्तध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगान।

ॐ ह्रीं पीड़ा चिन्तन आर्त्तध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।3।

आगामी भोगों की वाञ्छा, जग में करता जो इंसान।
तप के फल से चाहे यदि तो, जैनागम में कहा निदान।
आर्त्तध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगान।

ॐ ह्रीं निदान आर्त्तध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

जिनके हैं परिणाम क्रूर अति, हिंसा में माने आनन्द।
रौद्र ध्यान का प्रथम भेद यह, कहलाता है हिंसानन्द।
रौद्र ध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगान।

ॐ ह्रीं हिंसानन्द रौद्रध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

झूठ बोलकर खुश होता जो, मृषानन्द वह ध्यान रहा।
कर्म बन्ध दुर्गति का कारण, जैनागम में यही कहा।
रौद्र ध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगान।

ॐ ह्रीं मृषानन्द रौद्रध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।6।

मालिक की आज्ञा बिन वस्तु, लेना चोरी रहा सदैव।
चोरी कर आनन्द मनाना, चौर्यानन्द ध्यान है एव।
रौद्र ध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगान।

ॐ ह्रीं चौर्यानन्द रौद्रध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति।7।

मूर्छाभाव को कहा परिग्रह, परिग्रह पा खुश हों जो लोग।
परिग्रहानन्द ध्यान का उनको, होता है भाई संयोग।
रौद्र ध्यान का नहीं रहा जिन, मुनिसुव्रत को नाम निशान।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने को, भाव सहित करता गुणगान।

ॐ ह्रीं परिग्रहानन्द रौद्रध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति।8।

शिरोधार्य जिन आज्ञा करते, भाव सहित जग में जो लोग।
चिन्तन में जो लीन रहें नित, आज्ञा विचय ध्यान के योग।
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भव सागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास।

ॐ ह्रीं आज्ञा विचय धर्मध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 9।

जो संसार देह भोगों के, चिन्तन में रहते लवलीन।
वह हैं अपाय विचय के धारी, आत्म ध्यान में रहते लीन।
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भव सागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास।

ॐ ह्रीं अपाय विचय धर्मध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 10।

अपने कृत कारित के फल को, स्वयं भोगते कर्म संयोग।
ऐसा चिन्तन ध्यान करें जो, विपाक विचयधारी वह लोग।
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास।

ॐ ह्रीं विपाक विचय धर्मध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 11।

तीन लोक का क्या स्वरूप है, उसमें जो भी है आकार।
होता है संस्थान विचय से, ध्यान लोक का कई प्रकार।
धर्मध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास।

ॐ ह्रीं संस्थान विचय धर्मध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 12।

पृथक द्रव्य गुण पर्यायों का, शब्दों का जो करते ध्यान।
पृथक्त्व वितर्क वीचार ध्यान है, ऐसा कहते हैं भगवान।
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास।

ॐ ह्रीं पृथक्त्ववितर्कवीचार शुक्लध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। 13।

श्रुतज्ञान के अवलम्बन से, चिन्तन करते हैं जो लोग।
एक द्रव्य पर्याय योग का, एकत्व वितर्क ध्यान के योग।
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास।

ॐ ह्रीं एकत्व वितर्क शुक्लध्यान विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 14।

क्रिया सूक्ष्म हो जाती तन की, प्रकट होय जब केवल ज्ञान।
निज आतम में होय लीनता, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती ध्यान।
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती शुक्लध्यान सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 15।

क्रिया योग तन की रुकते ही, होते आतम में लवलीन।
व्युपरत क्रिया निवृत्ति ध्यानी, रहते निज चेतन में लीन।
शुक्ल ध्यान के द्वारा करते, अपने कर्मों का वह नाश।
भवसागर से मुक्ति पाकर, करते सिद्ध शिला पर वास।

ॐ ह्रीं व्युपरत क्रिया निवृत्ति शुक्लध्यान सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।16।

दोहा – **अशुभ ध्यान से बंध हो, बढ़े नित्य संसार।**
मुक्ति हो शुभ ध्यान से, मिले मुक्ति का सार ।

ॐ ह्रीं षोडश प्रकार शुभाशुभ ध्यान रहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

दोहा – **अविरत योग प्रमाद अरु, मिथ्या तथा कषाय।**
आस्रव के हैं द्वार यह, बत्तिस कहे जिनाय।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दन।
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वानन्।
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं

32 प्रकार आस्रव विनाशक जिन के अर्घ्य

जो विपरीत मार्ग में श्रद्धा, प्राणी जग के धारे।
मिथ्यादृष्टि प्राणी जग में, होते हैं वह सारे।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं विपरीत मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

अनेकान्तिक वस्तु को जो, ऐकान्तिक ही माने।
मिथ्यामतवादी इस जग में, एक रूप पहचाने।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं एकान्त मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।

जो सराग अरु वीतराग जिन, देव शास्त्र गुरु पावें।
विनय मिथ्वात्व धारने वाले, एक समान बतावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं विनय मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।3।

देवशास्त्र गुरुवर तत्वों में, जो संशय को धारे।
संशय मिथ्यावादी हैं वह, जग के प्राणी सारे।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं संशय मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

हित अरु अहित को जान सके न, ज्ञान हीन संसारी।
मिथ्याज्ञानी कहे जगत में, तीनों लोक दुखारी।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं अज्ञान मिथ्यात्व विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

दयाहीन हिंसा करते जो, अविरत हिंसा कारी।
दीन हीन अज्ञानी हैं वह, भ्रमत फिरे संसारी।
सम्यक् चारित के द्वारा, प्रभू आठों कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं हिंसाविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।6।

सत्य वचन को छोड़ जगत में, असत् वचन को धारे।
हैं असत्य अविरत के धारी, जग के प्राणी सारे।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं असत्याविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।7।

भूली विसरी पड़ी गिरी जो, वस्तु लेवे कोई।
अविरत चौर्य धारने वाला, कहलावे वह सोई।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं चौर्याविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।8।

जो चित्राम देव नर पशु की, नारी लख ललचावे।
वह कुशील अविरत का धारी, भोगी बहु दुःख पावे।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं कुशीलाविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।9।

बाह्याभ्यन्तर कहा परिग्रह, उसमें प्रीति लगावें।
परिग्रह अविरति का धारी वह, दुर्गति के दुःख पावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं परिग्रहाविरति विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।10।

स्पर्शन के अष्ट विषय हैं, उनमें प्रीति लगावें।
अविरति के द्वारा कर्मों का, आश्रव करते जावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।11।

विषय पंच रसना इन्द्रिय के, उनमें प्रीति लगावें।
अविरत रहकर के कर्मों का, आश्रव करते जावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं रसना इन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।12।

घ्राणेन्द्रिय के विषय कहे दो, उसमें प्रीति लगावें।
अविरत रहकर के कर्मों का, आश्रव करते जावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।13।

विषय पंच चक्षु इन्द्रिय के, उनमें प्रीति लगावें।
कर्मास्रव करते हैं भारी, वह अव्रति कहलावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 14।

कर्णेन्द्रिय के विषय सात हैं, उनमें प्रीति लगावें।
कर्मास्रव करते हैं भारी, वह अव्रति कहलावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय विषय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 15।

कषाय अनंतानुबंधी से, मिथ्याभाव बनावें।
काल अनन्त भ्रमण जग में कर, दुःख अनेकों पावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 16।

अप्रत्याख्यान कषायोदय में, अणुव्रत न धर पावें।
अविरत रहकर के कर्मों का आस्त्रव करते जावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 17।

प्रत्याख्यान कषायोदय से, देशव्रती रह जावें।
महाव्रतों के भाव कभी न, उनके मन में आवें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 18।

उदय संज्वलन का होवे तो, यथाख्यात न पावें।
कर्म निर्जरा पूर्ण होय, न केवल ज्ञान जगावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं संज्वलन कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 19।

स्त्री की चर्चा में कोई, मन को यदि लगावे।
वह प्रमाद के द्वारा नित प्रति, आस्त्रव करता जावे।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं स्त्री कथा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा। 20।

कोई चोर चोरी की चर्चा, करके मन बहलावे।
धन की वाञ्छा करने वाला, कर्मास्त्रव को पावे।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं चोर कथा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 21।

भोजन की चर्चा से मन में, रति भाव जो आवें।
भोज्य कथा करने वाले नित, पापास्रव को पावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं भोजन कथा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 22।

राजनीति राजा की चर्चा, करके जो सुख पावें।
आत्मध्यान को तजने वाले, खोटे कर्म कमावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं राज कथा विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 23।

जो प्रमाद करके निद्रा में, अपना समय गमावें।
कर्म का आश्रव करने वाले, दुर्गति में ही जावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं निद्रा प्रमाद विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 24।

स्त्री, पुत्र, मित्र आदि से, जो स्नेह लगावें।
कर्माश्रव करने वाले वह, परभव कष्ट उठावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं प्रणय (स्नेह) विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 25।

क्रोध करें औरों को मारें, ईर्ष्या भाव जगावें।
आत्मघात कर लेय स्वयं ही, नरकों में वह जावें।
सम्यक् श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 26।

मानी मान करें जीवों में, खोटे कर्म कमावें।
नीचा माने औरों को वह, निज को उच्च बतावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं मान कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 27।

ठगें और को छल छद्रम से, मायाचारी प्राणी।
पशुगति के दुःख भोगें वह, कहती यह जिनवाणी।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं माया कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 28।

लुब्ध दत्त सम लोभ करें कई, जग में लोभी प्राणी।
जोड़-जोड़ धन कर्म बाँधते, कहती है जिनवाणी।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं लोभ कषाय विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 29।

मन चंचल चित् चोर कहा है, सब जग में भटकावे।
विषयों की अभिलाषा करके, उनमें ही अटकावे।

सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं मन योग विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।30।

वचन बड़े अनमोल कहे हैं, उर में घाव बनावें।
हितमित प्रिय वाणी जीवों को, मल्हम सी बन जावें।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं वचन योग विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।31।

काया की माया विचित्र है, जग में नाच नचावे।
कर्मास्रव का कारण है, जो नाना रूप बनावे।
सम्यक्श्रद्धा के द्वारा प्रभु, मिथ्या कर्म विनाशे।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, केवल ज्ञान प्रकाशे।

ॐ ह्रीं काय योग विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।32।

दोहा– **जिनवर ने बत्तिस कहे, आश्रव के यह द्वार।**
कर्मास्रव को रोध कर, पाऊँ भव से पार।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत् आश्रव द्वार विनाशक शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।33।

पञ्चम वलय

दोहा– **छियालिस गुण जिन देव के, समवशरण सुखकार।**
क्षायिक पाये लब्धियां, जग में मंगलकार।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दन।
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं हम आह्वानन्।
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

10 जन्म के अतिशय

(ताटंक-छंद)

जन्म से अतिशय पाते जिनवर, उनके गुण को गाता हूँ।
स्वेद रहित निर्मल तन पाए, तिन पद अर्घ्य चढ़ाता हूँ।
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीश झुकाते हैं।1।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहित मूत्र मल से तन सुन्दर, अतिशयकारी पाते हैं।
तीर्थंकर के पुण्य का फल यह, तिन पद अर्घ्य चढ़ाते हैं।
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीश झुकाते हैं।2।

ॐ ह्रीं नीहार रहित सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समचतुस्र संस्थान प्रभू का, हीनाधिक नहिं पाते हैं।
आंगोपांग रहें ज्यों के त्यों, तिन पद अर्घ्य चढ़ाते हैं।

जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीश झुकाते हैं।3।

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वज्रवृषभ नाराच संहनन, सर्वोत्तम प्रभू पाते हैं।
प्रबल पुण्य से तीर्थंकर के, इन्द्र चरण झुक जाते हैं।
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीश झुकाते हैं।4।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभ नाराचसंहनन सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

प्रभू का सुरभित और सुगंधित, उज्जवल पावन तन पाते।
सर्व लोक के प्राणी फीके, प्रभू के आगे पड़ जाते।
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीश झुकाते हैं।5।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रूप महा अतिशय सुंदर है, सौम्य रूपता पाते हैं।
सुंदरता में कामदेव, चक्री फीके पड़ जाते हैं।
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीश झुकाते हैं।6।

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

एक हजार आठ लक्षण शुभ, प्रभू के तन में होते हैं।
दर्शन करने वाले प्राणी, अपनी जड़ता खोते हैं।
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीश झुकाते हैं।7।

ॐ ह्रीं सहस्रास्य लक्षण सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रक्त सुउज्ज्वल धवल देह में, तीर्थंकर जिन पाते हैं।
प्रभू की प्रभुता सुनकर प्राणी, अति विस्मय कर जाते हैं।
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीश झुकाते हैं।8।

ॐ ह्रीं श्वेत रहित सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हित-मित प्रिय मनहर वाणी शुभ, श्री जिनेन्द्र की खिरती है।
भव्य जीव जो सुनने वाले, उनके मन को हरती है।
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीश झुकाते हैं।9।

ॐ ह्रीं हितमित प्रियवचन सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बलशाली अतिशय अनंत शुभ, देह सुसुंदर पाते हैं।
सुर नर जिन के प्रबल पुण्य से, चरणों में झुक जाते हैं।
जन्म समय से ही तीर्थंकर, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
उनके गुण को पाने हेतु, सादर शीश झुकाते हैं।10।

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

केवल ज्ञान के 10 अतिशय

सौ योजन दुर्भिक्ष न होवे, जहां प्रभू का आसन हो।
पापी कामी चोर न बहरे, जहां प्रभू का शासन हो।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभू के गुण को पाने हेतु, पद में शीश झुकाते हैं।11।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

होय गमन आकाश प्रभू का, यह अतिशय दिखलाते हैं।
नृत्यगान करते हैं सुर नर, मन में अति हर्षाते हैं।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभू के गुण को पाने हेतु, पद में शीश झुकाते हैं।12।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्व प्राणियों के मन में शुभ, दया भाव आ जाता है।
प्रभू के आने से अदया का, नाम स्वयं खो जाता है ।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभू के गुण को पाने हेतु, पद में शीश झुकाते हैं।13।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुर नर पशु कृत और अचेतन, कोई उपसर्ग नहीं होवें।
महिमा है तीर्थंकर पद की, आप स्वयं सारे खोवें।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभू के गुण को पाने हेतु, पद में शीश झुकाते हैं।14।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

क्षुधा रोग से पीड़ित है जग, बिन आहार नहीं रहते।
क्षुधा वेदना को जीते प्रभु, कवलाहार नहीं करते।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभू के गुण को पाने हेतु, पद में शीश झुकाते हैं।15।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभाव घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समवशरण के बीच विराजे, पूर्व दिशा सम्मुख होवें।
चतुर्दिशा में दर्शन हो शुभ, भव्य जीव जड़ता खोवें।

केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभू के गुण को पाने हेतु, पद में शीश झुकाते हैं।16।

ॐ ह्रीं चर्तुमुखत्व घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सब विद्या के ईश्वर हैं प्रभु, सर्व लोक के अधीपती।
सुर नरेन्द्र चरणों आ झुकते, गणधर मुनिवर और यती।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभू के गुण को पाने हेतु, पद में शीश झुकाते हैं।17।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

छाया रहित प्रभू का तन है, कैसा विस्मयकारी है।
मूर्त पुद्गलों से निर्मित है, सुन्दर अरू मनहारी है।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभू के गुण को पाने हेतु, पद में शीश झुकाते हैं।18।

ॐ ह्रीं छाया रहित घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा

बढ़े नहीं नख केश प्रभू के, ज्यों के त्यों ही रहते हैं।
तीर्थंकर जिन जिनवाणी में, तीन काल यह कहते हैं।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभू के गुण को पाने हेतु, पद में शीश झुकाते हैं।19।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निर्निमेष दृग रहते जिनके, नहीं झपकते पलक कभी।
नाशादृष्टी रहे सदा ही, ऐसा कहते देव सभी।

केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभू के गुण को पाने हेतु, पद में शीश झुकाते हैं।20।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षय जातिशय धारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

14 केवलज्ञान के अतिशय

अर्धमागधी भाषा प्रभू की, सब जीवों को सुखकारी।
ॐकार युत जिनवाणी है, मंगलमय मंगलकारी।
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीश झुकाते हैं। 21।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मैत्रीभाव सभी जीवों में, प्रभू के आने से होवें।
रोष तोष क्रोधादि कषाएँ, आपो आप स्वयं खोवें।
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीश झुकाते हैं।22।

ॐ ह्रीं सर्व मैत्रीभाव देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

छहों ऋतु के फूल खिलें अरु, सर्वऋतु के फल लगते।
होय आगमन जहाँ प्रभू का, भाग्य सभी के भी जगते।
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीश झुकाते हैं।23।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भूमि चमकती है दर्पण सम, जहाँ प्रभू का होय गमन।
श्री जिनवर प्रभुता दिखलाएँ, जग के प्राणी करें नमन्।

समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीश झुकाते हैं।24।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमारत्नमही देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुरभित मंद पवन हितकारी, सब जीवों के मन को भाय।
यह अतिशय जिनवर का पावन, जैनागम में कहा जिनाय।
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीश झुकाते हैं।25।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्व दिशाओं के प्राणी सब, आनंदित हो जाते हैं।
समवशरण से सहित प्रभू के, चरण कमल पड़ जाते हैं।
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीश झुकाते हैं।26।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कंटक रहित भूमि हो जावे, जहां प्रभू के चरण पड़ें।
प्रभू की भक्ति करने वाले, के मन में आनंद बढ़ें।
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीश झुकाते हैं।27।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

होवे जय जयकार गगन में, सभी जीव हों सुखकारी।
नर सुरेन्द्र अति हर्ष मनाएँ, नृत्य करें मंगलकारी।

समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीश झुकाते हैं।28।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि पावन, देव करें अतिशयकारी।
दर्शन करके श्री जिनवर का, खुश हों सारे नर नारी।
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीश झुकाते हैं।29।

ॐ ह्रीं मेघ कुमार कृत गंधोदकवृष्टि देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गगन गमन के समय देवगण, पद तल कमल रचाते हैं।
तीर्थंकर के समवशरण में, यह अतिशय दिखलाते हैं।
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीश झुकाते हैं।30।

ॐ ह्रीं चरण कमलतल रचित स्वर्णकमल देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभू आगमन हो जाने से, निर्मल हो जावे आकाश।
धर्म भावना का लोगों के, मन में होवे पूर्ण विकास।
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीश झुकाते हैं।31।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गमन देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्व दिशाएँ धूम रहित हों, श्री जिनवर के आने से।
कर्म कटें जो लगे पुराने, भाव सहित गुण गाने से।

समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीश झुकाते हैं।32।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

धर्मचक्र आगे चलता है, जिन महिमा को दिखलाए।
रहे मूक फिर भी इस जग में, श्री जिनेन्द्र के गुण गाए।
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीश झुकाते हैं।33।

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मंगल द्रव्य अष्ट लेकर के, प्रभू चरणों में आते हैं।
भक्ति वश हो नृत्य गानकर, प्रभू के गुण वह गाते हैं।
समवशरण में तीर्थंकर जिन, चौदह अतिशय पाते हैं।
श्री जिन के गुण पाने को हम, सादर शीश झुकाते हैं।34।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशयधारक शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

8 प्रातिहार्य

(गीतिका-छंद)

प्रातिहार्य अशोक तरु शुभ, पाए तीर्थंकर प्रभो! ।
मोक्ष मंजिल के किनारे, पर खड़े रहते विभो! ।
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभू के गुण, जगत् मंगल गाए हैं।35।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रत्नों से मण्डित सिंहासन, आपका शुभ है प्रभो! ।
हे त्रिलोकीनाथ! मंगल, आप हो जग में विभो! ।

कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभू के गुण, जगत् मंगल गाए हैं।36।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रातिहार्य त्रय छत्र शुभ भी, पाए तीर्थंकर प्रभो!।
हे त्रिलोकीनाथ ! मंगल, आप हो जग में विभो!।
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभू के गुण, जगत् मंगल गाए हैं।37।

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभा मण्डल युक्त भामण्डल, सहित हो हे प्रभो!।
सूर्य फीका पड़ रहा है, आपके आगे विभो!।
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभू के गुण, जगत् मंगल गाए हैं।38।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दिव्य ध्वनि प्रतिहार्य पावन, पाए तीर्थंकर प्रभो!।
भव्य प्राणी श्रवण करके, ज्ञान पाते हे विभो!।
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभू के गुण, जगत् मंगल गाए हैं।39।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पुष्पवृष्टि देव करते, गगन में खुश हो प्रभो!।
वंदना करते चरण की, हर्षमय होकर विभो!।
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभू के गुण, जगत् मंगल गाए हैं।40।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दुंदुभि बाजे सुमंगल, ध्वनि से बजते प्रभो!।
जगत् में महिमा दिखाते, आपकी जिनवर विभो!।
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभू के गुण, जगत् मंगल गाए हैं।41।

ॐ ह्रीं देव दुंदुभि सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चंवर चौसठ यक्ष ढौरें, भक्तियुत होकर विभो!।
शिखर से झरना गिरे ज्यों, दिखे मनहर हे प्रभो! ।
कर्म नाशे घातिया प्रभु, प्रातिहार्य प्रगटाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभू के गुण, जगत् मंगल गाए हैं।42।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि चामर सत्प्रातिहार्य सहित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

4 अनंत चतुष्टय

दर्श गुण के आवरण का, नाश करके हे विभो!।
दर्श पाए अनंत पावन, सर्व दृष्टा हे प्रभो!।
कर्मघाती नाशकर प्रभु, अनंत चतुष्टय पाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभू के गुण, जगत मंगल गाए हैं।43।

ॐ ह्रीं अनंत दर्शन गुण प्राप्त शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म नाशा, आपने हे जिन प्रभो!।
हो गये सर्वज्ञ जिनवर, अनंत ज्ञानी हे विभो!।
कर्मघाती नाशकर प्रभु, अनंत चतुष्टय पाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभू के गुण, जगत मंगल गाए हैं।44।

ॐ ह्रीं अनंत ज्ञान गुण प्राप्त शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्मनाशी मोह के, सम्यक्त्व गुण पाए विभो!।
सुख अनंतानंत पाए, तब जिनेश्वर हो प्रभो!।
कर्मघाती नाशकर प्रभु, अनंत चतुष्टय पाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभू के गुण, जगत मंगल गाए हैं।45।

ॐ ह्रीं अनंत सुख गुण प्राप्त शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अंतराय विनाश करके, वीर्य प्रगटाए प्रभो!।
बल अनंतानंत पाए, तब जिनेश्वर हो विभो!।
कर्मघाती नाशकर प्रभु, अनंत चतुष्टय पाए हैं।
विशद ज्ञानी प्रभू के गुण, जगत मंगल गाए हैं।46।

ॐ ह्रीं अनंत वीर्य गुण प्राप्त शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समोशरण के अर्घ्य

समवशरण की चारों दिश में, मानस्तम्भ बनें हैं चार।
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजित, शोभित होते अपरम्पार।
जिन दर्शन कर श्रद्धा जागे, जीवों का होवे कल्याण।
दर्श आपका होय निरन्तर, हमको दो ऐसा वरदान।47।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित चतुर्दिक मानस्तंभ सहित शनि अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चैत्य प्रसाद भूमि के मंदिर, का हम करते हैं गुणगान।
रोग शोक दारिद्र कलह के, नाशक जग में रहे महान्।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।48।

ॐ ह्रीं चैत्य प्रासाद भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितिय भूमि रही खातिका, समवशरण में मंगलकार।
जलचर जीवों से पूरित है, पुष्प पुंज हैं अपरम्पार।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।49।

ॐ ह्रीं खातिका भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लता भूमि अतिशय कारी शुभ, पुष्प जलाशय शुभ मनहार।
चारों ओर लताऐं फैलीं, सुन्दर मनहर कई प्रकार।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।50।

ॐ ह्रीं लता भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चैत्यवृक्ष शोभित होते हैं, उपवन भूमि में सुखकार।
तरु अशोक लख चतुर्दिशा में, प्रमुदित होते हैं नर-नार।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।51।

ॐ ह्रीं उपवन भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दश प्रकार चिन्हों से चिन्हित, ध्वज फहराएँ चारों ओर।
भवि जीवों के मन मधुकर को, कर देती हैं भाव विभोर।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।52।

ॐ ह्रीं ध्वज भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कल्पवृक्ष भूमि है षष्ठी, तरु सिद्धार्थ रहे चउँ ओर।
सिद्ध बिम्ब शोभित हैं उन पर, करते सबको भाव विभोर।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।53।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्ष भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भवन भूमि सुन्दर सुर परिकर, सहित मनोहर मंगलकार।
नवस्तूप सहित चऊदिश में, क्रीड़ा में रत हैं सुखकार।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।54।

ॐ ह्रीं भवन भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रीमण्डप भूमि है अनुपम, द्वादश कोठे सहित महान्।
दिव्य ध्वनि सुनते जिनवर की, बैठ सभी अपने स्थान।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।55।

ॐ ह्रीं श्रीमण्डप भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गंध कुटी के ऊपर श्रीजिन, कमलासन पर अधर रहे।
दिव्यदेशना की शुभ गंगा, प्रभू के द्वारा नित्य बहे।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।56।

ॐ ह्रीं समवशरण गंधकुटि ऊपर स्थित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनिसुव्रत के समवशरण में, गणधर अष्टादश गुणवान।
चौंसठ ऋद्धी के धारी शुभ, मल्लि गणधर रहे प्रधान।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।57।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित अष्टादश गणधर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पंच शतक मुनिराज पूर्वधर, मुनिसुव्रत के चरण शरण।
वन्दन करके भक्तिभाव से, करते जो नित कर्म शमन।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।58।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पंच शतक मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

थे इक्कीस हजार मुनीश्वर, शिक्षक पद के अधिकारी।
रत्नात्रय को पाने वाले, निर्विकारमय अविकारी।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।59।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित एकविंशति शिक्षक पद धारीमुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

एक सहस्र आठ सौ मुनिवर, केवल ज्ञान के अधिकारी।
कर्म घातिया नाश किए हैं, सर्व जगत मंगलकारी।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।60।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित अष्टादश शतक केवलज्ञानी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

एक सहस्र आठ सौ मुनिवर, अवधिज्ञान के अधिकारी।
दर्शन ज्ञान चरित तप साधक, शोभित थे मंगलकारी।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।61।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित अष्टादश शतक अवधिज्ञानी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वय सहस्र द्वय शतक मुनीश्वर, विक्रिया ऋद्धि के धारी।
ज्ञानी ध्यानी हित उपदेशी, मोक्ष महल के अधिकारी।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।62।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित द्वाविंशतिशत विक्रिया ऋद्धिधारी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पन्द्रह सौ मनः पर्यय ज्ञानी, विपुल मति को धार रहे।
वीतराग मय जैन धर्म ध्वज, अपने हाथ सम्हार रहे।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।63।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पंचादश शत विपुलमति मनः पर्ययज्ञान धारी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वादश शत् वादी मुनिवर शुभ, वाद कुशल जग हितकारी।
जैन धर्म के हित सम्पादक, करुणाकर करुणाधारी।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।64।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित द्वादशशत वादी मुनिवर सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौतिस अतिशय प्रातिहार्य शुभ, अनन्त चतुष्टय मंगलकार।
पावन समवशरण की रचना, अष्ट विधि मुनिवर अविकार।
समवशरण में प्रभू विराजे, मंगलमय जिनका दर्शन।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, करते हैं शत्-शत् वन्दन।65।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित षट्चत्वारिंशत मूलगुण सहित शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– मुनिसुव्रत जग में हुये, तीन लोक के नाथ।
पूजा करके भाव से, विशद झुकाते माथ।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य : **ॐ ह्रीं क्रों ह्राः श्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।**

समुच्चय जयमाला

दोहा– तीन लोक में श्रेष्ठ हैं, मुनिसुव्रत जिनराज।
जयमाला कर पूजते, प्रभू द्वय पद हम आज।
मुनिसुव्रत भगवान का, जपूँ निरन्तर नाम।
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, चरणों विशद प्रणाम।

(चौपाई छन्द)

तीर्थंकर पदवी जो धारे, वे ही जिनवर रहे हमारे।
जिनने कर्म घतिया नाशे, आतम ज्ञान ध्यान जो भासे।
वे ही जग मंगल कहलाए, इन्द्रों ने जिन के गुण गाए।
उत्तम सर्व लोक में गाए, जिनके पद वन्दन को आए।
चार शरण जग में कहलाई, प्रथम शरण जिनवर की भाई।
पूर्व पुण्य का फल यह गाया, तीर्थंकर पदवी को पाया।

देव रत्न वृष्टि करते हैं, जिन भक्ति में रत रहते हैं।
जन्म समय ऐरावत लाते, पाण्डुक शिला पे न्हवन कराते।
आनन्दोत्सव खूब मनाते, भक्ति में वह नचते गाते।
बालक की परिचर्या करते, सब बाधाएँ उनकी हरते।
जब प्रभू जी संयम को धरते, लौकान्तिक अनुमोदन करते।
लेकर देव पालकी आते, उस पर प्रभू जी को बैठाते।
मानव प्रभू को लेकर जाते, वन्दन हेतु शीश झुकाते।
देव पालकी ले उड़ जाते, प्रभू को जंगल में पहुँचाते।
केश लुंच करते हैं जाकर, पंच मुष्ठि की सीमा पाकर।
निज आतम का ध्यान लगाते, प्रभू जी केवल ज्ञान जगाते।
समोशरण की रचना होती, भवि जीवों के कल्मष खोती।
देवों की बलिहारी जानो, भक्ति में तत्पर पहिचानो।
योग निरोध प्रभू ने कीन्हा, निज की आतम में चित् दीन्हा।
प्रभू सभी कर्मों को नाशे, सिद्ध शिला पर किए निवासे।
श्री जिनेन्द्र हो गये अविकारी, महिमा गाते हैं नर नारी।
जिस पदवी को प्रभू ने पाया, वह पाने का भाव बनाया।
चरण शरण में सेवक आयो, श्रद्धा सुमन साथ में लायो।
''विशद'' भावना हम यह भावें, भव सागर से मुक्ति पावें।

दोहा– मोक्ष महल में वास हो, यही भावना एक।
चरण वन्दना मैं करूँ, अपना माथा टेक।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– ब्रह्मा तुम विष्णु तुम्हीं, तुम ही शिव के नाथ।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, जोड़ रहे द्वय हाथ।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् इत्याशीर्वाद

मुनिसुव्रत जिनराज की आरती

तर्ज :- तेरी पूजन को भगवान......

श्री मुनिसुव्रत भगवान, आज हम द्वारे आये हैं।
आरती करने को हे नाथ!, जलाकर दीपक लाए हैं।

मुनिव्रतों को तुमने पाया, वीतरागमय भेष बनाया।
कीन्हा आतम ध्यान, आपके द्वारे आए हैं।
आरती करने को हे नाथ!, जलाकर दीपक लाए हैं।
श्री मुनिसुव्रत ....।

तुमने कर्म घातिया नाशे, निज में केवलज्ञान प्रकाशे।
प्रभू किया जगत् कल्याण, आपके दर्शन पाए हैं।
आरती करने को हे नाथ!, जलाकर दीपक लाए हैं।
श्री मुनिसुव्रत ....।

मुक्ति वधु के तुम भरतारी, सर्व जगत में मंगलकारी।
तुम हो कृपा सिन्धु भगवान, चरण हम शीश झुकाए हैं।
आरती करने को हे नाथ!, जलाकर दीपक लाए हैं।
श्री मुनिसुव्रत ....।

तव चरणों में जो भी आया, उसने ही सौभाग्य जगाया।
जग में केवल आप महान्, दर्श कर हम हर्षाए हैं।
आरती करने को हे नाथ!, जलाकर दीपक लाए हैं।
श्री मुनिसुव्रत ....।

हम भी शरण तुम्हारी आए, भक्ति भाव से प्रभू गुण गाए।
हो 'विशद' सर्व कल्याण, चरण में हम सिरनाए हैं।
आरती करने को हे नाथ!, जलाकर दीपक लाए हैं।
श्री मुनिसुव्रत ....।

मुनिसुव्रत चालीसा

अरहंतों को नमन् कर, सिद्धों का धर ध्यान।
उपाध्याय आचार्य अरु, सर्व साधु गुणवान।।
जैन धर्म आगम 'विशद', चैत्यालय जिनदेव।
मुनिसुव्रत जिनराज को, वंदन करूँ सदैव।।

मुनिसुव्रत जिनराज हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।
प्रभू हैं वीतरागता धारी, तीन लोक में करुणा कारी।।
भाव सहित उनके गुण गाते, चरण कमल में शीश झुकाते।
जय जय जय छियालिस गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी।।
देवों के भी देव कहाते, सुरनर पशु तुमरे गुण गाते।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, सारे जग के आप हि त्राता।।
प्रभू तुम भेष दिगम्बर धारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।
क्रोध मान माया के नाशी, तुम हो केवलज्ञान प्रकाशी।।
प्रभू की प्रतिमा कितनी सुंदर, दृष्टि सुखद जमी नासा पर।
खड्गासन से ध्यान लगाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।।
मध्यलोक पृथ्वी का मानो, उसमें जम्बूद्वीप सुहानो।
अंग देश उसमें कहलाए, राजगृहि नगरी मन भाए।।
भूपति वहाँ सुमित्र कहाए, माता पदमा के उर आए।
यादव वंश आपने पाया, कश्यप गोत्र वीर ने गाया।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आये, गर्भ दोज सावन सुदि पाए।
वहाँ पे सुर बालाएँ आईं, माँ की सेवा करें सुभाई।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, जन्म राजगृह नगरी पाया।
इन्द्र सभी मन में हर्षाए, ऐरावत ले द्वारे आये।।
पांडुकशिला अभिषेक कराया, जन-जन का तब मन हर्षाया।
पग में कछुआ चिन्ह दिखाया, मुनिसुव्रत जी नाम कहाया।।
जन्म से तीन ज्ञान के धारी, क्रीड़ा करते सुखमय भारी।
बल विक्रम वैभव को पाए, जग में दीनानाथ कहाए।।

बीस धनुष तन की ऊँचाई, तन का रंग कृष्ण था भाई।
कई वर्षों तक राज्य चलाया, सर्व प्रजा को सुखी बनाया।।
उल्का पतन प्रभू ने देखा, चिंतन किए द्वादश अनुप्रेक्षा।
सुर लौकान्तिक स्वर्ग से आए, प्रभू के मन वैराग्य जगाए।।
देव पालकी अपराजित लाए, उसमें प्रभू जी को पधराए।
भूपति कई प्रभू को ले चाले, देवों ने की स्वयं हवाले।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, नील सु वन चंपक तरु पाया।
मुनिव्रतों को तुमने पाया, प्रभू ने सार्थक नाम बनाया।।
पंचमुष्टि से केश उखाड़े, आकर देव सामने ठाड़े।
केश क्षीर सागर ले चाले, भक्तिभाव से उसमें डाले।।
वेला के उपवास जो धारे, तीजे दिन राजगृही पधारे।
वृषभसेन पड़गाहन कीन्हा, खीर का शुभ आहार जो दीन्हा।।
वैशाख कृष्ण नौमी दिन आया, प्रभू ने केवलज्ञान जगाया।
देव सभी दर्शन को आए, समवशरण सुंदर बनवाए।।
गणधर प्रभू अठारह पाए, उनमें प्रमुख सुप्रभ कहलाए।
तीस हजार मुनि संग आए, समवशरण में शोभा पाए।।
इकलख श्रावक भी आए भाई, तीन लाख श्राविकाएँ आई।
संख्यातक पशु वहाँ आए, असंख्यात सुर गण भी आये।।
प्रभू सम्मेद शिखर को आए, खड्गासन से ध्यान लगाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि पाए, निर्जर कूट से मोक्ष सिधाए।।
फाल्गुन वदी वारस दिन जानो, श्रवण नक्षत्र मोक्ष का मानो।
प्रदोष काल में मोक्ष सिधाये, मुनि अनेक सह मुक्ति पाये।।
शनि अरिष्ट गृह जिन्हें सताए, मुनिसुव्रत जी शांति दिलाएँ।
इह पर भव के सुख हम पाएँ, मुक्तिवधु को हम पाए जाएँ।।

दोहा-

पाठ करें चालीस दिन, नित चालीसों बार।
मुनिसुव्रत के चरण में, खेय सुगंध अपार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, योग्य होय संतान।
दीन दरिद्री होय जो, 'विशद' होय धनवान।।

प्रशस्ति

मध्यलोक के मध्य है, जम्बूद्वीप महान्।
भारत देश का प्रान्त है, सुन्दर राजस्थान।।
जिला एक अजमेर है, जग में है विख्यात।
नगर अयोध्या की शुभम्, रचना होवे ज्ञात।।
सोनी जी परिवार ने, किया अनोखा काम।
अद्वितीय रचना बनी, हुआ विश्व में नाम।।
दो हजार सन् सात का, हुआ है वर्षायोग।
इस अवसर पर ही बना, लिखने का संयोग।।
मुनिसुव्रत भगवान की, भक्ति फले अविराम।
पर्यूषण के पूर्व ही, पूर्ण हुआ यह काम।।
भादव शुक्ला पंचमी, उत्तम क्षमा महान्।
मुनिसुव्रत की भक्ति में, लिक्खा विशद विधान।।
शुभ भावों के हेतु यह, किया प्रभू गुणगान।
भव्य जीव पढ़कर इसे, पावें सम्यक् ज्ञान।।
पूजा करके भाव से, करें कर्म का नाश।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, पावें ज्ञान प्रकाश।।
शनि अरिष्ट नाशक लिखा, मंगलमयी विधान।
भूल चूक को टाल कर, पढ़ें सभी श्रीमान।।
कवि नहीं वक्ता नहीं, मैं हूँ लघु आचार्य।
'विशद' धर्म युत आचरण, करें जगत् जन आर्य।।
पूजा के फल से सभी, होते कर्म विनाश।
सर्व काम का नाश हो, होवे आत्म प्रकाश।।

विशद
श्री नमिनाथ विधान
माण्डला

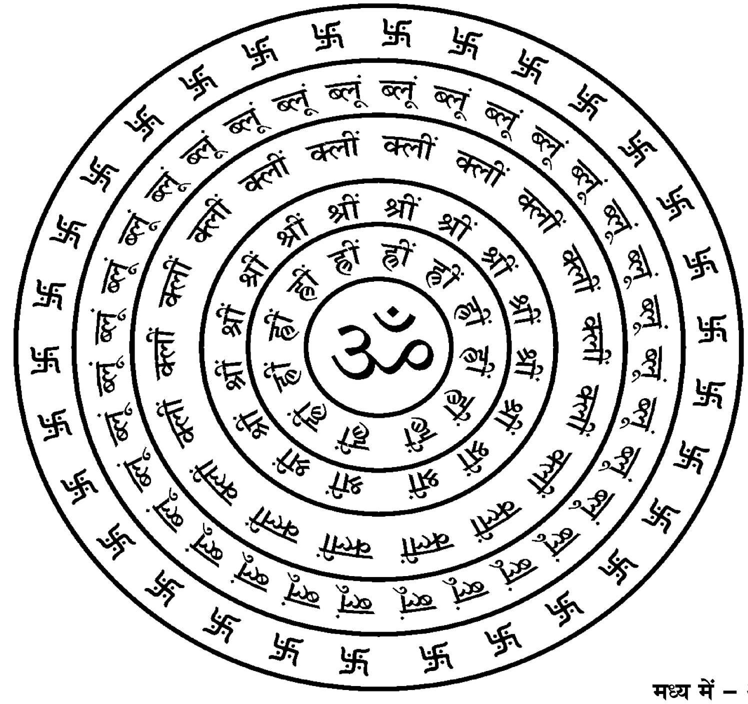

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 12 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 16 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 18 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 32 अर्घ्य
पंचम वलय में – 30 अर्घ्य
कुल 108 अर्घ्य

रचयिता
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागरजी महाराज

श्री नमिनाथ स्तवन

(शंभू छन्द)

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर प्रकृति का बंध।
पाने वाले काल अनादी, कर्मों से होते निर्बन्ध।।
अपराजित विमान से चयकर, पाए प्रभू गर्भ कल्याण।
देवों ने प्रभु के चरणों में, आकर किया था मंगलगान।।
भूप विजयरथ वप्रिला के सुत, का है नमीनाथ शुभ नाम।
मिथिला नगरी जन्म लिए हैं, गिरि सम्मेद है मुक्तीधाम।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।
नमीनाथ के समवशरण का, दो योजन जानो विस्तार।
नील कमल है चिन्ह प्रभू का, तप्त स्वर्ण सम तन मनहार।।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।
दश हजार वर्षों की आयु, पाकर किए कर्म विध्वंश।
पन्द्रह धनुष रही ऊँचाई, नहीं रहा दोषों का अंश।।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभू की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।
नमीनाथ के सत्रह गणधर, जानो भाई 'सोमादी'।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधर हैं, हरते हैं सबकी व्याधी।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

दोहा– नमि जिनवर इस लोक में, बने श्रेष्ठ तीर्थेश।
पूजा करते हम यहाँ, पाने निज स्वदेश।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत

श्री नमिनाथ पूजा

(स्थापना)

भव सिन्धु तारक सुगुण धारक, ज्ञानधर अखिलेशरम्।
कल्याण कारक दुख निवारक, नमीनाथ जिनेश्वरम्।।
मम हृदय में आके विराजो, नाथ! मम हृदयेश्वरम्।
शिव पथ प्रदर्शक आप हो, जिननाथ हे तीर्थेश्वरम्।।

दोहा तीर्थंकर पद प्राप्त कर, जग में हुए महान।
अतः आपका हम हृदय, में करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(कुसुमलता छन्द)

कूप से निर्मल जल भरकर हम, श्रेष्ठ कलश भर लाए हैं।
नाश हेतु जन्मादी व्याधी, पूजा करने आए हैं।।
परम पूज्य तीर्थंकर नमि जिन, की महिमा हम गाते हैं।
विशद भाव से चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

कश्मीरी केसर चन्दन में, घिसकर के हम लाए हैं।
भवाताप हो नाश प्रभू हम, अर्चा करने आए हैं।।
परम पूज्य तीर्थंकर नमि जिन, की महिमा हम गाते हैं।
विशद भाव से चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

दुग्ध फैन सम उज्ज्वल तन्दुल, धोकर के हम लाए हैं।
अक्षय पद पाने हे भगवन्!, आज यहाँ पर आए हैं।।
परम पूज्य तीर्थंकर नमि जिन, की महिमा हम गाते हैं।
विशद भाव से चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित पुष्प लिए उपवन के, रजत थाल भर लाए हैं।
कामबाण विध्वंश हेतु हम, पूजा करने आए हैं।।

परम पूज्य तीर्थंकर नमि जिन, की महिमा हम गाते हैं।
विशद भाव से चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

मीठे-मीठे व्यञ्जन मनहर, सद्य बनाकर लाए हैं।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, भक्त शरण में आए हैं।।
परम पूज्य तीर्थंकर नमि जिन, की महिमा हम गाते हैं।
विशद भाव से चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

रजत दीप कंचन थाली में, ज्योतिर्मय कर लाए हैं।
मिथ्या मोह विनाश हेतु हम, पूजा करने आए हैं।।
परम पूज्य तीर्थंकर नमि जिन, की महिमा हम गाते हैं।
विशद भाव से चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अष्ट गंध से धूप बनाकर, यहाँ जलाने लाए हैं।
अष्ट कर्म हो शीघ्र नाश प्रभू, सेवा में हम आए हैं।
परम पूज्य तीर्थंकर नमि जिन, की महिमा हम गाते हैं।
विशद भाव से चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

श्री फलादि बादाम सुपाड़ी, से यह थाल सजाए हैं।
मुक्ती फल पाने को पद में, भक्त बने हम आए हैं।।
परम पूज्य तीर्थंकर नमि जिन, की महिमा हम गाते हैं।
विशद भाव से चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य जल से फल तक का, अर्घ्य बना कर लाए हैं।
पद अनर्घ्य पाने हे भगवन्, तव चरणों में आए हैं।।
परम पूज्य तीर्थंकर नमि जिन, की महिमा हम गाते हैं।
विशद भाव से चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा **विशद शांति पाने यहाँ, देते शांती धार।**
शिवपथ के राही बनें, पाएँ भवदधि पार।।
(शान्तये शान्तिधारा करोमि)

दोहा **पुष्प समर्पित कर रहे, सुरभित यहाँ विशेष।**
कर्म नाश होवें मेरे, लगे हुए अवशेष।।
(दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

मात वप्रिला के उर आन, पाए प्रभू गर्भ कल्याण।
अश्विन वदि द्वितिया शुभकार, हुई जगत में मंगलकार।।
विशद हृदय से भाव विभोर, वन्दन करते हम कर जोर।
मन में जगी हमारे चाह, मोक्ष महल की पावें राह।।1।।
ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दशमी कृष्ण आषाढ़ महान्, जन्में नमीनाथ भगवान।
भूप विजयरथ के गृहद्वार, भारी हुआ मंगलाचार।।
विशद हृदय से भाव विभोर, वन्दन करते हम कर जोर।
मन में जगी हमारे चाह, मोक्ष महल की पावें राह।।2।।
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अषाढ़ बदी दशमी को पाय, दीक्षा धारे नमी जिनाय।
अविकारी हो वन में वास, आत्म तत्त्व का किए प्रकाश।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभू ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।3।।
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मंगसिर शुक्ला ग्यारस जान, नमि जिन पाए केवलज्ञान।
कर्मघातिया करके नाश, प्रभू जी कीन्हे आत्म प्रकाश॥
तीन लोक में सर्व महान, पाए प्रभू ज्ञान कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम॥4॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्शशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्दशी वैशाख महान्, कृष्ण पक्ष की रही प्रधान।
मोक्ष गये नमि जिन भगवान, देव किए तब मंगलगान।
तीन लोक में सर्व महान, पाए प्रभू मोक्ष कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम॥5॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा शिवपद हमको दीजिये, नमि जिन हे शिवपाल।
विशद भाव से आपकी, गाते हम जयमाल॥

(चाल टप्पा)

श्री जिनवर ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
तीर्थंकर पदवी प्रगटाए, यह प्रभूता पाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...

पूर्वभवों में त्याग तपस्या, प्रभू ने अपनाई।
तीर्थंकर की प्रकृति बांधी, अतिशय सुखदायी॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...

विजयसेन गृह अपराजित से, मिथिलापुर भाई।
चयकर आये मात वप्रिला, के उर जिनराई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...

दशें कृष्ण आषाढ़ बदी को, जन्म लिए भाई।
क्षीर नीर से मेरू गिरि पर, न्हवन हुआ भाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...

श्वेत कमल शुभ लक्षण देखा, इन्द्र ने सुखदायी।
नमीराज तव नाम पुकारा, जय ध्वनि गुंजाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...

दशें कृष्ण आषाढ़ बदी को, जाति स्मृति पाई।
अनुप्रेक्षा का चिन्तन करके, संत बने भाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...

निज आतम का ध्यान लगाकर, शक्ती प्रगटाई।
कर्म घातिया नशते केवल, ज्ञान जगा भाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...

समवशरण में दिव्य ध्वनि तब, प्रभू ने गुंजाई।
सम्यक् दृष्टी संयमधारी, बने जीव भाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...

मंगसिर शुक्ला एकादशि को, शिव पदवी पाई।
मोक्ष महल के स्वामी हो गये, नमीनाथ भाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...

अनुक्रम से हम मोक्ष मार्ग पर, बढ़ें शीघ्र भाई।
वह पदवी हम भी पा जाएँ, जो प्रभू ने पाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
विशद लोक में हे प्रभू तुमने, प्रभूता दिखलाई।
अतः लोकवर्ती प्राणी सब, पूज रहे भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय जिन स्वामी, अन्तर्यामी, धर्म ध्वजा के अधिकारी।
जय शिवपुर वासी, ज्ञान प्रकाशी, तीन लोक मंगलकारी॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा **जिनवर तीनों लोक में, जिन शासन सुखकार।**
मंगलमय मंगल कहा, नमूँ अनन्तों बार।।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

प्रथम वलयः

दोहा **अनन्त चतुष्टय के तथा, प्रतिहार्य के अर्घ्य।**
चढ़ा रहे! नमिनाथजी, पाएँ सुपद अनर्घ्य॥

(प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

भव सिन्धु तारक सुगुण धारक, ज्ञानधर अखिलेशरम्।
कल्याण कारक दुख निवारक, नमीनाथ जिनेश्वरम्॥
मम हृदय में आके विराजो,नाथ मम हृदयेश्वरम्।
शिव पथ प्रदर्शक आप हो, जिननाथ हे तीर्थेश्वरम्॥

दोहा **तीर्थंकर पद प्राप्त कर, जग में हुए महान।**
अतः आपका हम हृदय, में करते आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य

(चौपाई छन्द)

ज्ञानावरणी कर्म नशाए, केवल ज्ञान प्रभू प्रगटाए।
उनके चरणों शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनन्त ज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण के नाशी, हैं जिनेन्द्र शिवपुर के वासी।
उनके चरणों शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनन्त दर्शन प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोह कर्म के आप विनाशी, सुख अनन्त पाए अविनाशी।
उनके चरणों शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनन्त सुख प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अन्तराय प्रभू कर्म नशाए, विशद ज्ञान जिनवर प्रगटाए।
उनके चरणों शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनन्तवीर्य प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म घातिया नाशनहारे, तीन लोक के बने सहारे।
अनन्त चतुष्टय प्रभू जी पाए, विशद ज्ञान अनुपम प्रगटाए॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनन्त चतुष्टय प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

(छन्द जोगीरासा)

शत इन्द्रों से अर्चित अर्हत, प्रातिहार्य वसु पाये।
तरु अशोक शुभ प्रातिहार्य जिन, विशद आप प्रगटाये॥
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं तरु अशोक सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सघन पुष्प की वृष्टी करके, नभ में सुर हर्षाते।
ऊर्ध्वमुखी हो पुष्प बरसते, जिन महिमा दिखलाते॥

शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥2॥
ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव शरण में हुए अलंकृत, चौंसठ चँवर ढुराते।
श्वेत चँवर शुभ नम्रभूत हो, विनय पाठ सिखलाते॥
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥3॥
ॐ ह्रीं चतु:षष्टि चँवर सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

घाति कर्म का क्षय होते ही, भामण्डल प्रगटावें।
कोटि सूर्य की कांती जिसके, आगे भी शर्मावे॥
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥4॥
ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आओ-आओ जग के प्राणी, प्रभू जगाने आये।
श्रेष्ठ दुन्दुभि के द्वारा शुभ, वाद्य बजाके गाये॥
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥5॥
ॐ ह्रीं देव दुन्दुभी सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन लोक के ईश प्रभू हैं, तीन छत्र बतलाते।
गुरु लघुतम लघु छत्र ऊर्ध्व में, धवल कांति फैलाते॥
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥6॥
ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अर्हत के गम्भीर वचन शुभ, प्रमुदित होकर पाते।
मोह महातम हरने वाले, सभी समझ में आते॥
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥7॥
ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण के मध्य रत्नमय, सिंहासन मनहारी।
कमलाशन पर अधर विराजे, अर्हत् जिन त्रिपुरारी॥
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥8॥
ॐ ह्रीं सिंहासन सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रातिहार्य वसु समवशरण में, प्रगटित होते भाई।
तीर्थंकर हैं महिमाशाली, दिखलाते प्रभूताई।
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥9॥
ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा **सोलह कारण भाव यह, शिव के हैं सौपान।**
तीर्थंकर पद प्राप्त कर, करें आत्म कल्याण॥

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

भव सिन्धु तारक सुगुण धारक, ज्ञानधर अखिलेशरम्।
कल्याण कारक दुख निवारक, नमीनाथ जिनेश्वरम्॥
मम हृदय में आके विराजो, नाथ! मम हृदयेश्वरम्।
शिव पथ प्रदर्शक आप हो, जिननाथ हे तीर्थेश्वरम्॥

दोहा **तीर्थंकर पद प्राप्त कर, जग में हुए महान।**
अतः आपका हम हृदय, में करते आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सोलह कारण भावना के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

भव भव के घने अंधेरे को, जो सूरज बनकर नष्ट करें।
दर्शन विशुद्धि धारण कर लें, जो जग के सारे कष्ट हरें॥

जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं॥1॥
ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ विनय भाव भव नाशक है, जल जाते कष्टों के जंगल।
यह विनय भाव है मेघ विशद, छा जाते मंगल ही मंगल॥
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं॥2॥
ॐ ह्रीं विनय सम्पन्न भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिचार हीन व्रत शुद्ध शील, संयम को अंगीकार करें।
मन के मतवाले हाथी पर, शीलांकुश से अधिकार करें।
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं॥3॥
ॐ ह्रीं शीलव्रतनिरतिचार भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ज्ञान स्वाभावी चेतन में, उपयोग निरन्तर लगा रहे।
बस ज्ञान ज्ञान की धारा में, चैतन्य अभीक्षण जगा रहे॥
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं॥4॥
ॐ ह्रीं अभीक्षण ज्ञानोपयोग भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार देह के भोगों से, जब उदासीनता आ जाए।
है वस्तु स्वभाव धर्म मेरा, संवेग भाव यह कहलाए॥
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं॥5॥
ॐ ह्रीं संवेग भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिस श्रावक के घर में उत्तम, शुभ त्याग वृत्तिमय दान नहीं।
उस घर के जैसा अन्य कोई, मरघट और श्मशान नहीं॥
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं॥6॥
ॐ ह्रीं शक्तितस् त्यागवृत्ति भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्दी गर्मी वर्षा ऋतु में, योगीश्वर तप को तपते हैं।
इस उत्तम तप के द्वारा ही, केवल्य प्राप्त वह करते हैं॥
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं॥7॥
ॐ ह्रीं शक्तितस् भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो संत साधना में प्राणी, अपना उपयोग लगाते हैं।
परिचर्या करते हैं उनकी, वह साधु समाधि पाते हैं॥
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं॥8॥
ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधक की आत्म साधना में, जो बाधाओं को हरते हैं।
कृशकाय तपस्वी की सेवा, कर वैय्यावृत्ती करते हैं॥
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं॥9॥
ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो घाती कर्म विनाश किए, कैवल्य ज्ञान फिर प्रगटाए।
उनके गुण में अनुराग 'विशद', शुभ अर्हद् भक्ति कहलाए॥
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं॥10॥
ॐ ह्रीं अरहंत भक्ति भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप धर्म गुप्ति आचारवान, छह आवश्यक के धारी हैं।
निर्ग्रन्थ संत की भक्ती शुभ, आचार्य भक्ती शुभकारी है॥
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं॥11॥
ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादशांग के ज्ञाता हैं, गुण पच्चिस उपाध्याय पाए।
उनकी भक्ती अर्चा करना, बहुश्रुत भक्ती शुभ कहलाए।।
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं।।12।।
ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमागम श्री जिन प्रवचन में, शुभ द्रव्य तत्त्व का कथन रहा।
जिन प्रवचन में अवगाहन हो, यह प्रवचन भक्ती भाव कहा।।
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं।।13।।
ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ति भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता वन्दन आदिक मुनि के, छह आवश्यक कर्त्तव्य कहे।
इनका परिहार नहीं करना, आवश्यक यह अपरिहार्य रहे।।
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं।।14।।
ॐ ह्रीं आवश्यक अपरिहार्य भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजरथ विमान पूजा विधान, अभिषेक महोत्सव हो भारी।
जिन बिम्ब प्रतिष्ठा इत्यादिक, मारग प्रभावना शुभकारी।।
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं।।15।।
ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्देव शास्त्र गुरु भक्तों पर, ममता विहीन वात्सल्य रहे।
प्रवचन वात्सल्य यही जानो, उर से करुणा की धार बहे।।
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं।।16।।
ॐ ह्रीं प्रवचन वात्सल्य भक्ति भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि आदिक प्रशस्त, यह सोलह कारण भाव कहे।
तीर्थंकर पुण्य प्रकृति पाने, पावन पवित्र आधार रहे।।
जो भाते हैं सोलह कारण, वह तीर्थंकर पद पाते हैं।
पाते वह केवल ज्ञान विशद, फिर मोक्ष महल को जाते हैं।।17।।
ॐ ह्रीं षोडश कारण भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय:

दोहा दोष अठारह से रहित, तीर्थंकर भगवान।
कर्म घातिया नाशकर, पाते पद निर्वाण।।

(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

भव सिन्धु तारक सुगुण धारक, ज्ञानधर अखिलेशरम्।
कल्याण कारक दुख निवारक, नमीनाथ जिनेश्वरम्।।
मम हृदय में आके विराजो,नाथ! मम हृदयेश्वरम्।
शिव पथ प्रदर्शक आप हो, जिननाथ हे तीर्थेश्वरम्।।

दोहा तीर्थंकर पद प्राप्त कर, जग में हुए महान।
अतः आपका हम हृदय, में करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टादश दोष रहित जिन

जो क्षुधा दोष के धारी, वह जग में रहे दुखारी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी।।1।।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो तृषा दोष को पाते, वह अतिशय दुःख उठाते।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी।।2।।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय तृषा दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो जन्म दोष को पावें, वह मरकर फिर उपजावें।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥3॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है जरा दोष भयकारी, दुख देता है जो भारी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥4॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जरा दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विस्मय करने वाले, प्राणी हैं दुखी निराले।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥5॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय विस्मय दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है अरति दोष जग जाना, दुखकारी इसको माना।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥6॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अरति दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रम करके जग के प्राणी, बहु खेद करें अज्ञानी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥7॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय खेद दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है रोग दोष दुखदायी, सब कष्ट सहें कई भाई।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥8॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय रोग दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जब इष्ट वियोग हो जाए, तब शोक हृदय में आए।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥9॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय शोक दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मद में आकर के प्राणी, करते हैं पर की हानी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥10॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मद दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो मोह दोष के नाशी, होते हैं शिवपुर वासी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥11॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोह दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भय सात कहे दुखकारी, जिनकी महिमा है न्यारी
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥12॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय भय दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निद्रा से होय प्रमादी, करते निज की बरबादी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥13॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय निद्रा दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चिन्ता को चिता बताया, उससे ही जीव सताया।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥14॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय चिन्ता दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन से जब स्वेद बहाए, जो भारी दुख पहुँचाए।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥16॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय स्वेद दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिसके मन द्वेष समाए, वह पाप रूपता पाए।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥17॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय द्वेष दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं मरण दोष के नाशी, वे होते शिवपुर वासी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥18॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मरण दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यह दोष अठारह भाई, हैं इस जग में दुखदायी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभू बने हैं अन्तर्यामी॥19॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टादश दोष विनाशनाय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा **गुण प्रगटाए आपने, बने गुणों के ईश।**
पुष्पाञ्जलि करते 'विशद', चरण झुकाकर शीश॥
(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

भव सिन्धु तारक सुगुण धारक, ज्ञानधर अखिलेशरम्।
कल्याण कारक दुख निवारक, नमीनाथ जिनेश्वरम्॥
मम हृदय में आके विराजो,नाथ! मम हृदयेश्वरम्।
शिव पथ प्रदर्शक आप हो, जिननाथ हे तीर्थेश्वरम्॥

दोहा **तीर्थंकर पद प्राप्त कर, जग में हुए महान।**
अतः आपका हम हृदय, में करते आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(भुजंग प्रयात)

प्रभू ज्ञान चक्षु जगत में कहाए,
विशद ज्ञान अनुपम स्वयं जो जगाए।
बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥1॥

ॐ ह्रीं ज्ञान चक्षु सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अक्षय सु धन हो महा सौख्यकारी,
हम आए शरण में प्रभू जी तुम्हारी।
बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥2॥

ॐ ह्रीं अक्षय धन सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

प्रभू सर्व विद्या के ईश्वर कहाए,
झुका शीश चरणों सभी इन्द्र आये।
बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥3॥

ॐ ह्रीं सर्व विद्या सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू आप सौभाग्य सुख प्राप्त कीन्हे
विशद भक्त को आप सम आप कीन्हें।
बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥4॥

ॐ ह्रीं सौभाग्य सुख सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शाश्वत सुपद प्राप्त कर सौख्यकारी,
बने आप ईश्वर महा कष्ट हारी।

बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥5॥

ॐ ह्रीं शाश्वत पद सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू ज्येष्ठ पद प्राप्त कर शिव सिधाए,
सुशिव प्राप्त करने चरण हम भी आए।
बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥6॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ पद सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू आत्म लालित्य पाये हैं नामी,
बने ज्ञानधारी अतः जग के स्वामी।
बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥7॥

ॐ ह्रीं आत्म लालित्य सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

किए इन्द्रियाँ वश विशद योग धारी,
बने आपदा के प्रभू जी निवारी।
बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥8॥

ॐ ह्रीं इन्द्रिय विजय सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू आत्म जय कर करम जब नशाए,
स्वयं आप शिवपुर के राही कहाए।
बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥9॥

ॐ ह्रीं आत्म विजय सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बन्धु प्रभू आप जगत के कहाए,
बने आप शुभचिंतक हमको भी भाए।
बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥10॥

ॐ ह्रीं शुभचिन्तक बंधुत्व सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

प्रभू आत्म ज्योती स्वयं ही जगाए,
बुझे दीप तुमने प्रभू कई जलाए।

बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥11॥

ॐ ह्रीं आत्म ज्योति सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू आप हो मोहतम के विनाशी,
बने आप हे नाथ शिवपुर के वासी।
बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥12॥

ॐ ह्रीं मोहतम विनाशनाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू आपने धर्म जिन श्रेष्ठ धारा,
बने भव्य जीवों के जग में सहारा।
बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥13॥

ॐ ह्रीं धर्मछाया सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू आपने जन्म अन्तिम ये पाया,
पुनर्जन्म की मैट दी पूर्ण छाया।
बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥14॥

ॐ ह्रीं पुनर्जन्म रहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षणभंगुर यह लोक प्रभू जी बताए,
शाश्वत स्वयं चेतना आप पाए।
बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥15॥

ॐ ह्रीं क्षण भंगुर जग रहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तुम्हीं ध्यान ध्याता तुम्हीं ध्येय स्वामी,
तुम्हारे चरण में विशद है नमामी।
बने आप अर्हन्त कर्मों के नाशी,
कहाए प्रभू आप शिवपुर के वासी॥16॥

ॐ ह्रीं ध्यान ध्याता ध्येय सुख सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(गीता छन्द) प्रभू पतित...

प्रभू घोर तप कर कर्म नाशे, पूज्य पद को पा लिए।
सुर नर असुर तव अर्चना कर, चरण में वन्दन किए॥
भव सिन्धु से अब पार करने की लगन मन में जगी।
हे नाथ! तव चरणों में दृष्टी, आपके मेरी लगी॥17॥

ॐ ह्रीं पूज्य पद प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू दिव्य रूप सुप्राप्त करके, आत्म ज्योति जगाए हैं।
गुण चेतना के प्रगट करके, तीर्थ पदवी पाए हैं॥
भव सिन्धु से अब पार करने, की लगन मन में जगी।
हे नाथ! तव चरणों में दृष्टी, आपके मेरी लगी॥18॥

ॐ ह्रीं दिव्य रूप प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू सुहित मित सुप्रिय वाणी, के धनी कहलाए हैं।
अतः प्रभू के गीत गाने, भक्त चरणों आए हैं॥
भव सिन्धु से अब पार करने, की लगन मन में जगी।
हे नाथ! तव चरणों में दृष्टी, आपके मेरी लगी॥19॥

ॐ ह्रीं पावन वाणी प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू चित्त शांती प्राप्त करके, क्षोभ मन का नाशते।
जो अमर शांती के प्रदायक, विशद ज्ञान प्रकाशते॥
भव सिन्धु से अब पार करने, की लगन मन में जगी।
हे नाथ! तव चरणों में दृष्टी, आपके मेरी लगी॥20॥

ॐ ह्रीं चित्तशान्ति प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सन्मार्ग पर चलकर प्रभू ने, मोक्ष पद को पा लिया।
सन्मार्ग का पथ भव्य जीवों, के लिए दिखला दिया।
भव सिन्धु से अब पार करने, की लगन मन में जगी।
हे नाथ! तव चरणों में दृष्टी, आपके मेरी लगी॥21॥

ॐ ह्रीं सन्मार्ग प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू मोक्ष पथ पर चले आगे, अरहंत का पद पाए हैं।
शुभ दर्श पाते भव्य प्राणी, महिमा विशद जो गाए हैं॥

भव सिन्धु से अब पार करने, की लगन मन में जगी।
हे नाथ! तव चरणों में दृष्टि, आपके मेरी लगी॥22॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकर दर्श प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब योगियों से आप अर्चित, अर्चना के पात्र हो।
हम भक्ति भव-भव में करें, तुम पूज्य जग में मात्र हो॥
भव सिन्धु से अब पार करने, की लगन मन में जगी।
हे नाथ! तव चरणों में दृष्टि, आपके मेरी लगी॥23॥
ॐ ह्रीं जन्म-जन्म प्रभू भक्ति प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप से करम का मैल धोकर, प्रकट गुण निज के किए।
प्रभू शुद्ध आतम द्रव्य लेकर, मोक्ष पदवी पा लिए॥
भव सिन्धु से अब पार करने, की लगन मन में जगी।
हे नाथ! तव चरणों में दृष्टि, आपके मेरी लगी॥24॥
ॐ ह्रीं शुभ आत्म द्रव्य प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौबोला छन्द)

दया धर्म की ध्वजा को लेकर, सारे जग में फहराते।
कोमल हृदय प्राप्त श्री जिनवर, सब पर करुणा दिखलाते॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, प्रभूवर के गुण गाते हैं।
जिन गुण पाने हेतु प्रभू पद, सादर शीश झुकाते हैं॥25॥
ॐ ह्रीं कोमल हृदय प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जन्म मृत्यु से रहित जिनेश्वर, अनुपम महिमा धारी हैं।
जग का मंगल करने वाले, अतिशय मंगलकारी हैं॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, प्रभूवर के गुण गाते हैं।
जिन गुण पाने हेतु प्रभू पद, सादर शीश झुकाते हैं॥26॥
ॐ ह्रीं जन्म मृत्यु रहित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जैन धर्म के जो रखवाले, महिमा जग को बतलाते
जैन धर्म अनुसार आचरण, करके शिव पदवी पाते॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, प्रभूवर के गुण गाते हैं।
जिन गुण पाने हेतु प्रभू पद, सादर शीश झुकाते हैं॥27॥
ॐ ह्रीं जिनधर्म आचरण प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रीधर श्रीपति श्री के दाता, दीन बन्धु करुणाकारी।
श्री सुख पाते महिमा गाकर, बन जाते श्री के धारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, प्रभूवर के गुण गाते हैं।
जिन गुण पाने हेतु प्रभू पद, सादर शीश झुकाते हैं॥28॥
ॐ ह्रीं लक्ष्मी सुख प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुण्योदय से पराधीन सुख, प्राणी जग में पाते हैं।
निराबाध सुख पाने वाले, आप प्रभू कहलाते हैं॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, प्रभूवर के गुण गाते हैं।
जिन गुण पाने हेतु प्रभू पद, सादर शीश झुकाते हैं॥29॥
ॐ ह्रीं निराबाध सुख प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अचल अखण्ड आप हो भगवन्, चंचल चित्त हमारा है।
मन की स्थिरता पाने को, आपका एक सहारा है॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, प्रभूवर के गुण गाते हैं।
जिन गुण पाने हेतु प्रभू पद, सादर शीश झुकाते हैं॥30॥
ॐ ह्रीं मानसिक स्थिरता प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आप न्याय के ज्ञाता भगवन, जग को न्याय दिलाते हो।
न्याय प्राप्त करने वाले प्रभू, जग से पूजे जाते हो॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, प्रभूवर के गुण गाते हैं।
जिन गुण पाने हेतु प्रभू पद, सादर शीश झुकाते हैं॥31॥
ॐ ह्रीं जगत न्याय प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोलह कारण भव्य भावना, पूर्व भवों में भाये हो।
तीर्थंकर पद अतः प्रभू जी, पुण्य के फल से पाये हो॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, प्रभूवर के गुण गाते हैं।
जिन गुण पाने हेतु प्रभू पद, सादर शीश झुकाते हैं॥32॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकर पद प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा मोक्ष महल में जो गये, धरे दिगम्बर भेष।
परिग्रह के धारी सभी, भटकें देश विदेश॥
ॐ ह्रीं वीर गुण प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचम वलय:

दोहा त्रिंशत गुण धारी बने, आप मेरे भगवान।
पुष्पाञ्जलि करके यहाँ, करते हम गुणगान॥

(पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

भव सिन्धु तारक सुगुण धारक, ज्ञानधर अखिलेशरम्।
कल्याण कारक दुख निवारक, नमीनाथ जिनेश्वरम्॥
मम हृदय में आके विराजो, नाथ! मम हृदयेश्वरम्।
शिव पथ प्रदर्शक आप हो, जिननाथ हे तीर्थेश्वरम्॥

दोहा **तीर्थंकर पद प्राप्त कर, जग में हुए महान।**
अतः आपका हम हृदय, में करते आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

त्रिंशद गुण के अर्घ्य

(सखी छन्द)

हे निर्भय सुख के धारी, इस जग के करुणाकारी।
तव चरणों अर्घ्य चढ़ाते, तुमको हम पूज रचाते॥1॥

ॐ ह्रीं भय रहित सुख प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू शोक रहित कहलाए, जिन गुण की महिमा गाए।
तव चरणों अर्घ्य चढ़ाते, तुमको हम पूज रचाते॥2॥

ॐ ह्रीं शोक विनाशनाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैराग्य भावना भाए, तव केवल ज्ञान जगाए।
तव चरणों अर्घ्य चढ़ाते, तुमको हम पूज रचाते॥3॥

ॐ ह्रीं वैराग्य भावना उद्भवाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विद्वान आप कहलाए, ज्ञाता आगम के गाए।
तव चरणों अर्घ्य चढ़ाते, तुमको हम पूज रचाते॥4॥

ॐ ह्रीं शास्त्र मर्मज्ञता सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू अनुपम शांती धारी, हे आतम ब्रह्म विहारी।
तव चरणों अर्घ्य चढ़ाते, तुमको हम पूज रचाते॥5॥

ॐ ह्रीं अपूर्व शान्ति प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अध्यात्म सुअमृत पाए, प्रभू अजर अमर कहलाए।
तव चरणों अर्घ्य चढ़ाते, तुमको हम पूज रचाते॥6॥

ॐ ह्रीं अध्यात्म अमृत प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मंत्रों के देव कहाए, अनुपम सिद्धी को पाए।
तव चरणों अर्घ्य चढ़ाते, तुमको हम पूज रचाते॥7॥

ॐ ह्रीं शुभ मंत्र सिद्धार्थाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मृत्युञ्जय पद के धारी, प्रभू आप हुए अविकारी।
तव चरणों अर्घ्य चढ़ाते, तुमको हम पूज रचाते॥8॥

ॐ ह्रीं मृत्युंजयी पद प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुरुषार्थ सफलता पाए, ईश्वर अनुपम कहलाए।
तव चरणों अर्घ्य चढ़ाते, तुमको हम पूज रचाते॥9॥

ॐ ह्रीं पुरुषार्थ सफलता प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पाए प्रसन्नता स्वामी, हे ज्ञानी अन्तर्यामी।
तव चरणों अर्घ्य चढ़ाते, तुमको हम पूज रचाते॥10॥

ॐ ह्रीं सदा प्रसन्नता प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ गुण तुमने प्रगटाए, तव मुक्ति वधु को पाए।
तव चरणों अर्घ्य चढ़ाते, तुमको हम पूज रचाते॥11॥

ॐ ह्रीं शुभ गुण प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

आतम का दर्शन पाया, शिवपुर में धाम बनाया।
तव चरणों अर्घ्य चढ़ाते, तुमको हम पूज रचाते॥12॥

ॐ ह्रीं पावन आत्म दर्शनाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

प्रभू संसार द्वन्द के नासी, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशी।
अशुभ राग तज शुभ में जाएँ, जिन पूजा के भाव जगाएँ॥13॥

ॐ ह्रीं संसार द्वन्द विनाशनाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वास्थ्य निराहारी हैं स्वामी, मुक्ती पथ के जो अनुगामी।
अशुभ राग तज शुभ में जाएँ, जिन पूजा के भाव जगाएँ॥14॥
ॐ ह्रीं निराहार स्वास्थ्य प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन लोक के स्वामी गाए, फिर भी मान रहित कहलाए।
अशुभ राग तज शुभ में जाएँ, जिन पूजा के भाव जगाएँ॥15॥
ॐ ह्रीं मान कषाय विनाशनाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अपयश रहित कलंक विनाशी, हुए प्रभू शिवपुर के वासी।
अशुभ राग तज शुभ में जाएँ, जिन पूजा के भाव जगाएँ॥16॥
ॐ ह्रीं अपयश कलंक विनाशनाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कार्य उपद्रव आप नशाए, शत्रू भी पद में झुक जाए।
अशुभ राग तज शुभ में जाएँ, जिन पूजा के भाव जगाएँ॥17॥
ॐ ह्रीं कार्य उपद्रव विनाशनाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन चरणों में जो आ जाते, मन वाञ्छित फल प्राणी पाते।
अशुभ राग तज शुभ में जाएँ, जिन पूजा के भाव जगाएँ॥18॥
ॐ ह्रीं मनवांछा पूर्ण कराय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धर्मौषधी प्रभू कहलाए, जन्म जरादिक रोग नशाए।
अशुभ राग तज शुभ में जाएँ, जिन पूजा के भाव जगाएँ॥19॥
ॐ ह्रीं धर्म औषध प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ निमित्त हो आप निराले, सबको मुक्ति दिलाने वाले।
अशुभ राग तज शुभ में जाए, जिन पूजा के भाव जगाए॥20॥
ॐ ह्रीं शुभ निमित्त प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू जी जगत पिता कहलाते, जन जन को शांती दिलवाते।
अशुभ राग तज शुभ में जाएँ, जिन पूजा के भाव जगाएँ॥21॥
ॐ ह्रीं प्रभू पितृछाया प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मंगलमय हैं मंगलकारी।
अशुभ राग तज शुभ में जाएँ, जिन पूजा के भाव जगाएँ॥22॥
ॐ ह्रीं ऋद्धि सिद्धी प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चाल छन्द)

प्रभू रहे महायश धारी, कीर्ति है जिनकी भारी।
प्रभू केवल ज्ञान जगाए, फिर शिव पदवी को पाए॥23॥
ॐ ह्रीं महायश प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू महानन्द शुभ पाते, जग को आनन्द दिलाते।
प्रभू केवल ज्ञान जगाए, फिर शिव पदवी को पाए॥24॥
ॐ ह्रीं महा आनन्द प्राप्ताय भावना सहिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जन-जन में मैत्रि कराते, प्रभू वैर विरोध नशाते।
प्रभू केवल ज्ञान जगाए, फिर शिव पदवी को पाए॥25॥
ॐ ह्रीं सर्व जीव मैत्री कराय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हे परम गुरु उपकारी, हम आये शरण तुम्हारी।
प्रभू केवल ज्ञान जगाए, फिर शिव पदवी को पाए॥26॥
ॐ ह्रीं परम गुरु शरण प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू महाक्रोध के नाशी, शुभ केवल ज्ञान प्रकाशी।
प्रभू केवल ज्ञान जगाए, फिर शिव पदवी को पाए॥27॥
ॐ ह्रीं महाक्रोध शत्रु विनाशनाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हे विश्व शांति के दाता, भविजन के भाग्य विधाता।
प्रभू केवल ज्ञान जगाए, फिर शिव पदवी को पाए॥28॥
ॐ ह्रीं विश्वशान्ति कराय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जग में विशिष्टता पाए, तुम सब में योग्य कहाए।
प्रभू केवल ज्ञान जगाए, फिर शिव पदवी को पाए॥29॥
ॐ ह्रीं विशिष्ट योग्यता प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हे परम तृप्ति के धारी, त्रय लोकों में सुखकारी।
प्रभू केवल ज्ञान जगाए, फिर शिव पदवी को पाए॥30॥
ॐ ह्रीं जगत सुख तृप्ति कराय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा **जीवन संध्या डूबकर, फिर कब होवे भोर।**
काल अनादि अनन्त है, नहीं ओर न छोर।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा श्रद्धा से अर्चा करें, नमीनाथ पद आज।
कृपा दृष्टि प्रभू कीजिए, करुणाकर जिनराज॥

(सृग्विणी छन्द)

हे जिनेन्द्र देव जी आप कृपा कीजिए,
नाथ भक्त को अब शरण ले लीजिए।
एकटक आपको देख दर्शन करें,
राग आदी विभाव पूर्णतः परि हरे॥
जन्म के समय आप ज्ञान तीनों करे,
आठ वर्ष उम्र में देशव्रत भी धरे।
वंश इक्ष्वाकु आप शुभ पाए हैं,
मात वप्रिला के गर्भ में आए हैं॥
अषाढ़ कृष्ण दशमी जन्म आपने लिया,
पितु विजयराज को धन्य आपने किया।
स्वाती नक्षत्र में जन्म आप पाए हैं,
नील कमल से पहिचान बतलाए हैं॥
संस्मरण पूर्व भव का आपने किया,
विशद वैराग्य तव जिन प्रभू ने लिया।
अषाढ़ कृष्ण दशें को प्रभू वन में गये,
आप दीक्षा धार वीतरागी भये॥
भूप वरदत्त संयोगपुर का कहा,
श्रेष्ठ आहार दाता प्रभू का रहा।
योग त्रय धार श्रेणी पे जो चढ़े,
कर्म की त्रेसठ प्रकृति जो हने॥
मार्गशीर्ष शुक्ल एकम शुभ जानिए,
प्रभू केवल्य ज्ञानी हुए मानिए।
देव इन्द्र समवशरण की रचना किए,
आनके शतेन्द्र चरणों जय-जय किए॥
ॐकार ध्वनि में दिव्य देशना दिए,
भव्य जीवों पर आप करुणा किए।
शाश्वत तीर्थ सम्मेद गिरि पे गये,
कर्म का समूह आप एक क्षण में क्षये॥
वैशाख कृष्ण एकम आप शिव पद लिए,

सुख अनन्त प्राप्त कर आप सिद्ध हो लिए।
एक मेरी प्रार्थना नाथ! सुन लीजिए,
जन्म जरादिक से मुक्त कर दीजिए॥
पास अपने प्रभू अब बुला लीजिए,
'विशद' बन्द कलिका, अब खिला दीजिए।

दोहा करते हैं हम प्रार्थना, पूरी हो हे नाथ!
शिव पदवी हमको मिले, झुका रहे पद माथ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा नमीनाथ जिन पद युगल, नमन अनन्तानन्त।
अर्चा करते हम 'विशद', पाने भव का अन्त॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री नमिनाथ चालीसा

दोहा– नव देवों के चरण में, नव कोटी के साथ।
गुण गाते नमिनाथ के, चरण झुकाकर माथ॥
तव चरणों में हे प्रभू, जोड़ रहे द्वय हाथ।
चालीसा गाते यहाँ, विनय भाव के साथ॥

(चौपाई)

मध्य लोक पृथ्वी का जानो, जिसमें जम्बूद्वीप बखानो।
भरत क्षेत्र जानो शुभकारी, दक्षिण में सोहे मनहारी॥
वंगदेश जानो शुभ भाई, मिथला नगरी शुभ कहलाई।
विजयराज राजा शुभ गाए, वंश इक्ष्वाकू अनुपम पाए॥
वप्रिला रानी जिनकी गाई, धर्म परायण जो कहलाई।
अश्विन वदी दूज शुभ जानो, पिछला पहर रात का मानो॥
शुभ नक्षत्र अश्विनी पाए, कश्यप गोत्री आप कहाए।
अपराजित से चयकर आए, माँ के गर्भ को धन्य बनाए॥
दशें कृष्ण आषाढ़ की जानो, शुभम् नक्षत्र स्वाति पहिचानो।
जन्म मेष राशी में पाया, राशी स्वामी मंगल गाया॥
घंटा नाद हुआ तब भारी, देवलोक में अतिशयकारी।
स्वयं इन्द्र ऐरावत लाया, सुर परिवार साथ में आया॥
प्रभू के पद में शीश झुकाया, जन्म कल्याणक श्रेष्ठ मनाया।
नीलकमल शुभ लक्षण जानो, स्वर्ण वर्ण तन का पहिचानो॥
दस हजार वर्षों की स्वामी, आयू पाये हैं शिवगामी।

समचतुस्र तन पाए भाई, पन्द्रह धनुष रही ऊँचाई॥
सहस्राष्ट लक्षण शुभकारी, रक्त श्वेत जानो मनहारी।
जाति स्मरण प्रभू को आया, मन में तव वैराग्य समाया॥
दशें कृष्ण आषाढ़ की जानो, संध्याकाल समय पहिचानो।
मिथला नगरी श्रेष्ठ बताई, उत्तर कुरू पालकी गाई॥
शुभ उद्यान जैत्र वन गाया, चम्पक वृक्ष श्रेष्ठ बतलाया।
एक सौ अस्सी धनुष ऊँचाई, दीक्षा वृक्ष की जानो भाई॥
एक सहस राजा संग आये, साथ में प्रभू के दीक्षा पाए।
दो उपवास प्रभू जी कीन्हे, शुभ क्षीरान्न आहार जो लीन्हे॥
नगर वीरपुर अनुपम गाया, दाता राजा दत्त कहाया।
मंगसिर शुक्ल एकादशि जानो, संध्याकाल समय पहिचानो॥
प्रभू जी मिथिला नगरी आए, अतिशय केवलज्ञान जगाए।
शुभ उद्यान जैत्र वन गाया, मौलश्री शुभ तरु कहलाया॥
समवशरण आ देव बनाए, दो योजन विस्तार कहाए।
शुभ पद्मासन प्रभू की जानो, सोलह सौ केवली पहिचानो॥
संघ में साधू संख्या भाई, बीस हजार श्रेष्ठ बतलाई।
गणधर संख्या सत्रह जानो, सुप्रभ प्रथम गणी पहिचानो॥
एक लाख श्रावक भी आए, विजय प्रमुख श्रोता कहलाए।
यक्ष कहा विद्युतप्रभ भाई, चामुण्डी यक्षी कहलाई॥
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, कूट मित्रधर अनुपम पाए।
एक माह पूरब से स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी॥
वैशाख कृष्ण चतुर्दशी जानो, अंतिम पहर रात का मानो।
खड्गासन से मोक्ष सिधाए, सहस मुनी सह मुक्ती पाए॥
जिनेश्वर का हम ध्यान लगाएँ, हृदय कमल पर उन्हें बिठाएँ।
हम भी मुक्तीपद को पाएँ, 'विशद' भावना उर से भाएँ॥

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े-सुने उर धार।
सुख-शांती सौभाग्य पा, पावें भव से पार॥
नमीनाथ भगवान का, करने से गुणगान।
आशा मन की पूर्ण हो, शीघ्र होय कल्याण॥

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य

श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते शंकर नगर स्थित 1008 श्री महावीर दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2539 वि.सं. 2069 मासोत्तम मासे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्षे अष्टमी गुरुवार वासरे श्री नमीनाथ विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

श्री 108 नमिनाथ भगवान की आरती (1)

(तर्ज प्रभू रथ में हुए सवार...)

प्रभू की आरती में आज, नगाड़े बाज रहे॥ टेक ॥
सब ठुमुक-ठुमुक कर नाच रहे, कई वाद्य ध्वनि से बाज रहे।
श्री नमीनाथ जिनराज, नगाड़े बाज रहे॥1॥
कई भक्त आरती गाते हैं, ताली कई लोग बजाते हैं।
आते आरती के काज, नगाड़े बाज रहे॥2॥
शुभ घी की ज्योति जलाई है, आरति करने को आई है।
मिलकर के सकल समाज, नगाड़े बाज रहे॥3॥
प्रभू के यह भक्त निराले हैं, प्रभू भक्ती के मतवाले हैं।
प्रभू तारण तरण जहाज, नगाड़े बाज रहे॥4॥
क्या वीतराग छवि प्यारी है, नाशा दृष्टी मनहारी है।
हैं विशद धर्म के ताज, नगाड़े बाज रहे॥5॥

श्री 108 नमिनाथ भगवान की आरती (2)

श्री नमीनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारे थारी मूरत निहारें प्रभू कर दो भव से पार-आज...
महाव्रतों को तुमने पाया, निज आतम का ध्यान लगाया।
किया कर्म का नाश, आज थारी आरती उतारें॥1॥
चार घातिया कर्म नशाए, केवल ज्ञान प्रभू प्रगटाए।
तीर्थंकर महाराज, आज थारी आरती उतारें॥2॥
धन कुबेर चलकर के आया, अनुपम समवशरण बनवाया
इन्द्र किए जयकार, आज थारी आरती उतारें॥3॥
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, भव्य जीव सदज्ञान जगाए।
पाए सद् श्रद्धान, आज थारी आरती उतारें॥4॥
योग निरोध किए जिन स्वामी, बने ''विशद'' मुक्ती पथगामी
पाए पद निर्वाण, आज थारी आरती उतारें॥5॥

सर्वमंगल दायक

श्री नेमिनाथ पूजन विधान

माण्डला

मध्य में – ह्रीं
प्रथम वलय में – 9 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 18 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 36 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 72 अर्घ्य
कुल 135 अर्घ्य

रचयिता

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य

श्री 108 विशदसागरजी महाराज

श्री नेमिनाथ स्तुति

दोहा- द्वार आपके हम खड़े, नेमिनाथ भगवान।
कृपा आपकी चाहते, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

नेमिनाथ जिन के चरणों में, झुकता है यह जग सारा।
कामबली पर विजय प्राप्त की, जिससे सारा जग हारा।।
हे प्रभो! आप करुणा कर हो, हमको करुणा का दान करो।
यह भक्त पड़ा है चरणों में, इस पर भी कृपा प्रदान करो।।१।।
तुम पार हुए भव सागर से, मैं भव सागर में भटक रहा।
तुमने मुक्ति को पाया है, मैं जग वैभव में अटक रहा।।
हे नेमिनाथ करुणा नन्दन, करुणा की धारा बरसाओ।
जो भूले भटके राही हैं, उनको सद् मार्ग दिखा जाओ।।२।।
सद्धर्म आत्मा का भूषण, जो धारण उसको करता है।
वह जगत लक्ष्मी को तजकर, शुभ मुक्ति वधु को वरता है।।
तुमने राजुल का त्याग किया, तो शिव रमणी को पाया है।
यह जान प्रभु मेरे मन में, शुभ भाव उमड़ कर आया है।।३।।
रिश्ते नाते सब धोखा हैं, बस नाता सत्य तुम्हारा है।
तुमसे अब मेरा नाता हो, यह पावन लक्ष्य हमारा है।।
संसार असार रहा प्रभु यह, हम क्या जाने तुम हो ज्ञाता।
भव पार करो हमको भगवन्, हे नाथ आप जग के त्राता।।४।।
तुम शिवादेवि के हो नन्दन, तुम तो शिवपुर के वासी हो।
तुम विश्व विभव को पाये हो, प्रभु सर्व कर्म के नाशी हो।।
प्रभु शांति सुधामृत के स्वामी, तुमने शांति को पाया है।
अब 'विशद' शांति को पाने का, मैंने शुभ भाव बनाया है।।५।।

।।इत्याशीर्वाद।।

श्री नेमिनाथ जिनपूजा

स्थापना

नेमिनाथ के श्री चरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन् कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो, प्रभु हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

विषयों के विष की प्याला को, पीकर के जन्म गँवाया है।
प्रभु जन्म मरण के दुःखों से, छुटकारा ना मिल पाया है।।
हम मिथ्या मल धोने प्रभु जी, शुभ कलश में जल भर लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।१।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

क्रोधादि कषायों के कारण, संताप हृदय में छाया है।
मन शांत रहे मेरा भगवन, यह भक्त चरण में आया है।।
संसार ताप के नाश हेतु, हम शीतल चंदन लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।२।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

क्षणभंगुर वैभव जान प्रभु, तुमने सब राग नशाया है।
व्रत संयम तेज तपस्या से, अभिनव अक्षय पद पाया है।।
हो अक्षय पद प्राप्त हमें भगवन्, हम अक्षय अक्षत लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।३।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

है प्रबल काम शत्रू जग में, तुमने उसको ठुकराया है।
यह भक्त समर्पित चरणों में, तुमसा बनने को आया है।।
प्रभु कामवाण के नाश हेतु, यह प्रमुदित पुष्प चढ़ाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।४।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

हे नाथ! भोग की तृष्णा ने, अरु क्षुधा ने हमें सताया है।
मन मर्कट सब पदार्थ खाकर, भी तृप्त नहीं हो पाया है।।
प्रभु क्षुधा रोग के शमन हेतु, यह व्यंजन सरस ले आए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।५।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशना नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोहांध महा अज्ञानी हूँ, जीवन में घोर तिमिर छाया।
मैं रागी द्वेषी बना रहा, निज के स्वभाव से बिसराया।।
मोहांधकार का नाश करूँ, यह दीप जलाने लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।६।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों की सेना ने कैसा, यह चक्र व्यूह रचवाया है।
मुझ भोले-भाले प्राणी को, क्यों उसके बीच फँसाया है।।
अब अष्ट कर्म की धूप जले, यह धूप जलाने लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।७।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

हमने चित् चेतन का चिंतन, अरु मनन नहीं कर पाया है।
सद्दर्शन ज्ञान चरित का फल, शुभ फल निर्वाण न पाया है।।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।८।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

अविचल अनर्घ पद पाने का, हमने अब भाव जगाया है।
अतएव प्रभु वसु द्रव्यों का, अनुपम यह अर्घ्य बनाया है।।

दो पद अनर्घ हमको स्वामी, यह अर्घ्य संजोकर लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों शीश झुकाए हैं।।९।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा– नेमिनाथ भगवान, कार्तिक शुक्ला षष्ठमी।
पाए गर्भ कल्याण, शिव देवी उर आ बसे।।१।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भ मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
सौरीपुर नगरी शुभम्, समुद्र विजय हर्षित हुए।।२।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भ मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस्र आम्रवन बीच, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
पशु आक्रंदन देख, तप धारे गिरनार पर।।३।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां तप कल्याण मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हुआ ज्ञान कल्याण, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा।
स्वपर प्रकाशी ज्ञान, नेमिनाथ जिन पा लिए।।४।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पाए पद निर्वाण, आठें शुक्ल आषाढ़ की।
हुआ मोक्ष कल्याण, ऊर्जयन्त के शीर्ष से।।५।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– समुद्र विजय के लाड़ले, शिवादेवी के लाल।
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

(राधेश्याम छन्द)

सुरेन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र गणीन्द्र, शतेन्द्र सुध्यान लगाते हैं।
जिनराज की जय जयकार करें, उनका यश मंगल गाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुख उनके सारे हरते हैं।
जो चरण शरण में आ जाते, वह भवसागर से तरते हैं।।
तुम धर्ममयी हो कर्मजयी, तुममें जिनधर्म समाया है।
तुम जैसा बनने हेतु नाथ!, यह भक्त चरण में आया है।।
प्रभु द्रव्य भाव नोकर्म सभी, अरु राग द्वेष भी हारे हैं।
प्रभु तन में रहते हुए विशद, रहते उससे अति न्यारे हैं।।
जिसको भव सुख की चाह नहीं, वह दुख से क्या भय खाते हैं।
वह महाबली जिन धीर वीर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो दयावान करुणाधारी, वात्सल्यमयी गुणसागर हैं।
वह सर्वसिद्धियों के नायक, शुभ रत्नों के रत्नाकर हैं।।
शुभ नित्य निरंजन शिव स्वरूप, चैतन्य रूप तुमने पाया।
उस मंगलमय पावन पवित्र, पद पाने को मन ललचाया।।
कर्मों के कारण जीव सभी, भव सागर में गोते खाते।
जो शरण आपकी पाते हैं, वह उनके पास नहीं आते।।
तुम हो त्रिकालदर्शी प्रभुवर, तुमने तीर्थंकर पद पाया है।
तुमने सर्वज्ञता को पाया, अरु केवलज्ञान जगाया है।।
तुम हो महान अतिशय धारी, तुम विधि के स्वयं विधाता हो।
सुर नर नरेन्द्र की बात कहाँ, तुम तो जन-जन के त्राता हो।।
तुम हो अनन्त ज्ञाता दृष्टा, चिन्मूरत हो प्रभु अविकारी।
जो शरण आपकी आ जाए, वह बने स्वयं मंगलकारी।।
जो मोह महामद मदन काम, इत्यादि तुमसे हारे हैं।
जो रहे असाता के कारण, चरणों झुक जाते सारे हैं।।
ज्यों तरुवर के तल आने से, राही शीतल छाया पाता।
प्रभु के शरणागत आने से, स्वयमेव आनन्द समा जाता।।
तुमने पशुओं का आक्रन्दन, लख कर संसार असार कहा।

यह तो अनादि से है असार, इसका ऐसा स्वरूप रहा।।
हे जगत पिता! करुणा निधान, यह सब तो एक बहाना था।
शयद कुछ इसी बहाने से, राजुल को पार लगाया था।।
राजुल का तुमने साथ दिया, उससे नव भव की प्रीति रही।
पर हमसे प्रीति निभाई न, वह खता तो हमसे कहो सही।।
अब शरण खड़ा है शरणागत, इसका भी बेड़ा पार करो।
कह रहा भक्ति के वशीभूत, हे! दयासिंधु स्वीकार करो।।
जो शरण आपकी आ जाए, वह भव में कैसे भटकेगा।
जो भक्ति भाव से गुण गाए, वह जग में कैसे अटकेगा।।
तुम तीर्थंकर बाइसवें प्रभु, तुम बाईस परीषह को जीते।
तुमने अनन्त बल सुख पाया, तुम निजानन्द रस को पीते।।
जैसे प्रभु भव से पार हुए, वैसे मुझको भी पार करो।
हमको आलम्बन दे करके, प्रभु इस जग से उद्धार करो।
जो भाव सहित पूजा करते, वह पूजा का फल पाते हैं।।
पूजा के फल से भक्तों के, सारे संकट कट जाते हैं।
हम जन्म-जन्म के संकट से, घबड़ाकर चरणों आये हैं।
अब उभय रूप प्रभु मोक्ष महापद, पाने को शीश झुकाये हैं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय नेमि जिनेशं हितउपदेशं, शुद्ध बुद्ध चिद्रूपयति।
जय परमानन्दं आनन्दकंदं, दयानिकंदं ब्रह्मपति।।

ॐ ह्रीं सर्व मंगल दायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नेमिनाथ के द्वार पर, पूरी होती आश।
मुक्ति हो संसार से, पूरा है विश्वास।।

इत्याशीर्वाद (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रथम वलयः

दोहा- क्षायिक लब्धि प्राप्त कर, हुए प्रभु अरहन्त।
पुष्पांजलिं से पूजकर, करें कर्म का अन्त।।

प्रथमवलयस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्

स्थापना

नेमिनाथ के श्री चरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं सर्व सर्वमंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

क्षायिक नव लब्धियों के अर्घ्य

अनन्त अनुबन्धी कषाएँ, कर्म दर्शन मोहनी।
सप्त प्रकृतियाँ विनाशे, कर्म वर्धक सोहनी।।
प्रकटकर सम्यक्त्व क्षायिक, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।१।।

ॐ ह्रीं क्षायिक सम्यक्त्व लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त प्रकृति के अलावा, मोहनी की शेष सब।
नाश कीन्हें ध्यान तप से, कोई भी न रही अब।।
प्रकट कर चारित्र क्षायिक, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।२।।

ॐ ह्रीं क्षायिक चारित्र लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म नाशे, ज्ञान केवल पाए हैं।
अर्घ्य लेकर चरण में प्रभु, भाव से हम आए हैं।।
अनन्त चतुष्टय प्रभु पाए, चरण में उनके नमन्।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।३।।
ॐ ह्रीं क्षायिक ज्ञान लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श गुण पर आवरण को, नाश करते जिन प्रभो।
प्रकट करते ऽनन्त दर्शन, मोक्षगामी हो विभो।।
अनन्त चतुष्टय प्रभु पाए, चरण में उनके नमन्।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।४।।
ॐ ह्रीं क्षायिक दर्शन लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश करके कर्म बाधक, दान में जो भी रहा।
विघ्न करता है सदा ही, जैन आगम में कहा।।
दान क्षयिक प्राप्त करके, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।५।।
ॐ ह्रीं क्षायिक दान लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बाधक लाभ में जो, नाश उसको कर दिए।
चाह न रखते कभी जो, लाभ पाने के लिए।।
लाभ क्षायिक प्राप्त करके, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।६।।
ॐ ह्रीं क्षायिक लाभ लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग में बाधक रहा हो, कर्म का करते शमन।
इन्द्रिय मन की विकलता, को किया जिसने दमन।।
भोग क्षायिक प्राप्त करके, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हो मेरे शमन।।७।।
ॐ ह्रीं क्षायिक भोग लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सदा उपभोग करने, में विघन करता रहा।
वह कर्म घाती विघ्न कारक, जैन आगम में कहा।।
प्रकट कर उपभोग क्षायिक, कर रहे जीवन चमन।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।८।।
ॐ ह्रीं क्षायिक उपभोग सम्यक्त्व लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
विघ्न सारे नाश करके, बल अनन्त प्रकटाए हैं।
सुर असुर चरणों में आके, भक्ति से शिर नाए हैं।।
अनन्त चतुष्टय प्रभु पाए, चरण में उनके नमन।
अर्घ्य हम करते समर्पित, कर्म हों मेरे शमन।।९।।
ॐ ह्रीं क्षायिक वीर्य लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जिन साधु निर्ग्रन्थ हैं, रत्नत्रय के कोष।
उनका गुण गाकर मिले, विशद आत्म सन्तोष।।१०।।
ॐ ह्रीं क्षायिक नव लब्धि प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा– दोष अठारह से रहित, होते हैं जिनदेव।
पुष्पांजलिं से पूजकर, करूँ चरण की सेवा।।
द्वितीयवलयस्योपरि–पुष्पांजलिं क्षिपेत्
(द्वितीय वलय पर पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

स्थापना

नेमिनाथ के श्री चरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन् कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।
ॐ ह्रीं सर्व सर्वमंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र–तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

अष्टादश दोष रहित जिनके अर्घ्य

(चाल छन्द)

जो कर्म घातिया नाशे, अरु केवलज्ञान प्रकाशे।
वो क्षुधा व्याधि को खोवे, न कवलाहारी होवे।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।१।।
ॐ ह्रीं क्षुधा दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु घाती कर्म नशावें, अरु केवलज्ञान जगावें।
वह तृषा वेदना खोवें, वे व्याकुल कभी न होवें।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।२।।
ॐ ह्रीं तृषा दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भव बाधाएँ जीते, नित आत्म सरस को पीते।
प्रभु अन्तिम जन्म को पाए, उनके गुण हमने गाए।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।३।।
ॐ ह्रीं जन्म दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जरा रोग को नाशा, न रही कोई भी आशा।
उनकी हम महिमा गाते, चरणों में शीश झुकाते।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।४।।
ॐ ह्रीं जरा दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मोहक द्रव्य घनेरे, अध्रुव सब कोई न मेरे।
प्रभु विस्मय कभी न करते, न आह कभी भी भरते।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।५।।
ॐ ह्रीं विस्मय दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न शत्रु कोई हमारे, हम हैं इस जग से न्यारे।
यह जान अरति न करते, जन जन में समता धरते।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।६।।
ॐ ह्रीं अरति दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर है जग सारा, इसमें न कोई हमारा।
यह जान खेद न करते, समता में सदा विचरते।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।७।।
ॐ ह्रीं खेद दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में कई दोष भरे हैं, चेतन से पूर्ण परे हैं।
प्रभु रोग दोष के नाशी, हैं आतम ज्ञान प्रकाशी।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।८।।
ॐ ह्रीं रोग दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको न वियोग सतावे, नित शांत भाव को पावें।
प्रभु शोक दोष के नाशी, हैं आतम ज्ञान प्रकाशी।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।९।।
ॐ ह्रीं शोक दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादि आठ महामद, जो नाश पाए उत्तम पद।
प्रभु-मद से हीन कहे हैं, उनके न दोष रहे हैं।।
हे जिनवर! जग हितकारी, जन जन के करुणाकारी।
जो वीतरागता धारे, वे ही आराध्य हमारे।।१०।।
ॐ ह्रीं मद दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह महाबलशाली, जिसकी है कथा निराली।
प्रभु मोह महामद नाशी, हैं सम्यक्ज्ञान प्रकाशी।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते।।११।।

ॐ ह्रीं मोह दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं सात महाभय भारी, जिससे है जीव दुखारी।
प्रभु ने भय सभी भगाए, अरु निर्भयता को पाए।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते।।१२।।

ॐ ह्रीं भय दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूले निद्रा में प्राणी, यह कहती है जिनवाणी।
प्रभु हैं निद्रा से खाली, जो हैं अति-महिमाशाली।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते।।१३।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्ता तो चिता कही है, प्राणी को सता रही है।
प्रभु चिन्ता कभी न करते, औरों की चिंता हरते।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते।।१४।।

ॐ ह्रीं चिन्ता दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन परमौदारिक पाये, उससे न स्वेद बहाए।
प्रभु स्वेद दोष से खाली, जग में अति महिमाशाली।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते।।१५।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वीतरागता धारे, हैं जग में जग से न्यारे।
जो राग-दोष को छोड़े, जग जन से मुख भी मोड़े।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते।।१६।।

ॐ ह्रीं राग-दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्रोध कषाय के नाशी, प्रभु निज आतम के वासी।
प्रभु द्वेष भाव निरवारें, सब कर्म शत्रु भी हारें।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते।।१७।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दश प्राणों के नाशी, हैं अजर अमर अविनाशी।
जो मरण रोग परिहारे, प्रभु नाशें कर्म हैं सारे।।
जिनवर हैं जग उपकारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिनवर के गुण गाते, अरु सादर शीश झुकाते।।१८।।

ॐ ह्रीं मरण दोष विनाशक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– दोष अठारह रहित हैं, नेमिनाथ भगवान।
पूजा करके भाव से, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा– चौंतिस अतिशय प्राप्त कर, हुए धर्म के नाथ।
विशद भाव से झुकाते, प्रभु चरणों में माथ।।

तृतीयवलयस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(तीसरे वलय पर पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

स्थापना

नेमिनाथ के श्री चरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।

गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन् कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं सर्व सर्वमंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

चौंतिस अतिशय के अर्घ्य

जन्म के १० अतिशय (गीता छन्द)

तन रहित है स्वेद से, अतिशय प्रभु प्रगटाए हैं।
देवेन्द्र आदि इन्द्र शत, चरणों में शीश झुकाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दश पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।१।।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मल रहित तन है प्रभु का, अमल अति सुखकार है।
अतिशय स्वयं होता प्रभु का, धर्म का आधार है।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।२।।

ॐ ह्रीं मल रहित सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समचतुरस्र संस्थान प्रभु जी, जन्म से पाते महा।
नहीं घट बढ़ अंग कोई, प्रभु का अतिशय रहा।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।३।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्र संस्थान सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्र वृषभ नाराच संहनन, जन्म से उपजाए हैं।
हड्डियों का जोड़ अतिशय, श्रेष्ठ प्रभु प्रगटाए हैं।।

जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।४।।

ॐ ह्रीं वज्र वृषभ नाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन सुगन्धित और सुरभित, प्रभुजी शुभ पाए हैं।
सुर असुर चरणों में आकर, गीत मंगल गाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।५।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित तन सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप अतिशय महा मनहर, प्राप्त कर सुख पाए हैं।
कामदेव अरु चक्रवर्ति, देखकर शरमाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।६।।

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में सहस्र इक आठ लक्षण, प्रभु जी प्रगटाए हैं।
सहस्राष्ट प्रभु नामधारी, लोक में कहलाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।७।।

ॐ ह्रीं सहस्र अष्ट लक्षण सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्त तन का श्वेत सुन्दर, प्रभुजी शुभ पाए हैं।
महत महिमा वात्सल्य की, प्रभुजी प्रगटाए हैं।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।८।।

ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रिय हित-मित वचन प्रभु के, जगत में सुखकार हैं।
धर्म के आधार हैं शुभ, जगत मंगलकार हैं।।

जन्म के अतिशय जिनेश्वर, स्वयं ही दस पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।९।।

ॐ ह्रीं हित मित प्रिय सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अनंतानंत पाए, नहीं कोई पार है।
पुण्य का फल सुयश जग में, रहा अपरंपार है।।
जन्म के अतिशय जिनेश्वर स्वयं ही दश पाए हैं।
प्रभु चरणों में 'विशद', हम भाव से सिरनाए हैं।।१०।।

ॐ ह्रीं अनन्त बल सहजातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

केवलज्ञान के १० अतिशय

शतक योजन दूर तक, प्रभु का जहाँ आसन रहा।
हो नहीं दुर्भिक्षता शुभ, क्षेत्र अति निर्मल कहा।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।११।।

ॐ ह्रीं योजन शत चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन में ही गमन होता, विशद यह अतिशय रहा।
पूर्व के शुभ पुण्य का फल, जैन आगम में कहा।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।१२।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नहीं उपसर्ग कोई, ज्ञान केवल होय तब।
कृत पशु नर सुर अचेतन, नाश होवें आप सब।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।१३।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नहीं अदया वहां पर, प्रभू का आसन जहाँ।
धर्म का शुभ फल परस्पर, मित्रता होवे वहाँ।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।१४।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा से पीड़ित दिखाई, दे रहा संसार है।
नाश की है क्षुधा पीड़ा, नहीं कवलाहार है।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।१५।।

ॐ ह्रीं कवलाहार घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोभते हैं जिन प्रभु जी, समवशरण के बीच में।
दे रहे दर्शन चतुर्दिक, रहें न भव कीच में।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।१६।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल विद्या के अधीपति, प्रभुजी ईश्वर कहे।
कर्म के नाशक प्रकाशक, प्रभु परमेश्वर रहे।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।१७।।

ॐ ह्रीं विद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं छाया पड़े तन की, परमौदारिक तन रहा।
रहा विस्मय एक यह भी, ज्ञान का अतिशय कहा।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।१८।।

ॐ ह्रीं छायारहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केश अरु नख नहीं बढ़ते, ज्ञान की महिमा कही।
रहें ज्यों के त्यों सदा ही, धर्म की गरिमा रही।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।१९।।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पलकें नहीं झपकें प्रभु की, बंद न खुलती कभी।
दर्श करते भव्य प्राणी, भाव से प्रभु के सभी।।
ज्ञान केवल प्रकट होता, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।२०।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

१४ देवकृत अतिशय

रही भाषा अर्द्धमागध, सभी को सुखकार है।
वाणी है ॐकारमय शुभ, धर्म की आधार है।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।२१।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जगत के सब प्राणियों में, भाव मैत्री के जगें।
धर्म के दीपक जहाँ में, आप ही शुभ जग-मगें।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।२२।।

ॐ ह्रीं सर्व मैत्री भाव देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षट् ऋतु के फूल फल शुभ, स्वयं ही खिलते वहाँ।
विशद ज्ञानी जिनवरों का, आगमन होवे जहाँ।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।२३।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भूमि दर्पण वत् चमकती, पद पड़ें प्रभु के जहाँ।
विशद ज्ञानी जिनवरों का, गमन होता है वहाँ।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।२४।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमई देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पवन सुरभित शुभ सुगन्धित, बहे अति मन मोहनी।
भव्य जीवों की सुभाषित, रहे अति शुभ सोहनी।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।२५।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित विरहण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जगत में आनन्द कारण, है प्रभु का आगमन।
भव्य प्राणी भाव से, करते चरण शत्-शत् नमन।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।२६।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भूमि कंटक रहित हो शुभ, जहाँ प्रभु करते गमन।
भव्यप्राणी भाव से, करते चरण शत्-शत् नमन।।

देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।२७।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नभ में जय जयकार होता, जीव सुखमय हों सभी।
धर्म की शुभ भावना से, दुःखमय न हों कभी।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।२८।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि करते, देव मिलकर के सभी।
झूमकर के नृत्य करते, भाव से सुर नर सभी।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।२९।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु के पद तल कमल की, देवगण रचना करें।
हों जगत जन सुखी सारे, और की बाधा हरें।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।३०।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गगन शुभ हो जाए निर्मल, जहाँ प्रभु का हो गमन।
सब दिशाओं को स्वयं ही, देव कर देते चमन।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।३१।।

ॐ ह्रीं शरदकालवन्निर्मल गगन देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब दिशाएँ धूम से हों, रहित निर्मल अति विमल।
आगमन हो जहाँ प्रभु का, जगत् हो जाए अमल।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।३२।।

ॐ ह्रीं सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धर्मचक्र चलता है आगे, प्रभु का जब हो गमन।
भव्य जन भक्ति से आकर, करें चरणों में नमन।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।३३।।

ॐ ह्रीं अग्रे धर्मचक्र देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट मंगल द्रव्य लेकर, देव भक्ति भाव से।
कर रहे अर्चा प्रभु की, मिल सभी सुर चाव से।।
देवकृत अतिशय हैं चौदह, महिमा प्रभु की गा रहे।
भाव से चरणों प्रभु के, शीश विशद झुका रहे।।३४।।

ॐ ह्रीं अष्टमंगलद्रव्य देवोपनीतातिशयधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बाह्य लक्ष्मी प्राप्त कर प्रभु, समवशरण विराजते।
रत्नकई निधियाँ जो पाके, अधर में ही राजते।।
लोकवर्ती इन्द्र सब, भक्ति में आकर झूमते।
भाव से पूजा करें अरु, चरण रज को चूमते।।३५।।

ॐ ह्रीं वाह्य लक्ष्मी समवशरणादि विभूति प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनंत चतुष्टय आदि लक्ष्मी, पाए अन्तर की निधि।
भव्य गुण पाए अनेकों, प्रभु पाए सन्निधि।।
लोकवर्ती इन्द्र सब, भक्ति में आकर झूमते।
भाव से पूजा करें अरु, चरण रज को चूमते।।३६।।

ॐ ह्रीं अभ्यंतर लक्ष्मी अनंत चतुष्टयादि विभूति प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **चौंतिस अतिशय प्राप्त कर, उभयलक्ष्मी पाय।**
समवशरण में राजते, तीर्थंकर जिनराय।

ॐ ह्रीं चौंतीस अतिशय उभय लक्ष्मी प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्व. स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा– **चौसठ ऋद्धि के शुभम, प्रातिहार्य के अर्घ्य।**
चढ़ा रहे हम भाव से, पाने सुपद अनर्घ।।

चतुर्थवलयस्योपरि–पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(चौथे वलय पर पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

स्थापना

नेमिनाथ के श्री चरणों में भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं सर्व सर्वमंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र–तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

चौसठ ऋद्धि के अर्घ्य

(ताटंक छंद)

द्वादश तप जो तपते मुनिवर, ऋद्धी पाते कई प्रकार।
अवधि ज्ञान षट् भेद युक्त शुभ, जिनका गुण प्रत्यय आधार।।
देशावधि परमा सर्वावधि, रूपी द्रव्य दिखाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धि यह प्रगटाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं अवधि बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैसा चिंतन करे कोई भी, मनपर्यय से होवे ज्ञात।
ऋजू–मति अरु विपुलमति द्वय, भेद रूप जग में विख्यात।।
अवधि ज्ञान से सूक्ष्म विषय भी, मनःपर्यय हमें दिखाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धि यह प्रगटाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं मनःपर्यय बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ कर्म घातिया क्षय होते, शुभ केवलज्ञान प्रकट होता।
दर्पण वत् लोकालोक दिखे, सब कर्म कालिमा को खोता।।
ऋद्धी शुभ केवलज्ञान जगे, तब अर्हत् पद को पाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।३।।

ॐ ह्रीं केवल बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शब्द श्रृंखला के द्वारा, जब एक शब्द का ज्ञान किये।
हो प्रतिभाषित सारा आगम, जागे तब श्रुत सम्पूर्ण हिये।।
है कल्पवृक्ष सम बुद्धि बीज, पाने का भाव बनाते हैं।।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों धान्य भरे कोठे में कई, फिर भी वह भिन्न भिन्न रहते।
मिश्रण बिन बुद्धि से आगम, वह पृथक–पृथक ही मुनि कहते।।
उन कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि धारी, मुनिवर को शीश झुकाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ग्रन्थों में पद हैं अनेक, मुनि मात्र एक पद ज्ञान करें।
पूर्ण ग्रन्थ का सार प्राप्त, करके जग का अज्ञान हरें।।

है श्रेष्ठ ऋद्धि पादानुसारिणी, जिनवर महिमा बतलाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।६।।

ॐ ह्रीं पादानुसारिणी बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह श्रवण का विस्मय है विशेष, समझे नर पशु की भाषा को।
वह नौ योजन की जान रहे, त्यागे सब मन की आशा को।।
जो अक्षर और अनक्षर मय, द्वय भाषा में समझाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।७।।

ॐ ह्रीं संभिन्न-संश्रोतृ बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना इन्द्रिय की दीवानी, दिखती यह सारी जगती है।
गुरु नीरस व्रत उपवास करें, शायद उन्हें भूख न लगती है।।
नौ योजन दूर की वस्तु का, गुरु रसास्वाद पा जाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।८।।

ॐ ह्रीं दूरास्वादन बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है विषय अष्ट स्पर्शन के, जग के प्राणी सब पाते हैं।
जो अशुभ और शुभ रूप रहे, छूने से ज्ञान कराते हैं।।
नौ योजन दूर की वस्तु का, स्पर्श गुरु पा जाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।९।।

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शन बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गन्ध सुगन्ध घ्राण के द्वय, प्रभु ने यह विषय बताए हैं।
जग के प्राणी उनको पाकर, दुःख सुख पाकर अकुलाए हैं।।
नौ योजन दूर कि वस्तु का, गुरु गंध ज्ञान पा जाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।१०।।

ॐ ह्रीं दूरगन्ध ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतापन आदि तप करने, मुनिवर गिरि ऊपर जाते हैं।
फिर आतम रस में लीन हुए, अरु आत्म सरस रस पाते हैं।।
उत्कृष्ट विषय कर्णेन्द्रिय का, उसकी शक्ति उपजाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।११।।

ॐ ह्रीं दूर श्रवण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रेन्द्रिय का उत्कृष्ट विषय, तप करके जो प्रकटाते हैं।
नेत्रों की शक्ति से ज्यादा, वह आतम शक्ति बढ़ाते हैं।।
यह श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाकर भी मुनि, हर्ष खेद न पाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।१२।।

ॐ ह्रीं दूरावलोकन ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविराम ज्ञान उपयोग करें, विश्राम कभी न करते हैं।
प्रज्ञा को स्वयं विकासित कर, अज्ञान तिमिर को हरते हैं।।
होते महान प्रज्ञा धारी, गुरु प्रज्ञा श्रमण कहाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।१३।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान का विषय अनन्तक है, जो लोकालोक दिखाता है।
अष्टांग निमित्तक है महान, शुभ अशुभ का ज्ञान कराता है।।
स्वर-अंग भौम व्यंजन आदि, इनसे पहिचाने जाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।१४।।

ॐ ह्रीं अष्टांग निमित्त बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई कितना ज्ञानी आ जाए, पर उनसे जीत न पाता है।
हैं वाद-विवाद कुशल मुनिवर, उनके आगे झुक जाता है।।
जिन धर्म दिवाकर वे मुनिवर, जिन धर्म ध्वजा फहराते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।१५।।

ॐ ह्रीं वादित्व बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो चिंतन ध्यान मनन करते, नित स्वाध्याय में लीन रहे।
वह ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, ज्ञान में सदा प्रवीण रहे।।
हम द्वादशांग का ज्ञान करें, यह विशद भावना भाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।१६।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम पूर्व पूरा होते ही, महा विद्यायें आ जावें।
शुभ कार्य हेतु वह आज्ञा मांगे, मुनि के मन वह न भावें।।
श्रुत का चिंतन करते करते, श्रुत धारी बन जाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।१७।।

ॐ ह्रीं दशम पूर्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन चेतन का भेद जानकर, लखते हैं आतम का रूप।
जानें ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय को, निज आतम का सत्य स्वरूप।।
प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि के धारी, भेद विज्ञान जगाते हैं।
संयम तपस्त्याग से मुनिवर, ऋद्धी यह प्रगटाते हैं।।१८।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपधारी मुनिवर के आगे, ऋद्धी यह शीश झुकाती है।
मुनिवर लेते आहार जहाँ वहाँ, जनता सब जिम जाती है।।
अक्षीण संवास ऋद्धी के धारी मुनिवर अतिशय कारी हैं।
हम पूजा करते भावसहित, चरणों में ढोक हमारी है।।१९।।

ॐ ह्रीं अक्षीण संवास ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

थोड़ी सी भूमि पर बैठें, कई जीव अनेकों कष्ट विहीन।
दर्श करें मुनिवर के आकर, भक्ती में होकर लवलीन।।
अक्षीण महानस ऋद्धि के धारी, मुनिवर अतिशय कारी हैं।
हम पूजा करते भावसहित, चरणों में ढोक हमारी है।।२०।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छन्द)

नभ चारण ऋद्धि धारी मुनि, नभ में पग-पग गमन करें।
सौ योजन तक दूर क्षेत्र की, सभी आपदाशमन करें।।
नभ चारण ऋद्धिधर मुनि की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।२१।।

ॐ ह्रीं नभ चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चारण ऋद्धि धारी मुनि, जल के ऊपर गमन करें।
जल जन्तु न मरे कोई भी, उनकी बाधा शमन करें।।
जल चारण ऋद्धिधर मुनि की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।२२।।

ॐ ह्रीं जल चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में चलते हुए मुनी के, घुटने मुड़ते नहीं कभी।
चऊ अंगुल पृथ्वी से ऊपर, धर्म भाव युत रहें सभी।।
जंघा चारण ऋद्धिधर मुनि की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।२३।।

ॐ ह्रीं जंघा चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प फलों पत्रों पर चलते, उनसे जीव न दुख पाते।
चारण ऋद्धी धारी मुनिवर, आगे बढ़ते ही जाते।।
पुष्प पत्र चारण मुनिवर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।२४।।

ॐ ह्रीं पुष्प पत्र चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी चारण ऋद्धीधर मुनि, अग्नी के ऊपर चलते।
अग्नी जीव को कष्ट न होता, मुनि के पैर नहीं जलते।।
अग्नी चारण ऋद्धीधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।२५।।

ॐ ह्रीं अग्नि चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघों के ऊपर चलते पर, कोई जीव न मरते हैं।
शुभ मेघ चारिणी ऋद्धिधर से, जीव खेद न करते हैं।।
मेघ चारिणी ऋद्धीधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।२६।।

ॐ ह्रीं मेघ चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोमल तन्तु के ऊपर मुनि, निर्भय चलते जाते हैं।
फिर भी तन्तू नहीं टूटता, उनको सब सिर नाते हैं।।
तन्तू चारण ऋद्धीधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।२७।।

ॐ ह्रीं तन्तु चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि चन्द नक्षत्रों द्वारा, ज्योर्तिमय है सारा लोक।
काल देखकर गमन करें शुभ, जिनके चरणों देता ढोक।।
ज्योतिष चारण ऋद्धीधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।२८।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गमन करें वायू पंक्ति में, चलते हैं जो गगन मंझार।
ज्ञान ध्यान में लीन रहें नित, महिमा जिनकी अपरम्पार।।
वायु चारण ऋद्धीधर की, पूजा करते भाव विभोर।
सुखमय होवें जीव सभी अरु, मंगल होवे चारों ओर।।२९।।

ॐ ह्रीं वायु चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

अणु बराबर छेद में, घुस जावें मुनिराज।
अणिमा ऋद्धी धारते, तारण तरण जहाज।।३०।।

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सुमेरु सम देह को, बड़ा करें मुनिराज।
महिमा ऋद्धी धारते, तारण तरण जहाज।।३१।।

ॐ ह्रीं महिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्क तूल सम लघू हों, तप बल से मुनिराज।
लघिमा ऋद्धी धारते, तारण तरण जहाज।।३२।।

ॐ ह्रीं लघिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भारी होवे लोह सम, जिनका तन तत्काल।
गरिमा ऋद्धी धारते, मुनिवर दीन दयाल।।३३।।

ॐ ह्रीं गरिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमि पर रहते खड़े, छूवें सूरज चंद।
प्राप्ति ऋद्धी के धनी, मुनि रहें निर्द्वन्द।।३४।।

ॐ ह्रीं प्राप्ति ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल में मुनि यों पग धरें, ज्यों थल में चल जाएँ।
ऋद्धीधर प्राकाम्य के, ऐसी महिमा पाएँ।।३५।।

ॐ ह्रीं प्राकाम्य ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की प्रभुता प्राप्त कर, बनते ईश समान।
ऋद्धीधर ईशत्व के, जग में सर्व महान।।३६।।

ॐ ह्रीं ईशत्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि पड़ते मुनी की, वश में हों सब लोग।
महिमा होती यह सदा, वशित्व ऋद्धि के योग।।३७।।

ॐ ह्रीं वशित्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घुसें छेद बिन शैल में, बाधा कोई न होय।
अप्रतिघाति ऋद्धीधर, सम न जग में कोय।।३८।।

ॐ ह्रीं अप्रतिघाति ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिखते दिखते लोप हों, न हो मुनि का भान।
ऋद्धी तप से प्रकट हो, मुनि के अन्तर्धान।।३९।।

ॐ ह्रीं अन्तर्धान ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छित फल पाते मुनी, इच्छित रूप बनाय।
काम रूपिणी ऋद्धिधर, जग में पूजे जायँ।।४०।।

ॐ ह्रीं काम रूपिणी ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छन्द)

तप में लीन रहे तपती नित, उग्र-उग्र तप तपते रोज।
दीक्षा दिन से मरण काल तक, कर उपवास बढ़े शुभ ओज।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।४१।।

ॐ ह्रीं उग्र तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशन आदि तप करने से, क्षीण होय मुनिवर की देह।
दीप्ति तपो ऋद्धि से तन की, दीप्ति बढ़े तब निःसन्देह।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।४२।।

ॐ ह्रीं दीप्ति तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से तप ऋद्धि की वृद्धि, करते हैं करते आहार।
तन मन बल बढ़ता है लेकिन, मल धातु न होय निहार।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।४३।।

ॐ ह्रीं तप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंह निष्क्रीड़ित आदि व्रतधर, व्रत पाले जो कई प्रकार।
त्याग करें उत्तम से उत्तम, महा तपों अतिशय को धार।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।४४।।

ॐ ह्रीं महातपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश तप तपते हैं मुनिवर, आतापन आदि धर योग।
घोर तपो अतिशय ऋद्धिधर, हो उपसर्ग तथा कोई रोग।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।४५।।

ॐ ह्रीं घोर तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक जयी सागर शोषण की, शक्ति पावें कई प्रकार।
घोर पराक्रम ऋद्धिधारी, पाते तप विध के आधार।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।४६।।

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत त्रिय गुप्ति धर, ब्रह्मचर्य व्रत से भरपूर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धीधार से, कलह आदि भागें सब दूर।।
कर्म शत्रु तप के द्वारा ही, भाई हो पाते निर्जीण।
पूजनीय वह धन्य मुनीश्वर, जिनने कर्म किये हैं क्षीण।।४७।।

ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचर्य तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(त्रिभंगी छंद)

मन बल की ऋद्धी रही प्रसिद्धी, श्रुत का चिन्तन होय विशेष।
चिन्ततन की शक्ती प्रभु की भक्ती, से मुहूर्त में होय अशेष।।
संयम से पावे ध्यान लगावे, आतम की शुद्धी पावे।
ऋद्धी हम पावे ज्ञान जगावें, मुनिवर के शुभ गुण गावें।।४८।।

ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों की शक्ति प्रभु की भक्ती, करते श्रुत का उच्चारण।
हो वचन अनोखे जग में चोखे, ऋद्धि सिद्धि का हो कारण।।
मुनिवर की वाणी जग कल्याणी, कर्ण सुने तृप्ती पावें।
ऋद्धी हम पावे ज्ञान जगावें, मुनिवर के शुभ गुण गावें।।४९।।

ॐ ह्रीं वचनबल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खड्गासन ठाड़े गर्मी-जाड़े, कष्ट नहीं कोई पावें।
तप की यह शक्ति देवे मुक्ती, अतिशय ऋद्धी दिखलावे।।
है ऋद्धी पावन जन मन भावन, मुनिवर ही इसको पावें।
ऋद्धी हम पावे ज्ञान जगावें, मुनिवर के शुभ गुण गावें।।४८।।

ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

मुनि तप की अग्नि जलावें, फिर सारे कर्म नशावें।
आमर्षौषधि ऋद्धीधारी, हैं सारे रोग निवारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।५१।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कफ लार थूक आ जावे, जो सारे रोग नशावे।
क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारी, हैं सारे रोग निवारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।५२।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में जल्ल स्वेद बनावे, वह शुभ औषधि बन जावे।
जल्लौषधि ऋद्धीधारी, हैं सारे रोग निवारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।५३।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्णादि जिह्वा का मल, बन जाए औषधि मंगल।
मल्लौषधि ऋद्धिधारी, हैं सारे दोष निवारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।५४।।

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन जाए मूत्र मल औषधि, हर लेवे पर की व्याधि।
विडौषधि ऋद्धीधारी, होते जग मंगलकारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।५५।।

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि तन जो छूवे वायु, नश रोग बढ़ावे आयु।
सर्वौषधि ऋद्धीधारी, हर लेते व्याधी सारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।५६।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्नादि में विष होवे, कहते मुनि से सब खोवे।
मुखनिर्विष ऋद्धीधारी, हर लेते व्याधी सारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।५७।।

ॐ ह्रीं मुखनिर्विषौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि में औषधि आवे, देखत ही जहर बिलावे।
दृश निर्विष औषधिधारी, हर लेते व्याधी सारी।।
हम पूजा करने आवें, चरणों में शीश झुकावें।
सब रोग शोक मिट जावें, आशीष आपका पावें।।५८।।

ॐ ह्रीं दृष्टि निर्विषौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तांटक छंद)

उत्तम तप करने से मुनिवर, ऐसी ऋद्धि पाते हैं।
मानव के कह दें मरने को, शीघ्र वहीं मर जाते हैं।।
करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते हैं।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।५९।।

ॐ ह्रीं आशीर्विष रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई गल्ती हो जाने पर, क्रोध यदि मुनि को आवे।
दृष्टी पड़ जावे यदि उस पर, शीघ्र मृत्यु को वह पावे।।
करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते हैं।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।६०।।

ॐ ह्रीं दृष्टिविष रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुक्ष आहार मुनि के कर में, हो जाता है क्षीर समान।
त्याग करें वह नित्य प्रति कुछ, मुनिवर हैं सद्‌गुण की खान।।
करुणा के धारी मुनिवर शुभ, कभी न ऐसा करते हैं।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।६१।।

ॐ ह्रीं दृष्टिविष रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुक्ष आहार मुनि के कर में, हो जाता है क्षीर समान।
त्याग करें वह नित्य प्रति कुछ, मुनिवर हैं सद्‌गुण की खान।।
करुणा के धारी मुनिवर जी, सब पर करुणा करते है।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।६१।।

ॐ ह्रीं क्षीरस्रावी रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवे रुक्ष आहार यदि कोई, हाथों में हो मधु समान।
त्याग त्याग कर भोजन करते, मुनिवर है सद्‌गुण की खान।।
करुणा के धारी मुनिवर जी, सब पर करुणा करते है।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।६२।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विष मिश्रित भोजन हाथों में, अमृतमय हो जाता है।
अमृतस्रावी ऋद्धिधर की, महिमा को बतलाता है।।
करुणा के धारी मुनिवर जी, सब पर करुणा करते है।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।६३।।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूक्ष आहार मुनि के कर में, घृत समान हो मधुर महान।
सर्पिस्रावि ऋद्धिधर की, होती है इससे पहिचान।।
करुणा के धारी मुनिवर जी, सब पर करुणा करते है।
देते हैं वरदान सभी को, औरों के दुख हरते हैं।।६४।।

ॐ ह्रीं सर्पिस्त्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

सुखद सुन्दर सुर तरु है, अशोक जिसका नाम है।
सौख्यकारी जगत जन का, शोक हरना काम है।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।६५।।

ॐ ह्रीं तरु अशोक सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर पुष्पवृष्टि कर रहे हैं, नृत्य करते भाव से।
हम पूजते हैं जिन प्रभु को, सभी मिलकर चाव से।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।६६।।

ॐ ह्रीं सुर पुष्पवृष्टि सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दिव्य ध्वनि खिरती प्रभु की, जगत में सुखकार है।
जो भव्य जीवों के लिए, शुभ धर्म की आधार है।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।६७।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुःषष्टि देवगण शुभ, चंवर ढौरें भाव से।
भक्ति करते नृत्य करके, सिर झुकाते चाव से।।

प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।६८।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठि सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सिंहासन है रत्न मण्डित, समवशरण के बीच में।
करें भक्ति भाव से जो, फँसें नहिं जग कीच में।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।६९।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अति प्रभा मण्डित भामण्डल, सूर्य को लज्जित करे।
जो सप्त भव दर्शाय भवि के, हर्ष से मन को भरे।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।७०।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर दुंदुभि बजती सुहावन, प्रभु के गुण गा रही।
देखकर जनता नगर की, गा रही हर्षा रही।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।७१।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शीश पर प्रभु के मनोहर, छत्र त्रय शुभ झूमते।
कर रहे हैं भक्ति आकर, देव पद को चूमते।।
प्रातिहार्य जिनेन्द्र पाए, चरण में उनके नमन।
यह अर्घ अर्पित मैं करूँ प्रभु, कर्म हों मेरे शमन।।७२।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत् प्रातिहार्य सहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा– **चौंसठ ऋद्धि पाय, प्रातिहार्य वसु पाए हैं।**
विशद मोक्ष को जाय, पूजा कर जिन देव की।।७३।।

ॐ ह्रीं चौसठ ऋद्धि अष्ट प्रातिहार्य सहिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप:-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– **नेमिनाथ के चरण में, झुका रहे हम माथ।**
गाते हैं जयमालिका, भक्तिभाव के साथ।।

(चौपाई छन्द)

नेमीनाथ दया के सागर, करुणाकर हे ज्ञान! उजागर।
प्रभु हैं जन-जन के हितकारी, ज्ञानी ध्यानी जग उपकारी।।
तीन काल तिय जग के ज्ञाता, जन-जन का प्रभु तुमसे नाता।
तुमने मोक्ष मार्ग दर्शाया, नर जीवन का सार बताया।।
सुर नर जिनको वन्दन करते, ऐसे प्रभु जग के दुख हरते।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी प्यारी, प्रभु जी आप हुए अवतारी।।
राजा समुद्र विजय के घर में, रानी शिवादेवी के उर में।
अपराजित से च्युत हो आये, शौरीपुर नगरी को पाए।।
श्रावण शुक्ला षष्ठी आई, शौरीपुर में जन्में भाई।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर-नर पशु मन में हर्षाए।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, शची ने प्रभु को गोद बिठाया।
माया मय शिशु वहाँ लिटाया, माता ने कुछ जान न पाया।।
क्षीर सिंधु से जल भर लाये, वसु योजन के कलश भराये।
पाण्डुक वन अभिषेक कराये, इन्द्रों ने तव चँवर ढुराये।।
शंख चिह्न दाएँ पग पाया, नेमिनाथ सुर नाम सुनाया।
आयु सहस्र वर्ष की पाई, चालीस हाथ रही ऊँचाई।।
श्याम वर्ण प्रभु तन का पाया, जग को अतिशय खूब दिखाया।
नारायण बलदेव से भाई, आन मिले जो हैं अधिकाई।।
कौतूहल वश बात ये आई, शक्ति किसमें अधिक है भाई।
कोई वीर बलदेव को कहते, कोई कृष्ण की हामी भरते।।
कोई शम्भू नाम पुकारे, कोई अनिरुद्ध के दते नारे।
नेमीनाथ का नाम भी आया, कुछ लोगों को नहीं ये भाया।।
ऊँगली कनिष्ठ मोड़ दिखलाई, सीधी करे जो वीर है भाई।
सब अपनी शक्ती अजमाए, कोई सीधी न कर पाए।।
हार मान योद्धा सिरनाये, श्री कृष्ण मन में घबड़ाए।

राज्य छीन न लेवे भाई, कृष्ण ने युक्ति एक लगाई।।
जल क्रीड़ा की राह दिखाई, पटरानी कई साथ लगाई।
नेमी जामवती से बोले, भाभी मेरी धोती धो ले।।
भाभी ने तब रौब जमाया, मैंने पटरानी पद पाया।
तुम भी अपना ब्याह रचाओ, रानी पा धोती धुलवाओ।।
मेरे पति चक्र के धारी, शंख बजाते विस्मयकारी।
तुमको जरा लाज नहिं आई, हमको छोटी बात सुनाई।।
रोम-रोम प्रभु का थर्राया, उनको सहन नहीं हो पाया।
आयुधशाला पहुँचे भाई, शैय्या नाग की प्रभु बनाई।।
पैर की उँगली को फैलाया, उस पर रख कर चक्र चलाया।
पीछे हाथ में शंख उठाया, नाक के स्वर से उसे बजाया।।
उससे तीन लोक थर्राया, श्री कृष्ण का मन घबड़ाया।
जाकर भाई को समझाया, उनके मन को धैर्य दिलाया।।
शादी की तब बात चलाई, जूनागढ़ पहुँचे फिर भाई।
उग्रसेन से कृष्ण सुनाए, राजुल नेमि से परणाएँ।।
उग्रसेन हर्षित हुए भारी, शीघ्र ब्याह कि कि तैय्यारी।
कृष्ण ने तब की मायाचारी, नृप बुलवाए मांसाहारी।।
नेमि दूल्हा बनकर आए, बाड़े में कई पशु रंभाए।
करुणा से नेमि भर आए, पूछा क्यों यह पशु बंधाए।।
इन पशुओं का मांस पकेगा, इन लोगों में हर्ष मनेगा।
सुनते ही वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलवाया।।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, गिरनारी जा दीक्षा धारे।
राजुल सुनकर के घबड़ाई, दौड़ प्रभु के चरणों आई।।
प्रभु को राजुल ने समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, बनी आर्यिका राजुल नारी।।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, पद्मासन से ध्यान लगाए।।
सहस एक नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए आहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन पाया! वरदत्त ने यह पुण्य कमाया।।
अश्विन सुदि एकम् दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
समवशरण मिल देव बनाए, दिव्य देशना प्रभु सुनाए।।

ग्यारह गणधर प्रभु ने पाए, वरदत्त उनमें प्रथम कहाए।
आषाढ़ शुक्ल आठें दिन भाई, ऊर्जयंत से मुक्ति पाई।।
सौख्य अनन्त प्रभु ने पाया, नर जीवन का सार बताया।
हम भी उस पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर मुक्ति पाएँ।।
ॐ ह्रीं सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

शांति मिले विशेष, रोग शोक चिंता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री नेमिनाथ की आरती

तर्ज-भक्ति बेकरार है...

नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।टेक।।

शौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, घर-घर मंगल छाया जी।
इन्द्र सुरेन्द्र महेन्द्र सभी ने, प्रभु का न्हवन कराया जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।१।।

नेमिकुंवर जी ब्याह रचाने, जूनागढ़ को आये जी।
पशुओं का आक्रन्दन लखकर, उनको तुरत छुड़ाए जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।२।।

मन में तब वैराग्य समाया, देख दशा संसार की।
राह पकड़ ली तभी प्रभु ने, महाशैल गिरनार की।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।३।।

पंच मुष्टि से केशलुंच कर, भेष दिगम्बर धारे जी।
कठिन तपस्या के आगे सब, कर्म शत्रु भी हारे जी।।

नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।४।।
केवलज्ञान जगाकर प्रभु ने, जग को राह दिखाई जी।
भवसागर को पार करूँ, यह 'विशद' भावना भाई जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।५।।

श्री नेमीनाथ चालीसा

दोहा- अरहंतादिक देव नव, का करके शुभ जाप।
चालीसा पढ़ते विशद, कट जाएँ सब पाप॥

(चौपाई छन्द)

जय जय नेमिनाथ जिन स्वामी, करुणाकर हे अन्तर्यामी।
अपराजित से चयकर आए, शौरीपुर नगरी शुभ पाए॥
कार्तिक शुक्ला षष्ठी जानो, गर्भ कल्याणक प्रभु का मानो।
राजा समुद्र विजय के प्यारे, शिवा देवी के राज दुलारे॥
श्रावण शुक्ला षष्ठी स्वामी, जन्म लिए प्रभु अन्तर्यामी।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर नर पशु भारी हर्षाए॥
इन्द्र स्वर्ग से चलकर आया, पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया।
शंख चिन्ह पग में शुभ गाया, नेमिनाथ सुर नाम बताया॥
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालिस हाथ रही ऊँचाई।
श्याम वर्ण तन का शुभकारी, प्रभुजी पाए मंगलकारी॥
पैर की उँगली से जिन स्वामी, चक्र चलाए शिवपथ गामी।
नाक के स्वर से शंख बजाया, जिससे तीन लोक थर्राया॥
कृष्ण तभी मन में घबड़ाए, शादी की तब बात चलाए।
जूनागढ़ की राजकुमारी, नाम रहा राजुल सुकुमारी॥
हुई ब्याह की तब तैय्यारी, हर्षित थे सारे नर-नारी।
श्रीकृष्ण तब युक्ति लगाए, मांसाहारी नृप बुलवाए॥
समुद्र विजय अति हर्ष मनाए, ले बरात जूनागढ़ आए।
नेमिनाथ दुल्हा बन आए, छप्पन कोटि बराती लाए॥
बाड़े में जब पशू रंभाए, करुणा से नेमी भर आए।

पूछा क्यों ये पशू बंधाएँ, श्री कृष्ण यह बात सुनाए॥
इन पशुओं का माँस पकेगा, इन लोगों को हर्ष मनेगा।
नेमिनाथ का मन घबड़ाया, करुणा भाव हृदय में छाया॥
उनके मन वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलवाया।
रथ को मोड़ चले गिरनारी, मन से होकर के अविकारी॥
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, नेमीश्वर जी दीक्षा धारे।
मन में परिजन दु:ख मनाए, नेमि कुँवर को सब समझाए॥
राजुल सुनकर के घबड़ाई, दौड़ प्रभू के चरणों आई।
उसने भी प्रभु को समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया॥
केश लुंचकर दीक्षा पाई, बनी आर्यिका राजुल भाई।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, प्रभुजी संयम को अपनाए॥
एक सहस नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए अहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन गाया, वरदत्त ने ये अवशर पाया॥
अश्विन सुदि एकम को स्वामी, केवलज्ञान पाए जग नामी।
समवशरण तव देव रचाए, प्रभू की जय जयकार लगाए॥
ग्यारह गणधर प्रभु के गाए, गणधर प्रथम वरदत्त कहाए।
चित्रा शुभ नक्षत्र बताया, मेघश्रृंग तरु का तल पाया॥
सर्वाह्ण यक्ष प्रभू का भाई, यक्षी कुष्मांडनी कहलाई।
ऋषी अठारह सहस बताए, चार सौ पूरब धारी गाए॥
ग्यारह सहस आठ सौ भाई, शिक्षक बतलाए शिवदायी।
पन्द्रह सौ थे अवधिज्ञानी, डेढ़ सहस थे केवलज्ञानी॥
ग्यारह सौ विक्रिया के धारी, नौ सौ विपुलमती अनगारी।
आठ सौ वादी मुनिवर गाये, पाँच सौ छत्तिस संग शिव पाए॥
अषाढ़ शुक्ला साते जिन स्वामी, पद्मासन से शिवपद गामी।
उर्जयन्त से शिव पद पाए 'विशद' चरण में शीश झुकाएँ॥

सोरठा चालीसा चालीस, पढ़े भाव से जो 'विशद'।
चरण झुकाकर शीश, अर्चा करते जीव जो॥
शांति में हो वास, रोग शोक चिन्ता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले॥

जाप्यः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥

प्रशस्ति

दोहा– भरत क्षेत्र के मध्य है, भारत देश महान।
वृषभादि चौबीस शुभ, जहाँ हुए भगवान।।
भारत में कई प्रान्त हैं, एक रहा गुजरात।
गरिमा से करता कई, देशों को भी मात।।
ऊर्जयन्त गिरनार गिरि, जग में रहा महान।
नेमिनाथ भगवान ने, पाया पद निर्वाण।।
वन्दन करके तीर्थ पर, मिलता है सुख चैन।
दर्शन करने को सभी, जाते जैन अजैन।।
काल दोष से या कहें, हुई है कोई भूल।
लोग धर्म से च्युत हुए, चले नहीं अनुकूल।।
वैष्णव मत के सन्त भी, पहुँचे दर्शन हेत।
जनता भी पहुँची वहाँ, निज परिवार समेत।।
संतों में लालच बढ़ा, काफी पाया दान।
बना लिया फिर वहीं पर, अपना निज स्थान।।
दत्तत्रय के नाम का, माने तीरथ धाम।
कब्जा जबरन कर लिया, चला न कोई पैगाम।।
साधु कई रहते वहाँ, लेकर के त्रिशूल।
नेमिनाथ के नाम से, हो जाते प्रतिकूल।।
उन प्रभु के गुणगान को, लिखा एक विधान।
पच्चिस सौ चौंतिस रहा, महावीर निर्वाण।।
जिला एक अजमेर है, प्रान्त है राजस्थान।
पावन वर्षा योग में, श्रावण मास महान।।
सोलह दिन के पक्ष में, सोलह हुए विधान।
भक्ति भाव से मिल किए, जिनवर का गुणगान।
नेमिनाथ विधान से, पूजा करके लोग।
बल बुद्धि वैभव सभी, का पावें संयोग।।
भूल चूक को भूलकर, पढ़े भाव के साथ।
कर्म नाश कर वह बने, शिवनगरी के नाथ।।

सोरठा– विशद भाव, नेमिनाथ पूजा करें।
पावें मुक्ति बास, अजर अमर पद को लहें।।
विशद भाव के साथ, नेमिनाथ पूजा करें।
पावें मुक्ति बास, अजर अमर पद को लहें।।

विशद
श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान
माण्डला

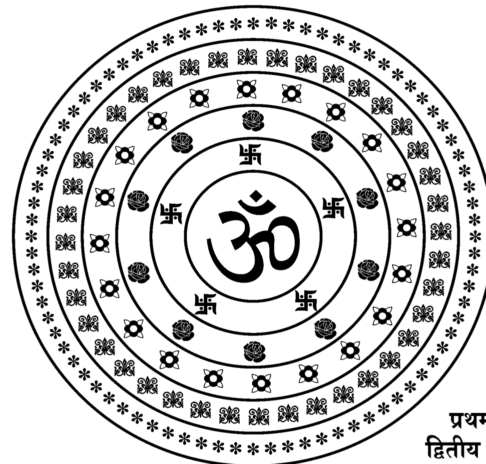

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 5 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 10 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 20 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 40 अर्घ्य
पंचम वलय में – 80 अर्घ्य
कुल 155 अर्घ्य

विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान करने का फल

1. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा के सामने यह विधान एवं जाप करने से मानसिक असंतुलन की बाधा दूर होगी।
2. जीवन में आने वाली शारीरिक बाधाऐं दूर होगी।
3. व्यवसाय में आने वाली बाधाऐं दूर होगी।
4. गृहस्थ जीवन में होने वाले कलह दूर होंगे।
5. यात्रा में आने वाली बाधाऐं दूर होंगी।
6. साधना में आने वाली बाधाऐं दूर होगी।
7. सन्तानों की प्राप्ति में आने वाले अवरोध दूर होगे।
8. शिक्षा में आने वाली बाधाऐं दूर होगी।
9. सेवा नौकरी में आने वाली बाधाऐं दूर होगी
10. अपने स्नेहीजनों से मिलने में आने वाला अवरोध दूर होगे।
11. जीवन सुखमय एवं समृद्ध बनेगा।

(नोट : रविव्रत के उद्यापन अवसर पर यह पूजन/विधान अवश्य करें।)

पार्श्वनाथाष्टक

श्यामो वर्ण विराजितेति विमले श्यामोऽपि सर्पो स्मृत:।
श्यामो मेघनिघर्घरोपि च घटाश्यामं च रात्र्यखिलं॥
वर्षा मूसलधारणं च मखिलं कायोत्सर्गेणतां।
धरणेन्द्रो पद्मावती युगसुरं श्री पार्श्वनाथं नम:॥1॥
नम: श्री पार्श्वनाथाय त्रैलोक्याधिपतेर्गुरु:।
पापं च हरते नित्यं पार्श्वतीर्थस्य दर्शनम्॥2॥
ॐ ऐं क्लीं श्री धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अतुल बल।
पराक्रमाय ऐं ह्रीं क्लीं क्म्ल्व्र्यूं नम:॥3॥
दर्शनं हरते पापं, दर्शनं हरते दुखं।
दर्शनं हरते रोगान्, व्याधिर्हरति दर्शनम्॥
ॐ आं क्रौ क्ष्म्ल्व्र्यूं नम:॥4॥
दर्शनाल्लभ्यते ज्ञानं, दर्शनाल्लभ्यते धनं।
दर्शनाल्लभ्यते पुत्रं, सुखी भवति दर्शनात्॥
ऐं ॐ अ: नम: बार नव जाद्धयं दीयते॥5॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रं, धनार्थी लभते धनं।
विद्यार्थी लभते विद्यां, सुखी भवति निश्चितं॥6॥
राज्य-मान्यं भवेन्नित्यं, प्रजानां च विशेषत:।
दुर्जनाश्च क्षयं यांति, श्रेयो भवति संकटे॥7॥
इदं स्तोत्रं पठेन्नित्यं त्रि-संध्यं च विशेषत:।
गृहे भवति कल्याणं पार्श्वतीर्थस्तवेन च॥8॥

॥ इति ॥

श्री पार्श्वनाथ पूजा विधान प्रारम्भ

(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो! हे पार्श्व प्रभो! मेरे मन मन्दिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शान्ती दर्शाओ॥
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभू नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से॥
हे! तीन लोक के नाथ प्रभू, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, है विशद भाव से आह्वानन॥

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गीता छन्द

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारिद हरते हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्र: श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं।
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्र: श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें प्रभु, चरणों में सिर धरते हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभू की पूजा करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के शुभ झरने झरते हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥4॥

ॐ रां रीं रूं रौं रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं।
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥5॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभू की आरति करते हैं।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मो से डरते हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ झां झीं झूं झौं झः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर आदि सुगन्धित, धूप दशांग मिलाये हैं।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं॥

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू श्री, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।
श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥8॥

ॐ खां खीं खूं खौं खः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥9॥

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूँ उ ह्रौं सा ह्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- माँ वामा के लाड़ले, विश्वसेन के लाल।
विघ्न विनाशक पार्श्व की, कहते हैं जयमाल॥

(छन्द नयन मालिनी)

चित् चिन्तामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते॥1॥
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते॥2॥
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते॥3॥
शान्ति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।

तीर्थंकर पद पूज्य नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते॥4॥
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम माथ नमस्ते॥5॥
जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते॥6॥
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नत्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते॥7॥
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते॥8॥

दोहा

भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।
सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ॥9॥

ॐ ह्रीं विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वलयः

दोहा पंचकलयाणक पाए है, पार्श्वनाथ भगवान।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने निज का ध्यान॥

अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो! हे पार्श्व प्रभो! मेरे मन मन्दिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शान्ति दर्शाओ॥
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से॥
हे! तीन लोक के नाथ प्रभू, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, है विशद भाव से आह्वानन॥

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पंचकल्याणक युत पार्श्व प्रभू की पूजा

(त्रिभगी छन्द)

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिए।
वसुदेव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए॥
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ॥1॥

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशि, कृष्णा की निशि काशी में अवतार लिया।
देवों ने आकर, वाद्य बजाकर, आनन्दोत्सव महत किया॥
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ॥2॥

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलि पौष एकदशि, व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया,
भा बारह भावन, अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया॥
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ॥3॥

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, तपकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहिक्षेत्र में कीन्ही मनमानी।
तब चैत अन्धेरी, चौथ सबेरी, आप हुए केवलज्ञानी॥
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ॥4॥

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातै सावन, अतिमन भावन, सम्मेद शिखर पे ध्यान किए।
वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए॥
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ॥5॥

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, विशद मोक्ष कल्याण।
प्राप्त किए जिन देव ने, तिनको करूँ प्रणाम॥6॥

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, पंचकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा दसधर्मों युत पार्श्व जिन, पूज रहे हम आन।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने को कल्याण॥

अथ द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो! हे पार्श्व प्रभो! मेरे मन मन्दिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शान्ति दर्शाओ॥
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से॥
हे! तीन लोक के नाथ प्रभू, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, है विशद भाव से आह्वानन॥

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दस धर्म युत पार्श्व प्रभू की पूजा

(चाल छन्द)

जो रंच क्रोध न लावें, मन में समता उपजावें।
हे! उत्तम क्षमा के धारी, जन जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम क्षमा धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके उर मान न आवे, मन समता में रम जावे।
हे! मार्दव धर्म के धारी, जन-जन के कल्याणकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम मार्दव धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुटिल भाव को त्यागें, औ सरल भाव उपजावें।
वे उत्तम आर्जव धारी, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम आर्जव धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन से मूर्छा त्यागें, और आत्म ध्यान में लागें।
वे उत्तम शौच के धारी, जन-जन के करूणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम शौच धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन में हो सो भाषें, तन को उसमें ही राखें।
वे उत्तम सत्य के धारी, जन-जन के करूणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम सत्य धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो इन्द्रिय मन संतोषें, षटकाय जीव को पोषें।
वे उत्तम संयम धारी, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥6॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम संयम धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादश विध तप धारें, वसु कर्मों को निरवारें।
वे उत्तम तप के धारी, जन-जन के करूणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥7॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम तप धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्य नहीं अपनावें, चेतन में ही रमजावें।
वे त्याग धर्म के धारी, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥8॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम त्याग धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो किचिंत् राग न लावें, वो वीतरागता पावें।
वे आकिञ्चन व्रत धारी, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥9॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम आकिञ्चन धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो निज पर तिय के त्यागी, शुभ परम ब्रह्म अनुरागी।
वे ब्रह्मचर्य व्रत धारी, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥10॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सत् चेतन चित्धारी, निज आतम ब्रह्म बिहारी।
वे क्षमा आदि वृषधारी, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥11॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम क्षमादि धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा तीर्थंकर पद पाये प्रभु, षोड़श भावना धार।
पार्श्वनाथ जिनराज जी, हुऐ विभव से पार॥

(अथ तृतीय वलयोपरि पुष्पाजंलि क्षिपेत्)

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो! हे पार्श्व प्रभो! मेरे मन मन्दिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शान्ति दर्शाओ॥
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से॥
हे! तीन लोक के नाथ प्रभू, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, है विशद भाव से आह्वानन॥

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

4 आराधना 16 कारण भावना युत पार्श्व प्रभू की पूजा

(गीता छन्द)

पच्चीस दोष विमुक्त शुभ, अष्टांग सद्दर्शन कह्यो।
जिनदेव आगम मुनिवरों में, हृदय से श्रद्धा गह्यो।
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरू, भव सुखों की खान है।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शनाराधनाय सर्व बंधन विमुक्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री द्वादशांग जिनेन्द्र वाणी अष्टांगमय निर्दोष है।
सम्यक् विभूषित आत्म ज्योती, ज्ञान गुण की कोष है।।
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरू, भव सुखों की खान है।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्ज्ञानाराधनाय सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों महाव्रत समिति गुप्ती, मन वचन औ काय हो।
तेरह विधी चारित्र पालें, हृदय से हर्षाय हो।।
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरू, भव सुखों की खान है।।3।।

ॐ ह्रीं तेरह विधि शुद्ध सम्यक्चारित्राराधनाय सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् विधी तप तपे द्वादश, बाह्य अभ्यंतर सभी।
निज कर्म क्षय के हेतु तपते, चाह न रखते कभी।।
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरु, भव सुखों की खान है।।4।।

ॐ ह्रीं द्वादश विधि शुद्ध सम्यक्तपाराधनाय सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धी भावना शुभ, दोष बिन निर्मल सही।
यह मोक्ष बट का बीज उत्तम, या बिना नहिं शिव मही।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
दर्शन विशुद्धि भावना शुभ, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित दर्शन विशुद्धि भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये विनय गुण सद्धर्म का शुभ, मूल तुम जानो सही।
बिन विनय किरिया धर्म की, इस लोक में निष्फल कही।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा-मंगल रूप है।
पाऊँ विनय सम्पन्नता जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित विनय सम्पन्न भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्दोष अष्टादश सहस व्रत, शील का पालन महा।
अतिचार रहित सुव्रतों की शुभ, भावना में रत रहा।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
शीलव्रत अनतिचार है जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित अनतिचार शीलव्रत भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिश्रुत अवधि सुज्ञान मन, पर्यय तथा केवल कहा।
सद्ज्ञान के उपयोग में, जिनका सु मन नित रत रहा।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
जजूं ज्ञानोपयोग ऽभीक्ष्ण जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो धर्म औ सद्धर्म फल में, हर्ष मय संयुक्त हैं।
जो जगत दुख मय जानकर, विषयों से पूर्ण विरक्त हैं।।

जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
जजूं भाव संवेगता जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित संवेग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये पाप को गिरि के तोड़ने को, सुतप वज्र समान है।
तप ही भवोदधि पार हेतू, विमल अमन विमान है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
जजूं सम्यक् तप हृदय से, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।10।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित शक्तिस्तप भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है राग आग जलाय सद्गुण, त्याग जग सुखदाय है।
भवि त्याग भाव जगाय उर में, यही मोक्ष उपाय है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
जजूं त्याग सुभावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।11।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित शक्तिस्त्याग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

या विधि मुनिन को सुख बढ़े, साधू समाधि जानिए।
उपसर्ग परीषह राग भय, बाधा सभी कुछ हानिए।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
जजूं साधु समाधि भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।12।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित साधु समाधि भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु जन की साधना के, विघ्नसारे टालकर।
साधना में हो सहायक, भाव शुभम् संभालकर।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
जजूं वैय्यावृत्ति भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।13।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित वैय्यावृत्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशयसु चौंतिस प्रातिहार्य, अनन्त चतुष्टय जानिए।
छियालीस गुण संयुक्त निर्मल, भक्ति भाव प्रमानिए।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
जजूं अर्हत् भावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।14।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित अर्हद् भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन सुज्ञान चारित्र तप, अरु वीर्य पंचाचार हैं।
छत्तीस गुण संयुक्त गुरु की, भक्ति जग में सार है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
जजूं आचार्य भक्ति भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।15।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित आचार्य भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान द्वादश अंग चौदस, पूर्व धारी जिन मुनी।
पढ़ते-पढ़ाते मुनिवरों को, उपाध्याय भक्ति गुणी।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
जजूं बहुश्रुत भक्ति भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।16।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्याद्वाद युत अनेकांतमय, जिनदेव की वाणी कही।
जो है प्रकाशक चराचर की, विमल जिन वाणी रही।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
जजूं प्रवचन भक्ति भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित प्रवचन भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता सुवन्दन प्रतिक्रमण, व्युत्सर्ग प्रत्याख्यान है।
स्तव सहित षट् कर्म पालन, से ही निज कल्याण है।।

जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
जजूं आवश्यक अपरिहार जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥18॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित आवश्यकापरिहार्य भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह का तम सघन जग में, कठिन जिसका पार है।
जिन मार्ग का उद्योत करना, मोक्ष मारग सार है॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
जजूं मार्ग प्रभावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥19॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित मार्ग प्रभावना भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव की वाणी सुनिर्मल, मोक्ष की दातार है।
वात्सल्य प्रवचन शास्त्र में हो, यही सुख आधार है॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
जजूं वात्सल्य भावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥20॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित वात्सल्य भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त दर्शन ज्ञान चारित, सद्गुणों के कोष हैं।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र जग में, विघ्नहर निर्दोष हैं॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं भाऊँ सोलह भावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥21॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित चऊ आराधना दर्शन विशुद्ध आदि षोडश भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा इन्द्र पूजते जिन चरण और कुमारी अष्ट।
पार्श्वनाथ के पद युगल मिट जाये सब कष्ट॥

अथ चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्

पार्श्व प्रभू की पूजा

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो! हे पार्श्व प्रभो! मेरे मन मन्दिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शान्ति दर्शाओ॥
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से॥
हे! तीन लोक के नाथ प्रभू, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, है विशद भाव से आह्वानन॥

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

32 इन्द्र एवं 8 कुमारी द्वारा पूजित

(अर्ध जोगी रासा छन्द)

असुर इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजन करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥1॥

ॐ ह्रीं असुर कुमारेण सपरिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाग इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥2॥

ॐ ह्रीं नागेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥3॥

ॐ ह्रीं विद्युतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपर्णेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥4॥

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥5॥

ॐ ह्रीं अग्निइन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मारुतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के पद पंकज को ध्यावे॥6॥

ॐ ह्रीं मारुतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तनितेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥7॥

ॐ ह्रीं स्तनितेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागरेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥8॥

ॐ ह्रीं सागरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपइन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥9॥

ॐ ह्रीं दीपइन्द्र सपरिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक्सुरेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥10॥

ॐ ह्रीं दिक्सुरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किन्नरेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥11॥

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किम्पुरुषेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥12॥

ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महोरगेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥13॥

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धर्व इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥14॥

ॐ ह्रीं गन्धर्व इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥15॥

ॐ ह्रीं यक्ष इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षस इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥16॥

ॐ ह्रीं राक्षस इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥17॥

ॐ ह्रीं भूत इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिशाचेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥18॥

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥19॥

ॐ ह्रीं चन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवी इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥20॥

ॐ ह्रीं रवि इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्म इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥21॥

ॐ ह्रीं सौधर्म इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईशान इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥22॥

ॐ ह्रीं ईशान इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सानतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥23॥

ॐ ह्रीं सानतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र इन्द्रपरिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥24॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥25॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥26॥

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥27॥

ॐ ह्रीं शुक्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥28॥

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥29॥

ॐ ह्रीं आनतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥30॥

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥31॥

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥32॥

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥33॥

ॐ ह्रीं श्री देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ह्री देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥34॥

ॐ ह्रीं ह्री देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धृति देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥35॥

ॐ ह्रीं धृति देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कीर्ति देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥36॥

ॐ ह्रीं कीर्ति देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥37॥

ॐ ह्रीं बुद्धि देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥38॥

ॐ ह्रीं लक्ष्मी देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥39॥

ॐ ह्रीं शान्ति देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्टि देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥40॥

ॐ ह्रीं पुष्टि देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव इन्द्र वसु देवियाँ, जिन पूजन करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे॥41॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत इन्द्र एवं अष्ट कुमारिका परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा होती पूरी आस है, पार्श्वनाथ के पास।
मंगलमय जीवन बने, होवे मुक्तीवास॥

अथ पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो! हे पार्श्व प्रभो! मेरे मन मन्दिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शान्ति दर्शाओ॥
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से॥
हे! तीन लोक के नाथ प्रभू, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, है विशद भाव से आह्वानन॥

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

64 ऋद्धि 8 प्रातिहार्य 8 गुण युक्त पार्श्वप्रभु

तर्ज-रंगमा-रंगमा (परदेशी-परदेशी....)

तीन लोग तिहुँ काल के सुन भाई रे!
सकल द्रव्य को जाने हो जिन भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
केवल बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥1॥

ॐ ह्रीं केवल बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर के मन की बात को जाने भाई रे!
मनः पर्यय बुद्धि ऋद्धि धर भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
मनः पर्यय ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥2॥

ॐ ह्रीं मनःपर्यय बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुद्गल परमाणु को भी जाने भाई रे!
अवधि ऋिद्धि को धार मुनीश्वर भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अवधि बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥3॥

ॐ ह्रीं अवधि बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरी कोष्ठ में वस्तु अनेकों भाई रे!
शब्द अर्थ मय कोष्ठ ऋद्धि धर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
कोष्ठ बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥4॥

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीज बोय तो धान अधिक हो भाई रे!
बीज ऋद्धि में सार ग्रन्थ को गाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
बीज बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥5॥

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगपद बहु शब्दों की सुनकर भाई रे!
सर्व का धारण हो जावे मन भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
संभिन्न-श्रोतृ ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥6॥

ॐ ह्रीं संभिन्न-श्रोतृ ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लखें एक पद जैन मुनीश्वर भाई रे!
सब ग्रन्थों का सार कहे सुन भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
पदानुसारि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥7॥

ॐ ह्रीं पदानुसारिणी बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव योजन से दूर की सुन भाई रे!
स्पर्शन की शक्ती ऋषिवर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दूरस्पर्शन ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥8॥

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शन बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ योजन से दूर की सुन भाई रे!
रसस्वाद की शक्ती ऋषिवर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दूरास्वादन ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥9॥

ॐ ह्रीं दूरास्वादन ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ योजन से दूर की सुन भाई रे!
गन्ध ग्रहण की शक्ति ऋषिवर भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दूर गन्ध ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥10॥

ॐ ह्रीं दूरगन्ध ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दौ सौ सेंतालिस सहस तिरेसठ भाई रे!
योजन दृष्टी को बल ऋषिवर पाई रे!

विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दूरावलोकन ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥11॥

ॐ ह्रीं दूरावलोकन ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश योजन दूर को सुन भाई रे!
दूरश्रवण ऋद्धी ऋषिवर ने पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दूर श्रवण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥12॥

ॐ ह्रीं दूरश्रवण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम पूर्वधर सब विद्याएँ पाई रे!
लौकिक इच्छा कुछ न ऋषिवर चाही रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दशम पूर्व ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥13॥

ॐ ह्रीं दशम पूर्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब धारण तप से पाई रे!
चरण कमल में मन वच तन सिरनाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
चौदह पूर्व ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥14॥

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भौम अंग स्वर व्यंजन लक्षण भाई रे!
अष्टांग निमित्त, बुद्धी ऋद्धीधर पाई रे॥
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अष्टांग-निमित्त ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥15॥

ॐ ह्रीं अष्टांग निमित्त बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवादिक के भेद पढ़े बिन गाई रे!
अंग पूर्व का ज्ञान मुनी समझाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
प्रज्ञा श्रवण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥16॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रवण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर पदार्थ तें जीव भिन्न हैं भाई रे!
याते पर की चाहत मेटो भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
प्रत्येक-बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥17॥

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परवादी ऋषिवर के सम्मुख आई रे!
स्याद्वाद कर किया पराजित भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
वादित्य ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥18॥

ॐ ह्रीं वादित्य बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल के ऊपर थल वत् चालें भाई रे!
जल जन्तू का घात न होवे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
जल चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥19॥

ॐ ह्रीं जल चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ अंगुल भू ऊपर चालें भाई रे!
क्षण में बहु योजन तक जावे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
जंघा चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥20॥

ॐ ह्रीं जंघा चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मकड़ी के तन्तू पर चालें भाई रे!
भार से तन्तू भी न टूटे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
तन्तू चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥21॥

ॐ ह्रीं तंतुचारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प के ऊपर गमन करें सुन भाई रे!
पुष्प जीव को बाधा न हो भाई रे!

विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
पुष्प चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥22॥

ॐ ह्रीं पुष्प चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पत्रों के ऊपर गमन करें सुन भाई रे!
पत्र जीव को बाधा न हो भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
पत्र चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥23॥

ॐ ह्रीं पत्र चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीजन पे मुनि गमन करें सुन भाई रे!
बीज जीव को बाधा ना हो भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
बीजा चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥24॥

ॐ ह्रीं बीज चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेणी वत् मुनि गमन करे सुन भाई रे!
षट्काय जीव की घात न होवे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
श्रेणी चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥25॥

ॐ ह्रीं श्रेणी चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि शिखा पे गमन करें सुन भाई रे!
अग्नि शिखा भी हिले नहीं सुन भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अग्नी चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥26॥

ॐ ह्रीं अग्नि चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्युत्सर्गादी आसन से मुनि भाई रे!
गमन करें नभ माहिं ऋषीश्वर भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
नभ चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥27॥

ॐ ह्रीं नभ चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणु समान काया हो जावे भाई रे!
कमल तन्तु पर निराबाध तिष्ठाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अणिमा ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे!॥28॥

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लख योजन तन की ऊँचाई भाई रे!
नरपति का वैभव उपजावे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
महिमा ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे!॥29॥

ॐ ह्रीं महिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया विशाल मुनि जन-जन को दिखलाई रे!
अर्क तूल सम हल्का तन हो भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
लघिमा ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे!॥30॥

ॐ ह्रीं लघिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया सूक्ष्म मुनि सब जन को दिखलाई रे!
इन्द्रादिक के द्वारा न हिल पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
गरिमा ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे!॥31॥

ॐ ह्रीं गरिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य चन्द्र ग्रह मेरुगिरि सुन भाई रे!
भू पर रह स्पर्श करें मुनि भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
प्राप्ति ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे!॥32॥

ॐ ह्रीं प्राप्ति ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु विधि रूप बनाते मुनिवर भाई रे!
पृथ्वी में जल वत् धस जावें भाई रे!

विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
प्राकाम्य ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे!।।33।।

ॐ ह्रीं प्राकाम्य ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक की प्रभुता मुनिवर पाई रे!
इन्द्रादिक सब शीश झुकाते भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
ईशत्व ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे!।।34।।

ॐ ह्रीं ईशत्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके वल्लभ गुण के दाता भाई रे!
तीन लोक दर्शन करके वश हो जाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
वशित्व ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।35।।

ॐ ह्रीं वशित्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत माहिं निकस जावें मुनि भाई रे!
रूकें नहीं काहू से मुनिवर भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अप्रतिघात ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।36।।

ॐ ह्रीं अप्रतिघात ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके देखत प्रच्छन्न होवें भाई रे!
मुनि को जाते कोई देख न पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अन्तर्धान ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।37।।

ॐ ह्रीं अन्तर्धान ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वांछित बहु रूप बनावें भाई रे!
कामरूपिणी विद्या मुनिवर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
कामरूप ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।38।।

ॐ ह्रीं कामरूप ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशनादि तप करके अधिक बढ़ाई रे!
उग्र तपोऋद्धि तें ऋषिवर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
उग्र तपो ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।39।।

ॐ ह्रीं उग्र तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशनादि कर क्षीण भयो तन भाई रे!
दीप्त तपो ऋद्धि में दीप्ति पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दीप्त सुतप ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।40।।

ॐ ह्रीं दीप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहार करत नीहार न होवे भाई रे!
तन में शुष्क हो तप ऋद्धि तें भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
तप्त सुतप ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।41।।

ॐ ह्रीं तप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रस नाड़ी में सबनि जीव के भाई रे!
सबहि भाव की जानन शक्ती पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
महातपो ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।42।।

ॐ ह्रीं महातपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग व्यथा अनशनादि मुनि पाई रे!
ध्यान व्रतों से डिगें नहीं ऋषि भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
घोर तपो ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।43।।

ॐ ह्रीं घोर तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्ट सतावें ऋषिवर को सुन भाई रे!
मरी आदि भय आवे जग में भाई रे!

विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
घोर पराक्रम ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।44।।

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अघोर ब्रह्मचर्य धारी हो ऋषि भाई रे!
सर्व रोग मिट जावे मुनि ठहराई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।45।।

ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचर्य तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान के सब अक्षर को भाई रे!
मन में अर्थ विचारि मुहूर्त में पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
ऋषि मनबल ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।46।।

ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान को पाठ मुहूर्त में भाई रे!
कण्ठ में खेद न होवे करके भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
ऋषि वचन बल ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।47।।

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक ऊँगली तें मुनि हिलाई रे!
गर्व करें नहिं बल को जिन मुनिराई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
काया बल ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।48।।

ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिवर के चरणों की रज भाई रे!
हरती सारे रोग क्षणिक में भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
आमर्षौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।49।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि को थूक खखार लगत सुन भाई रे!
मिटते सारे रोग तुरत ही भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
क्ष्वेल्लौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।50।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेल्लोषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर तन की स्वेद युक्त रज भाई रे!
सर्व व्याधि स्पर्श किए नश जाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
जल्लौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।51।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दंत नासिका अंगों का मल भाई रे!
सर्व रोग को क्षण में देय नशाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
मल्लौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।52।।

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्य मूत्र मल मुनि के तन का भाई रे!
नाना व्याधि को क्षण में देय नशाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
विडौषधी ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।53।।

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि तन से स्पर्शित चले हवाई रे!
आधि व्याधि को क्षण में देय नशाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
सर्वौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।54।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि के कर में विष अमृत हो भाई रे!
वचन सुनत मूर्छित निर्विष हो भाई रे!

विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
आस्य विषौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥55॥

ॐ ह्रीं आस्य विषौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्पादिक का जहर व्याप्त तन भाई रे!
मुनि की दृष्टि पड़त दूर हो जाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दृष्टि विषौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥56॥

ॐ ह्रीं दृष्टि विषौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर क्रोध से कहते तू मर जाई रे!
सुनकर प्राणी तुरन्त ही मर जाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
आशीर्विष ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥57॥

ॐ ह्रीं आशीर्विष ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध दृष्टी मुनि की पड़ जावे भाई रे!
दृष्टि पड़ते तुरन्त मर जावे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दृष्टी विष ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥58॥

ॐ ह्रीं दृष्टि विष ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे!
क्षीर युक्त सुस्वादु होवे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
क्षीर स्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥59॥

ॐ ह्रीं क्षीर स्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे!
मधु सम मिष्ठ सुगुण हो जावे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
मधुस्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥60॥

ॐ ह्रीं मधुस्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे!
घृत सम मिष्ठ सुगुण हो जावे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
घृतस्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥61॥

ॐ ह्रीं घृतस्रावी रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में विष अमृत होवे भाई रे!
वचनामृत सन्तुष्ट करें सुन भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अमृस्रावी ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥62॥

ॐ ह्रीं अमृस्रवी ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि आहार करें जाके घर भाई रे!
चक्रवर्ती की सेना तहँ पे जीमें भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अक्षीण संवास ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥63॥

ॐ ह्रीं अक्षीण संवास ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हाथ घर में मुनि तिष्ठे भाई रे!
ता घर चक्रवर्ती की सैन्य समाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अक्षीण महानस ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥64॥

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल टप्पा)

प्रातिहार्य जुत समवशरण की, शोभा दर्शाई।
तरु अशोक है, शोक निवारक, भविजन सुख दाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई॥65॥
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अशोक वृक्ष सत प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाभक्ति वश सुरपुर वासी, पुष्प लिए भाई।
पुष्प वृष्टि करते हैं मिलकर, मन में हर्षाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।66।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुपथ विनाशक सुपथ प्रकाशक, शुभ मंगल दाई।
दिव्य ध्वनी सुनते नर सुर पशु, हिरदय हर्षाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।67।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय अनुपम धवल मनोहर, सुन्दर सुखदाई।
चौंसठ चँवर ढुरें प्रभु आगे, अति शोभा पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।68।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं धवलोज्ज्वल चौसठ चँवर सत प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम वीर अतिवीर जिनेश्वर, जगत् पूज्य भाई।
रत्न जड़ित अतिशोभा मण्डित, सिंहासन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।69।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं रत्नजड़ित सिंहासन सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महत् ज्योति श्री जिनवर तन की, अतिशय चमकाई।
प्रभा पुँज युत प्रातिहार्य शुभ, भामण्डल पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।70।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं भामण्डल सत प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर्ष भाव से सुरगण मिलकर, बाजे बजवाई।
देव दुन्दुभी प्रातिहार्य शुभ, श्री जिनवर पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।71।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं दुन्दुभि सत प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़े कनक नग छत्र मणीमय, रत्न माल लपटाई।
तीन लोक के स्वामी हों, ज्यों छत्रत्रय पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।72।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सत प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्ट महाबली मोह कर्म का, नाश किए भाई।
निज अनुभव प्रत्यक्ष किए जिन, समकित गुण पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।73।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अनन्त सम्यक्त्व गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उभय लोक षट् द्रव्य अनन्ता, युगपद दर्शाई।
निरावरण स्वाधीन अलौकिक, 'विशद' ज्ञान पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।74।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु दर्शनावरण आदि सब, घातक कर्म नशाई।
सकल ज्ञेय युगपद अवलोके, उत्तम दर्श पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।75।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों ने शक्ती, आतम की खोई।
ते सब घात किए जिन स्वामी, बल असीम पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।76।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म के भेद अनेकों, नाश किए भाई।
चित्-स्वरूप चैतन्य जीव ने, सूक्ष्मत्व सुगुण पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।77।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक क्षेत्र अवगाह जीव के, संश्लेष पाई।
निज पर घाती कर्म नशाए, अवगाहन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।78।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अवगाहनत्व गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँच-नीच पद मैट निरन्तर, निज आतम ध्यायी।
उत्तम अगुरू-लघु गुण योगी, स्व-गुण प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।79।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अगुरु-लघुत्व गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य निरंजन भव भय भंजन, शुद्ध रूप ध्यायी।
अव्याबाध गुण प्रकट किए जिन, पूजों हर्षाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।80।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौसठ ऋद्धि धार मुनीश्वर, वसु गुण प्रगटाई।
प्रातिहार्य वसु पाये प्रभु ने, भविजन सुख दाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।81।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि धर अष्टगुण एवं अष्ट सत प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(धत्ता छन्द)

श्री पार्श्व जिनन्दा, श्री जिन चंदा, शिवसुख कंदा ज्ञान धरा।
हम पूजें ध्यावें, तव गुण गावें, मिट जावे मृत्यु जन्म जरा।।

।।पुष्पाजंलि क्षिपेत्।।

जाप 1. ॐ नमोऽर्हते भगवते सकल विघ्नहर ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वोपद्रव शांति, लक्ष्मी लाभं कुरु कुरु नमः स्वाहा।

2. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा **तीन योग से देव की, पूजा करूँ त्रिकाल।**
विघ्न विनाशक पार्श्व की, अब गाऊँ जयमाल।।

(हे दीन बंधु श्री पति...)

जय जय जिनेन्द्र पार्श्वनाथ देव हमारे,
जय विघ्न हरण नाथ भव दु:ख निवारे।।
जय-जय प्रसिद्ध देव का गुणगान मैं करूँ,
जय अष्ट कर्म मुक्त का शुभ ध्यान मैं करूँ।।1।।
छः महा पूर्व गर्भ के, नगरी को सजाया,
देवों ने सारे लोक में शुभ हर्ष मनाया।।
काशी नरेश विश्वसेन धर्म के धारी,
रानी थी वामादेवी, शुभ लक्षणा नारी।।2।।
प्राणत विमान से चये सुगर्भ में आये,

देवेन्द्र ने प्रसन्न हो बहु रत्न वर्षाये।
एकादशी को पौष कृष्ण जन्म जिन पाया,
आनन्द रहस देवों ने आके रचाया॥3॥
सौधर्म इन्द्र ऐरावत स्वर्ग से लाया,
पाण्डुक शिला में जाके अभिषेक कराया।
बालक के दायें पग में अहि चिन्ह था प्यारा,
पारस कुमार नाम ले सौधर्म पुकारा॥4॥
माता के हाथ सौंप दिए इन्द्र बाल को,
माता पिता प्रसन्न हुए देख लाल को।
बढ़ने लगे कुमार श्वेत चाँद के जैसे,
उपमा नहीं है कोई गुणगान हो कैसे॥5॥
करते कुमार क्रीडा मित्रों के साथ में
लेते कुमार को सभी अपने सु हाथ में॥
अष्टम बरस की उम्र में देशव्रत धारे,
रहने लगे कुमार जग में जग से भी न्यारे॥6॥
यौवन अवस्था देख पिता ब्याह की ठानी,
बोले कुमार चाहूँ मैं मोक्ष की रानी।
हाथी पे बैठ जंगल की सैर को गये,
देखे वहाँ पे जाके अचरज कई नये॥7॥
पञ्चाग्नि तप में तापसी खुद को तपा रहा,
लकड़ी में कई जीवों को वह जला रहा।
तापस से कहा पार्श्व ने क्यों जीव जलाते,
जलते हुए प्राणी सभी दुख वेदना पाते॥8॥
गुस्से में आके तापसी पारस से यूं बोला,
छोटे से मुख से बात बड़ी क्यों तू बोला।
पारस ने तापसी को विश्वास दिलाया,
लकड़ी को फाड़ते ही युगल नाग दिखाया॥9॥
नवकार मंत्र नाग युगल को सुना दिया,
जीवों ने जाके स्वर्ग लोक जन्म पा लिया।

वैराग्य पूर्ण दृश्य देख भावना भाये,
ब्रह्म ऋषि देव तब संबोधने आये॥10॥
तब देव चउ निकाय के वहाँ पालकी लाये,
शुभ पालकी में बैठ देव वन को सिधाए।
कर पंच मुष्टि केशलोंच महाव्रत धारे,
फिर पय के धन-दत्त गृह लिए आहारे॥11॥
देवों तभी पंच विधी रत्न वर्षाये,
अहो दान पात्र बोल देव हर्षाये।
जंगल में जाके पार्श्व प्रभु योग धर लिया,
पूरब के बैरी कमठ ने गौर कर लिया॥12॥
कीन्हा तभी उपसर्ग वहां आकर भारी,
यूं घोर अंधकार किया रात ज्यों कारी।
तीक्ष्ण तीव्र वेग वाली तब हवा चलाई,
प्रचण्ड और भयानक तब दाह लगाई॥13॥
सु रण्डन के चउ दिश में मुण्ड दिखाए,
मूसल की धार सम वहाँ मेघ बरसाए।
पद्मावती धरणेन्द्र तभी दर्श को आए,
शीश पे बिठाय छत्र फण का बनाए॥14॥
हार मान कमठ देव चरण झुक गया,
कैवल्य ज्ञान जिनवर को तभी हो गया।
भव्यों को उपदेश देके बोध जगाया,
जीवों का आपने शुभम् मार्ग दिखाया॥15॥
प्रभु स्वर्ण भद्रकूट तीर्थराज पर गये,
कर्म चउ अघातिया प्रभु वहाँ पे क्षये।
शुभ धीर-धारी धर्म धर पार्श्वनाथजी,
'विशद' भाव सहित झुके चरण माथ जी॥16॥

(धत्ता छन्द)

श्री पार्श्व जिनेशा, नाग नरेशा, नमित महेशा भक्ति भरा।
मन, वच, तन ध्यावें, हर्ष बढ़ावें, मंगलमय हो पूर्णधरा।।

ॐ ह्रीं सकल विघ्नहराय अनन्त चतुष्टय केवलज्ञान लक्ष्मी संयुक्ताय परम पवित्राय सर्वकर्म रहिताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथाय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पार्श्व प्रभु के चरण में, भक्ति सहित झुक जाय।
विशद ज्ञान पाके शुभम्, स्वयं पार्श्व बन जाय।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

प्रभू पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।
आतरी उतारूँ थारी मूरत निहारूँ।
प्रभु कर दो भव से पार आज थारी.... टेक
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आंखों के तारे।
जन्मे है काशीराज-आज थारी....।।1।।
बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्नविनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज आज थारी....।।2।।
नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभू उपकार आज थारी....।।3।।
दीन बन्धु हे! केवलज्ञानी, भव दुःख हर्त्ता शिव सुख दानी।
करो जगत उद्धार आज थारी....।।4।।
'विशद' आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन-जन के सुखकार आज थारी....।।5।।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा चालीसा गाते यहाँ, होके नत अभिराम।
पार्श्वनाथ जिनराज के, पद में करूँ प्रणाम।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हिताकरी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पञ्चाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।
नाग युगल मृत्यु को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम था देव ने पाया।।
प्रभु बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहिक्षेत्र में ध्यान लगाए।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।
धरणेन्द्र पद्मावती आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का क्षत्र लगाया भाई।
चैत कृष्ण को चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।

प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयं भू गाए।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए।।
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ति पाई।।
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।
भक्ति से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते।।
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ।
पार्श्वप्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।।
'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।

दोहा पाठ करें चालीसा दिन, दिन में चालीस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख-शांति सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्या श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे मध्य प्रदेशे श्योपुर नगरे स्थित 1008 श्री पार्श्वनाथ जिनालय मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2530 वि.सं. 2061 मासोत्तम मासे चैत्र मासे शुक्लपक्षे त्रयोदशां श्री पार्श्वनाथ विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः

विघ्न विनाशक 1008
श्री महावीर पूजन विधान

माण्डला

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 4 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 8 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 16 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 32 अर्घ्य
पंचम वलय में – 64 अर्घ्य
कुल 124 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

महावीराष्टक स्तोत्र

(चौबोला छन्द)

ज्ञानादर्श में युगपद दिखते, जीवाजीव द्रव्य सारे।
व्यय, उत्पाद, ध्रौव्य प्रतिभाषित, अंत रहित होते न्यारे॥
जग को मुक्ति पथ प्रकटाते, रवि सम जिन अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी॥1॥
नयन कमल झपते नहिं दोनों, क्रोध लालिमा से भी हीन।
जिनकी मुद्रा शांत विमल है, अंतर बाहर भाव विहीन॥
क्रोध भाव से रहित लोक में, प्रगटित हैं अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी॥2॥
नमित सुरों के मुकुट मणि की, आभा हुई है कांतिमान।
दोनों चरण कमल की भक्ति, भक्तजनों को नीर समान॥
दु:खहर्ता सुखकर्त्ता जग में, जन-जन के अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी॥3॥
हर्षित मन होकर मेढ़क ने, जिन पूजा के भाव किए।
क्षण में मरकर गुण समूह युत, देवगति अवतार लिए॥
क्या अतिशय नर भक्ती आपकी, करके हो अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी॥4॥
स्वर्ण समा तन को पाकर भी, तन से आप विहीन रहे।
पुत्र नृपति सिद्धारथ के हैं, फिर भी तन से हीन रहे।
राग द्वेष से रहित आप हैं, श्री युत हैं अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी॥5॥
जिनके नयनों की गंगा शुभ, नाना नय कल्लोल विमल।
महत् ज्ञान जल से जन-जन को, प्रच्छालित कर करे अमल॥
बुधजन हंस सुपरिचित होकर, बन जाते अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी॥6॥
तीन लोक में कामबली पर, विजय प्राप्त करना मुश्किल।
लघु वय में अनुपम निज बल से, विजय प्राप्त कर हुए विमल॥
सुख शांति शिव पद को पाकर, आप हुए अंतर्यामी।

ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी॥7॥
महामोह के शमन हेतु शुभ, कुशल वैद्य हो आप महान्।
निरापेक्ष बंधु हैं सुखकर, उत्तम गुण रत्नों की खान॥
भव भयशील साधुओं को हैं, शरण भूत अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम् नयनों के पथगामी॥8॥

दोहा

भागचंद भागेन्दु ने, भक्ती भाव के साथ।
महावीर अष्टक लिखा, झुका चरण में माथ॥
पढ़े सुने जो भाव से, श्रेष्ठ गति को पाय।
भाषा पढ़के काव्य की, 'विशद' वीर बन जाये॥

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज : आनन्द अपार है....)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबिम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है।टेक॥
दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी॥1॥जिनवर का...!
मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभू जी, द्वार आपके आए हैं॥2॥जिनवर का...!
शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी॥3॥जिनवर का...!
हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं॥4॥जिनवर का...!
नैय्या पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिरनाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, सादर शीश झुकाते हैं॥5॥जिनवर का...!
जिनवर का....!

श्री महावीर स्वामी पूजन

स्थापना

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ॥
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ती भाव से हे भगवन्!, यह भाव सुमन कर में लाए॥
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

क्षण भंगुर यह जग जीवन है, तृष्णा जग में भटकाती है।
स्वाधीन सुखों से दूर करे, निज आत्म ज्ञान विसराती है॥
मैं प्रासुक जल लेकर आया, प्रभु जन्म मरण का नाश करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥1॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन केसर की गंध महा, मानस मधुकर महकाती है।
आतम उससे निर्लिप्त रही, शुभ गंध नहीं मिल पाती है॥
शुभ गंध समर्पित करता हूँ, आतम में गंध सुवास भरो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥2॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं सर्व निर्व. स्वाहा।

हमने जो दौलत पाई है, क्षण-क्षण क्षय होती जाती है।
अक्षय निधि जो तुमने पाई, प्रभु उसकी याद सताती है॥

मैं अक्षय अक्षत लाया हूँ, अब मेरा न उपहास करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥3॥

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

हे प्रभो! आपके तन से शुभ, फूलों सम खुशबू आती है।
सारे पुष्पों की खुशबू भी, उसके आगे शर्माती है॥
मैं पुष्प मनोहर लाया हूँ, मम् उर में धर्म सुवास भरो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥4॥

ॐ र्‍रां र्‍रीं र्‍रूँ र्‍रौ र्‍रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्व. स्वाहा।

भर जाता पेट है भोजन से, रसना की आश न भरती है।
जितना देते हैं मधुर मधुर, उतनी ही आश उभरती है॥
नैवेद्य बनाकर लाये हम, न मुझको प्रभू निराश करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥5॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मैं सोच रहा सूरज चंदा, दीपक से रोशनी आती है
हे प्रभू! आपकी कीर्ति से, वह भी फीकी पड़ जाती है॥
मैं दीप जलाकर लाया हूँ, मम् अन्तर में विश्वास भरो॥
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥6॥

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

जीवों को सदियों से भगवन्, कर्मों की धूप सताती है।
कर्मों के बन्धन पड़ने से, न छाया हमको मिल पाती है॥
यह धूप चढ़ाता हूँ चरणों, मम् हृदय प्रभू जी वास करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥7॥

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, न तृप्ति हमें मिल पाती है।
यह फल तो सारे निष्फल हैं, माँ जिनवाणी यह गाती है॥

इस फल के बदले मोक्ष सुफल, दो हमको नहीं उदास करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥8॥

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

हम राग द्वेष में अटक रहे, ईर्ष्या भी हमे जलाती है।
जग में सदियों से भटक रहे, पर शांति नहीं मिल पाती है॥
हम अर्घ्य बनाकर लाए हैं, मन का संताप विनाश करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो॥9॥

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूँ उ ह्रौं सा ह्रः सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याण के अर्घ्य

(चौपाई)

अषाढ़ शुक्ल की षष्ठी आई, देव रत्नवृष्टि करवाई।
देव सभी मन में हर्षाए, गर्भ में वीर प्रभू जब आए॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बंधन विमुक्त विघ्न विनाशक अषाढ़ शुक्ल षष्ठ्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत शुक्ल की तेरस आई, सारे जग में खुशियाँ छाई।
प्रभू का जन्म हुआ अतिपावन, सारे जग में जो मन भावन॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बंधन विमुक्त विघ्न विनाशक चैत शुक्ल त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मार्ग शीर्श दशमी वदि आया, मन में तव वैराग्य समाया।
सारे जग का झंझट छोड़ा, प्रभू ने जग से मुँह को मोड़ा॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बंधन विमुक्त विघ्न विनाशक मार्गशीर्श कृष्ण दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वैशाख शुक्ल दशमी शुभ आई, पावन मंगल मय अति भाई।
प्रभू ने केवल ज्ञान जगाया, इन्द्र ने समवशरण बनवाया॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बंधन विमुक्त सर्वविघ्न विनाशक वैशाख शुक्ल दशम्यां केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कार्तिक की शुभ आई अमावस, प्रभू ने कर्म नाश कीन्हें बस।
हम सब भक्त शरण में आये, मुक्ति गमन के भाव बनाए॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बंधन विमुक्त सर्वविघ्न विनाशक कार्तिक कृष्ण अमावस्यायां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा

तीन लोक के नाथ को, वन्दन करूँ त्रिकाल।
महावीर भगवान की, गाता हूँ जयमाल॥

(आर्या छन्द)

हे वर्धमान! शासन नायक, तुम वर्तमान के कहलाए।
हे परम पिता! हे परमेश्वर! तव चरणों में हम सिर नाए॥

छंद ताटंक

नृप सिद्धारथ के गृह तुमने, कुण्डलपुर में जन्म लिया।
माता त्रिशला की कुक्षी को, आकर प्रभू ने धन्य किया॥
सत् इन्द्रों ने जन्मोत्सव पर, मंगल उत्सव महत किया।
पाण्डुक शिला पर ले जाकर के, बालक का अभिषेक किया॥
दायें पग में सिंह चिन्ह लख, वर्धमान शुभ नाम दिया।
सुर नर इन्द्रों ने मिलकर तब, प्रभू का जय जयकार किया॥
नन्हा बालक झूल रहा था, पलने में जब भाव विभोर।
चारण ऋद्धी धारी मुनिवर, आये कुण्डलपुर की ओर॥
मुनिवर का लखकर बालक को, समाधान जब हुआ विशेष।
सन्मति नाम दिया मुनिवर ने, जग को दिया शुभम् सन्देश॥
समय बीतने पर बालक ने, श्रेष्ठ वीरता दिखलाई।
वीर नाम की देव ने पावन, ध्वनी लोक में गुंजाई॥
कुछ वर्षों के बाद प्रभू ने, युवा अवस्था को पाया।
कुण्डलपुर नगरी में इक दिन, हाथी मद से बौराया॥
हाथी के मद को तब प्रभू ने, मार-मार चकचूर किया।
अतिवीर प्रभू का लोगों ने तव, मिलकर के शुभ नाम दिया॥
तीस वर्ष की उम्र प्राप्त कर, राज्य छोड़ वैराग्य लिए।
मुनि बनकर के पंच मुष्टि से, केश लुंच निज हाथ किए॥

परम दिगम्बर मुद्रा धरकर, खड्गासन से ध्यान किया।
कामदेव ने ध्यान भंग कर, देने का संकल्प लिया।।
कई देवियाँ वहाँ बुलाईं, उनने कुत्सित नृत्य किया।
हार मानकर सभी देवियों ने, प्रभू पद में ढोक दिया।।
कामदेव ने महावीर के, नाम से बोला जयकारा।
मैंने सारे जग को जीता, पर इनसे मैं भी हारा।।
बारह वर्ष साधना करके, केवल ज्ञान प्रभू पाए।
देव देवियाँ सब मिल करके, भक्ती करने को आए।
धन कुबेर ने विपुलाचल पर, समवशरण शुभ बनवाया।
छियासठ दिन तक दिव्य देशना, का अवसर न मिल पाया।
श्रावण वदी तिथि एकम को, दिव्य ध्वनी का लाभ मिला।
शासन वीर प्रभू का पाकर, "विशद" धर्म का फूल खिला।
कार्तिक वदी अमावश को प्रभू, पावन पद निर्वाण लिया।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो सभी जन, सबका मार्ग प्रशस्त किया।

दोहा

महावीर भगवान ने, दिया दिव्य संदेश।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो तुम, धार दिगम्बर भेष।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व, स्वाहा।।

दोहा

कर्म नाश शिवपुर गये, महावीर शिव धाम।
शिव सुख हमको प्राप्त हो, करते चरण प्रणाम।।

शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथ प्रथम वलय

दोहा

नामादिक निक्षेप से, जिनवर चार प्रकार।
पुष्पांजलि कर पूजते, तीनों योग सम्हार।।

(अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो!, हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ।।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ती भाव से हे भगवन्!, यह भाव सुमन कर में लाए।।
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्!

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

चार निक्षेप सम्बन्धी अर्घ्य

(गीता छन्द)

जैन आगम में प्रभू, निक्षेप गाये चार हैं।
कर्म घाती नाश कर जिन, हुए भव से पार हैं।
कर्म जित् जो हुए हैं वह, नाम जिन कहलाए हैं।
जिन गुणों को प्राप्त करने, चरण में हम आये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं नाम निक्षेप सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रभू की उपल धातू, में प्रतिष्ठा कर रहे।
पूज्य जग में वह हुए हैं, चैत्य जिनवर वह कहे।।
स्थापना निक्षेप से प्रभू, वीर जिन कहलाए हैं।
जिन गुणों को प्राप्त करने, चरण में हम आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं स्थापना निक्षेप सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत में जिनवर हुए जो, चरण में जिनके नमन्।
होयेंगे जो भी अनागत, कर्म का करके शमन।।

द्रव्यतः निक्षेप से वह, प्रभू जिन कहलाए हैं।
जिन गुणों को प्राप्त करने, चरण में हम आये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं द्रव्य निक्षेप सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश करके कर्म का जो, ज्ञान केवल पाए हैं।
वीर्य दर्शन सौख्य गुण, प्रभू अनन्त प्रगटाए हैं।।
दे रहे उपदेश जग को, भाव जिन कहलाए हैं।
जिन गुणों को प्राप्त करने, चरण में हम आये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं भाव निक्षेप सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

नाम और स्थापना, द्रव्य भाव ये चार।
जिनवर की पहचान के, रहे चार आधार।।

ॐ ह्रीं नामादि निक्षेप सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ द्वितीय वलयः

दोहा

अष्टकर्म को नाश कर, प्रकट होंय गुण आठ।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पढ़ूँ धर्म का पाठ।।

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो!, हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ।।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम पूजा करने को भगवन्, यह भाव सुमन कर में लाए।।
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्!

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टकर्म विनाशक श्री जिन के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

जो ज्ञान गुणों का घात करे, वह ज्ञानावरणी कर्म कहा।
विजय प्राप्त करता जो इन पर, केवलज्ञानी जीव रहा।।
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहित श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी जग में, दर्शन गुण का घात करे।
केवल दर्शन पाता वह जो, इस शत्रू को मात करे।।
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख दुख के वेदन में कारण, कर्म वेदनीय होता है।
धीर वीर महावीर होय जो, इसकी शक्ति खोता है।।
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ।।3।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये मोहकर्म दुखदायी है, जग को यह नाच नचाता है।
जो वश में इसको कर लेता, वह तीर्थंकर बन जाता है।।
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ।।4।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है प्रबल कर्म आयू जग में, जो मुक्त नहीं होने देता।
जो विजय प्राप्त करता इस पर, वह मुक्ति बधु को पा लेता।।
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ।।5।।

ॐ ह्रीं आयु कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भाँति-भाँति तन रचता है, वह नामकर्म कहलाता है।
जो इसकी शक्ती क्षीण करे, वह अर्हत् पदवी पाता है।।
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ।।6।।

ॐ ह्रीं नाम कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ऊँच-नीच पद देता है, वह गोत्र कर्म कहलाता है।
इसको जो पूर्ण विनाश करे, वह ऊँची पदवी पाता है।।
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है दुखदाई अन्तराय कर्म, जो दानादिक में विघ्न करे।
वह विशद ज्ञान को पाता है, जो इसकी शक्ती पूर्ण हरे।।
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह आठों कर्म हमेशा से, दुख के कारण कहलाते हैं।
जो विजय प्राप्त करते इन पर, वह निश्चय शिवपुर जाते हैं।।
अब अष्टकर्म के नाश हेतु मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाता हूँ।।9।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणादि अष्ट कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ तृतीय वलयः

सोरठा सोलह कारण पाय, तीर्थंकर पदवी लहे।
विशद भावना भाय, शिव सुख पा सिद्धी मिले।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो!, हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ।।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ती भाव से हे भगवन्!, यह भाव सुमन कर में लाए।।
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्! ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

सोलह कारण भावना के अर्घ्य

दोहा

मिथ्यादर्श विनाशकर, सम्यक्दर्शन पाय।
आत्मध्यान में लीनता, दर्श विशुद्धि कहाय।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

देव शास्त्र गुरू की विनय, करते हैं जो लोग।
विशद विनय सम्पन्नता, का पाते संयोग।।2।।

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नता भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पंच महाव्रत शील जो, पालें दोष विहीन।
निरतिचार व्रत शील में, रहते हैं वह लीन।।3।।

ॐ ह्रीं अनतिचार शीलव्रत भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

भेद ज्ञान करके विशद, रहें ज्ञान में लीन।
अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोग के, रहते सदा अधीन।।4।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जो संसार शरीर से, त्यागें ममता भाव।
पाते हैं संवेग वह, धर्म निरत स्वभाव।।5।।

ॐ ह्रीं संवेग भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अपनी शक्ति विचार कर, करें द्रव्य का त्याग।
यह शक्ती तस्त्याग है, करें धर्म अनुराग।।6।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

द्वादश तप के भेद हैं, तपें शक्ति अनुसार।
शक्ती तस्तप यह कहा, नर जीवन का सार।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तप भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

धारें समता भाव जो, रहें समाधी लीन।
यही समाधी भावना, राग द्वेष से हीन।।8।।

ॐ ह्रीं साधु समाधि भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

साधक करते साधना, उसमें बाधा होय।
वैय्यावृत्ती यह कही, दूर करें जो कोय।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कर्म घातिया नाश कर, हुए प्रभू अरहंत।
अर्हत् भक्ती कर बने, मुक्तिवधु के कंत।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हत् भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शिक्षा दीक्षा दे रहे, पालें पंचाचार।
आचार्य भक्ती कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।11।।

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ती भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ज्ञाता ग्यारह अंग के, चौदह पूरब धार।
उपाध्याय भक्ती शुभम्, करके हो भव पार।।12।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ती भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिनवर की वाणी विमल, करती मोह विनाश।
प्रवचन भक्ती जो करें, पावें ज्ञान प्रकाश।।13।।

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ती भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

आवश्यक कर्तव्य को, पालें धार विवेक।
आवश्यक अपरिहारिणी, कही भावना नेक।।14।।

ॐ ह्रीं आवश्यक अपरिहार्य भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिन शासन जिन धर्म का, जग में करें प्रकाश।
करके धर्म प्रभावना, करें मोह तम नाश।।15।।

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

साधर्मी से नेह धर, हों कुटिल भाव से हीन।
वात्सल्य शुभ भावना, धारें सदगुण लीन।।16।।

ॐ ह्रीं वात्सल्य भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सोलह कारण भावना, के यह सोलह अर्घ्य।
चढ़ा रहे हम भाव से, पाने सुपद अनर्घ्य।।
तीर्थंकर पद के लिए, सोलह भावना भाय।
बन के तीर्थंकर प्रभू, मोक्ष महा फल पाय।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडशकारण भावनायै सर्व कर्मबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अथ चतुर्थ वलयः

सोरठा भक्ती भाव के साथ, बत्तिस इन्द्र पूजा करें।
झुका रहे हैं माथ, भक्ती में तल्लीन हो।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो!, हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ॥
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ती भाव से हे भगवन्!, यह भाव सुमन कर में लाए॥
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्! ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

बत्तीस इन्द्रों द्वारा पूजित जिन के अर्घ्य

(जोगीराशा छन्द)

असुर कुमार भवन वासी के, पंक भाग से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥1॥

ॐ ह्रीं असुर कुमार इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

नाग कुमार भवन वासी के, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लेकर, जिनवर के गुण गावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥2॥

ॐ ह्रीं नाग इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

विद्युत इन्द्र भवन वासी के, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें॥

वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥3॥

ॐ ह्रीं विद्युत इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

सुपर्णेन्द्र जिन पूजा करने, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥4॥

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

अग्नी इन्द्र भवन वासी के, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥5॥

ॐ ह्रीं अग्नि इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

मारुत इन्द्र भवन वासी के, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥6॥

ॐ ह्रीं मारूत इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

इन्द्र स्तनित भवन वासी के, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥7॥

ॐ ह्रीं स्तनित इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

सागर इन्द्र भवन वासी के, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें॥

वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥8॥

ॐ ह्रीं सागर इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दीप इन्द्र भवनालय वासी, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥9॥

ॐ ह्रीं दीप इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दिक् सुरेन्द्र भवनालय वासी, खर पृथ्वी से आवें।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर के गुण गावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥10॥

ॐ ह्रीं दिक्सुरेन्द्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

किन्नर इन्द्र प्रथम व्यन्तर के, खर पृथ्वी से आवें।
परिवार सहित आकर के, जिनवर के गुण गावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥11॥

ॐ ह्रीं किन्नर इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

द्वितीय व्यन्तर देव के स्वामी, खर पृथ्वी से आवें।
इन्द्र किम्पुरुष भक्ती करने, निज परिवार को लावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥12॥

ॐ ह्रीं किम्मपुरुष इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

इन्द्र महोरग तृतिय व्यन्तर, खर पृथ्वी से आवें।
सब परिवार सहित आकर के, जिनवर के गुण गावें॥

वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥13॥

ॐ ह्रीं महोरग इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

व्यन्तर देवों के स्वामी सब, खर पृथ्वी से आवें।
गन्धर्व इन्द्र भक्ती करने को, निज परिवार भी लावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥14॥

ॐ ह्रीं गन्धर्व इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

यक्ष इन्द्र व्यंतर देवों के, खर पृथ्वी से आवें।
सब परिवार सहित आकर के, जिनवर के गुण गावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥15॥

ॐ ह्रीं यक्ष इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

रत्न प्रभा के पंक भाग से, राक्षस इन्द्र भी आवें।
सब परिवार सहित आकर के, जिनवर के गुण गावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥16॥

ॐ ह्रीं राक्षस इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

भूत इन्द्र सप्तम व्यन्तर के, खर पृथ्वी से आवें।
सब परिवार साथ में लेकर, जिनवर के गुण गावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥17॥

ॐ ह्रीं भूत इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पिशाचेन्द्र व्यन्तर देवों के, खर पृथ्वी से आवें।
सब परिवार साथ में लेकर, जिनवर के गुण गावें॥

वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥18॥

ॐ ह्रीं पिशाच इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ज्योतिष देवों के स्वामी शुभ, चंद्र इन्द्र कहलावे।
आठ सौ योजन ऊपर नभ से, निज परिवार को लावें॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥19॥

ॐ ह्रीं ज्योतिष चन्द्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ज्योतिष देवों के स्वामी रवि, प्रति इन्द्र कहलावे।
आठ सौ अस्सी योजन ऊपर नभ से, परिवार सहित आ जावे॥
वीर प्रभू की भक्ती करने, का मैं भाव बनाऊँ।
भक्ती भाव से जिन गुण गाकर, चरणों शीश झुकाऊँ॥20॥

ॐ ह्रीं ज्योतिष रवि इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

(राधेश्याम छंद)

स्वर्गों से सौधर्म इन्द्र भी, ऐरावत पर चढ़ आवें।
निज परिवार सहित भक्ती से, साथ में श्री फल भी लावें॥
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतु, चरणों में हम सिर नावें॥21॥

ॐ ह्रीं सौधर्म इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

गजारूढ़ ईशान इन्द्र भी, पुंगी फल लेकर आवें।
निज परिवार सहित भक्ती से, चरणों में बलि-बलि जावे॥
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतु, चरणों में हम सिर नावें॥22॥

ॐ ह्रीं ईशान इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सिंहारूढ़ सुकुण्डल मण्डित, सनत कुमार इन्द्र आवें।
आम्र फलों के गुच्छे लेकर, परिवार सहित प्रभू गुण गावें॥
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतु, चरणों में हम सिर नावें॥23॥

ॐ ह्रीं सानत कुमार इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अश्वारूढ़ सुकुण्डल मण्डित, माहेन्द्र कुमार इन्द्र आवें।
केले के गुच्छे लेकर यह, परिवार सहित प्रभू गुण गावें॥
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतु, चरणों में हम सिर नावें॥24॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ब्रह्म स्वर्ग से इन्द्र हंस पर, चढ़कर आवें सह परिवार।
पुष्प केतकी करें समर्पित, प्रभू की बोले जय-जयकार॥
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतु, चरणों में हम सिर नावें॥25॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

लान्तव इन्द्र स्वर्ग से चलकर, दिव्य फलों को ले आवें।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभू पद में बलि-बलि जावे॥
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतु, चरणों में हम सिर नावें॥26॥

ॐ ह्रीं लान्तव इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शुक्र इन्द चकवा पर चढ़कर, पुष्प सेवन्ती ले आवें।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभू पद में बलि-बलि जावे॥
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित हम गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतु, चरणों में हम सिर नावें॥27॥

ॐ ह्रीं शुक्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सतारेन्द्र कोयल वाहन पर, नील कमल लेकर आवें।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभू पद में बलि-बलि जावे॥

नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतु, चरणों में हम सिर नावें॥28॥

ॐ ह्रीं सतार इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

आनत इन्द्र गरुण पर चढ़कर, पनस फलों को ले आवें।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभू पद में बलि-बलि जावे॥
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतु, चरणों में हम सिर नावें॥29॥

ॐ ह्रीं आनत इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पदम विमानारूढ़ सुसज्जित, तुम्बरू फल लेकर आवें।
प्राणत इन्द्र परिवार सहित शुभ, जिनवर के गुण को गावें॥
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतु, चरणों में हम सिर नावें॥30॥

ॐ ह्रीं प्राणत इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कुमुद विमानारूढ़ भक्ती से, आरणेन्द्र गन्ने लावें।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभू पद में बलि-बलि जावे॥
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतु, चरणों में हम सिर नावें॥31॥

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अच्युतेन्द्र चढ़कर मयूर पर, धवल चँवर लेकर आवें।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभू पद में बलि-बलि जावे॥
नृत्यगान करते मंगलमय, भाव सहित जो गुण गावें।
उनके गुण की प्राप्ती हेतु, चरणों में हम सिर नावें॥32॥

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

भावन व्यन्तर और ज्योतिषी, सोलह स्वर्ग के बारह देव।
बत्तिस इन्द्र प्रभू चरणों की, भक्ती में रत रहें सदैव॥

भक्ती भाव से पूजा करके, चरणों में करते वन्दन।
प्रभू गुण पाने हेतू करते, विशद भाव से हम अर्चन॥33॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत् इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अथ पंचम वलयः

दोहा महावीर भगवान का, समवशरण सुखकार।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, हो जाऊँ भव पार॥
(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो!, हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ॥
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ती भाव से हे भगवन्!, यह भाव सुमन कर में लाए॥
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्! ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

46 मूलगुण के अर्घ्य

10 जन्म के अतिशय (शेर छंद)

अतिशय स्वरूप जन्म से, जिनदेव पाए हैं।
भक्ती से आके देव सभी, सिर झुकाए हैं॥
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभू पद वहीं, जो आपका रहा॥1॥

ॐ ह्रीं अतिशयरूप सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महके सुगंध अतिशय, जिनवर की देह से।
गाते हैं गीत ज्यों भ्रमर, जिनवर के नेह से॥
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभू पद वहीं, जो आपका रहा॥2॥

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हंत के शरीर में, नहिं स्वेद हो कभी।
शत् सूर्य की फीकी पड़े, प्रभू देह से छवि॥
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभू पद वहीं, जो आपका रहा॥3॥

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मलमूत्र आदि से रहित, प्रभू का शरीर है।
जो दर्श करे बार-बार, वह हो अधीर है॥
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभू पद वहीं, जो आपका रहा॥4॥

ॐ ह्रीं नीहार रहित सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रिय हित वचन से प्रभू के, शुभ अमृत झरें।
अमृत का पान करके भवि, जीव शिव वरें॥
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभू पद वहीं, जो आपका रहा॥5॥

ॐ ह्रीं प्रिय हित वचन सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू का अतुल्य बल, जग में अपार है।
पाता नहीं सुरेन्द्र, चक्रवर्ति पार है॥
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभू पद वहीं, जो आपका रहा॥6॥

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन का रुधिर है श्वेत, स्वच्छ क्षीर सम अहा!
जो प्रेम का प्रतीक, वात्सल्य का रहा॥

शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभू पद वहीं, जो आपका रहा॥7॥

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू एक सहस आठ शुभ, लक्षण को पाए हैं।
मानो जिनेन्द्र पुष्प की, कलियाँ खिलाए हैं॥
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभू पद वहीं, जो आपका रहा॥8॥

ॐ ह्रीं 1008 शुभ लक्षण सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू समचतुष्क देह प्राप्त, सौम्य रहे हैं।
निर्माण सुभग नाम कर्म, से जो गहे हैं॥
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभू पद वहीं, जो आपका रहा॥9॥

ॐ ह्रीं सम चतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू वज्रवृषभ संहनन, युत देह पाए हैं।
अद्भुत चरम शुभ देह का, अतिशय दिखाए हैं॥
शुभ पूर्व पुण्य का सुफल, अर्हंत पद अहा।
हम पाएँ प्रभू पद वहीं, जो आपका रहा॥10॥

ॐ ह्रीं वज्र वृषभ नाराचसंहनन सहजातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान के 10 अतिशय

अडिल्य छंद

समवशरण में तीर्थंकर, तिष्ठें जहाँ।
हो सुभिक्ष शत् योजन में, चहुँ दिश वहाँ॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभू सम्मान में॥11॥

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टाय सुभिक्षत्व घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गमन करें जब प्रभू, अधर आकाश में।
जय-जय ध्वनी कर चले, इन्द्र नर साथ में॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभू सम्मान में॥12॥

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वोत्तर दिश में मुखकर, रहते प्रभू।
चतुर्दिशा में दर्शन, देते जग विभू॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभू सम्मान में॥13॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का जँह गमन, न हो हिंसा कभी।
प्रभू महिमा से दया, भाव रखते सभी॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभू सम्मान में॥14॥

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशुकृत और, अचेतन ये सभी।
इनसे नहिं उपसर्ग, प्रभू पर हो कभी॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभू सम्मान में॥15॥

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु अंत ना प्रभू का, कवलाहार है।
कांतिमान प्रभू का तन, अपरंपार है॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभू सम्मान में॥16॥

ॐ ह्रीं कवलाहार रहित घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्यायों के ईश्वर, श्री जिनवर कहे।
रहे कोई न शेष, प्रभू को न रहे॥

दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभू सम्मान में॥17॥

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वर घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नख अरु केश न वृद्धि, पाते हैं कभी।
केवल ज्ञान के होते, स्थिर हों सभी॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभू सम्मान में॥18॥

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र स्वयं टिमकार रहित, न पलक हिलें।
देख-देख अतिशय, जग जन के मन खिलें॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभू सम्मान में॥19॥

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमौदारिक तन में, ना छाया पड़े।
चरम शरीरी प्रभू को, लख प्रभूता बढ़े॥
दश अतिशय हों प्रगट, सुकेवलज्ञान में।
देव झुकावें शीश, प्रभू सम्मान में॥20॥

ॐ ह्रीं छाया रहित अतिशय घातिक्षयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

(चौपाई-अंजलीबद्ध), 15 मात्रा)

अर्ध मागधी भाषा पाय, श्री जिन का अतिशय कहलाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभू चरणों में करें प्रणाम॥
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥21॥

ॐ ह्रीं अर्धमागधी भाषा धारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीव विरोधी मैत्री पाय, श्री जिन का अतिशय कहलाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभू चरणों में करें प्रणाम॥

चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥22॥

ॐ ह्रीं सर्व मैत्री भाव धारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दशों दिशा निर्मल हो जाय, श्री जिनवर अतिशय दिखलाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभू चरणों में करें प्रणाम॥
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥23॥

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षय धारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गगन पूर्ण निर्मलता पाय, श्री जिनवर अतिशय दिखलाए।
देव करें सारा यह काम, प्रभू चरणों में करें प्रणाम॥
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥24॥

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपनीतिशय धारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षट् ऋतु के फल फूल खिलाय, जहां विराजे श्री जिनराय।
देव करें सारा यह काम, प्रभू चरणों में करें प्रणाम॥
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥25॥

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भूमि रत्नमयी हो जाय, दर्पण सम शोभा को पाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभू चरणों में करें प्रणाम॥
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥26॥

ॐ ह्रीं आदर्श तल प्रतिमा रत्नमही देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जहाँ प्रभू का पग पड़ जाय, स्वर्ण कमल सुर वहाँ रचाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभू चरणों में करें प्रणाम॥

चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥27॥

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मंद सुगंधित पवन सुहाय, रोग शोक का नाश कराय।
देव करें सारा यह काम, प्रभू चरणों में करें प्रणाम॥
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥28॥

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जय-जय ध्वनी से गगन गुँजाय, चऊ निकाय के सुर मिल आय।
देव करें सारा यह काम, प्रभू चरणों में करें प्रणाम।
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥29॥

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मेघ कुमार देवता आय, पावन गंधोदक बरसाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभू चरणों में करें प्रणाम॥
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥30॥

ॐ ह्रीं मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पवन कुमार देवता आय, निष्कंटक भूमी कर जाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभू चरणों में करें प्रणाम॥
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥31॥

ॐ ह्रीं वायु कुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू का गमन जहाँ हो जाय, प्राणी सब आनंद मनाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभू चरणों में करें प्रणाम॥

चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥32॥

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धर्मचक्र आगे ले जाय, सर्वाण्ह यक्ष महिमा दिखलाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभू चरणों में करें प्रणाम॥
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥33॥

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य शुभ मंगल लाय, समवशरण में दिए सजाए।
देव करें सारा यह काम, प्रभू चरणों में करें प्रणाम॥
चौदह अतिशय जिनवर पाय, देव सुखद महिमा दिखलाय।
देवोंकृत अतिशय सुखकार, सारे जग में मंगलकार॥34॥

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशयधारक विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

4 अनंत चतुष्टय

(चौबोला छन्द)

क्रोध लोभ मद माया जीते, आतम ध्यान लगाया है।
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, केवल ज्ञान जगाया है॥
अनंत चतुष्टय धारी जिनकी, महिमा विस्मयकारी है।
प्रभू के पावन चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी है॥35॥

ॐ ह्रीं अनंत ज्ञान गुण प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोक्ष महल का ध्येय बनाकर, क्षायिक दर्शन पाया है।
क्षमाभाव को धारण करके, आत्म धर्म जगाया है॥
अनंत चतुष्टय धारी जिनकी, महिमा विस्मयकारी है।
प्रभू के पावन चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी है॥36॥

ॐ ह्रीं अनंत दर्शन गुण प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म मोहनीय नाश किए, क्षायिक सम्यक्त्व जगाया है।
भव सागर से पार हुए प्रभू, सुख अनंत उपजाया है॥
अनंत चतुष्टय धारी जिनकी, महिमा विस्मयकारी है।
प्रभू के पावन चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी है॥37॥

ॐ ह्रीं अनंत सुख गुण प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जान के चेतन की शक्ती को, संयम से प्रगटाया है।
अंतराय का नाश किए प्रभू, वीर्य अनंत उपजाया है॥
अनंत चतुष्टय धारी जिनकी, महिमा विस्मयकारी है।
प्रभू के पावन चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी है॥38॥

ॐ ह्रीं अनंत वीर्य गुण प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

तीन पीठिका युक्त सिंहासन, रत्न जड़ित है कान्तीमान।
अधर विराजे उसके ऊपर, स्वर्णिम तन है आभावान॥
समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥39॥

ॐ ह्रीं सिंहासन सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरने वाला शोक जगत का, तरु अशोक कहलाता है।
पृथ्वी कायिक होता फिर भी, तरु की संज्ञा पाता है॥
समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥40॥

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता की झालर से मण्डित, उज्ज्वल छत्र शोभते तीन।
तीन लोक की प्रभूता को जो, दिखलाने में रहे प्रवीन॥
समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥41॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू के पीछे बना मनोहर, तेजस्वी शुभ भामण्डल।
कान्तिमान द्रव्यों का मानो, हो जाता है खण्डित बल।।
समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार।।42।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्व मुखी पुष्पों की वृष्टी, सुरगण करते भाव विभोर।
परम सुगन्धी महक रही है, प्रभू के आगे चारों ओर।।
समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार।।43।।

ॐ ह्रीं पुष्प वृष्टि सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल दिव्य ध्वनी जिनकी शुभ, तीन लोक दर्शाती है।
भव्य जीव के मन मधुकर को, बार-बार हर्षाती है।।
समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार।।44।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनी सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यवाद्य बजते हैं मनहर, देव दुन्दुभी कहलाती।
चतुर्दिशाओं को आभा से, सर्व लोक में महकाती।।
समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार।।45।।

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभी सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चँवर ढुराते देव मनोहर, प्रभू के आगे दोनों ओर।
रत्न जड़ित हैं महिमा मण्डित, करते मन को भाव विभोर।।
समवशरण में प्रभू विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार।।46।।

ॐ ह्रीं चौसठ चँवर सत् प्रातिहार्य प्राप्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

समवशरण में पहली भूमी, चैत्य भूमि कहलाती है।
सुर बालाएँ नाटक शाला, में प्रभू के गुण गाती है।।
श्रेष्ठ जिनालय बने वहाँ पर, जहाँ विराजे श्री भगवान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभू का गुणगान।।47।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित चैत्य प्रसाद भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजी भूमी रही खातिका, मनहर खाई रही महान।
रत्न मई चित्रों से चित्रित, जिसकी रही निराली शान।।
देव नाव में क्रीड़ा करते, बोल रहे प्रभू का जय गान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभू का गुणगान।।48।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित खातिका भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति रमणीय लताएँ फैलीं, लता भूमि में चारों ओर।
ध्यान लीन बैठे कई मुनिवर, करते सबको भाव विभोर।।
पूर्व दिशा में वेदी सुन्दर, जिसका कौन करे गुण गान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभू का गुणगान।।49।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित लता भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन भूमी में सुन्दर वन, बने हुए हैं चारों ओर।
मध्य में चैत्य वृक्ष शोभित है, वनचर घूमें चारों ओर।।
सुर नर मुनि के इन्द्र भाव से, करते पूजा और विधान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभू का गुणगान।।50।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित उपवन भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश प्रकार चिन्हों से चिन्हित, ध्वजा पताका है मनहार।
भक्त वन्दना करते मिलकर, चरण कमल में बारम्बार।।
जैन धर्म की ध्वज फहराती, करती है प्रभू का सम्मान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभू का गुणगान।।51।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित ध्वज भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष भूमी में सुरतरु, शोभित होते मंगलकार।
मन वाञ्छित फल देने वाले, भवि जीवों को हैं सुखकार॥
गरिमा में मण्डित है पावन, समवशरण अति शोभावान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभू का गुणगान॥52॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जड़ित शोभा से मंडित, बने जिनालय चारों ओर।
श्री जिनबिम्ब की पूजा करते, भवन भूमि में भाव विभोर॥
छत्र ध्वजा तोरण से मण्डित, नव स्तूप हैं शोभा वान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभू का गुणगान॥53॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित रत्न जड़ित भवन भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह सभा में तीन गती के, भव्य जीव जा पाते हैं।
गणधर मुनी आर्यिका देवी, देव पशू भी जाते हैं॥
ॐकार मय दिव्य देशना, का करते हैं सब रसपान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभू का गुणगान॥54॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री मण्डप भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम पीठ पर धर्म चक्र ले, इन्द्र खड़े हैं चारों ओर।
मंगल द्रव्य अष्ट नव निधियाँ, ध्वज फहराकर करें विभोर।
गंधकुटी में कमलाशन पर, अधर में रहते श्री भगवान।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं प्रभू का गुणगान॥55॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित गंधकुटी पीठोपरि धर्म भूमि स्थाने जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्यां विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में ग्यारह गणधर, वीर प्रभू के साथ रहे।
इन्द्रभूति गौतम स्वामी जी, उन सब में से मुख्य कहे॥
वर्तमान शासन नायक प्रभू, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए॥56॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित इन्द्र भूति आदि एकादश गणधर सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में वीर प्रभू के, तीन शतक पूरबधारी।
ज्ञान ध्यान में लीन मुनीश्वर, मंगलमय हैं अविकारी॥
वर्तमान शासन नायक प्रभू, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए॥57॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित त्रयोशत पूर्वधर मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में वीर प्रभू के, नौ हजार नौ सौ शिक्षक।
जैन धर्म के रहे प्रभावक, जिनश्रुत के जो हैं रक्षक॥
वर्तमान शासन नायक प्रभू, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए॥58॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित नव सहस नवशत् शिक्षक मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त शतक केवल ज्ञानी प्रभू, महावीर के साथ रहे।
द्रव्य चराचर के ज्ञाता शुभ, केवल ज्ञान के नाथ कहे॥
वर्तमान शासन नायक प्रभू, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए॥59॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित सप्त शतक केवल ज्ञानी मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक हजार तीन सौ मुनिवर, अवधिज्ञान के धारी हैं।
समवशरण में महावीर के, अतिशत मंगलकारी हैं॥
वर्तमान शासन नायक प्रभू, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए॥60॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित त्रयोदश शत् अवधि ज्ञानी मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ विक्रिया धारी मुनिवर, नौ सौ संख्या में जानो
निष्पृह वृत्ती धारण करते, करुणा के धारी मानो॥
वर्तमान शासन नायक प्रभू, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए॥61॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित नवशत् विक्रिया ऋद्धिधारी मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुल मति मनः पर्ययज्ञानी, पंच शतक हैं अविकारी।
समवशरण में वीर प्रभू के, शोभित थे मंगलकारी॥

वर्तमान शासन नायक प्रभू, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए॥62॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पंचशत् विपुल मति मन: पर्यय ज्ञानी मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनी चार सौ वादी जानो, जैन धर्म का करें प्रभाव।
देव, शास्त्र, गुरु की वाणी सुन, हो जाते हैं निर्मल भाव॥
वर्तमान शासन नायक प्रभू, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए॥63॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित चतु: शत् वादी मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर प्रभू के समवशरण में, चौदह सहस मुनी निर्ग्रन्थ।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहकर, करते थे कर्मों का अन्त॥
वर्तमान शासन नायक प्रभू, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए॥64॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित चतुर्दश सहस्र निर्ग्रन्थ मुनि सहित विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया नाश किए प्रभू, छियालिस गुण प्रगटाते हैं।
समवशरण में शोभित जिन को, सादर शीश झुकाते हैं॥
वर्तमान शासन नायक प्रभू, महावीर जिन कहलाए।
चरण कमल के सेवक बनकर, वन्दन करने हम आए॥65॥

ॐ ह्रीं छियालीस मूलगुण सहित समवशरण स्थिति विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य ॐ ह्रां क्रों ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्रेभ्यों नम: सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा तीन लोक में श्रेष्ठ है, महावीर सन्देश।
पाने सब व्याकुल रहें, ब्रह्मा विष्णु महेश॥

(ताटंक छन्द)

प्रभु दर्शन से दर्शन मिलता, वाणी से शुभ सन्देश मिले।
चर्या से चारित मिलता है, सम्यक् तप से हृदय खिले॥
सभी अमंगल हरने वाले, वीर प्रभू पहले मंगल।
श्रद्धा भक्ती से पूजा कर हो, जाँय नाश सारे कल मल॥
सिद्धारथ के नन्दन बनकर, कुण्डलपुर में जन्म लिए।

माता त्रिशला की कुक्षी को, आकर प्रभू जी धन्य किए॥
जब वर्धमान का जन्म हुआ, सारे जग में मंगल छाया।
सुर नर पशु की क्या बात करें, नरकों में सुख का क्षण आया॥
इन्द्रों ने जय-जयकार किए, नर सुर पशु जग के हर्षाए।
सौधर्म इन्द्र ने खुश होकर, कई रत्न कुबेर से वर्षाए॥
बचपन-बचपन में बीत गया, फिर युवा अवस्था को पाया।
करके कई कौतूहल जग में, लोगों के मन को हर्षाया॥
जब योग्य अवस्था भोगों की, तब योग प्रभू ने धार लिया।
नहि ब्याह किया गृह त्याग दिया, संयम से नाता जोड़ लिया॥
प्रभू पंच मुष्ठि से केशलुंच, कर वीतराग मुद्रा धारी।
शुभ ध्यान लगाया आतम का, प्रभू हुए स्वयं ही अविकारी॥
तप किए प्रभू द्वादश वर्षों, अरु कर्मों को निर्जीर्ण किए।
फिर शुद्ध चेतना के चिन्तन, से कर्म घातिया क्षीण किए॥
तब केवल ज्ञान प्रकाश हुआ, बन गये प्रभू अन्तर्यामी।
शुभ समवशरण की रचना कर, सुर इन्द्र हुए प्रभू अनुगामी॥
जब प्रभू की वाणी नहीं खिरी, जग के नर नारी अकुलाए।
चौंसठ दिन यूँ ही बीत गये, प्रभू की वाणी न सुन पाए॥
सौधर्म इन्द्र चिन्तित होकर, अपने मन में यह सोच रहा।
है समवशरण में कमी कोई, या मेरा है दुर्भाग्य अहा॥
फिर अवधि ज्ञान से जान लिया, गणधर स्वामी न आए हैं।
इसलिए अभी तक जिनवर का, सन्देश नहीं सुन पाए हैं॥
फिर इन्द्र बटुक का भेष धार, गौतम स्वामी के पास गये।
अरु अहं नष्ट करने हेतू, वह प्रश्न किए कुछ नये-नये॥
वह समाधान कर सके नहीं, फिर समवशरण की ओर गये।
गौतम को सबसे पहले ही, शुभ मानस्तंभ के दर्श भये॥
होते ही मान गलित गौतम, प्रभू के चरणों झुक जाते हैं।
तब रत्नत्रय को धार स्वयं, चऊ ज्ञान प्रकट कर पाते हैं॥
विपुलाचल पर्वत के ऊपर, प्रभू की वाणी से बोध मिला।
हर श्रावक का मन प्रमुदित था, हर प्राणी का भी हृदय खिला॥
हे वीर! तुम्हारे शासन में, हम सेवक बनकर आए हैं।
रत्नत्रय की निधियाँ पाने के, हमने शुभ भाव बनाए हैं॥
मन में मेरे कुछ चाह नहीं, बस रत्नत्रय का दान करो॥
प्रभू विशद ज्ञान की किरणों से, हमको सद ज्ञान प्रदान करो।
तुम वीर बली हो महाबली, तुमने सारा जग तारा है।
यह तुमको भक्त पुकार रहा, इसको क्यों नाथ विसारा है॥

(छन्द आर्या)

जय महावीर सन्मति महान्, जय अतीवीर जय वर्द्धमान।
जय जय जिनेन्द्र जय वीर नाथ, जय जय जिन चरणों झुका माथ॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व कर्म बन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा वीर प्रभू की भक्ती कर, साता मिले विशेष।
रोग शोक सब शान्त हों, रहे कोई न शेष॥

(इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

गणधरों का समुच्चय अर्घ्य

वृषभादि महावीर प्रभू के, गणधर जग में हुए महान्।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, का करते हैं जो गुणगान॥
वृषभसेन आदि चौदह सौ, बावन हुए हैं मंगलकार।
उनके चरणों विशद भाव से, वन्दन मेरा बारम्बार॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरों के चतुर्दश शत् द्विपञ्चाशतगणधरेभ्यो: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

महावीर भगवान की आरती

तर्ज तुमसे लागी लगन.......

तुम हो तारण तरण, वीर संकट हरण ज्ञानधारी।
हम तो आरती, उतारें तुम्हारी॥
भाव भक्ती करें, कष्ट सारे हरें धर्म धारी।
पार नैय्या, लगाओ हमारी॥

कुण्डलपुर में प्रभू जन्म पाये, तीनों लोकों में शुभ हर्ष छाये।
इन्द्र आये तभी, दर्श कीन्हे सभी-मंगलकारी॥
हम तो आरती...........॥1॥

भोग जग के नहीं जिनको भाए, योग धारण में मन को लगाए।
आप त्यागी बने, वीतरागी बने ब्रह्मचारी॥
हम तो आरती...........॥2॥

कर्म घाती सभी तुम नशाए, ज्ञान केवल प्रभू जी जगाए।
आए पावापुरी, पाए मुक्ती श्री, निर्विकारी॥
हम तो आरती...........॥3॥

भक्त आये हैं चरणों तुम्हारे, आशा लेकर के आये हैं द्वारे।
आशा पूरी करो, कर्म सारे हरो, संकटहारी॥
हम तो आरती...........॥4॥

शीश चरणों में सेवक झुकाए, 'विशद' आशीश पाने को आए।
वीर बन जायें हम, कोई होवे न गम, उम्र सारी॥
हम तो आरती...........॥5॥

महावीर विधान की प्रशस्ति

शासन नायक जो रहे, वर्तमान के खास।
उनकी भक्ती मैं करूँ जब तक चलती श्वांस॥
भारत देश प्रदेश है, पावन राजस्थान।
जिसमें अतिशत क्षेत्र है, मंगल मयी महान॥
शहर एक अजमेर है, रहा स्वयं सम्भाग।
श्रद्धालू श्रावक कई, करे धर्म अनुराग॥
पावन वर्षा योग यह, दो हजार सन् सात।
भक्त सभी आये यहाँ, जोड़े अपने हाथ॥
करना है पूजन कोई, दीजे आशीर्वाद।
युगों-युगों तक जो करें, सारे जग जन याद॥
सोलह दिन के पक्ष में, सोलह हुए विधान।
श्रावण के शुभ माह में, किया प्रभू गुणगान॥
चाँदनपुर शुभ गाँव में, प्रकट हुए भगवान।
तीर्थंकर महावीर जी, रही अलग पहिचान॥
दर्श करें जो भाव से, उनके हों दुख दूर।
सुख शांती वैभव सभी, से होवे भरपूर॥
उनका ही शुभ लक्ष्य ले, निर्मित किया विधान।
करे भाव से अर्चना, उसका हो कल्याण॥
श्रावक शुक्ला पूर्णिमा, हुआ कार्य का अंत।
भूल चूक को भूलकर, पढ़े सभी धी मंत॥
रचना की शुभ भाव से, चाहूँ न सम्मान।
'विशद' भावना भा रहा, पाऊँ केवल ज्ञान॥
यही चाह मन में जगी, पाऊँ कैसे नाथ।
साथ निभाओं हे प्रभो! चरण झुकाऊँ माथ॥

प. पू. १०८ आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं नि. स्वा.।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि. स्वा.।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण पुष्पं निर्व. स्वा.।

काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वा.।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं नि. स्वा.।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वा.।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि. स्वा.।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

जयमाला

दोहा विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाला॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा॥
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वा.।

दोहा गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः इह विधि मंगल आरती कीजे....)

बाजे छम-छम-छम छमा छम बाजे घूंघरू-2
हाथों में दीपक लेकर आरती करूँ-2॥ टेक॥

कुपी ग्राम में जन्म लिया हैं, इन्दर माँ को धन्य किया हैं
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(1) बाजे छम-छम-छम...

गुरुवर आप है बालब्रह्मचारी, भरी जवानी में दीक्षाधारी
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(2) बाजे छम-छम-छम...

विराग सागर जी से दीक्षा पाई, भरत सागर जी के तुम अनुयायीं
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(3) बाजे छम-छम-छम...

विशद सागर जी गुरुवर हमारे, छत्तीस मूलगुणों को धारे
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(4) बाजे छम-छम-छम...

संघ सहित गुरु आप पधारे, हम सबके यहाँ मन हर्षायें
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(5) बाजे छम-छम-छम...

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद् ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद् नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद् कल्पतरू विधान
63. वृहद् श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह 1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद् निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु, अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. विशद पञ्चागम संग्रह
113. जिन गुरु भक्ती संग्रह
114. धर्म की दस लहरें
115. स्तुति स्तोत्र संग्रह
116. विराग वंदन
117. बिन खिले मुरझा गए
118. जिंदगी क्या है
119. धर्म प्रवाह
120. भक्ती के फूल
121. विशद श्रमण चर्या
122. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
123. इष्टोपदेश चौपाई
124. द्रव्य संग्रह चौपाई
125. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
126. समाधितन्त्र चौपाई
127. शुभषितरत्नावली
128. संस्कार विज्ञान
129. बाल विज्ञान भाग-3
130. नैतिक शिक्षा भाग-1, 2, 3
131. विशद स्तोत्र संग्रह
132. भगवती आराधना
133. चिंतवन सरोवर भाग-1
134. चिंतवन सरोवर भाग-2
135. जीवन की मन:स्थितियाँ
136. आराध्य अर्चना
137. आराधना के सुमन
138. मूक उपदेश भाग-1
139. मूक उपदेश भाग-2
140. विशद प्रवचन पर्व
141. विशद ज्ञान ज्योति
142. जरा सोचो तो
143. विशद भक्ती पीयूष
144. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
145. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

ग्रन्थ संग्रह प्रकाशन में सहयोगी

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, मयूर विहार, दिल्ली

श्रीमती संगीता जैन ध. प. श्री विनोद जैन, 9810043471
अंकित जैन, अमित जैन पिता श्री अजय जैन, 011-22744858
श्रीमती सौमलता जैन ध.प. श्री राजेन्द्र जैन, 7834826267
श्रीमती कैलाश जैन ध.प. श्री महावीर जैन, 011-22750286
श्रीमती सुषमा जैन ध.प. श्री रतनलाल जैन, 9968240388
श्रीमती निर्मला जैन ध.प. श्री महेन्द्र जैन, 011-22755269
नाम्या और तनिष्क जैन पुत्र श्री संजीव जैन, 011-22755269
श्रीमती पूनम जैन ध.प. श्री गजेन्द्र जैन, 9810069977
श्रीमती स्वाती जैन ध.प. श्री विजय जैन, 9811742523
श्रीमती विमला जैन ध.प. श्री विनोद जैन, 011-22755042
श्रीमती मालती जैन ध.प. श्री पदमकुमार जैन, 8860327743
अनुराग जैन पिता श्री सुरेशचन्द जैन, 9711879798
कु. गौरांशी जैन पिता श्री मनीष जैन

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, सरस्वती विहार, दिल्ली

श्रीमती पूनम जैन ध.प. श्री सुधीर जैन, 800226935
श्रीमती वर्षा जैन ध.प. श्री आनन्द जैन, 9868187596
श्रीमती सुशीला जैन ध.प. श्री सुरेन्द्र जैन, 9910631356
श्रीमती सुनीता जैन, 9999626032, श्रीमती सरोज जैन, 09312237722
श्रीमती रानी जैन, 9582250599, श्रीमती रजनी जैन, 9811349680
श्रीमती त्रिशला जैन, 011-65713920, श्रीमती मधु जैन, 9811062752
रवि जैन सुपुत्र मनोज कुमार जैन, गली नं. 4, शंकर नगर, दिल्ली
विनय कुमार, ऋषभ कुमार, बिजेन्द्र, दीपक, प्रवीण, अरहंत, नीरज जैन (खिवाई वाले), पी-41, गली नं. 3, शंकर नगर, दिल्ली